



# खादी

क्यों और कैसे ?

गांधीजी  
सम्पादक  
भारतन् कुमारप्पा



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर  
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक  
जीवणजी डाह्याभाभी दसाओ  
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

© सर्वाधिकार नवजीवन ट्रस्टवे अधीन १९५७

पहली आवृत्ति ३ ०० १९५७  
पुनमद्रण ७ ००

र० २००

माच १९५९

## सपादकका निवेदन

गांधीजीके राष्ट्रीय पुनरचनाके कार्यक्रमका समस्त महत्त्वपूर्ण तथा तो बहुत महत्त्वपूर्ण अंग अनुवा हाथ-बताजी और हाथ-बुनाजीका आदान था। जिसमें अहोरे गांधीजीके — जिनमें कि हमारा दंग बना है — आर्थिक मामलों और मासृत्तिक जीवनका पुनर्र्थाके दंगन हाने थे।

जिसका विपरीत बहूनाकी आज भी यही गन्त बल्पना है कि हाथ-बताजीके पुनर्र्थाके गांधीजीके आन्वेषणा राजनीतिक सिद्धा और बोधी हतु नहीं था। अनुकी समयमें यह ब्रिटिश साम्राज्यकी जड धाटनेका अनुवा अहिंसात्मक तरीका था। ब्रिटनने भारत पर कब्जा कर लिया था अनुकी प्राचीन दम्नकारिया और ग्राम-अधोगाना गला घाट लिया था ताकि अनुके अपने कारवाने फूँ-फूँ। अत ये लाभ समझन है कि गांधीजीने अपना सादीका कार्यक्रम जिसलिअ गुरू किया कि कमन कम कुछ हू तब ता ब्रिटेनक जिअ भारत पर अधिकार रखकर अनुके आर्थिक लाभ अुटाना असभव हो जाय। जिसलिअ व यह दंगेक दत हू कि अब ता ब्रिटेनम हमन अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता ले ली है अत सादीकी जर्जरत नहा रही।

अगर गांधीजीके सानी आन्वेषणा यही अब हाता ता धाभी कारण नहीं था कि वे बेवर् सांगा पर ही जात दन और मिलव कपड पर न दने। कारण मिशकी महायताय भी कपडा तयार करव हम अपनी जर्जरतका समाप्त कपडा कहा जल्नी तयार कर समने थ और राजनीतिक आजागी जल्नी प्राप्त कर लत। जिसक निवा गांधीजी सिफ ब्रिटिश कपडक बहिष्कारकी हा नहीं समाप्त किन्ती कपडके बहिष्कारकी हिमायत करत थे। जिस बानम यह जाहिर हाता है कि वे सानी आन्वेषणा लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य नहा समझन थ परंतु हमारा जनताका आर्थिक दुष्किम स्वावलम्ब्या बनाना मानव थ।

अवश्य ही व अनुभव करत य कि हमें आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी बनाकर खादी राजनीतिक स्वतंत्रताकी शीघ्र प्राप्तिमें मन्म दगी। परंतु अनेक श्रमवाचक अस्का अथ वं व राजनीतिक नहा या। व असमें कहा अधिक गहरा और स्थायी जय देवत थ।

जन्महरणके लिख व चाहत थ कि हाथ-कताश्रीके द्वारा हमारा लोगका जड़ना और लचारीकी भावना दूर हो जाय और व अपन आप पर निर्भर रहना सीखें। यह काम मिलेमें कपडा तयार करनेसे नही हो सकता क्योंकि प्रथम तो मिलें बन्त थोड लोगका काम दे सकती ह दूसर मिलके उत्पादनमें काम करनेवाला आत्म निर्भर नहा हो सकता क्याकि वह मजदूरी कच्चे माल और मशानाके लिख मालिक पर निर्भर रहता है। खादीमें ही यह खबी है कि वह हमारी ग्रामीण आबादीको अपनी दशा सुधारनके लिखे और जिस प्रकार सच्ची स्वाधीनताका पहला पाठ सीखनके लिखे अपनी ही काशिंग पर आधार रखना सिखा सकता है। इसलिख खादीका महत्त्व गांधीजीके लिख सिर्फ आर्थिक ही न्नी था असका सांस्कृतिक या मनो वज्ञानिक मूल्य भी बहुत था। अस्का हेतु यन्त्रितमें नवजीवनका संचार करना और असे सूझ-बूझवाला और स्वावलम्बी बनाना था। इस प्रकार अस्में सच्चे अर्थमें स्वराज्य या लोकतंत्रके बीज मौजूद थ।

दूसरे हमारे जमे दगमें जहा लोग हाथका मेहनतसे कतराते और असे नीचा समझते ह गांधीजीन महसूस किया कि जब हाथ कताश्री सावत्रिक हो जायगी तो वह हमारे छोटे बड सभी लोगोंको गरीब प्रमका गौरव मिखा देगी।

तीसरे जात-पातके पतित रूप और अग्रजोकी शिक्षा प्रणालीन हम लोगमें अच-नीच भावकी जो परम्पराओं पदा कर दा अनेसे अभीर-गरीब शिक्षित-अशिक्षितके बीच एक बडी खाशी खडी हो गयी। अगर सभी हाथस कातन लगे तो यह खाशी पट जायगी और अस्की जगह विगिष्ट वर्गों और जन-साधारणमें सभा जात्रिया और घर्मोंमें अनेताका सवध स्थापित हा जायगा। गांधीजीको हाथ-कताश्रीमें जा बडा सामाजिक मूल्य दिखाआ दता था वह यही था।

चौथे गांधीजी अच्छी तरह समझने से कि अयोगवाजमें बच्चे माल और मलियाकी जरूरत हानी है और जिसमें साम्राज्यवाज आंतर राष्ट्रीय झगडा और मुडावा जम हाता है। जिसके विपरीत खाती प्राचीन आत्म निभर ग्रामीण अथ-व्यवस्थाका पुनरुद्धार करनेका अब प्रयत्न है जिसमें उत्पादन मुख्यत गावडी आवयवनाका तब ही सीमित रणा। जिस मूरतमें बच्च मा और मलियाक जिंसे दूर देगाका हृष्य करनकी काओ प्ररणा नही हांगी। जिस प्रकार आर्यिक क्षेत्रमें आंतर राष्ट्रीय सघपके कारणकी जड काटे बिना विश्वगाति अुहें अब थाया सपना मात्रूम हानी थी।

अिहा महत्त्वपूण आर्यिक सामाजिक और नासृतिन कारणामे न कि मिक राजनीतिक कारणामे गांधीजीन अपना छाती-आवाजन फापम रिधा था। जिसमें अनुका केव त्रिटनमे मत्ता छीन स्नेसा तात्कालिन हतु ही नही था बल्कि अुहें आगा थी कि जिसके द्वारा अब अगा अहिमक आर्यिक और सामाजिक ध्यरम्यासी नाव डाली जा सरगा जा हमारे जिंसे और मारी मानव जातिन जिंसे गति और मुखवा प्राणुभवि करगी। खाताक पुनरुद्धारके अनुके प्रयनाकी तहमें यही दूरगामी और स्थायी अरथ था।

गांधीजीन अपना गाडी-आजान १९१८ में गुन किया। प्रारम्भमें खाती पर अनुका जोर जिस रिचारम था कि अुगमे गरीबामे पीडिन जन-माधारणको राहत मिगनी है। परतु १९३४ म और माग तीर पर १९३५ म अनुक जिग जोरमें परिवर्तन पाया जाता है। अुग ममयसे वे यह आग्रह करने लगे कि खाती सब दूरगाका बेचनक जिंसे ही न हो बरि गांधीवाजे अब गुन अपने अिम्नमालके जिंसे बनायें। १९४२ और १९४३ क बारावागमें अुहें अपने खाती-आजान पर और मनन करनेका समय मिग और जब वे जल्म निबड तब क गाडी-आजानका अब नवी जिग दनवा निरचय करक रिवा। अब वे खाताक गरा रथ ग्रामीणारी आर्ययानाआरी पूनिका प्रथम और प्रमुग स्थान दना चाहत थे। १९४८ में अुहान अपने गांधी वापरनाआवे आग अपना जिग सोचकर रग किया और अुग यह परिवर्तन अमलमें

गनका अनुरोध किया। उस समय स्वामी आनन्दने जिस विषय पर उनकी बातचातके जो नाम लिखे थे उसका लिख हम उनके आभारी हैं। हमने उनका संपादन करके विभाग १३ के रूपमें अह पुस्तकमें शामिल कर लिया है। यह और उसके बाकी विभाग अथवा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उनसे यह प्रगट होता है कि भविष्यमें गांधीजी खादीका विकास किस ढंग पर करना चाहते थे।

लगभग तीस वर्षके असेमें गांधीजीने खादी पर बहुत लिखा। हम तो इस पुस्तकमें जिस विषय पर उनके लखे भाषणा और वार्तालापों से कुछ भाग हों सम्मिलित कर सकते थे। परन्तु हमने यह निर्णय की है कि कोसी महत्त्वपूर्ण चीज रह न जाय और पाठकके सामने खादी पर गांधीजीके विचारोंको अट्टीके रूपमें अधिकसे अधिक विवाद रूपमें रख दिया जाय। प्रकरणोंकी व्यवस्था हमारी अपनी है और उनके लखे शीपक हमारे दिये हुए हैं।

जिसमें पहले १९४१ में नवजावन टस्टन खादी पर गांधीजीके लखोंके काव्यक्रमके अनुसार विकासनामिकस आफ खादी (खादीका अर्थशास्त्र) के नामसे पुस्तककार छपा था। प्रस्तुत ग्रन्थमें वह सामग्री अधिकतर शामिल तो की गयी है मगर उसका क्रम विषयानुसार बदल दिया गया है और असेमें खादी पर गांधीजीके बादके लख और भाषण सम्मिलित करके असे संपूर्ण बना लिया गया है।

यह ग्रन्थ नया बननेमें ग्रामसेवाकी योग्यता प्राप्त करनेवाले खादी-वापकताओं और विद्यार्थियोंकी आवश्यकताओंका खास तौर पर ध्यान रखा गया है। लेकिन यह पुस्तक उन सब लोगोंके लिए भी उपयोगी होगी जिनकी इस बातमें विश्वास है कि राष्ट्रीय पुनर्रचनाके दारमें गांधीजीके क्या विचार थे और हमारी जनताकी हाथ सुधारनकी योजनाओंमें हाथ-बताओ और हाथ-बनाओका क्या स्थान होना चाहिये।

इस पुस्तकका अग्रजाने हिन्दी अनुवाद श्री रामनागयण चौधरीने किया है।

## अनुक्रमणिका

सम्प्राप्तकरा निर्देष्टन	३	११ अशागवात्मे वचना	
प्रास्ताविक		चाहिय	२४
मा वरवकी गाध वमे की	१	१२ बुद्योगवात्म वकारी	
विभाग १		वडपी	२७
कताओ क्या ?		१३ वपवना निर्मात	३२
१ कताओ गराओ रम		विभाग ३	
वरती है	३	गवानिवारण	
२ हृदिजनाकी मददवा साधन	८	१४ ताताके तिलाफ आशप	३४
३ कताओका स्वास्थ		१५ क्या आधिब ददिस	
गवभी महत्व	९	गानी लाभप्र है ?	४७
४ कताओ और ब्रह्मचय	१०	विभाग ४	
५ कताओ और मह्यागी		सादी वनाम विदेगी कपडा	
प्रयत्न	११	१६ विदेगी कपडा नही	
६ कताओ — अेकमान		चाहिय	७०
मावत्रिअ बुद्योग	१३	१७ अठारह मी अट्टाओममे	५१
७ श्रमवा गौरव गिमानक		१८ विदेगी व्यापार	५४
त्रिअे कताओ	१४	१९ स्वग्नी	५७
८ प्राओदाले त्रिअे कताओ	१५	२० गानी गारा विदेगी	
• कताओ — अहिंसावा		वरवना बहिष्कार	६१
प्रतीक	१७	विभाग ५	
विभाग २		सादी वनाम मिलवा कपडा	
अद्योगवाद क्या त्रों ?		२१ गानी वनाम मिलवा	
१० क्या बुद्योगवात्मे क्या		कपडा	६९
जा सक्ता है ?	२१	२२ हमारी मित्रे क्या कर	
		मरता ह ?	७३



२३	खादी प्रचार मिलाका सहायक है	७५
२४	मिन् मात्त्रिका लाभ	७६
२५	मिन्की खादी	७७
२६	कुठ विकट प्रदन	७९
२७	स्वदेशी प्रदानियामें खानी	८१

### विभाग ६

मिलका कपडा बनाम विदेशी कपडा

२८	भारतीय मिलाका सरक्षण	८३
२९	मिन् द्वारा विदेशी वस्त्रका बहिष्कार	८४
३०	भेरी स्थिति	८८

### विभाग ७

खादीका अर्थशास्त्र

३१	खानीका आधार मानव हितका विचार है	८९
३२	खादीके अर्थशास्त्रके नियम	९
३३	कपामकी खती	९२
३४	भाव	९४
३५	खानी-वायकर्ताअधिके ममभ प्रवचन	९५

### विभाग ८

खादीशास्त्र

३६	खादीशास्त्र क्या है ?	९८
३७	यथायथाकी जरूरत	१०६

३८	खरीदार चाहिये	१०९
३९	जिसका जय क्या है ?	१११
४०	चरखका सुधार	११४
४१	खानी विद्यार्थी	११५
४२	आमदनी दुगुनी कस की जाय ?	११६
४३	गास्त्रीय मानस और खादी	११७
४४	बोठनवाये आकड	११९

### विभाग ९

खादी-वायकर्ता

४५	बुनियादी जरूरतें	१२०
४६	राजनीतिक दलबन्दीकी गुजाअिग नही	१२३
४७	खादी ग्राम अद्योग और ग्रामोत्थान	१२५
४८	वायकर्ता और पमा	१२६
४९	खादी-वायकर्ता और राजनीति	१२८
५०	प्रदन	१२९
५१	सरक्षक कौन हो सकता है ?	१३

### विभाग १०

यथाय कताभी

५२	यथाय कताभी क्यों ?	१३२
५३	यथाय कताभी वाछनीय है ?	१३५
५४	खानीवृत्ति	१३८

५५	कताभी आत्मदर्शनका साधन	१३९
५६	वेदार्थे चरखा	१४०
५७	चरखा मङ्गल	१४२

### विभाग ११

#### मजदूरी पर कताभी

#### क - कताभीकी मजदूरी

५८	निश्चित और समान मजदूरीकी जरूरत	१४४
५९	गृहआत कसे कर ?	१५३
६०	अूचे भाव	१५५
६१	खानगी उत्पादक साव धान रहें	१५६
६२	यूनतम मजदूरी	१५८

#### ख - अप्रमाणित ग्यादी

६३	अप्रमाणित वनाम प्रमाणित	१७०
----	----------------------------	-----

#### ग - ग्यादी भंडार

६४	खानी भंडार	१८०
----	------------	-----

### विभाग १२

#### स्वावलंबी कताभी

६५	स्वावलंबी खानी	१८१
६६	देहातके लिखे खादी	१८७
६७	तकली	१९०
६८	पनुप तकली	१९१
६९	तीन जरूरी बातें	१९२

७०	त्रय तीका खादी भंडार	१९३
७१	कताभीके पहले और पीछेकी प्रक्रियाओं	१९४

### विभाग १३

#### चरखा-सघका नवसंस्करण

७२	नयी योजना	१९५
७३	खादीका नया युग	१९७
७४	सम्मेलन (१) खादीके बारेमें नया दृष्टिकोण	१९८
	(२) चर्चा	२१०

### विभाग १४

#### नयी नीति सम्बन्धी प्रश्न और चर्चा

७५	खादीकी परीक्षा	२५३
७६	खादी-संगठनका विकेंद्रीकरण	२६१
७७	स्वायत्तवन और सहयोग	२६३
७८	कताभी और स्वती	२६४
७९	रेगम और रुमी	२६५
८०	कीमत सूतके रूपमें चुवाना	२६७
८१	सूत बच	२६८
८२	खादीके बारेमें मवाद	२६९
८३	स्वराज्यकी अवमानना	२७१
८४	खादी भंडारके बारेमें	२७३
८५	अब भी कातें !	२७७

## विभाग १५

## काग्रस और खादी

८६	काग्रस कसे मदद दे सकती है	२७९
८७	खादी और ग्राम-अद्योग	२८१
८८	कताओ मताधिकार	२८३
८९	खादी खरीदनके लिए सूतकी गत	२८५
९०	पश्चात्तर	२८७
९१	काग्रस और कताओ	२८८

## विभाग १६

## सरकार और खादी

९२	विदेशी घस्त्रका निषेध	२८९
९३	खादीको लोनाप्रिय कसे बनाय ?	२८९
९४	खादी द्वारा अनाज निवारण और शिक्षा	२९०
९५	जन्महोवी सहायता	२९१
९६	रचनात्मक कार्यक्रम और सरकारी सहायता	२९३

९७	मन्त्रियाका कृतय	२९४
९८	कपडकी कमी	२९५
९९	यदि म मन्त्री होता	२९८
१००	हाथ-कताओ बनाम मिल-कताओ	०१
१ १	सरकारी स्वामित्व बनाम नियन्त्रण	३०२
१ २	खादी कपडकी कमा पूरी कर सकती है	३०४

## विभाग १७

## हाथ करघ

१ ३	हाथ-करघा बनाम चरसा	३०५
१०४	मिलके सूतसे हाथ बुनाओ	३१६
१०५	हाथ-करघकी समस्या	३१८
१०६	कायकर्ता बुनाओ सीखें	३२१
१ ७	जबरदस्ती नहीं सूची	३२२

## प्रास्ताविक

### मने चरखेकी शोध कैसे की

१९०८ की दान है। मैं जन्ममें था। चरखका खयाल मुने पहली बार वहा आया। म वहा दक्षिण अफ्रीकास अेक शिष्ट मडर कर गया हुआ था। वहा मरा अनक अुत्साही विद्यार्थियो जीर दूसर हिंदुस्तानियासे गहरा सम्पक हुआ। भारतकी दगावे यारेमें हमारी कभी बार लम्बी रातचीत हुआ जीर मने पठभरमें ममज्ञ लिया कि चरखक बिना स्वराज्य नही हागा। मन तुरत जान लिया कि सबको बातना पडेगा। परतु अस समय मुझ करये जीर चरखका फक मालूम नही था और हिंद स्वराज्य में मन चरखेक जयमें करया शाखा प्रयाण किया है।

यद्यपि बुद्धिमें चरखका आविष्कार १९०८ में ही हो गया था फिर ना असम काम लना शुरू हुआ तीन साल धयपूण और कठार प्रयत्नके बाद १९१८ में। खानीकी पहली प्रतिना १९१९ में ली गयी। (असे वम्यथीका फगनप्रिय वहनोका सुविधाक लिख बहुत नरम कर दिया गया था।) काग्रमेके कायक्रमम चरखका १९२१ में स्थान मिया। तबसे आन्दोलनका अितिहास अब खुली किताब है जा ना हजारक अगमग कायकर्ताआ और करोब सत्तर हजार कतिनाके जीवनक रूपमें अभी तक लिखी जा रही है। कतिनाकी जिदगीम तो चरखन आगाकी अब किरण पदा कर ली है।

यग अिडिया २ -९-२८

म पहले-पहल १९१५ में बुनकर बना। म पहल बुनकर बना और फिर कातनवाला। मन जिन्ही हाथसे किन्नी और हमारी मित्रका सूत दाना बुन ह। अपन करघ पर बठा म कपडा बुन रहा था बुनत-बुनत अपन मनमें साचन लगा कि जब जिस प्रकारका कपडा स्वय बुनतक अिधे मिले काफी सगठित हा जायगी तब मेरा क्या

हा हांगा जीर हजारों गावां बुनकरोका क्या होगा? और जब मैं यह मान रहा था तब मझ दहातकी अपनी लाग्यो भूखा मरनवाली बहनाका याद आया जीर मैं अनन दुभाग्यका विचार करन लगा। मैं अगस जीर बचन हो गया जीर अपन माधिया सहित मैं अभी किसी काननवालीका खोजमें ग्य गया जो हमें हाथ-कताभी भिया द। मैं यह भी पता लगान लगा कि काजा जब गाव भा जाता है या नहा जहा मझ जब भी हाथ-कताजी होती दखनको मिल सने। मुझ जुस वक्त जिस बातका कुछ भी ज्ञान नही था कि पजाबमें कुछ बहनें अब भी कानना ह। तबिन जब मुझ पर धार धार तिरागा छा रही था तब मन गजरातकी अक वीर विदवाका आशय लिया। मैं अछूता की सेवाका काम करती थी। मैं अपन जिम गहर दुलमें जन मरिगीको तरीक किया और अनेके सुपु यह काम किया कि मैं गजरातमें स्थान स्थान पर घूमें और तत्र तक चन न लें जब तक जन बहनाका पता न लगा ल जिनके हाथमें अभी तक हाथ-कताआका काग जाबित है। जन्हीन यह पता आया कि गुजरातके बीजापुरमें कुछ मुमगमान बहनें ह जा काननका तयार ह अगर जनका मूत अनक घर जाकर ल लिया जाय। जुसी क्षणसे वह महान पुनरुद्धार आरम्भ हो गया जा जिस समय भारतके पादह हजारसे अधिक गावामें फगा हुआ ह। जिस खोजक याद ही मैं निश्चय किया कि जिस जाधमका मैं मचाक ह उसमें दिग्गी या मित्रके सूतना एक धागा भी नहा बना पायगा।

## विभाग १ कताओ कयो ?

१

### कताओ गरीबी कम करती है

मेरा पक्का विश्वास है कि हाथ-कताओ और हाथ-बुनाओके पुनरुज्जीवनमे भारतके आर्थिक और नतिक पुनरुद्धारमे सबसे बडी मदद मिलगी। करोडो आदिमियाका खतीकी जायमे वद्धि करनके लिअ कोओ माग अुद्याग चाहिय। वरसा पहल वह गृह अुद्याग कताओका था, और करोडोको भखा मरनेसे बचाना है ता अुन्हें जिस योग्य पनाता पडगा कि वे अपने घरामें फिरसे कताओ जारी कर सवें और हर गावको अपना ही बुनकर फिरस मिल जाय।

यग अिडिया २१-७-२०

अगर बडा बडी मशीनासे भारतकी दरिद्रता और अुमसे पना हाने वाली बेकारी दूर हो सकती हो तो म अुनके अुपयोगकी हिमायत करगा। मने सुझाया है कि हाथ-कताओ ही अेकमात्र असा साधन हमारे हाथम है जिससे गरीबीको भगाया जा सकता है और काम तथा धनका अवाल असभव बनाया जा सकता है। चरखा स्वयं भी अेक अुपयोगी मसान है और अपने नम्र तराके पर मने भारतका विनेष परिस्थितिक अनुसार अुसमें सुधार करानेकी कोशिश की है। अिसलिअे अेकमात्र प्रश्न जिसम भारत और मानवताके प्रमियाका अुझना है यह है कि भारतके दरिद्रघसे अुत्पन्न दुखका निवारण कसे किया जाय।

अगर हम भारतीय नरककाठाका चित्र अपन ध्यानमें रखें तो हमें अपन अुन ८० फी सती लागाका खयाल करना होगा जा अपन ही खतोमें काम करते ह और जिनके पास सागमें कमसे कम चार महीन लगभग काओ धधा नहा हाता और जो अिमात्रिअ भुखमराक

किनारे पर रहने ह। यह साधारण स्थिति है। जाय दिनक अकालोसे जिम अनिवाय बकारीम और भी वृद्धि होती रहती है। य नर-नारी अपन ही घरामें जासानीसे असा कौनसा काम कर सकते ह जिससे अनकी जल्पत अल्प आयमें वृद्धि हो? क्या जब भी किसीको सनेह है कि वह काम केवल हाथ-बताजी है काओ दूसरा नही?

यग जिडिया ३-११-२१

जम घर पर भोजन बनाना महंगा नही हाना और अमका स्थान होल्का खाना नही ले सकता वसे ही घर पर सूत कात लना और कपडा बन केना भी महंगा नही पड सकता। हमारी जावादीवे २५ करोडस जविक लोग अपन ही हाथोसे कातेंग और जिस तरह तयार हज सूतका आसनासके स्थानामें कपडा बुनवा लेंग। यह जावादी जमीनक साथ बधी हुओ है और असे सालभरमें कमसे कम चार माह बकार रहना पडता है।

अगर य लोग जिस समयमें कातें और अस सूतका कपडा बुनवा कर पहनें तो अनकी सादीवे साथ कोओ मिलवा कपडा स्पर्धा नही कर सकता। जिस तरह तयार किया हुआ कपडा अुनक त्रिअ सस्तेसे सस्ता होगा।

यग जिडिया ८-१२-२१

बताआके पक्षमें जो दावे किये जाते ह वे य ह

१ जिन लोगको फुमत है और जिन्हें थोडस पसाकी भी जरूरत है अुन्हें अिससे जासानीसे रोजगार भिड जाता है

२ अिसका हजारोका ज्ञान ह

३ यह बासानीसे साखा जाती है

४ अिसमें जगभग कुछ भी पजी ज्ञानकी जरूरत नहा होती

५ चरखा जासानीसे और सस्त दामामें तयार किया जा सकता है। हममें स अधिकागको अभी तक यह मालम नहा है कि कताओी एक ठीकरा और बासका खपचीस याना तकंग पर भी की जा सकती है

६ लोकाका अिमने अरुचि नहा है

७ जिसस अकारके समय तात्कालिक राहत मित्र जाती है

८ विन्नी कपडा खरीन्नेमे भारतका जा घन बाहर चग जा रहा है असे यही रोक सकती है

९ जिसस करोण खपाकी जो बचन हाती है वह अपन आप सुपात्र गरीवामें घट जाता है

१० जिसका छोटीस छोटी मफतास भा ङगाका बहुत कुछ तात्कालिक गभ होता है

११ ङगामें सहयोग पना करतका यह जत्यत प्रबन्ध साधन है।

जुसकी मफताके रास्तेका कठिनाओ यह है कि आवश्यक सख्यामें कायकता ता मयम वगमें स ही मिल सकत ह और अुनमें श्रद्धाका अभाव है। जिसस भी बडा मुदिकल यह है कि बढिया िखाओ देने वाल मिलक कपडेकी जगह खादीका अपनानका लोगामें रुचि गही है। बीचके काल खादीकी महगाओ भी अक कठिनाओ है। अगर कताओने प्रस्तावका लोग काफी सख्यामें अनुकूल अुत्तर दें ता गाणीका मिन्ने कपडेकी स्पर्धा करने माग्य बनाया जा सकता है। जिसमें गक नहीं कि अिम जागानका सफलताके लिअ लोकाको कुछ त्याग करनकी जरूरत है। यह सोधा त्याग भी जरूरी न हाता अगर हमारा अपनी सरकार हाता जिण किसानकी जरूरताका ध्यान हाता और जो अुन्हें विन्गा स्पर्धा वचानक लिअ कटिवद्ध हाती। थोडे समयक लिअे मध्यम वग खुगाम कुजाना करे ता वही काम हा सकता है जा सरकारके राष्ट्रीय हान पर हो सकता है।

शक्तिके अपययका कोजी सवाल नहीं है। जिण हजारो बहनाको डॉ० राय पहल दानका अन्न दे रहे थे और अन्न अिज्जतके साथ राज गार दकर थान या पूरा स्वावर्धी बना रहे ह क्या अुनकी शक्तिका अपव्यय हुआ है ? अुनक पास भील मागन या भूखा मरनक मिवा और काअ काम नहा ह। अुनकी आवश्यकताओका अध्ययन करन अुनके दुखाकी महमूस करन और अुन्ह आगे वन्नेमें मन्द ढेनेके लिअ जा नीजवान गावामें जा रहे ह, क्या वे अपनी शक्ति नष्ट कर रहे



ह ? हजारों सम्पन्न युवक-युवतियां करोड़ों नगा-भूखाका खयाल करें और उनके खातिर आध घंटा राज धमभावसे कातनको अलग निकाल दें ता क्या यह शक्ति को नष्ट करना क्या जायगा ? किसी पुरुष या स्त्रीक पास जीर कोमी धधा न हा और वह कुछ पसाके लिअ काम तो जैसे अतना लाभ ता है ही अगर कोओ पुरुष या स्था यनके रूपमें काते ता वह भी लाभ ही है। अिस प्रकार अगर काआ काम असा हा जिसमें लाभ ही लाभ है और हानि कुछ भी नहीं है तो वह काम हाय-कताजी ही है।

यग जिडिया २१-८-२४

जन-साधारणकी बीमारी रुपयकी कमी जितना नहीं है जितनी कामका कमी है। धम ही धन है। यदि कोओ करोड़क सिजे अुनके धरोमें काम जटा दे तो कहना चाहिय कि वह अुनके लिअ रोटी कपना या या कहिय कि रुपया ही जुटा देगा है। चरखा अुनके लिअ असा ही धम सुभ कर देता है। अिसलिअ जब तक चरखसे अच्छी चीज नहा मिज जाता तब तक चरखा कायम रगा।

यग जिडिया १८-६-२५

सारी बुराओका कारण — अुसकी जड — बकारी है। और अगर यह जड नष्ट की जा सकती हो तो दूसरी किसी काशिकाके बिना ही अडिका बुराओका सुधार किया जा सकता है। भूखो मरनवाले राष्ट्रमें जागा या प्रारभ शक्ति नहा रह जाती। वह गन्गी और बीमारीके प्रति अदासीन हो जाता है। सभी सुधारके लिअ वह कहने लगता है कि अिनसे क्या लाभ ? जीवनगामी चरखके द्वारा ही कारण गगाके लिअ निरागाका यह तुपार आगाके अजामें कना जा सकता है।

यग जिडिया २७-८-२५

आपको मालूम है कि हमारे देशकी औसत राजाना आमदनी क्या है ? हमारे जयगास्त्री कहते ह कि डड आना है यद्यपि यह क्यन भी धामन है। किना नगीका पाना कना ६ फुट गहरा हा और

कही दा फुल और अिमा बातस काआ जुमकी औमन गहराओी ८ फुड मानकर अस पार करन गग ता क्या वह डूब नहा जायगा ? आकडे अिसी तरह गुमराह करते ह। औमत आमदनीका हिमाव गरीमा और बाअिमराय तथा कराअपतियाका आवक आकडाम लगाया जाता है। जिमाअि वास्नविक आय मुक्विस तीन पम प्रति व्यक्ति हागी। अब अगर म चरखकी सहायतास अस आमदनामें तान पस भी बना देना हू ता क्या म चरखका कामधनु बहनमें भू करता हू ? अगर काओी मुअ यह ममवा द कि भास्तमें गरीबी नही है और थालसे पसाव अभावमें भूया भरनवा कुछ हा गग ह ता म अपना भू मान ठूगा और चरखका नष्ट कर ठूगा।

पग अिडिया १७-१-२७

हमें कुछ वुनियादी तथ्य ममअ लेन चाहिय पहला वडा तथ्य यह है कि महनतका जिगा जीनवाले हमारे कराडा देवासियामें पहन्स हौ भयकर वकारी है। वपमें कमस कम चार महीन अनुव पाम काओी काम नहा हाता। जब वार यह बात अच्छी तरह समन्में आ जान पर यह निश्चित निष्प निक्लना है कि अिन कराअ आदमियां वकारीके समयका अुपयाग करनक अि अुन्हें काममें लगानमें जरा भी दर नया करना चाहिय। दूसरा बात समय लनकी यह है कि अगर अिम लेाक निवासियावी औमत आमन्नी मात पसे रोज यानी ग अग्रजा पनीम कम है ता कराडा अमजावियाकी औमत आय अपन आप अमस भी कम होगा। यदि काआ अनका आमन्नीमें दा पस रोजकी वडि कर नेता है और वह भी काओी बनी पूजी लगाप बिना कर लता है ता कहना चाहिय कि वह अनको आमन्नी बहुत बना लता है और माय ही अिन कराडा लेगाव अिगमें वुलती हुआ आगाको फिरय सत्रीव कर देता है।

पग अिडिया १-११-२८

चरख आाचकाका अेकमात्र आक्षप — जिम पर वे बहुत जार देन ह — यह है कि जुसस जमी चाहिय वैसी आमदनी नही हाती। एकिन

अगर उससे एक पसरा रोज भी मिल जाता है तो वह भी कम नहीं है। क्योंकि हमें याद रखना चाहिये कि हमारी औसत आय छह पसरा रोज है जब कि एक अमेरिकनकी १४ रुपये राज और एक अफ्रिकी ६ रुपये रोज। चरखा तो यहाँ कुछ नहीं है यहाँ कुछ न कुछ अल्पत्र करनका प्रयत्न है। अगर उस चरखेके द्वारा राष्ट्रके साठ कराड रुपये हम बचा लेते ह और यह हम जरूर कर सकते ह तो हम राष्ट्रीय आयमें अतनी विंगाल वृद्धि कर देते ह। इस प्रक्रियामें हमारे देहातका संगठन जपन आप हो जाता है। और चूँकि यह सारी रकम गरीबसे गरीब लोगोंमें ही बाटना होता है अतएव यह योजना अतनी बड़ी दौलतके धायपूर्ण और लगभग समान बटवाराकी एक योजना बन जाती है। उसे बितरणके नतिव महत्त्वको और समझ लिया जाय तो चरखेका पक्ष अवाटप बन जाता है।

यंग अिडिया १७-२-२७

## २

### हरिजनोकी मददका साधन

अपन भ्रमणमें मन देखा है कि कताआ और बुनाआ अुन अघो गोमें से ह जिनसे हजारों हरिजनोका गुजारा होता है और अगर अुन्हें अच्छी तरह संगठित किया जाय तो और भी अधिक लोगका सहारा मिल सकता है। कुछ स्थाना पर अस जुलाहे पाय जात ह जिनकी गिनती अनेके घघके कारण अछूनोंमें की जाती है। वे ज्यादातर बिल्बुल मादी मोटीसे मोटी खानी बुानवाले ह। वे तेजीसे नष्ट हा रहे थ। लेकिन सादान आकर अन्हें बचा लिया और अुनक माये मालक लिअ माग पदा हो गयी। अस समय पता चला कि बहुतसे हरिजन परिवार असे भी ह जिनका गुजर कताआसे होता है। अस प्रकार खानी गरीबके जीवनमें दो तरहस बसाखाका काम दता है। वह सबसे गरीब लोगकी मददगार है और अुनमें हरिजन शामिल हैं। य लोग

गरीबोंमें भी सबसे ज्यादा नि सहाय ह। जिसका कारण यह है कि बहुतस घघ जो दूमरे लोगोको अपलघ ह हरिजनोको अपलघ नहीं ह।

हरिजन २७-४-३४

३

## कताओका स्वास्थ्य-सबधी महत्त्व

अब तक जमा की गयी सारी गवाही बताती है कि कनाओ एक सुन्दर कता है और जिमकी प्रक्रिया अत्यन्त सुखद है। भिन्न भिन्न अकाका सूत निकान्तने लिय काआ यात्रिक त्रिया काफा नहीं है। जा कलावे तौर पर बताआ करते ह अन्हें मालूम है कि जब वाछित अक्का सूत निकान्तने लिय जगलिया और आखें अचूक ढगसे काम करती ह तब कसा आनन् मिलता है। कला अगर सच्ची कला है तो अुससे शान्ति मिन्ती चाहिये। साभर पहले मन सर प्रभागर पट्टणीका सबूत पेश किया था कि दिनभरकी थकानके बाद चरखा चलानमे अुनक ज्ञानतनुआको कितनी शान्ति मिन्ती है और अुन्हें कसा गहरी नाद आता है। अब वहनके बुरी तरह अशात ज्ञानतनुआको कातास कितनी राहत मिली जिस बारेमें अुनके पत्रके कुछ अंग नीचे दिय जाने ह

जब म भागकर अपने कमरेमें गयी और अघेरमें शरीरको सिरसे पाव तक बचन बना रही अपनी भयकर पीडासे जज्ञती रही मन कुछ समय तक ता प्रायना की और शान्त होनका प्रयत्न किया और फिर म चरखेकी तरफ मुडी। मुझे अुममें जादूकी तरह आराम मिगा। अुसकी शान्त और नियमित सुरीली गतिन मुझे तुरत स्वस्थ और स्थिर कर दिया और अुसकी सवाक विचारो मुझ अीश्वरके अधिक निकट पहुचा दिया।'

यह महज अक-दा व्यक्तियोका अनुभव नहीं है परतु कअी शानतनेवालोका अनुभव है। लेकिन यह कहनमें कोअी लाभ नहीं कि

अनक लाग्याका कातनम आन मिश्रता है जिमलिअ सभीका मिलगा।  
बिचकारी बलिया कय मानी जाती है मगर सभी नुस नहा अपनान।

मग अशिया २७-५-२६

य याक पास्य वाड मि० फ्रीमनन पूछा क्या आपन यह  
माका है कि चरखा रणिके जिगजका भी काम दता है?

गाधीजीन अत्तर लिया हा मन जिम विषय पर ग्लासगोके  
एक अध्यापकका मजा हुआ कुछ माहिय पया है। बगालके एक  
जवमर प्राप्त ज सुपरिस्टेण्टन भा मुझ लिता था कि चरखा किस  
तरफ पागगाक जिगजमें अपयागी सिद्ध हुआ है स्वाम तौर पर अमकी  
ज्यबद्ध गतिके शांतिगयन अमररे कारण।

मि० फ्रीमन वाड य अमराकियाका यह ममजाना चाहता हू  
कि चरखा एक विचार करानवाग मय है। अपन कताओ वगमें  
मन ल्या कि अगर म चरखा कर अयेग बठना हू तो यह मुझ  
बिचारकी प्रणता नेता है। अगर अमराका उय कातन ल्यों तो वे  
कुछ जिहार कर सकत ह। क्याकि अध्या अन्हें सोचनका बिल्कुल  
समय नहा मिश्रता।

हरिजन १७-११-४६

#### ४

### कताओ और ब्रह्मचय

जो ब्रह्मचयका पालन करना चाहते ह उनके लिअ भी म चरखा  
पेग करता हू। यह नफरत वगनकी चीज नहा है क्याकि य अनुभवकी  
बात है। जो आमी अपन बिकाराका वगमें खना चाहता है अस  
गान रहनकी जरूरत है। असकी सारी नीतरी अगाति मिट जानी  
चाहिय। और चरणका गति अितनी शांत और मौम्य है कि जो जिमे  
पूरा ब्रह्मचय चगने ह उनके सारे बिकार गान्त हा जात ह। जिसे  
बलाकर मैं अपना शोब गमन कर सका हू और किसी प्रकारका

प्रमाण म कभी दूसरे ब्रह्मचारियोंका दे सकता हू। अलबत्ता, जिन व्यक्तियोंको मूख और अज्ञान बताकर उनका गिल्ली बुडाना आमाम है मगर अतमें यह मौला सस्ता नहा पडगा। कारण हसी बुडानवाग आवाम आकर अेक जमे सुन्दर साधनका या बठना है जिमसे वह अपन विकाराका गान करे बल और शक्ति प्राप्त कर सकता है। जिसलिअ म जिन पकिनयाको पत्नवाठ प्रत्यक् युद्ध और युवनीस खाम तीर पर सिकारिअ करता हू कि वे चरखेका जाजमाअिग करक दें। मुन्हें मालूम हा जायगा कि कातन बठनके धाडी दर बाद ही अनब विकार मिटन लगत ह। मेरे कहनेका मतलब यह नही है कि कताभी बन्द कर लेनके बाद भी जिनभर विकार गान रहग कारण मानव विकार हवास भा जल्नी चलनवाले हाते ह और जुहें पूरी तरह बगमें रखनके लिअ अपार धीरजकी जरूरत होनी है। मरा ता जितना ही दावा है कि स्थिरता प्राप्त करनेक लिअ चरखा मुन्हें जब जबर दस्त साधन प्रतीत हागा।

यग अलिया २७-५-२६

५

## कताभी और सहयोगी प्रयत्न

कताभी कराडाका सगठन करके मुहें जे सन्मिगित सहयागी प्रयत्नम ल्या दगा लावकी शक्तिकी रक्षा और अपुपयाग करेगा और कराडा जावनाकी मातृभूमिकी सवामें समपित करेगा। जिसक मिवा अितन बडे भगीरथ वादका करनेमे हमें स्वय अपनी शक्तिका साक्षात्कार हा जायगा। असका यह अय हागा कि कताभी द्वारा मामन आन वाली अगश्य पेचीदा समस्याआ और तपसीलकी राता पर हमारा पूरा काम हा जायगा। अुनाहरणाय हम पाभी पाभीका हिमाव रचना भीखेंग दहातमें स्वच्छता और स्वास्थ्यपूण स्थितिमें रहना सालेंग अपन रास्तेकी स्वावगावा दूर करेंग जित्यादि। कारण अगर हम य सब बातें नही सीखेंग तो य काम पूरा नग कर सकेंग।

अस प्रकार चरखसे हमें अपन भीतर यह क्षमता पदा करनेका साधन मिल जाता है।

यग अिडिया २३-५-२६

पिछेके साल मद्रासमें जब सहकारी समितिमें भाषण देन दुअे मने कहा था कि हाथ-कताजी द्वारा मैं ससारकी सभसे बनी सहकारी समिति कायम करनेकी कागिण कर रहा हू। सहयोग तो गुम्स ही हाना चाहिये।

जुगहरणके लिजे किसी सामान्य केंद्रकी कायपद्धतिका लीजिये। केन्द्रीय कार्यालयमें कतिनोने त्रिअ कपास अिकटठी की जाता है। सामान्य केंद्र पर हा लाग्नवाला स्थिया कपासको लोती ह। फिर अुसे पिजाराको बाट दिया जाता है जो अुस पूनियाकी गकलमें लोण देते ह। पूनिया कतिनाको बाट दी जाती ह। कतिनें अपना अपना सूत हर मण्हाह ग लेती ह और कलेमें अपनी मजूदरी और नारी पूनिया ल जाता ह। अस तरह आया हुआ सूत युननेके लिज जुगहाको दे िया जाता है और खादीके रुपम विकनके लिअ वापम ले लिया जाता है। यह खादी पहननवालो अर्थात आम लोगका बची जाती है। अस प्रकार मुख्य कार्यालयको जाति रग या धमका भद रख बिना अनेक जोगाके साथ सग सजीव सपक रखना पढता है। कारण, केंद्रको न कोअी मुनाफा करना हाता है और न मान्ताजाके सिवा किमाकी चिन्ता करनी पडती है। केंद्रको अपयोगी बनना हा ता हर प्रकारकी सफाअी रखनी पती है। केंद्र और अस बिगाम सगठनके जगति वाच गद आध्यात्मिक या नतिक सबब होना है। असलिअ कताअी केंद्र अक सकारी सस्या होता है जिसके सस्य लोन्नवाले पीजनवाठे कातनेवाले बननवाल और खरान्नवाठ हान ह और वे सब परस्पर सद्भाव और सवाके समान बचनमें बध होते ह।

यग अिडिया १०-९-२६

## कताओ — अकमात्र सावत्रिक अद्योग

अपयोगी मालूम होनवाते सारे अद्योगका जेक-अक कर छाटते छाटते हम अिस अनिवाय परिणाम पर पहुचते ह कि लावा लागकि लिअ अकमात्र सावत्रिक अद्योग कताओ ही है और कोओ नहा । अिसका यह अय गहा कि दूसरे अद्योगका काओ महत्त्व नहा या वे निबन्धे ह । मच ता यह है कि व्यक्तिगत दृष्टिकोणसे काओ भी दूसरा अद्योग कताओम ज्याग आमदनी दावाग होता है । घडिया बनाना बेगव अक अत्यक आय-बधक और माहक अद्योग हागा । मगर अुसमें कितन आओमी गग सक्ते ह ? क्या वह लावा ग्रामीणके अिजे किमा कामका है ? परंतु यदि दहाता अपने घरकी पुनरचना कर लें, अपने वापतादाकी तरह फिरसे गहना गुरू कर दें अपन बेकारीके समयका सदुपयोग करन लगे ता और मार अद्योग अनन आप पुन जीविन हो जायेंगे । हम आगे अिसलिअ नही वर पाने कि हमारे पास लागाके चुनावके अिजे अद्योगकी असा सूची है अिसम कोओ वर्गीकरण नग है जब कि हमें मालूम हाना चाहिय कि कवल जेक ही अद्योग जमा है जो मचके नामने रगा जा सक्ता है । समव है सब अिस न अपना सकें । जा और किमी अद्योगका अपना सक्ते हो और अपनाता चाहते हा वे गौकसे अुसे अपना लें । मगर राष्ट्रक साधन जेक हाथ-कताओके अद्योग पर ही कद्रित हान चाहिये क्याकि अिस सत्र तुरत अपना सक्ते ह और अधिकाग अग अय किआ अद्योगको नही अपना सक्ते ।

मग अिटिया ३०-१-२६

साणी स्वावलंबा आत्म निर्भरता और स्वतंत्रताका प्रतीक है — न कवल व्यक्तिओ अपवा ममूहके अिजे सम्प्रत्याया अपवा जातियाके अिअ बल्कि सारे राष्ट्रके अिजे । यह अमा आन्वोलन है अिसमें अमीर



गराव स्वा-पुसप लडक लडकिया हिंदू मसलमान जासाओ पारसी और यहुदी जगज जमराका जर जापाना मभा भाग सक्त ह घाद व भारतका भला चाहत ह जीर गणपकी भावनामे मुक्त हाता चाहत ह। जिस प्रकार यह अक अनाथा आल्लाल है। यह कुछ गंगा मा बहुतम लागक लिअ ही अच्छा नहा है बल्कि सबके लिअ अच्छा है।

यग जिगिया १०-२-२७

७

### श्रमका गौरव सिखानेके लिअे कताओ

म दहातमें जितना गरा धमना ह अनता हा बडा आघात दहातिवास भिन्न पर अनदी आखामें मूनापन देवकर मुज लयता है। अपन बलाक साथ-साथ मजदूरी करनक सिवा अनुके पास और काआ काम नहा हावा जिमलिअ वे भी गगभर बल जस बर गय ह। यह बडास बग दुखद घटना है कि लावा गगान हायम काम लना छोड दिया है। प्रकृतिन हम मानव प्राणियाको जा वस्तु प्रानन का है अस बददीस बरबाद करनका द वह हमें भयकर रूपमें द रहा है। हम भिम देनका पूरा जुपयाग नहा कर रहे ह। हायाका बगिया यथ जन घागसा वस्तुआमें स है जा हमें जानबरास अलग करनी ह। हममें स लावा अर्द्धे परोकी तरह जिस्तेमा करले ह। नतीजा यह हाता है कि प्रकृति गरीर और मन दोनोको नूखा मारता है।

जिस विचारहीन बरवादीका केव बरवा हा राव सक्ता है। यह काम वट अभी तुरत और स्पया या बढिकी असाधारण पूजा लगाय बिना ही कर सकता है। जिस बरवादीने कारण हम गगभग अधमरा हातमें जा रह ह। जिसका पुनरुद्धार हा सकता है अगर हर घर फिरम कताओका कारखाना बन जाय और हर गाव वनाओका कारखाना हो जाय। भिमक साथ साथ प्राचीन गैहानी कता और दहाता सगातका भा तुरत पुनर्जीवन हो जायगा। आधे प रहन

वादे राष्ट्रमें न घम हो सकता है न बला हा सकती है और न वह अपना सगठन हा कर सकता है।

यम डिडिया १७-२-२७

सादीका अब बग मित्तन है। खानी अून गवा आगोंकी गौरव पूण अुद्याग प्रान्त करता है जा बपमें गगमग चार मास बेकार रहते ह। अिम कामस जो आमना हाती है अुसे छोड दें ता भी वह स्वय अपना पुरस्कार है। क्याकि अगर लागा लागानो मजबूरन आल्ती बनकर रहना पडे ता अवश्य ही अूनका आध्यात्मिक शारारिक और मानसिक मृत्यु हा जायगा। चरखमे गला गरीब मित्रयाका दजा अपन आप बग जाता है। अिगलिअ चाहे गगाका मित्रका बपडा मुफ्त लिया जाता हा तो भी अूनरी सच्चा भगओ अिसीमें है कि वे अुम लनस अिनकार कर दें और अपनी महननका अुपज खानीका पमद करें।

हरिजन १०-१२-३८

८

## ग्रामोद्धारके लिये कताओ

चरखा मुझे जनमाधारणकी आगाआका प्रनाक मातूम हाता है। चरखेका गोकर अुन्हाने अपना आजादा जैमा कुछ भी वह था खो दी। चरखा देहातका खेताकी पूर्ति करता था और अुम गौरव देता था। वह विधवाआका मित्र और सहारा था। वह अुनियेका आत्स्यम बचाता था क्याकि चरखमें पहन और पीछेके सब अुद्याग — गगाओ विजाजी ताना भरना माड लगाना रगाआ और बुनाआ — आ जात थे। और अिनस गावक बग्रा और अुहार काममें लग रहन थ। चरखसे सान लाग गाव आत्म निभर रन थे। चरखक चने जान पर तेलघानी आदि दूसरे ग्रामोद्याग भी खतम हा गय। अिन धवाकी जगह और किमी धधन नहीं ली। अिसलिअे देहातस अूनर विविध

धधे अनकी अुत्पादक प्रतिभा और अुनसे होनवाली षोडी आमदनी सबका सफाया हो गया ।

जिन दूसरे देगोके भी ग्रामोद्योग नष्ट हो गय अुनके अुत्पाहरणसे हमारु काम नही चलेगा । क्वाकि वहाके ग्रामीणाको क्षतिपूर्ति करनवागी कुळ सुविधाअें प्राप्त थी जब कि भारतके देहातियाको वसी कोअी सुविधा प्राप्त नहा थी । पश्चिमके अुद्योग प्रधान देग दूसरे राष्ट्रोका नापण कर रहे य । हिन्दुस्तान तो खुद एक शोषित देग है । अिस लिअ अगर ग्रामीणाको फिरसे अपनी स्थितिमें वापस आना हो तो सबसे स्वाभाविक बात जो सूजती है वह यह है कि चरख और अुसके साथ लगी हुअी सब बाताका पुनरुद्धार हो ।

यह पुनरुद्धार तब तक नही हो सकता जब तक बुद्धि और देश भक्तिवाल नि स्वाय भारतीयकी अक सेना न हो और वह चरखका सदश देहातमें फलान और अुनकी निस्तेज आखामें आशा और प्रकाशकी विरण जगानके लिअ दत्तचित्त होकर काम न करन गे । यह सही ढगक सहायग और प्रीतिभावा जवरत्त प्रयत्न है । अुससे चरखकी शात परतु प्राणदायक गतिकी तरह ही अक शात और निश्चित प्राति आती है ।

चरखके कामके २ वषके अनुभवन मुश अपनी अिस बातक सही होनका विश्वास करा दिया है । चरखन गरीब हिन्दुओ और मुसल मानाकी लगभग अकसी सेवा की है । अुसक द्वारा हमन बगर गोरगुल मचाय अिन अाखा देहाती कारीगरोकी जबमें लगभग ५ करोड रुपया पहुचाया है ।

अिसलिअ म नि सकोच कहता हू कि सब धर्मोके जनसाधारणकी अृष्टिसे चरखा हमें स्वराय तक पहुचा देगा । चरखसे देहाताकी फिरसे अपना अुचित स्थान प्राप्त हो जाता है और अूच नीचके भदभाव मिट जाते ह ।

## कताओ — अहिंसाका प्रतीक

१०१९ में भारतके स्वतंत्रता प्रमिवाका यह बताया गया था कि स्वराज्यका अकमात्र और अचूक अुपाय अहिंसा है और अहिंसाका प्रतीक चरखा है। चरखको राष्ट्रीय झंडे पर असका गर्वीला स्थान १९२१ में मिला। मगर अहिंसा भारतके हृदयमें गहरी नहा पठी थी जिससे चरखका अपना अुचित स्थान बभा नहा मिला। और वह तब तक हरगिज नही मिग्गा जब तक काप्रसजनोरे विगाल समूहमें अहिंसाके प्रति सजीव श्रद्धा पदा न हो जायगी। जब वे यह श्रद्धा पदा कर गे तब किमी दलीलकी जरूरतक बिना अुहें खुद पना लग जायगा कि चरखके सिवा अहिंसाका और काओ प्रतीक नही है और अुसक सावधिक प्रचारके बिना अहिंसाके प्रत्येक लान नही हाग।

हरिजन, १-४-४०

चरखा व्यापारिक युद्धकी नही व्यापारिक शाक्तिकी निगानी है। अुसका सत्ता सत्ताके राष्ट्राके लिजे दुभावका नही परतु सदभाव और स्वावलम्बनका है। अुस मत्ताकी शाक्तिके लिअ खतरा बनन या अुमक साधनाका गोपण करनवाली किसी जलसनाक सरक्षणकी जरूरत नही हागी परतु अुमे जरूरत हागी अस लावा लोकाक धार्मिक निश्चयकी जो अपन अपने घरामें अुसी तरह सूत कात लें जस आज वे अपन अपन घरामें अपना भोजन का लेत ह। मने करनके काम न करके और न करनके काम करके अमी अनेक मूर्खे की ह, जिनके लिजे म भावी मनानोरे गापका भाजन बन सकता ह। मगर मुझ विश्वास है कि चरखका पुनरुद्धार मुजावर तो म अुनके आगाविका ही हकदार बना ह। मन अुस पर सारी बाजी लगा दी है क्याकि चरखके हरअक चक्करमें गानि सम्भाव और प्रेम भरे ह।

यग अिडिया ८-१२-२१

मेरा यह नवा है कि (वाणी और दूररे क्राम-अयोगाका पुनरुद्धार करने) \* हम अितना विश्वास कर गें कि आम लोगोके दिलमें साम्यी आर घरेलूपनका जा आदर बसा हुआ है असके अनुरूप हम राष्ट्रीय जीवनका पुनर्निर्माण कर सकेंगे। फिर हम उसे साम्राज्यवादीमें नया घसीट जायेंगे जिसकी बनियात समारकी कमजोर जातियाके शापण पर है और न हमें असा चकरानवाणी और भौतिकतावाणी सस्कृतिको स्वीकार करना होगा जिसका रसा शान्तिपूर्ण जावनका लगभग अमभव बना दन वाता जल्सेना और हवाआ सना करती है। जिसके विपरात फिर हम अुस साम्राज्यवादको परिष्कृत करके राष्ट्रीका असा सघ बना लेंगे जिसमें व मिलेंगे तो समारका अरना अुनम वस्तु दनक शिअ और जगत्के कमजोर राष्ट्री या जातियाका पगुलक बजाय स्वय कष्ट अठाकर रसा करनके लिअ। यह कायापलट करवकी पूण सफलताके बाद हां हां सक्ता है। भारत असा मन्ने देनके योग्य तभी हो सक्ता है जब वह अत और कल्पकी अपनी दा मुख्य जावयकताअर्कि बारेमें आत्म निभर हाकर प्रलोभनसे अछता और अिमलिअ बाहरी आक्रमणसे सुरक्षित हो जाय।

यग जिडिया २९-६-२२

यू याक पास्ट वाले मि० अण्डु फामतन पूठा क्या अमरीकाके लिअ करवका कोजी सन्ना है? क्या व अणुबमक जवाकी हथियारका काम दे सक्ता है?

गाधाजीने उत्तर दिया मुस जफर लगता है कि अमरीका और साग दुनियाक लिअ अमके पास सदेग है। मगर वह तब तक ननी दिया जा सक्ता जब तक भारत समारका यह दिखाने कि अुसने करवको पूरा तरहम अपना लिया है। आज ता य बात ननी है। कमूर चरवका नहा है। मझ जरा भा सन्नेह नहा कि भारत और समारकी रसा करवमें ही निहित है। अगर भारत यवाका गनाय बन जाता है ता म कहुंगा कि भगवान जातका भारतस वचाय।

\* काफकट भारतक गल हमारे है — सगाक।

जुन्हान अपनी बात जारी रखने दृजे कहा, भारतक पाम अेक अत्यन्त युक्त बुद्देश्य है। असे दुनियामें दोस्ता और अमन कायम करना है। अमन निरे सम्मानस म्यापित नही हो सकता। हम सब देखत ह कि सम्मेलनोंक होत दृजे भी गतिका भग किया जा रहा है।

मि० फ्रीमन बोले 'अब काम सम्झतार मनुष्य और जेक अमरीकनकी हैसियतमे म जितना ही कह सकता ह कि भू हा बहुतमे अमरीकन वातनवागोका खदना कहें पर उस भी लाग कम नही ह जो गभीरतापूर्वक जिस पर विचार कर रहे ह। बाजा न काही चीज असी खाजनी पडेगा जो मसृष्टिको विनागस बचाय। जीवनमें मांगी गनी हागा।

गाधीजीन अुतर लिया मानव यकित्तवका बर्करार रखनेका और काआ अुपाय है ही नही। Unto This Last — सर्वोदय — अिम ग् प्रयागमें जा अब ममाया हुआ है म अुस सबका हामी हू। जुन पुस्तकम\* मरे जीवनन पलंग खाया। हमें छटसे छाने आदमाके साथ बसा ही बरताव करना हागा जमा हम चाहत ह कि दुनिया हमारे साथ कर। सबका समान अवसर मिलना ही चाहिय। अवसर मिलनेमे हरअक मनुष्यके आध्यात्मिक विकासकी समान सभावना है।

जुन्हान फिर पूछा, क्या आप चाहत ह कि अमरीकन लाग चरखको अपनायें ?

गाधीजीने जवाब लिया हा। मगर मुझे मांूम नहा कि जब तक चरखा यहा अच्छी तरह स्थापित न हा जाय तब तक वहा अिस कोही अपनायगा या नहा। अिमव विपरात यति भारत अपन कपडक अिम अिम अगोकार कर ता है ता मुझ दुनियाको कहनकी जरूरत नहा हागी। वह अिसे अपन आन स्वाकार कर गी। आजकल ता पश्चिमा यत्रास भारत पर अमा म्मता हा रहा है कि भारतक अिअे

\* जान रस्किन दृत अण्डु अिम लास ।

मुझका सफलतापूर्वक सामना करना चमत्कारसे कम नहीं होगा। मुझ स्वीकार करना चाहिये कि आज तो सब बागें अिससे झुलटी हो रही ह।

मगर आपन आगा ता नही छोडी है ?'

म आगा छोड नहा सकता जब तक मुझ अिस चेतन शक्तिमें थडा है जो हमारे न जानत हुआ भा हमारे साथ है।

हरिवन १७-११-४६

१०

क्या बुद्धोगवादसे बचा जा सकता है ?

खट्वरक जेव बुलट प्रेमीके पत्रका यह अण लिखस्वीक माथ पढ़ा जायगा

मेरा खट्वरमें विश्वास है। मुझे खट्वरका मित्रान दायेकी तरह साफ नजर आता है। वह जीवनको साफ बनाकर शुद्ध करता है। वह हमें गरीबके साथ सेवाके बंधनमें बाधता है। जो दक्षिणता आज राष्ट्रक गरार और आत्माका हनन कर रहा है बुद्धसे बचनेका वह एकमात्र उपाय है। क्याकि कमसे कम जहा तक लाग्वा निरक्षरका मवाल है शरीरक बिना आत्माका बोझी प्रदत्त ही नहा है। मिद्ध यागा और यागक मिमायनी आत्माकी बातें कर सकत हं मगर लाग्वा गगाके लिअे शरीरक बगर आत्मा अेक मजाक ही है। अंतमें, चरखा ही अुन हिमापूण सामाजिक बुद्धातसे हमारी रक्षा कर सकता है जिनक कारण यूरोपमें आजकल रक्तपात और आपसी हिमा-द्वेषका वा-मा आ गयी है। चरखस अूपरी वग और जनसाधारण अेक-दुमरेक निकट आते ह और जब तक भारत अुसे अपनाय रहेगा, तब तक यहां बाल्गाविस्म और अिसी तरहके दूसरे हिमापूण बुद्धात अमभव होंग। अिन बातसे मुझ चरखकी अत्यंत आवश्यकताका यकीन होता है। परंतु कठिनाअी अेक ही है। क्या चरखा चल सकता है ? क्या वह सफ हो सकता है ? क्या हम चरखेका हर धरमें अुसका पुराना पवित्र स्थान फिरस लिा सकत ह ? क्या अिसमें बहुत देर नही हा गयी है ? और फिर बर्दाण्ड रम-



जैसे लोग कहते हैं कि अद्योगवाद प्रकृतिकी शक्ति जसा अब बर है जो हमारे चाहन या न चाहन पर भी भारत पर छा जायगा। य लोग कहते हैं कि अद्योगवादके लिए हमें अपना हल निकालना चाहिये। वे जो कुछ कहते हैं उसमें सचायी है। अद्योगवादकी बात सारी दुनियामें आ रही है। भारत चाहे तो भा क्या वह अलग रह सकता है और अद्योगवादके पजसे बच सकता है ?

खहरके य प्रमी जिस तकमें अति-छापूवक और अपरिहाय रूपमें बह गय है वह शतानकी पुरानी चाल है। वह हमें हमारे साथ आधा दूर चरकर फिर अचानक सकत करता है कि अब आग चन्से कोभी फायदा नही और बताता है कि आग पगति सभव नही है। वह धमकी स्तति करता है मगर तुरत कह देना है कि असकी प्राप्ति मनुष्यके बूतेकी बात नही।

बात यह है कि जिन भाषीको जो कठिनायी प्रतीत हुयी है वह बनी है जो सुधारके सामन हर कदम पर आती है। क्या असत्य और दम समाजमें याप्त नही हो गय है ? फिर भी जो लोग सत्यकी अतिम विजयमें विश्वास रखते हैं वे सफलताकी पूरी जाशा रखकर उस पर डट रहते हैं। सुधारक समयसे कभी हार नही मानता क्याकि वह जिस पुरान शत्रसे जूझता है। बशक, अद्योगवाद प्रकृतिके बल जसा है मगर मनुष्यमें प्रकृतिकी काबूमें रखने और उसके बलाका जीतनकी शक्ति है। उसके स्वाभिमानका तकाजा है कि वह जवरदस्त कठिनायियोंके होते हुए भी अपना निश्चय दृढ रखे। हमारा दैनिक जीवन इसी प्रकारकी विजय है। किसान जिस बातका खूब अच्छी तरह जानता है।

अद्योगवाद जिसके सिवा और क्या है कि अब अल्पसंख्यक समुदाय बहुमत पर अपनी सत्ता चलाय ? असमें कोभी आकषक बात नही है और न उसमें कुछ अनिवाय है। अगर बहुसंख्यक लाग सिर्फ नहा रहनका निश्चय कर लें और अल्पमतक प्रशमनाङ्को ठकरा दें तो अल्पमतक हाथमें बुराओकी कुछ भी ताकत नही है।

मानव-स्वभावमें विश्वास रखना अच्छी बात है। म तो जिंदा ही अिमलिअे हू कि मुझमें यह श्रद्धा है। मगर अिम श्रद्धाक कारण म अितिहासके अिस तथ्यकी तरफस आखें बन् नहीं बर लेता कि यद्यपि अतमें तो सब भग्न ही हाता है परन्तु अबसे पहल व्यक्ति और गल् कहानवाले समूह नष्ट हो चुके ह। रोम यूनान, बबीलोन मिस्र और अय कभी राष्ट्र अिस बातके शाश्वत प्रमाण ह कि अपन दुष्कर्मसे राष्ट्राका पहले भी नाश हुआ है। हा यह आगा रखी जा सकती है कि यूरोप अपनी मूक्षम और वनानिक बुद्धिके कारण प्रत्यक्ष सत्यको पहचानकर अपन बदम समय रहते पीछ हटा देगा और अनातिकारी अुद्योगवादमें स छूटमका काअी रास्ता निकाल लेगा। यह जरूरी नहीं कि वह पुराने जमानका नितान्त सादगीका ही फिरसे अपनाये। मगर यह पुनगठन असा जरूर होगा कि जिममें ग्राम-जावनका बाबूवाला रहेगा और पशुव तथा भौतिक वन जायात्मिक बलके भातहत होगा।

अतमें हमें यूठी तुठनाअान चक्करमें नहीं जाना चाहिय। यूरोपियन रबकाके लिअ अनुभव और सही जानकारीके अभावकी बाधा है। अगर व यूरोपके अुदाहरणा परमे सामान्य परिणाम निकालेंगे तो वे अक सीमामे जाग हमारा पथप्रदान नहीं कर सकते। क्पाकि अुन अुदाहरणोका भारतीय परिस्थितिक साथ पूरा साम्य नहीं है। यूरोपमें हिंदुस्तानक जैसे हागत नहीं ह। इसमें भी नहीं हैं। अिसलिअ जा बात यूरोपके लिअे नहीं हो यह जरूरी नहा कि वह भारतके लिअे भा सही हो। हम यह भी जानते ह कि प्रत्येक राष्ट्री अपनी विशपतामें होनी ह और अपना व्यक्तित्व होता है। भारतकी भी अपनी विशपता और व्यक्तित्व है। और अगर हमें अुमकी अतक याधियोंका सही अिगज ढूंढना है तो हमें असकी प्रकृतिकी तमाम विरक्षणताआका ध्यानमें रखकर अुमके लिअे नुसखा खोजना होगा। मरा दावा है कि यरापक ही अयमें भारतका अुद्योगीकरण बरना असभव बातके लिअे कोगिा करना होगा। भारतने बड्डतम तूफानाका सामना किया है। यह सच है कि हर तूफान अुस पर अपनी छाप छाड गया है परन्तु भारतने अब तन अपन व्यक्तिवकी डटकर रक्षा की है। भारत सगारके अुन

जैसे गग कहते ह कि अद्योगवाद् प्रवृत्तिकी शक्ति जसा अक बरु है जो हमारे चाहन या न चाहन पर भी भारत पर छा जायगा। य लोग कहते ह कि अद्योगवादके लिअ हमें अपना हल निकालना चाहिय। वे जा कुछ कहते ह अुसमें सचाभी है। अद्योगवादकी वाद् सारी दुनियामें आ रही है। भारत चाहे तां भा क्या वह अलग रह सकता है जोर अद्योगवादके पजसे बच सकता है ?

वहूरके य प्रेमी जिस तकमें अनिच्छापूवक जोर अपरिहाय रूपमें बह गय ह वह शतानकी पुरानी चाल है। वह हमेंगा हमारे साथ आधा दूर चलकर फिर अचानक सवेत करता है कि अब आग चलनसे कोआ पायदा नही जोर बताता है कि आग प्रगति सभव नही है। वह धमकी स्तुति करता है मगर तुरत कह देता है कि अुसकी प्राप्ति मनुष्यके बूतेकी बात नहा।

वात यह है कि जिन भाओको जो कठिनाओ प्रतीत हुआ है वह जसी है जो सुधारके सामन हर कदम पर जाती है। क्या असत्य और दम समाजमें व्याप्त नही हो गय ह ? फिर भी जो लाग मत्यकी जतिम विजयमें विश्वास रखते ह वे सफलताकी पूरी आशा रखकर जस पर डट रहत ह। सुधारक समयसे कभी हार नही मानता क्यकि वह अिस पुराने गनुसे जूयता है। बगक अुद्योगवाद प्रवृत्तिके बल नसा है मगर मनुष्यमें प्रवृत्तिको कावूमें रखन और अुसके बलाका जीतनकी शक्ति है। अमके स्वाभिमानका तकाजा है कि वह जबरदस्त कठिनाजियके होते हुअ भी अपना निश्चय दढ रख। हमारा दनिक जीवन अिसी प्रकारकी विजय है। किसान अिस बातको खूब अठा तरह जानता है।

अुद्योगवाद जिमके सिवा और क्या है कि अब अल्पसह्यक समुदाय बन्मत पर अपनी सत्ता चनाय ? असमें कोओ आकपक बात नही है और न अुसमें कुछ अनिवाय है। अगर बहुसह्यक गग सिफ नही बहनका निश्चय करेँ जोर अलगमतके प्रशाभनाको ठुकरा दें तो अल्पमतक हायमें बुराओकी कुठ भी तावत नहा है।

मानव-स्वभावमें विश्वास रखना अच्छी बात है। म तो जिन्ना ही अिसल्लिअ हू कि मुझमें यह श्रद्धा है। मगर जिस श्रद्धाके कारण म अितिहासके अिस तथ्यकी तरफम आगें बन्न नहीं कर एता कि यद्यपि अतमें ता सब भला ही हाता है, परतु अबसे पहले व्यक्ति और राष्ट्र कहानवाये समूह नष्ट हो चुके ह। रोम यूनान, वबीलोन मिस्र आर अय कभी राष्ट्र अिस बातके शाश्वत प्रमाण ह कि अपने दुष्कमसत राजाका पहले भी नाग हुआ है। हा यह आग रखी जा सकती है कि यूगप अपनी सूक्ष्म और बनानिक बुद्धिके कारण प्रत्यक्ष सत्यको पहचानकर अपने काम समय रहते पीछे हटा गेगा और अनीतिकारी अुद्योगवादमें स छूटनका कोभी रास्ता निकाल लेगा। यह जरूरी नहीं कि यह पुराने जमानकी नितात सादगीको ही फिरस अपनाये। मगर यह पुनगटन असा जहर होगा कि जिममें ग्राम-जावनका वागवाला रहेगा और पशुवत् तथा भौतिक बग आध्यात्मिक बलक मातहत होग।

अतमें हमें सूठी तुलनाओके चक्करमें नहा आना चाहिय। यूरोपियन लखकाके लिअ अनभव और सही जानकारीके अभावकी बाधा है। अगर व यूरोपक अगहरणा परसे सामाय परिणाम निकालेंगे तो वे अक सामामे जाग हमारा पयप्रदशन नहीं कर सकते। क्याकि अुन अुदाहरणाका भारतीय परिस्थितिक साथ पूरा साम्य नहीं है। यूरोपमें सिन्दुस्तानके जमे हागत नहीं ह। रुममें भी नहीं ह। अिसल्लिअ जो बात यूरोपके लिअ नहीं हा यह जरूरी नहीं कि यह भारतके लिअे भी सही हो। हम यह भी जानत ह कि प्रत्येक राष्ट्रकी अपनी विशपतायें होती हं और अपना व्यक्तित्व होता है। भारतकी भी अपनी विशेषता और व्यक्तित्व है। आर अगर हमें अुमकी अनेक पाधियोका सहा अिगज दूना है ता हमें अुमकी प्रकृतिकी तमाम विलम्भणताआका ध्यानमें रखकर अमके लिअे नुमखा वाजना हागा। मरा दावा है कि युरोपके ही अयमें भारतका अुद्योगीकरण करना असभव बातके लिअे कोशिश करला होगा। भारतन बहुतने तूफानाका सामना किया है। यह सच है कि हर तूफान अुस पर अपनी छाप छाड गया है परन्तु भारतने अक तब अपने व्यक्तित्वकी डटकर रक्षा की है। भारत ससारके अुन

घोड़से राष्ट्रोंमें से है जिहोन अनक सम्पत्ताआका पतन दखा है मगर जा खद बिलकुल बचे रहे ह। भारत जगतके अुन मुठ्ठाभर राष्ट्रोंमें से है जिन्हान अपनी कुछ प्राचीन सस्याआको कायम रखा है भूँ ही अन पर अधविश्वास और भूलकी काअी चन् गरी हो। परन्तु अुसन आज तक अिस बातका सन्तुत दिया है कि अुममें भूल और अधविश्वासका मल साफ कर लेनकी जन्मजात क्षमता है। अुसके गखो लोगोके सामन जो आर्थिक समस्या है अुसे हन् करनके अुसक मामध्यमें मेरी श्रद्धा आज जितनी सजीव है अुतनी पहल कभी नही थी।

यग अिडिया ६-८-२५

११

## अुद्योगवादसे वचना चाहिये

भारतको अिग्लण्ड और अमरीका जसा ही बनानका अथ यह है कि शोपणके लिअ ससारकी कुछ और जातिया और देगाकी लाज की जाय। अब तक तो यह दीखता है कि यूरोपक राष्ट्रान यरोपके बाहरकी सभी जानी हुआ जातियाको शोपणक लिअ बाट गिया है और अब खोज करनक लिअ काअी नय देग नही रन् गय ह। पश्चिमकी नकल करनकी कीर्णामें भारतका क्या हाल हागा? सच ता यह है कि पश्चिममें अुद्योगवाद और शोपणकी हन् हो चुकी है। जा गोग अिस रोगसे पीडित ह वे ही अगर अिन बराअियाका जिलाज करनमें असमय ह 'तो भला हम नौसिल्लुअ अुनस कम बच सकेंग? जसक बात यह है कि यह अुद्योगवादी सम्पत्ता अक रोग है क्याकि जिसमें बुराअी ही बुराअी है। हमें नारा और गल्लबि चक्करमें नहा फमना चानिय। मरा भापसे चन्तवाल जहाजा या तार-यन्त्रोस षगन्ग नही है। अगर वे अुद्योगवाद और जुमक साय और जा सारी बाजें आती ह अनके सहारक बिना रह सकत हो तो भूँ रन्। वे कोअी साध्य नहा ह। हमें जहाजा और तारक यन्त्रोके खातिर

शापण बर्दाश्त नहीं करना चाहिये। व मानवजातिके स्थायी कल्याणक लिये हरगिज अनिवाय नहा ह। भारतवप दूसरा सम्य ताआका आत्रमण सह सका है कयाकि वह अपने मू आधार पर दृढ रहा है। यह बात नहीं है कि जुसने परिवतन नहीं किये ह। परंतु जुसन जो परिवतन किय ह उनमे जुसके विकासकी वृद्धि हुआ है। लेकिन अद्योगवादका स्वीकार करना विपत्तिका निमंत्रण देना है। वतमान कष्ट बेगक असहनीय है। दारिद्र्यका नाग हाना ही चाहिये। परंतु अद्योगवाद अुसका अुपाय नहीं है।

भारतके भाग्यकी सिद्धि पश्चिमक खूनी रास्त पर चलनमें नहीं है। वह प्शातिक अहिंसक माग पर चलनसे ही हासिल हागी और असके लिये हमें सादा और धार्मिक जीवन अपनाना पडगा। पश्चिम स्वय थकावटके आमार जाहिर कर रहा है। अिर्मात्र भारतको जालसीकी तरह निम्पाय होकर यह नहा कहना चाहिये कि 'मैं पश्चिमकी बाढम बच नहीं सकता। अुस अपनी और दुनियाकी भलाअीक खातिर अिमका मुकाबला करनकी ताकत हासिल करनी ही चाहिये।

यग अिडिया ७-१०-२६

मुझे डर है कि अद्योगवाद मानवजातिके लिये अभिशाप सिद्ध होनवाला है। एक राष्ट्रका दूसरेके द्वारा शापण हमेशा जारा नहा रह सकता। अद्योगवादका सारा आधार अिस बात पर है कि आपमें शापण करनकी शक्ति हा विदेशी मडिया आपके अिय खुशी हा और प्रतिस्पर्धियाका अभाव हो। अिगलण्डके लिये य लाभ अिनदिन कम हो रह ह अिसीअि असके बेकारोकी सस्या बन्ती जा रही है। भारतीय बहिष्कार ता सिफ मन्त्रके काटनके घराबरा था। और अगर अिगलण्डका यह हाल है ता भारत जस किगाल दगको अद्यागीकरणसे लाभ होनकी आगा नहा हो सकती। अमल बात यह है कि भारत जब दूसरे राष्ट्राना शापण करन लगगा — और अुसका अद्यागीकरण हा जायगा तों वह जरूर शापण करेगा — तब वह अय राष्ट्रक अिय अभिशाप और गमारके लिये खतरा बन जायगा। मुष दूसरे राष्ट्रका शापण

करने के लिए भारतके अद्योगिकरणका विचार क्यों करना चाहिये ? आप भ्रिम दु खद स्थितिको तो देखिय कि हम अपन ३० करोड बकाराक लिए काम जुटा सकते हैं, परंतु अंग्लण्ड अपन ३० लाखके लिए नहीं जुटा सकता ! और असन सामन अंक असी समस्या खडी हो गयी है जिस अंग्लण्डके बडसे बड दिमाग भी हल नहा कर पा रहे ह । अद्योगवात्का भविष्य अवकारमय है । अंग्लण्डके अिअ अमरीका जापान फ्रान्स और जर्मनीके रूपमें सकल प्रतिस्पर्धी मौजूद ह । भारतका मुद्गाभर मिलान रूपमें भी अुमके प्रतिद्वन्ी विद्यमान ह और जस भारतमें जागृति हुआ है वस ही दक्षिण अफाकामें भी जागृति होगी कनाकि बहा तो प्रकृतिके दिय हुआ खनिज और मानव साधन भां बहुत अधिक विगाा ह । अफ्रीकाकी जबरदस्त जातियाके सामन बलवान अवज बिाकुठ पिडीसे दिखायी देत ह । आप कह्य कि जाखिर तो वे सरल जगली ही ह । वे सरल बगक हं भगर जगती नहा ह और चाल सालामें हा अफ्रीका पश्चिमी राष्ट्रोंके लिए अपना माल थापनका स्थान नहा रह जायगा । और जग पश्चिमके लिए अद्योगवात्का भविष्य अवकारमय है तो क्या भारतक अिअ और भी अवकारमय नहीं होगा ?

यग अिडिया १२-११-३१

## अद्योगवादसे बेकारी बढेगी

मेरी रायमें जब किसी कामको ग़ाबो आत्मी — जिनके पास जोर कोभी धधा नहीं है — आसानीसे कर सकत ह तब अुमे यत्राम करानेका तरीका हानिकारक है। जो करोडा आदमी भारतके मात ग़ाय गावामें और जन्नीस सौ मील लम्ब तथा पद्दह सौ माट चौड क्षेत्रफ़ामें फ़उ हुजे ह अुनके लिअे सग़ा ही यह अच्छा और सुरक्षित माग़ है कि जसे वे अपना भोजन आप तयार कर लेते ह वसे ही अपने अपन गावामें अपना कपडा भी खुट तयार कर लें। अतीत कात्स जिन देहातान जिस स्वतन्त्रताका अुपभोग किया है अुम वे कायम नहा रख सकते यदि वे जीवनका प्रायमिक आवश्यकताआका अुत्पादन अपन ही हाथामें नहा रखेंग। पच्छिमकी परिस्थिति परमे पदिचमी निरीक्षक जल्नीमें यह दलील दते ह कि जा बात अुनक लिअे सहा है वह भारतके लिअे भी सहा हाना ही चाहिये हालांकि कभी महस्वभूण वातामें वहाक हागत भिन्न ह। अयगास्त्रके नियमाको भिन्न परिस्थितियामें भिन्न प्रकारमे लागू करना चाहिय।

बेग़क यानिक पद्धति आसान है। परतु अिस कारण यह जरूरी नहा कि वह कोभी बरदान हा हा। नीचे अुतरना आसान है मगर अतर नाक भी है। हाथकी पद्धति कमसे कम प्रस्तुत मामलमें ता बरदान हा है क्याकि वह कठिन है। अगर यत्राका पागल्पन जारी रहा ता बहुत संभव है कि अक समय असा आ जाय जब हम अितन विवग और दुबल बन जाय कि जोस्वरकी गी हुआ जित्ना मगानका काममें ग़ना भू जानर लिअ हम अपन आपका कोसने लेंगे। ग़ावा आदमी खट्कू और ध्यायामने तदुस्त नही रह सकत। और अुन्हें अुपयागी अात्क और श्रम-नाय धधाक बजाय निक्कम अुत्पादक और महगे खट्कू और ध्यायामको क्यों अपनाना चाहिय? काय-परिवतन और ताजगा



लानके अिअ जाककल य चीजें ठीक ह। लेकिन जिस सुराकको पदा करनमें हमन कोअी भाग नही लिया हो अुसे खानक लिअ भूख पदा करनके खातिर य बातें अक जरूरी काम बन जाय तब वे हमें खटकन लगेंगी।

जब भारत स्वावन्वी आत्म निभर और प्रलाभना तथा गोपणते परे हो जायगा तब पूव या पश्चिमकी किसी भी शक्तिकी हिम्मन न हागा कि अमकी तरफ गच्छकी निगाहस देख और तब भारत महग गस्त्रास्नका भार वहन किय विना ही अपनको सुरक्षित महसूस करेगा। असका भीतरी अय-यवस्था बाहरी हमलेके खिलाफ असकी सबसे मजबत रक्षापकि होगी।

यग क्रिअिया २-७-३१

भारतका जीना है असका मतलब है कि अुसके करोडों लोगको जीना है। ससारमें और कोअी देग असा नही है जहा अितन लाखों आगाके पास सिअ आगिक काम घघा है और जिसकी सम्पता मुख्यत प्रामाण हाते हुआ भी जहा प्रति व्यक्ति मुक्किलसे दो अक जमीन है। असकी जरूरतका सारा कपण भाप बिजनी या चरखके पीछ रहन वानी मानव शक्तिके अगवा किसी दूसरी शक्तिस तयार कर केना वकारीका जोर भी गहरा बनायगा। असक्रिअ अद्योगीकरणका जब भारत अिअ गला आदमियोका सवनाग ही होगा।

वहा जाता है कि अद्योगीकरणकी अग क्रियाअके द्वारा प्रत्यक अमराकनका हसियत छत्तीस गुलाम रखनवाले आदमी जितनी हो गयी है। अगर हम अमरीकाको अपना नमूना बना के और प्रत्यक भारतायक अिअ छत्तीसक वजाय तीस गलामाकी ही गुजाअिग कर दें ता भी २१ करोड मानव प्राणियामें स तीस कराडको या सा आत्म हत्या कन्ना पडगा या अहें मार डाकना होगा। मैं जानता हू कि कुठ जागीरे देगभवन न सिअ अस क्रियाकी परवाह ही नही करेंग वकि असका स्वागत करेंग। व कहेंग कि असे ३ करोड निहल्य प्राणियाने वजाय जा मुक्किलसे चर फिर सकते हो अक करोड मुक्की

सन्तुष्ट खुशहाल और गस्त्रसजित भारतीयाका होना बेहतर है। इस तत्त्वज्ञानका भरे पाम कोश्री जबाब नहा है। क्याकि म ना हरिजन मनावृत्तिम परिपूर्ण होनेके कारण लागा ग्रामीणाकी दृष्टिम ही साच मक्ता हू और जुतमें नी सबसे गरीबाके सुख पर ही अपन सुखका आधार रख मक्ता हू और व जिन्ग रह सकें ता ही जिन्ग रहना चाह मक्ता हू। मेरी भाषी-भाषी बुद्धि अम छान्म चरखक छोम् तकुअफ जाग नहीं जा सकती जिस म अक स्थानमे दूसरे स्थान तक अपन नाय लेकर घूम फिर सकता हू और जिमे म आमानाम तपार कर मक्ता हू। जिम समयमें एक भाआन मुझ अवधारामें हात्में हा प्ररगित हुअे अेक लखसे निम्नगित परेयाफ गिन्व भजा है

कुछ बुधागामें बकाग कम करनेके लिये नाजियान जुन यथाका प्रयाग बन करनेकी आवा दी है जा मानव-श्रमकी जगह े रहे ह। जिम निपधावा पर टिप्पणा करने हुअे मचस्टर गार्डियन कहता है बकागका मकट बगनमें यत्राक प्रभावक वारेमें चर्चा ता बहुत हुश्री है गकि अुस वायस्व दन और यत्राका अुपयाग बंद कर देनेका काम नाजियाने हा किया है। थाडा ही समय हुआ जब तुनियाका जमनीमें यत्राके अधिक अुप याग द्वारा श्रमका बचानका चमत्कारी मफलताकी प्रगमा करनेका कहा गया था। अब सरकार यत्रामे जूजन पर तुगी हुजी है। वह या तो अिनक अुपयोगकी मनाही कर रही है या मालिकाको कामके घट कम करके ज्यादा जादमी रखन पर मजबूर कर रही है। गांधाजी कनाजी-मगीनक बजाय हाथ चरखको और मगानके करषके स्थान पर हाथ करषेका जारी करनकी जो वागिग कर रहे ह क्या हां जमनाक सिगार और काचके बुधागामें किया जा रहा है।

गार्डियन अतमें लिखता है कि अगर जमनीका नातिगाम्त्र मध्य वागन हो जाता है तो काश्री कारण नहीं कि अुमना अयगास्त्र भी मध्यका गिन क्या नहा हा जायगा। अिम आलाचनाका अुत्तर देत हुअे अब पत्रलखक गार्डियन में लिखता है

हिटलर गांधी और दूसरे लोग जो अलग अलग ढंगत अत्यादनका अस ह तक धीमा करनेका प्रयत्न कर रहे ह कि सब मालकी खपत हो जाय सम्भव है मध्यकालीन तराकाफा फिरसे अपना रहे ह परंतु हस्त-अद्योग न ता प्रतिगामी ह और न जगली। वे प्रत्येक प्रगतिशील प्रारम्भिक और माध्यमिक पात्र साल्मों सिखाय जाते ह। यदि अनाख और नय दिखाओ देनवाते शुपायासे भी जुचित अवधिमें बकारी दूर कर दी जाय तो यत्रपुग सवसहारक क्रांतिया और यद्धमें विगीन हा जायगा। जब तक यत्र जनसाधारण और वर्गोंके सुख-बभवका वद्धि करत ह वे अक परापकारी साधन ह। परंतु जब जनस लासकी बकारी और भुखमरी पदा होती हा जसा कि पश्चिमक बहुत ज्यादा अश्रोगवाते देगोंमें हो रहा है तब वे अभिगाप बन जाते ह। यत्र मनुष्यके श्रि ह मनुष्य यत्रोके श्रिअ नग। जन्हें लोगाकी भलाओका साधन बनाा चाहिय न कि जनका मालिक बनन देना चाहिय।

यहा यह अप्रस्तुत है कि जमनीमें ग्राम अद्यागोका पुनरुद्धार सत्वारके जारस किया जा रहा है। प्रस्तुत यह है कि अक अया देग जो अच्छतम बज्ञानिक कलाका सबूत दे चुका है और जसा गीकरणके मामगमें अत्यत अन्नत देगोंमें एक है अपनी भयकर बकाराकी समस्याका हल करनके लिज ग्राम अद्योगोको फिरसे अपनातकी कागिग कर रहा है।

हरिजन २७-१ - ३३

मुम सलाह दी गयी है कि मनुष्यकी अवेपण शक्तिन प्रवृत्तिका जिन शक्तियाका अपन कामें कर लिया है अनश्र अययोग कराकी श्रिगामें ही मुम गावाकी मुक्तिका हउ खाजना चाहिय। आगवक कहत ह कि पानी हवा तल और बिजलीका असी तरह पूरा अुपयाग हाना चाहिय जसा प्रगतिशील पश्चिममें किया जा रहा है। वे कहत ह कि जिन गुप्त प्राकृतिक शक्तिया पर कानू होनेसे प्रत्येक अमरीकन

३३ गुलाम रख सकता है याना वह अिन दक्तियाके द्वारा ३३ गुलामाका काम ले सकता है।

अिस प्रक्रियाको भारतमें दोहराअिये और म दावसे कहता हू कि जिससे अिस देशके प्रत्यक निवासीको ३३ गुलाम मित्रनेके बजाय अुसकी गुलामी ३३ गुनी बढ जायगी। जो काम पूरा करना है अमने लिअ आदमी थोड हा तब यथाकरण अच्छा है। जब भारतवपकी भाति आदमी कामकी आवश्यकतास अधिक हा तब वह बुरा है। चद वगगज भूमिको जातनेके लिअे म हल काममें नहा ले सकता। हमारे लिअ समस्या यह नही है कि हमारे देहातम रहनवाठ करोडा लागारे लिअे अयका कस निकाला जाय। समस्या यह है कि जुहें साठमें जो लगभग छह माहका समय बकारीमें बिताना पडता है अुसका अपयाग कसे किया जाय। बात विचित्र मालूम होगी मगर यह सच है कि हरअक मिल आम और पर देहानियोके लिअे एक खतरा है। मन हिताव लगाकर अकडे नहा निकाल ह परतु म बखटक कह सकता हू कि हरअक मि मजदूर अपने देहातमें वही काम करनेवाल कमम कम दस मजदूराका काप करता है। दूसरे गालीमें अपन दस देहाना भाअियाका नुकमान करके ही वह अपन गावमें जितना कमाता अुससे ज्यादा कमाता है। अिस प्रकार कताभी और बुनाआकी मिलान हमारे ग्रामीणोका काफी रोगार छीन लिया है। जबावमें यह कह दना — वह सही हो तो भी — काफा बू कि व अमिक सस्ता और अच्छा कपडा निकालता ह। कारण आर जुहोन हजार मजदूराका बकार बना दिया है तो मिलका सस्तेस सस्ता कपडा भा देहातके बुन हुअे महगस महेगे खदरमे ज्यादा महगा है। बोपला अुम कायलकी खानके मजदूरके लिअे जा अुस बहाका बहा अिस्तेमा कर सकता है मन्गा नही है न लागे अुस ग्रामीणस लिअे महगी है जा अपनी ही खादी तयार कर ता है।

हरिजन १९-११-३४

अव कारखाना कुछ सौ लागोका काम दना है और हजाराको बेकार बनाता है। म तेलके अक कारखानस सकडा मन त पदा कर

सकता है मगर म हजारों तलियोंका बकार भी बना देता है। जिस म बिना एक गकिन कहता है। चुरर लाखों हाथोंकी मेहनतसे होनवाला बुत्पान रचनात्मक और सबकी भलाभीका पोषक होता है। बिजलीसे चानवाल यथोक जरिये हानवाले थोक उत्पादन पर रायका स्वा मित्व ही सब नी असल लाभ नहा होगा।

मगर यह पूछा जाता है कि लाखोंक परिश्रमकी वचत क्या न का जाय और खुदें बढिक कामाक लिअ अधिब जवकाण क्यों न दिया जाय? अबकाण अब हद तक ही अच्छा जोर जरूरी है। आस्वरन मनुष्मका पसीनकी कमाभी खानके लिअ बताया है। असलिअ मुझ ता जिस सभावनासे ही डर उगना है कि नही हमारी सारी जरूरतें जितमें खाद्यपदार्थ भा गामिल ह जादूके पिटारैसे पूरी न होन लें।

हरिजन १६-५-३६

### १३

## कपडेका निर्यात

अक अमराकी पचकारन पूछा असा क्यों न किया जाय कि ऐगम मो सब भारतीय हाथ-कता कपडा ही कामम लें लेकिन साथ साथ जपना मिगाका भा काम करन दें? हा मिलोसा तयार किया हुआ कपडा और मूत बाहर भज दिया जाय। क्या आप नहा मानत कि जिसस कपडका खनी करनवालोको सहायता मिलगी? जाहिर है कि यह भाभा स्वतंत्र भारतको ध्यानमें रखकर ही यह मवाल कर रहे थ।

गाधीजीन क्या म जिस बातका विरोध नही करूगा मगर यह होना चाहि हमारे कपडका बनवाते दंगका जनुभन आनयकताका प्रतिन लिअ। भारतके गभक लिअ दमरे ऐगाका गापण करनका मरा बारी विचार नही है। हम स्वय गोपणकी जहराली वामाराम पांडित

ह अिमलिअ म यह नही चाहूगा कि मेरा दग असी किमी चाजका अपराधी बन । अगहरणाय जापान अेक आजाद मुल्ककी हैमियतम नारनकी मन्त चाह और वहे कि हम कुछ भाउ सस्ता बना सवत ह अन अच्छा हागा कि आप अुस जापानक रिअ निर्यात करे ता हम खुगाम जमा करेग । परनु मरी योजनामें जव देगवा दूसरे देगमें अपनी जग और स्थलसनाक बग पर भाउ भर देना वद हाना चाहिय ।

पडित नहरू अुद्योगीकरण अिमलिअ चाहत ह कि अनक गवामस अगर वद समाजवादी ढगवा हा जाय ता वह पूजोवातकी वराजियासे भक्त रहेगा । मेरी खणका दष्टि यह है कि अुद्योगवादमें य दगअिया जमजात ह और अुद्योग पर समाजके स्वामित्वका कितना हा विस्तार क्या न किया जाय ता भी य वराअिया दूर नही का जा सक्तो । '

हरिजन २९-९-४०

१४

### खादीके खिलाफ आक्षेप

गाधीजीकी वाणी उस समय और भी ज्यादा निखर बुठना है जब अन्हें कोसी छड गेता है। अक भात्रीन आपसि की कि आपका सगण्यमें श्रम विभाजनके सिद्धान्तका लिहान नहीं रखा गया है। तब गाधीजीन जरा गरम होकर कहा क्या म आपस जिभर कताओ करतको कहता हू ? क्या म आपसे अिमे किमी स्वतंत्र धवके रूपम अपनानको कहता हू ? तो फिर श्रम विभाजनके सिद्धान्तका भग कहा होता है ? क्या आपका खान-पीनम श्रम विभाजन हाता है ? जस हम सब खुद ही खाते-पीते और कपड पहनते ह वसे हा हम सबका कानना भी स्वय ही चाहिय।

यग जिन्दिया २८-५-२५

अक मित्रने मुझमे पूछा कि क्या मरा विचार रेलाइ वत्राय दगाती गाणिया चारी करतवा है और अगर नहीं है तो फिर म मन् आगा कस रखता हू कि मिलाका स्थान चरखा न लगा। मन जनम कहा कि रेगके स्थान पर गाणिया चगतवा प्रस्ताव नही है क्योंकि म चाह तो भी असा कर नहीं सकता। सीम करो गाडिया भी दूरीका गवाल हल नहीं कर सकता परन्तु मिलाका स्थान चरखाका दिया जा सकता है। कारण रेगामे गनिका सवाल हल हाता न पर मिनें ता अत्यात्मनका काम करती हैं। जिममें चरखा आसानास स्वरा कर सकता है अगर हिन्दुस्तानका तरह काम करनके लिअ काफी आत्मो हा। मन अनसे कहा कि असऽ वान यऽ है कि अक ग्रामाण

अपना मेहनतकी कामत न गिन तो अपन लिअ काफी मात्रामें मिलाव सम्ना कपडा तयाग कर सकता है। और कीमत गिननकी जम्हरत अम जिमन्त्रिअे नहा है कि वह बताओ या बुनाओ भी अपने फुसतक वक्तमें करेगा। यह ध्यान न्न गायक बात है कि झूठी या अनूरा तुन्नाश्राम लोगका कम घाथा हा जाता है।

दूसरी दंगल यह दी गयी थी कि चरखा अेक व्यय प्रयत्न है। यह अब विचित्र न्गा है जिसन पीछ काआ विचार नहा है। मन मिद्ध किया है कि कानी भी चीज जो हतुपुवक की जाती है व्यय प्रयत्न नहा मानी जा सकती। चरखा राष्ट्रक सामन अुन लाखा लागाना काम न्नक लिअे पग किया गया है जिनके पास वपमें कमन कम चार माम कोओ घना नहा हाता। आपत्ति करनवालस मन कहा कि चूकि चरखा फी घटे कममे कम दो सौ गज सूत पग करता है अिसन्त्रिअ अुने व्यय प्रयत्न ता नहा माना जा सकता। न कक व, व्यय प्रयत्न नहा है बल्कि अक सही आधिक् कापत्रम भी है। कारण लाखाक लिअ जिम वस्तुकी जरूरत है वह है जमा मावत्रिक अुत्पात्क घधा जिमे फुसतके समयमें किया जा सके और जिम सीखनमें सिगा विशेष प्रतिभावा या उमी तागामकी जरूरत न हो। असा घधा मिफ बताओ है और कोओ नहीं।

पग अिन्त्रिया २८-१-२५

आलोचक कहन ह कि चरपेन गगाक दिलमें घर नहा किया वह काफी रोचक नहा है वह मिफ ओगताका घधा है असना अय मध्ययुगकी आर गैर जाना है यत्र जिमके प्रतिनिधि ह अुम विज्ञानकी गाननार प्रगतिके विरुद्ध वह अक व्यय प्रयत्न है। मेरी नम्र रायमें भारतको अिम समय राचकताको नहीं परंतु ठीम कामकी जरूरत है। गवाते लिअे ता ठाम काम अुन राचक और पीन्कि दाना है। बात यह है कि हमने चरखकी काफी आजमाअिग नहा की है। मुझे उ खक माय कन्ना पडता है कि हममें न बहुताने अिस पर गभार विचार भी नहा किया है। काग्रम महाममिनित्रं मन्ध्या तकने समय समय पर अपन ही पाम किय हुन प्रस्तावा पर अमग नहा किया है। हममें



अधिकारका तो अस पर विश्वास ही नहीं जमा है। असी सूरतमें यह कहना याम नहीं कि कताजी असमें रोचकता न हानवे कारण असक सिद्ध हुजी है। यह कहना कि वह केवल बूढी स्त्रियाका धधा है तथ्याकी अपेक्षा करना है। कताजीक कारखानोमें कभी गुन चरख ही ता ह। अन्हें पुरख ही तो चलते ह। अब समय आ गया है कि हम अस अथ विश्वासको छोड दें कि कुछ धध पुरखोंकी शानक खिलाफ ह। मामूअ हागतमें बेगक कताजी बहनोका धधा होगा। अकिन भावी रामका कुछ आदमियाका चरख पर हमेशा लगाये रखना हागा ताकि वे अक गह-अुद्योगकी जरूरी मर्यादाआके भीतर चरखमें सुधार करते रह। म आपको बता दू कि चरखकी बनावटमें जो प्रगति हथी है वह असभव होती यदि हम पुरखोंमें से कुछन असक लिअ मेहनत न की हाती और दिन रात असक बारमें सोचा न होता।

याग अिहिया २६-१२-२४

अक अध्यापक यो लिखते ह

खद मश चरख और खदरमें पूरी उढा है। परतु मरा राय है कि आपन गरआत गलत जगहस की है। हडकड मदीका औरताकी तरह चरखा केकर बठनको कहना ज्यादातर लागाका नजरामें अटपटा लगता है।

मेरी नम्र सम्मतिम आपका पुखोका ता छोड देना चाहिय था अन्हें तरह तरह राजनीतिक पचारमें लग रहन देना चाहिय था और चरखका अपना सदा सीध देाकी स्त्रियाक पास ले जाना चाहिय था। फिलहाअ आप चरख और खदरका महान कार्यक्रम स्त्रिया तक सीमित रहन दाजिय और पुरखाका आगादोंकी अगधी मरदाना हथियारास लखन दीजिय।

पत्र जरा लम्बा था। मन भाषा बन्ने बिना अखे तकका निवाअ दे लिया है। स्पष्ट है कि विपान अध्यापकका भारतकी स्त्रियाकी दगाका पता नहीं है। नहीं ता अन्हें माअूम होना चाहिय था कि आम तौर पर पुखोका स्त्रियाक वाचमें भाषण दन और अन्हें अपना बात

मुनानका अधिकार या अवसर नहीं मिलता। वेगव कितना हू तक मुझ यह सोनाम्य प्राप्त हो सका है। परतु य सब सुविधाओं मिन्न पर भी म अून तक अिनना नहीं पहच पाया हू जितना पुरुषा तक। अव्यापकजीकी यह भी जानना चाहिय कि स्त्रिया पुरुषाकी स्वावृत्तिक बिना काम नहा कर सकती। म अमे कभी अुगहरण दे सकना हू जिनमें पुग्यान स्त्रियोको चरखा या खट्टर अपनानस रोक है। तामर जा आविप्वार और परिवतन पुरुष कर सकते हू व स्त्रिया नहा कर सकती। अगर कताओका आन्दालन स्त्रियो तक ही सामित रखा जाना ता जो मुधार चग्नेमें पिछले चार वषमें हुअे हू या कताओका जसा मगठन हुआ है वह असभव हाता। चौथे मह कहना अनुभवके विपरीत है कि काओ धधा स्त्री या पुरुषमें से किसी जकक लिजे ही है। भाजन बनाना मुख्यत औस्ताका काम है। मगर कौजी मिराही अगर अपना खाना न पका सके ता वह निक्कमा माना जायगा। छावनियामें भोजन बनानका सारा काम जहरी और कुदरती ताग पर मू ही करने हू। अिसक सिवा जहा परिवारक अिअ स्वभावत स्त्रिया भाजन बनाना हू वहा बड पमान पर भोजन बनानका सगठित काम दुनियाभरमें हर जगह पुरुष ही करते हू। लडना मुख्यत पुग्याका धधा है परतु जिस्मक प्रारभिक सग्राममें अरब स्त्रिया अपन पतिपाके साथ साथ बहादुरीम लडा थी। शामीकी रानान सिवाही विद्राहमें जा जौहर लिखाय व बहुत कम पुरुषान लिखाय। और जाज यूरापमें ता हम देखते हू कि स्त्रिया वकील डाक्टर और शासक बनकर चमक रहा हू। कगकोंका पेगा ता लगभग पूरा ही गानहू लिखने और टाइप करनवाली स्त्रियाक हाथमें आ गया है। कताओ पुरुषाचिन धधा क्या नहीं है? काओ भा चीज जिमम भारतका आर्थिक और आध्यात्मिक अुद्धार हो सकता है (और अव्यापकजाक कयनानुमार कताओस यह हा सकता है) पुरुषाक अिअ पुरुषोचिन क्या नहा है? क्या अव्यापकजीका पता नहीं है कि कताओको मनीनका आविप्वार अब पुरुषन ही किया धा? अगर अुसन यह आविप्वार न किया होता ता मानव जातिका अिति हाम दूमरी ही तरह लिखा जाता। मुजीका काम अमलमें औरताका

काम है। परन्तु सखारके प्रसिद्ध दर्जी पुरुष है। और सिखाओकी मंगीन भा अब पुन्यन हा ओझान की है। अगर मियरल मुओका तुच्छ समयवा हाता तो वह मानव जातिके जिज अगनी विरासन न छाड जाता। अगर गुजर हुओ जमानमें भारतकी स्थियोके साथ साथ पुरुषान भी कताओ पर ध्यान दिया होता तो हमन थीस्ट अडिया कपनीके दवावमें आतर जिस तरह कताओ छाड दो वस हम हरगिज न छोडते। राजनीतिन गद राजनीतिमें चाह जितना लग रहें परन्तु अगर हमें लाखोंके सम्मिलित प्रयत्नसे अपना कपडा नया करना है तो राजनीतिन कवि राजा पडित गराव पुरुष या स्ना हिंदू या मुसमान आसाओ पारसी या यूदी — सबको दाने छातिर आषा घटा धमभावसे कताओके लिअ लगाना ही पग्या। मानवताका धम किमी अब ही लिंग या बगका विशयाधिकार नही है। यह सबका विनयाधिकार नहा नहा धम है। भारतीय मानवताका धम अुन सबसे जो अपनका भारतीय कहते ह कमसे कम आधे घटकी कताओका तकाजा करता है।

यम अडिया ११-६-४५

हाय-कताओका सफल बनानमें जो कठिनाजिया मुझ बताओ गओ था व मरूपत दा था

(१) हायका सूत मिलके सूतकी होड हरगिज नही कर सकना क्योकि वह मिलके सूतके बराबर मजबूत कभी नहा पाया गया।

(२) चरखसे अितनी कम उत्पत्ति होती है कि अुमने लाभ नही हा सकता।

त्रिन लोगोन धरसो सव खद्दर पहना है अुनका अनुभव यह है कि जहा वह अच्छ हाय-कत सूतका बना होता है वहा अुमी नबरके मिलने अउसे अच्छ कपडमे भी वह ज्यादा टिकना है। अुदाहरणाय मेर कुछ आधने मित्रोने मुझ बताया है कि अनकी खादोकी धातिया चार साज या अुसस भी ज्यादा चला ह लकिन मिलके सूतकी पोतिया साउमरके भातर हा फट जाती ह। परन्तु मरा मुदा यह नही है कि खाणी ज्यादा टिकाअू है। मरा मुदा तो यह है कि ककि हाय

कताओी भारतके किसानके लिये — जो बुमकी आवाजीके ८५ फी सदी ह — जकमान सभव सहायक धधा है, अिमलिय कपडे-मवधी हमारो मारा यवत्या यह समझकर हानी चाहिय कि कपडा हाय-वत सूतसे तयार करके दिया जायगा। अिम प्रकार हमारो गक्ति चाह जहा और चाह अिम तरह कात हुये बन्धिया और सस्त सूतकी तलागमें नही बल्कि बढिया और सस्त हाय-वत सूतकी तलागमें हा लगनी चाहिय। अगर मरा यह विचार ठीक है ता राज्य सारे बुद्योग विभागका काम चरखकी कद्रमें मानकर बुमक चारा और चन्ता चाहिये। अिमलिअे बुद्याग विभाग चरखामें सुधार करेग ताकि बुनसे ज्यान्त सूत निकल सक। व हाय-वता सूत खरीन् गेग जिससे हाय-वताओीको अपन आप प्रोत्साहन मिन् जाय। व जसा भी हाय-वता सूत बुपन्घ होगा बुसका बुपयाग कर लनेका बुपाय सोच निकालेग। वे सबस बारीक हाय-वते सूतके लिअे अिनाम जारी करेग। अच्छा हाय-वता सूत बुटानके लिअे वे सभी क्षेत्रामें ब्याज करेगे।

मगर यह आपत्ति भी की गयी है कि हाय-वताओी लाभदायक नहा है। पन्तु वह बुन गेगाके लिअे ता अवश्य ही गभन्गयक है, जिाके पास बहुतसा बवार बक्त है और जिनकी घाडीमा आम दनामें अक पसकी बुद्धि भी स्वागतके योग्य है। चरखेका सारा काय भ्रम निरयक हो जाता है यदि लाख किसान सामें कमस कम चार महीन लाचारीसे बेकार न रहते हा। जहा बहा खान्नी-कायकर्ता प्रेमपूण सेवा कर रहे ह बहा खादी लाभदायक ही नहा हो गयी है बल्कि नहा तियाके लिअे अतवा सूत खरीन्नेवाल लाग अीन्वरकी देन हा गये ह। जिनकी आय पाच छह रुपये माहवारस ज्यान्त नही ह और जिनके पास समय है वे लोग असा काम खुन्गीमें अपना लेग जिससे बुाका दो रुपये मासिक और मिन् जान ह।

पग अिडिया ८-१०-२५

पगपालनका जो सहायक अद्योग मुझाया गया है, वह बगक अच्छा है और कताओीमें हमेगा ज्यान्त आमन्नीबाला है। मगर बुममें

पूजीकी जोर पणुपालनका जानकाराका जरूरत हाती है। यह साधारण किसानके पास होती नह। और पहलेसे बहुत तयारी किय बिना वह हो भी नही सकती और होगी भी नही। आप किसी भी तरहसे दल रीजिय भारतीय परिस्थितिक लिअ काभी और सहायक घधा असा नहा है जो हाथ-कताजीकी होड कर सके।

असका अपार महत्व अिस बातमें नही है कि वह कुछ व्यक्तिधोका बहुत रुपया द सकता है बल्कि अिस बातमें है कि वह लाखके लिअ आमदनाका अक तात्कालिक साधन उपन्ध करता है। अिसलिअ यही असा सहायक घधा है जो मफलतापूर्वक मगठित किया जा सकता है। अिस प्रकार पणुपालन स्वयं कितना ही अच्छा क्या न हो मगर वह सबसे बढिया सहायक घधा नहा है। असा घधा ता हाथ-कताजी ही है।

यग जिडिया १५-१०-२५

यग अिडिया के पाठक जानते ह कि मन यह कभी नही सुझाया कि जो लोग ज्यादा कमाजीवाल रोजगारमें उग हुए ह व अपना घधा छोडकर हाथ-कताजीमें लग जाय। मन बार बार कहा है कि जिनक पास कमाजीका और कोजी घधा न हो बुहीसे कातनकी आगा रखी जाती है और उनको ही अिसकी प्ररणा की जानी चाहिय — जोर वह भी बकारीके समयमें ही। अिसलिअ दो शर्तीक जोग ह जिनसे कातनकी आगा रखी जाती है — व जो मजदूरी लकर कातेंग जिनका जिन म पहल कर चुका ह और व जिहें मिसाण पण करनक लिअ जोर खदरको सस्ता बनानके लिअ यथाथ कातना चाहिय।

यग अिडिया २२-१०-२५

कविवर\* का खयाल है कि म चाहता ह कि सभी अपना पूरा समय उगाकर कातन लगे और दूसरे सब काम छोड दें अर्थात म चाहता ह कि कवि अपना काय किसान अपना हल बनाऊ अपनी बकालत

\* रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

बोर डाक्टर अपना नरत छो दें। यह बात सत्यसे अतनी दूर है कि मने किसीका भी अपना पैगा छोड़नको नहीं कहा है। अिसके विपरीत मने यह कहा है कि सारे राष्ट्रके खातिर यनाय काननमें सिफ तीस मिनट रोजाना गाकर अपन अपन धधेकी गोभा बणाओ जाय। जो स्त्री-पुरुष किसी भी कामके अभावमें बकार और भूलक गिकार ह अुहें मने गुजारके लिअ कातनको जरूर कहा है और अधभूखें किमानाको अपन अवकाशके समय अपनी थोड़ीसी आमदनी बाननके लिअे कातनेका कहा है। अगर कविवर आध घंटे रोज कातन लें तो अुनके कायकी सम्पन्नता बढ जायगी। कारण तर ब गरीबके अभाव और कण्ठोत्ता प्रतिनिधित्व आत्रकी अपक्षा अधिक जोरदार दणसे करेंगे।

कविवर समझत ह कि चरणा राष्ट्रमें मृत्यु जसा सादृश्य अुत्पन्न कर डालगा और यह कल्पना कानके बे मदि समभव हो तो अुससे दूर रहना चाहेंगे। मचाओ यह है कि चरखेका हेतु भारतके करोडा लागामें हिताहितकी जो मूलगामी और सजीव अक्ता है अुसे प्रकट करना है। प्रकृतिकी गानदार और रगबिरगी अनक्तामें भी हमें हेतु, रचना और स्वरूपकी अुत्तनी ही असदिग्ध अेक्ता दिख्लाओ दती है। कोओ भी दो आत्मी — यमज कानके भी — चिन्कुल अेक जसे नहीं होत। फिर भी सारी मानवजातिमें बहुतसी बातें अनिवाय रूपमें समान ह। और जिस रूप-मादृश्यक पीछ सबमें याप्त अक् ही चतय है।

कया अधिकाग मानवजातिके लिअे ऐती सामाय नहा है अिमी प्रकार कुछ काण पहले कताओ अधिकाग मानवजातिके लिअ सामाय थी। जसे राजा और किमान मभीका खाना-पहनना पडता है ठीक वसे ही सबको अपनी प्रारभिक जावयवनाओकी पूतिके लिअे परिश्रम करना ही चालिये। राजा भले ही अुत्साहरण और त्यागके तीर पर श्रम करे परन्तु अुतना अुमके लिअे अनिवाय है अगर वह अपन प्रनि और अपनी प्रजाक प्रति सचा है। यूरोप जिस समय चाहे जिस अत्याव स्यक वस्तुको अनुभव न करे कयोकि अुसने गैर-यूरोपियन जातिपाके

गापणको अपना धम बना लिया है। परन्तु यह झूठा धम है और निवट भविष्यमें नष्ट होकर रहगा।

सुधरा हुआ हल अच्छी चीज है। परन्तु सयोगवग कोअी अक आदमी अपन किमी यात्रिक आविष्कारस भारतकी सारी भूमिको जोत गे और खेतीकी सारा पदार्थको हथिमा ले और अगर लाखो लोगोके पास कोअी और धधा न हो तो वे भूखो मरने लगेंगे और बकार होकर मूख बन जायगे जमे बहुतसे लोग पहल ही बन चुके ह। हमारी हालत आज असी है कि जिस अवाछनीय स्थितिमें और भी अधिक लोगोके पहुच जानका हरदम पतरा बना रहता है। घरलू यधामें किय जानेवाल हरअेक सुधारका भ स्वागत करगा लेकिन मुय मानूम है कि जब तक हम साथ ही साथ लाखो किमानोको अनक घर कोअी और धधा दनको तयार न हो तब तक हाथकी महनतके बजाय बिजलीसे चलनवाल तन्धुअे जारी करना जुम है।

भारतके कष्ट निवारणके लिये सहयोगके प्रत्येक प्रयत्नका संगठन चरखका केंद्र बनाकर असके आमपास करना पगगा। चरखके आमपास अर्थात् जिन लोगोत आलस्म छोड दिया है और सहयोगका मूल्य समझ लिया है उनके बाचमें जक राष्ट्रसक मलरिषा विरोधी आन्दान सपाओमें सुधार गावके संगड निपटाना पगओकी रक्षा और उनका पालन और सबडो दूसरी हिनकर प्रवृत्तिया संगठिन कर लया। गृह कही चरखका काम ठीक तरह जम गया है वहा य सब भगओके काम सबधित ग्रामाणा और कायकर्ताओकी गकितके अनुसार चन्त ही ह।

पग अिडिषा ५-११-२५

भन हाथ-बनाओके खातिर अक भी अपयागी प्राणदायक औद्योगिक प्रवृत्तिको छोडनकी कल्पना तक नहीं की है सलाह दना तो दूर रहा। चरखकी सारी बुनियाद ही जिस तथ्य पर है कि भारतमें करोडो अवबकार लोग ह। और मझ स्वीकार करना चाहिय कि अगर असे लोग न हो तो चरखक लिअ कायी स्थान न रहे। लेकिन ह्वाकत यह है कि सभी लाग जिन्हाने हमार दहात देखे ह जानते ह कि

अनुके महीना बेकारीमें बटते ह जा अनुके लिअे विनागवारी सिद्ध हो सक्ती है। मध्यम श्रणीके लोगसे भी मने यथाथ कातनेकी जो अपीठ की है वह युाके पुमतके समयके लिअ ही है। चरपा-आग्नेयन किसी भी अद्योगका विनाशक नहीं है। वह तो अेक प्राणदायी प्रवृत्ति है। और अिसीलिज मने असे अन्नपूर्णा या रोनीके लिअे मक्खन देनेवाली या बमी पूगी बरनेवाली कहा है।

पग अिडिया २७-५-२६

यह कहना मही नहा है कि कतिनों दस घट राज काम करती ह। वे जो भी कताओ करती ह वह फुसतके समयमें की जाती है और अुहें जो प्राप्ति हाती है वह दिनभरकी मजदूरी नहीं कि तु अधिनागके लिअे अनुके मुख्य घघकी बमाओमें खासी बद्धि बरनेवाणी हाती है। कताओकी बमाओ तो बेकार जा रहे समयके अपयोगसे पदा की जानवाली दौलत है। कताओके लिअ यह बल्पना हरगिज नहीं की गयी है कि वह दिनभरका घघा है।

पग अिडिया १९-१२-२०

अब बहन लिपती ह

सां मर हुआ मन आपको भाषणमें यह बहते सुना था कि हममें से हरअकके खादी पहननेकी मर्वोपरि आवश्यकता है। अुस पर मन खादीको अपनानका निश्चय किया। परतु हम गरीब आत्मी ह। मर पति कहत ह कि खानी महगी है। म महाराष्ट्री होनेके कारण ९ गज लवी माडी पहनती हू। जब अगर म अपनी माडीकी लबाओ घटा कर ६ गज कर दू तो बडी बचत हा जाय परतु बुजुग लोग अमी कमी करनकी बात हा नहीं मुनेंग। म अहें समझानी हू कि सादीका पहनना अधिक महत्त्वकी बात है और साडीके टग तथा लबाओका बिलबुल महत्त्व नहीं है। मगर मरा कहना बेकार होता है। वे कहत ह कि ये नये खपाल मेर निमागमें मरी छोटी अुअके



## सादी

कारण ही घुस गय है। लेकिन अगर आप मुझ यह लिखनकी कृपा करें कि कपड़े ढगकी परवाह न करके भी सादी ही काममें लनी चाहिय तो मुझ आगा है कि व अनुकूल हो जायेंगे।

मन बहनको वाछित उत्तर भज दिया है। परन्तु म जनकी अित कठिनाओका अल्लख यहा भी करता हूँ क्पाकि म जानता हूँ कि यह मुश्किल और भी बहुतसी बहनाके सामन आती है।

दक्षिणी साडी सुन्दर वस्तु है। परन्तु सुन्दरताको छोडना पडगा यदि असकी रक्षा राष्ट्रका बलिदान करके ही होती हो। हमें कच्छी ढगकी छोटी साडी या पजाबी ओल्नीको सवमुच कलात्मक समझना चाहिय यदि असके द्वारा खादी पहनना सस्ता और मुल्भ हो जाता हो। दक्षिणी गुजराती कच्छी और बगाली ढगकी साडिया सभी पहनावकी विविध राष्ट्रीय शक्तिया ह और अक जितनी राष्ट्रीय है अतनी ही दूसरी भी है। असी सूरतमें अस ढगको अधिक अपनाना चाहिय जिसमें सम्यताकी जरूरतके अनुसार कमसे कम कपडा लगता हो। असा ढग कच्छी ढग है। अुसमें सिफ तीन गज कपडा लगता है। यानी गजराती साडीसे लगभग आधा लगता है। वजन थोडा अठानमें कष्ट कम होता है सो अउग। अगर ओल्नी और लहगा जक ही रगके हा तो कोअी तुरत नही पहचान सकता कि ओल्नी है या पूरी साडी। असे राष्ट्रीय ढगकी आपसमें बदल-बदल और नकल करना खूब वाछनीय है।

मध्यम और गरीब वगके दगभक्त लोगको अस विगप प्रान्तीय ढगको अपनानमें गव होना चाहिय जिससे खादीका पहनना सस्ता और मुल्भ हाता हो। और असमें भी अहूँ अपनी दक्षि अत्यत गरीब लोगोके पहनाव पर जमानी चाहिय।

गग अिडिया २-२-२८

क्या म प्रगतिकी पडीकी सुओको अुठटी ओर चगना चाहना हूँ ?  
क्या म मिलाका त्यान हाय-वताओ और हाय-वताओकी त्रिलाना

चाहता हूँ? क्या मैं रेलके बजाय दहाती गाड़ी चगाना चाहता हूँ? क्या मैं यंत्रोंको बिलकुल नष्ट कर देना चाहता हूँ? ये सवाल कुछ पत्रकारों और लोकसर्वज्ञान पूछे हैं। मेरा उत्तर यह है यंत्रोंके मिट जाने पर मैं न आसू बहाऊंगा और न जुसे विपत्ति समझूंगा। परन्तु यंत्रमात्र पर मरी दुःखिणी नहीं है। अभी तो मैं अतिना ही चाहता हूँ कि हमारी मिग्गि द्वारा पदा होनवाठ सूत और कपड़ेके अलावा दूसरा सूत और कपड़ा भी तयार हो। भारतमें बाहर जानेवाले करोड़ों रुपयाकी बचत हो और अहो हमारी क्षोपडिमामें बाट दिया जाय।

यंग अडिया १९-१-२१

यंत्रोंके हिमायती अंक समाजवादीने गांधीजीसे पूछा, क्या ग्राम-अधोग आन्दोलनका हेतु यंत्रमात्रका निबाल बाहर करना नहीं है?'

गांधीजी अमु समय बात ही रह थे। अुहाने अुसरमें प्रश्न किया क्या यह चरखा यंत्र नहीं है?

मेरा मतम्ब अिम यंत्रसे नहीं है बडी मनीषासे है।

क्या आपका आशय मिग्गिकी सिग्गीकी मनीषासे है? ग्राम अधोग आन्दोलनमें अुसकी भी जगह है और अिसी तरह हर जसे यंत्रकी जगह है जिसके कारण जनसाधारण परिश्रम करनेके अवसरसे वचित नहीं होते बरिक जा अ्यक्तिको सहायता करता और अुसकी धमताको बडाता है और जिमसे मनुष्य अुसका गुग्गम धन बिना मनचाहा काम कर सकता है।'

मगर अुन महान आधिष्ठाकारका क्या हागा? आप बिजलीसे ता कोअी सरोकार रखेंग नहा?

यन् किसने कहा? अगर हम हरअक गावकी क्षोपडीमें बिजनी पडुवा दें तो मुअ कोअी आपत्ति नहीं होगी कि ग्रामीण अपन जीअार बिजनीकी मदसे चगयें। परन्तु अुस सूरतमें ग्राम-अचायतें या राय बिजली घरोंके अुसी तरह मालिक हामे जमे व अपनी चरागाहके होन ह। लकिन जहा बिजली और मनीषा न हा, वहा बेकार हाय

क्या करें ? आप अहु काम देंगे या कामक अभावमें उनके मालिकोंसे अहें बाट डालनका रहेंगे ?

सबके फायदके लिजे किय गये प्रत्यक आविष्कारकी म कऱ कऱगा । परन्तु आविष्कार आविष्कारमें अतर है । म अक ही समयमें हजारों आत्मियोंको दम घाटकर मार सकनवाली गसाकी फिक्र नहा कऱगा । साम्रज्यिक अुपयोगका जो काम मानव म द्वारा नही कराया जा सकता अुसक लिअ भारी मगीनाका अनिवाय म्यान है परन्तु अन सबका भागिक राज्य होगा और अनका अपयोग सबया जनताके लाभक लिअ किया जायगा । म अुन यत्राका काआ म्हाज नही कर सकता जिनका लक्ष्य कऱताको हानि पहुचाकर थोडोको म्हादार बनाना हा या अुप योगी म करनवाल अनकाको अकारण बकार बनाना हो ।

गाधीजीन अपन चरखकी ओर सवेन करल हुआ कहा परन्तु बकारीके अिलाजके लिअ जिसक सिवा और कोअी मगीन नही है । आपसे बात करत करत भी म जिस पर काम कर सकता हू और दगकी दौलतमें थोटीसी वृद्धि कर सकता हू । जिस मशीनको कोअी नऱ मिटा सकता ।

हरिजन २२-६-'३५

## क्या आर्थिक दृष्टिसे खादी लाभप्रद है ?

अगर इस प्रश्नका आशय यह है कि खादी जापानी फॅं से या भारतीय मिलाने तयार किये हुए कपडोंसे भी होड कर सकती है, तो मेरा उत्तर जोरके साथ नहीं में होगा। परन्तु यह नकारात्मक उत्तर लगभग प्रत्येक जुस वस्तुके बारेमें देना पडगा जो थमकी बचत करनेवाली यात्रिक शक्तके मुकाबलमें मानव शक्ति द्वारा तयार का जाती है। भारतीय कारखानामें बन मानके बारेमें भी यहा जवाब हागा। कारखानामें बन कपडे लोहे और शक्करके विन्गी स्पर्धामें त्किनके लिअे किसी न किसी रूपमें रायकी सहायता चाहिय। इस त्गसे इस प्रश्नका रखना ही विल्कुल गलत है। खुले बाजारमें अधिक संगठित बुद्योग हमें का कम संगठित बुद्योगको बाहर निवाल सकेगा खास तौर पर जब बुमे रायस सहायता मिन्गी हो और बुसके पास असीम पूजी हो और इस कारण वह थोडे दिन नुकसान सह कर भी भाड बेच सकता हो। इस दशमें अनेक बुद्योगाकी यही दु खद स्थिति हुआ है।

अस किन्नी भी लैगको जा अपनेको अमर्यान्तित विन्शी स्पर्धाका शिकार होने दता है जिदेनी रोग चाहें तो भखा मार सकते ह और जिसन्निअे गुलाम बना सकते ह। अिमे शक्तिपूण ढगसे प्रवण करना बहन ह। हमें अक ही बरदम आग बरने पर यह समझमें आ जायगा कि हायके बने मान और बिजलीस चलनवाणी मनीनोसे बन मानके बीच स्पर्धा हाने दी जाय तो भी यही परिणाम आपगा। हम यह प्रश्रिया अपनी आवाके मामने होनी दख रह ह। ठीकी-छाकी आटकी मिलें चक्कियाको तैलकी मिलें दहाती घानियाको चावलकी मिलें ग्रामीण डैकियाका शक्करकी मिलें दहाती गुडके बडाहाको मिटाती जा रही ह। ग्रामीण श्रमके अिम प्रकार मिन्नसे ग्रामवासी दरिद्र हो रहे ह और अभीराका दौग्न बढ़ रही है। अगर यह सिलमिला बहुत दिन तक चला

तो गाव और किसी प्रयत्नके बिना ही नष्ट हो जायग। कोशी चगजवा  
अिन दहाताको बर्बाद करनका जिससे अधिक चालाक या फायदमद  
तरीका नहीं निकाल सकता था। और अिन सबमें दुःख बात यह  
है कि देहाती लोग अनजान मगर निश्चित रूपमें अपन ही बिनागमें  
सहायक हा रह ह। अुनके दुखाकी गाथाकी पूतिने अि पाठक जान  
लें कि खती भी लाभदायक नहीं रह गयी है। कुछ फमलामें तो  
ग्रामीणाको बीजकी कीमत भी नहीं मिलती।

अिन सब स्वीकारोक्तियाके बाद मरे यह कहनका क्या अय है  
कि खादी ही अकमात्र सच्ची आर्थिक योजना है? तो म अपना कथन  
पूरी तरह रख दू जब तक सोचूह कपसे अपरके प्रत्यक तदुस्त  
स्त्री-पुरुषके लिये भारतके प्रत्यक गावके खत धापडी या कारखानमें  
काम और काफी मजदूरी दिलानका बहुतर तरीका न निकाल लिया  
जाय तब तक लाखा ग्रामीणोकी दृष्टिसे खादी ही अकमात्र सच्ची आर्थिक  
योजना है। या फिर गावोके स्थान पर अितन गहर बन जान चाहिय  
कि दहातियाको व जरूरी सुख-सुविधाअें प्राप्त हो जाय जा अक  
सुनियमित जीवनके अि जरूरी ह। मने अपनी बात अितनी पूरी तरह  
यही दिखानके लिये पग की है कि जितन लम्ब समय तककी कल्पना की  
जा सकती है अतन समय तक जिस समस्याका हल खादी ही रहेगी।

अिस समय सबसे जरूरी समस्या यह है कि गलो दहातियाके  
अि जो दिन दिन दरिद्र हात जा रह ह काम और मजदूरी कसे  
जुटायी जाय। अिस बढती हुयी दरिद्रताका प्रमाण जो भी दहातमें  
जानना कष्ट अठायेंग अुहें अपन आप मिल जायगा। समकालीन  
विगपज्ञाक प्रमाणोसे भी यह बात साबित हो जाती है। गोग आर्थिक  
मानसिक और नतिक दृष्टिसे दिन दिन दरिद्र होत जा रह ह। काम  
करन सोचन और जीन तककी अनकी जिच्छा तजीसे नष्ट हो रही  
है। जो जिदगी व बसर कर रह हैं वह जीवित मौत ही है। खादी  
अहें काम औजार और अनेके मात्रके अि तयार बाजार दती है।  
जहा अुहें कल तक निरी निरागा नजर आती थी वहा खादी अहें  
आगा प्रदान करती है। गकाील लोग पूछत ह तो फिर खादीन

अितनी थोड़ा प्रगति क्या की है यदि वह अितनी आगाजनक योजना है ? अुत्तर यह है खादीन लाखों गोगाकी दृष्टिमे जो प्रगति की है वह अपने आपमें तो थोड़ी है मगर अय किसी भी एक अुद्यागकी तुलनामें वह सबसे अधिक है । वह हर साल दहातके रोजी कमानवालाकी सबसे बड़ी सरयामें कमसे कम यवस्था-रूच करके अधिकस अधिक रकम वाटती है और अुसका लगभग अक एक पमा लागामें घूम जाता है । जो कोअी भी अखिल भारत चरवा सघ द्वारा प्रवागित आकडोका अध्ययन करगा वह अिस मचाओका प्रमाण प्राप्त कर सकता है ।

खादीकी अुन्नतिमें अनेक बाधाओं ह । खुद गावाके गोगामें अुसके खिलाफ गहरे पूबग्रह ह । अुस राजकीय सरक्षणके विना ही मिलाकी सिद्धातहीन स्पर्धाका मुकाबला करना पडता है अयशास्त्रके तथा कथित विगपज्ञाकी प्रचरित रायका विराध सहना पडता है और खादीधारियाकी खादीको अधिकधिक सस्ती करनेकी मागका मुवावला करना पडता है । अिस प्रकार प्रश्न यह है कि दहातिया और गहरियाको अिस अभाग देशके सच्चे अयगास्त्रकी गिदा कैसे दी जाय । यह सब धर्मसे परे है । हिंदू मुमलमान और ओसाओ सभी जो दहातमें रहते ह दरिद्रता और अभावके अक ही रोगसे ग्रस्त ह । अगर कोअी फक हो तो केवल मानाका है ।

अिमलिअे मेरी राय है कि भले हां पी गजके हिसाबसे यादा मिलके कपडसे महगी हो पग्लु सब बातोंको देखने हुअ और ग्रामीणाकी दृष्टिस वह अत्यत सस्ती और अन्तिम यावहारिक योजना है । अिस सवाककी पूरी जाच करत समय खाामें दूसरे ग्राम-अुद्यागको गामिल समझना चाहिये ।

१६

## विदेशी कपडा नहीं चाहिये

हमार सामन तात्कालिक समस्या यह नही है कि दगकी सरकार कसे चलायी जाय बल्कि यह है कि हम अपन रोटी-कपडका प्रबध बसे करें। १९१८ में हमन कपडा खरीदनेके लिये साठ करोड रुपया हिंदुस्तानसे बाहर भज दिया। अगर हम अिसी हिसाबसे विलायती कपडा खरीदत रहत ह तो हम भारतीय जुलाहो और कस्तिनोको बदलमें लगभग और कोयी भी काम दिय बिना अनुसे अितनी रकम छीन तत ह। तब कोयी आश्चय नही कि हमारी आबादीका कमसे कम दसवा भाग निदयताकी हद तक भूखो मरता है और बाकीके अधिकांश लोग अधपट खाकर जीते ह।

यग अिडिया १९-१-२१

जसे हम अही बच्चोसे कृतज्ञतापूर्वक सतोप कर लत ह जो अीश्वर हमें दता है वस ही जा कपडा भारत अल्पन कर सकता है असीसे सतोप करनेकी हमारी तयारी होनी चाहिय। मन कोयी भा असी नही देखी जो अपनी गोदके बच्चको फेंक द भल बाहरवालोको वह बदसूरत दिखायी द। भारतमें बन हुआ मालके बारमें भी भारतकी दगभक्त स्त्रियोका यही खया होना चाहिय। और आपके लिय तो केवल हाय-कता और हाय-बुना कपडा ही स्वदेशी समझा जा सकता है। परिवतन काममें आपको बहुतायतसे तो मोटी खादी ही मिल सकती है। आप अिसमें अपनी रचिके अनुसार सारी कलाका योग कर सकती ह। और अगर कुछ महीना तक आप मोटी खादीसे सतोप मान लें तो भारतको प्राचीन वारीक बढ़िया और रगीन कपडके पुनरुद्धारके विषयमें निराग नही होना पडगा। यह कपडा अिसी जमानमें दुनियाकी अीर्ष्याकी चीज था। म आपको विश्वास अिगतता ह कि जिसे आजकल हम कलापूण कहत ह वह शूठमूठकी ही कला है।

सच्ची कलामें केवल रूपका ही नहीं बल्कि अिम वातका भी ध्यान रखा जाता है कि अुसके पीछ क्या है। अेव कला वह है जा विनाग वगती है और जब वह है जा जीवनगान देती है। पश्चिम या दूर पूवसे जा वारीक वदन हमन आयात किये ह अुहान अक्षरग हमार लाखा भाजी-बहनाका मार डाला है और हमारी हजारा वगनाका ऋजास्पद जीवन वितानेके अिअ वाध्य किया है। मन्ची कगमें अुसके कताआके मुख सताप और गुदताका प्रमाण मिगना चाहिये। और अगर आप चाहती ह कि हममें असी कला पुनर्जीविन हा ता आपमें मे सबसे अच्छी बहनाक लिअ खादी काममें लना अनिवाय है।

यग अिडिया ११-८-२१

१७

## अठारह सौ अट्ठासीसमें

खादी प्रतिष्ठानका श्री सतागचद्र दासगुप्त राष्ट्रवाणी नामक अेव बगला पत्रका मपादन कर रहे ह। अुहान हालमें ही समाचार दपण के सम्पादके नाम भजी गजी अेव चिटठी खाज निकाली है। यह समाचारपत्र अुग्रीसवी सनीके तीसरे दगकमें बगलामें प्रकाशित होता था। चिटठी बह महत्वकी है, क्याकि अुससे जाहिर हाता है कि चरखका कस धीर धीरे नष्ट किया जा रहा था और अुन दिनमें स्त्रिया अुन कितना मूयवान मानती था। अिमअिअ अुहाने अुसे अपने पत्रमें छापा है और मरे पाम अुसका अनुवाग भेजा है। मुझे विदवास है कि जिनकी खानी-आदागनमें दिलचस्पी है व सन अिसे ध्यानमे पढ़ेंग। चिटठी यह है

“अक कत्तिनका निवेदन

सम्पादनजी समाचार-दपण

म अक कत्तिन हू। बहुत कष्ट अुगनके बाल यह पत्र लिप रही हू। वृपया अपने पत्रमें अिमे प्रकाशित कीजिये। मने सुना है कि यह छप जायगा तो अुन रोगाके पास पहुच जायगा



- हमें विदशी स्त्री काममें लनसे परहज करनकी जरूरत नहीं है  
 — नयोकि वह कच्चा माल है। हमें तो वपमें कमसे कम चार महीन  
 — तक मजबूरन् बकारीमें रहनवाल अधभूख जनसाधारणके खातिर विदगी  
 — सूत और कपडका बहिष्कार करना चाहिय क्याकि जनसाधारण अपन  
 धरा पर बताओी और बनाओी कर सकत ह।

यग अिडिया ५-४-२८

हमार अपन मल्कमें तो विदगी कपड पर हाथ-बती सादीको तरजीह दना हमार पवित्र कतव्य ही है भल अससे हमें कितनी ही असुविधा क्या न हो। वह अक तुच्छ और छिछली विचारधारा है जो हमें सिखाती है कि अपन निकटके पडोसियाका भउ ही बुछ भी हाल हो हमें तो सस्तसे सस्ता ही माल खरीदना चाहिय। आस्ट्रेलिया या अमरीकाके बडिया गहूका मफ्त दान हमार लिअ जहर होगा अगर असका नतीजा यह हो कि भारतम बकारी पदा हो और असकी भूमि सोने जसा अन्न पदा न करके घास अुगान लग। असो प्रकार मच स्टरसे मुफ्त कपडा मिल तो वह दान भी भारतके लिअ अितना महगा पडगा कि अुसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। असलिअ म फिर कहता हू कि खदर अस वक्त तक किसी भी भाव सरता है जब तक वह राष्ट्रके बकार समयका अुपयोग करनका काम दता है। और जब तक दूसरा कोओी काम असा नहीं है जिसमें अुस समयका अुतना ही अच्छा अुपयोग हो सके।

यग अिडिया १७-१-२९

## स्वदेशी

बाजारमें कभी स्वदेशी वस्तुओं हू जिनके अपनाय जानेक अभावमें मिट जानका खतरा है। सम्भव है व जमी चाहिये बसी न हो। हमारा फज है कि हम उनका उपयोग कर और जहा कहीं सुधार सम्भव हो वहा उनके बनानवालासे उनमें सुधार करनेका बहें। सबम अच्छी और सस्ती चीज लनका नियम हमगा गीक नहीं होता। जैसे हम बेहतर आवहवावाले दशके लिअे अपन देगका पाड नहीं रत, बल्कि अपन हीं उलवायुको सुधारनेकी काशिंग करते ह ठीक अिसी तरह बेहतर या अधिक सस्ती विदेशी चीजाके खानिर हम स्वदेशीको छोड नहीं सकते। जमे कोअी पति अपनी सीधी-सानी दिखाअी देनवाली पत्नीसे असतुष्ट होकर यदि किसी खूबसूरत औरतकी तगन करता है तो वह अपने साथीके प्रति बवफाअी करता है अिसी तरह बह मनुष्य अपन देगके प्रति बपानार नहीं है जो अपने दगका बनी हुआ चीजाके मुकाबलेमें विगयती वस्तुआके अच्छी होन पर अुहें तरजोहनेता है। अत्यक देगकी प्रगतिके नियमाका तकाजा है कि बहाके रहनवाले अपने यहाका ही पगवार और मालको ज्याग अपनायें।

मग अिडिया ३०-५-२९

स्वदेशीका पुजारा अपन निबटके पडोमियाकी मेवामें अपनका समपण करना अपना पहग घम समझगा। अिममें बाकी लागाव हिताकी अवहेलना या कुर्वानी करनेका आवश्यकता हो सनती है। मगर यह अवहेलना या कुर्वानी सिफ अूपरी हागी, वास्तविक नहीं। अपन पडो सियोंकी गुड सेवा तो चीज ही असी है कि अुससे दूर रहनवालाकी कुसेवा कभी नहीं हो सकती बल्कि उनकी भी सेवा ही हानी है। यथा पिंड तथा ब्रह्माण्डे अक अचूक सिद्धांत है जिसे हम हृदयगम

कर लें तो अच्छा है। जिसके विपरीत अगर कोई आत्मी दूरके डोल सुहावने के प्रलोभनमें पत्कर सेवाके त्रिअ दुनियाके परत सिरे तक दौड़ता है तो वह अपनी महत्याकांशमें विफल ही नहीं होता परंतु अपन पड़ोसियोंके प्रति अपन कृतज्ञते भी ध्युत होता है। अब ठोस मिसाल लीजिये। जिस स्थान विशेषमें म रहता है वहा कुछ व्यक्ति मर पड़ोसी हैं और कुछ रिश्तदार और आश्रित हैं। कुदरती तौर पर वे महसूस करते हैं और महसूस करनेका उन्हें हक है कि अनका मुझ पर कुछ अधिकार है और वे मयसे सहायता और सहारेकी आशा रखते हैं। अब मान लीजिये कि म अन सबका अचानक छोड़कर किसी दूर स्थानके लोकाकी सेवाके लिए चला जाता है। तो क्या परिणाम होगा? अघर तो मरा निजय पड़ोसियों और आश्रिताकी मरी छोटीसी दुनियाकी अस्त-व्यस्त कर दगा और अघर मरी अपाचित परापकार पूरता बहुत करके नहीं जगहके वातावरणको अमान करगी। जिस प्रकार मर स्वदेशीके सिद्धान्तको भंग करनेका पहला नतीजा यह होगा कि अपन निकटके पड़ोसियोंकी दोषपूर्ण अप्ना होगी और जिन लोगोकी म सेवा करना चाहता है अनकी न चात हुआ भी कुमवा होगी।

असी और अनक मिसात्रें दी जा सकती हैं। असीलिए गीता कहती है स्वधमें निधन ऽय परधमों भयावह — अर्थात् अपना धम पालन करने हुआ मरना अच्छा है लेकिन परधममें खतरा है। अपन भौतिक वातावरणकी दृष्टिसे जिसका अर्थ किया जाय तो मालूम होगा कि अिसमें स्वदेशी धम समाया हुआ है। गीता ओ स्वधमके विषयमें कहती है वह स्वदेशी पर भी अतना ही लागू होता है क्योंकि स्वदेशी अघन निकटके वातावरणमें लागू होनेवाला स्वधम है।

बुराही सभी हाती है जब स्वदेशीके सिद्धान्तको मरत तौर पर समझा जाता है। अुदाहरणाय अगर म अपन परिवारको सुख पहुचानक सातिर अच्छ-बुर सब अपायोमे रुपया बढोरन मग तो यह स्वदेशी धमका विपर्यास होगा। स्वदेशी धमकी मूलमे अितनी ही माग है कि म अपने परिवारक प्रति अपनी अुचित जिम्मदारियाका म्यापपूज

अपायासे पालन करे। असा करत हुअे मुझे अुचित आचरण करनेके सावत्रिक नियम मालूम हो जायेंगे। स्वदेशी धमके पाठनसे कभी किसीकी हानि नहा हो सकती और यदि होनी है तो मानना चाहिये कि म स्वधमसे नहीं बल्कि अहंकारसे प्रेरित हू।

असे अवसर आ सकते ह जब स्वदेशीय पुजारीका विधवाकी सेवाकी बन्धिदी पर अपने परिवारकी कुर्बानी देनेकी जरूरत आ पड। अुस समय जिस प्रकारका स्वेच्छापूण आत्मोत्सग परिवारकी सबसे बडी सेवा होगी। जो अपनी जान बचाना चाहता है वह अुसे खायेगा और जो प्रभुके खातिर अपनी जान देगा वह अुसे पायगा — यह बान जितनी व्यक्ति पर लागू होती है अुतनी ही पारिवारिक समूह पर भी लागू होती है। दूसरा अाहरण लीजिय। मान लीजिय कि मर गावमें प्गका प्रकोप होता है और अिम महामारीके गिवार बने गोगोकी सेवा करत हुअे म मेरी पत्नी और बच्च तथा मरे घरके और सब आत्मी मर जान ह तो म यह नहीं मानूंगा कि अपने प्रियजनाको मरा साथ देतकी प्ररणा देकर म अपन परिवारका विनाशक बना बल्कि अिसके विपरीत यह मानूंगा कि म अुसका सच्चा ह्मिपी बना। स्वदेशीमें स्वायकी कोआ गुजाअिग नहीं और अगर अुसमें स्वाय है तो वह अित्त अुच्च प्रकारका है कि वह अच्चतम परापकारस भिन्न नहीं है। अपने विगुद्ध रूपमें स्वदेशी धमका पाठन चरम काटिकी विश्वसेवा है।

अिस प्रकारके तव पर चलत हुअ मुझे सूवा कि समाज पर स्वदेशीका गगु करनमें खानी अिस मिद्धातका अेक आवश्यक और अत्यंत महत्त्वपूण अग है। मन अपनस पूछा, अिस समय कौनसी असी सेवा है जिसकी भारतके करोडा लागाको सबसे ज्यान्त जरूरत है जिस सब आसानीसे समझ सकते ह और आसानीस कर सकते ह और साथ ही जिससे हमारे कराडा नगे भूख लाग जिन्ग रह सकत ह? मुझे अत्तर मिला कि य गतें खादी या चरखके सावत्रिक प्रचारम ही पूरी हो सकती ह।

कौअी यह न समझ ले कि खानीके द्वारा स्वदेशीके पालनसे विदेशी मिन्-मालिकाको नुकसान पहुचगा। किसी चोरसे अुसकी चुराअी

हिसा होना कोभी रतना न हो और स्वयंसेवक विश्वस्त और अन भवी हो।

७ अपुरोक्त बाताका ध्यानमें रतत हुअ सब अिवाअियोको रोजाना केंद्रीय कार्यालयके पास कामकी यौरवार रिपोट भजनी चाहिय और केन्द्रीय कार्यालयको दनिक प्रगतिका साप्ताहिक सार बखबारायें छपनके लिअ भजना चाहिय।

८ अिस आंदोलनमें सभी राजनातिक और दूसरी सस्थाअिसे सहायता और सहयोग लना चाहिय।

९ बहिष्कार आंदोलनको चगानके लिअ दगभक्त महिगाअीकी सहायता लनी चाहिय।

१० अखिल भारत चरखा सघसे कहा जाय कि वह केन्द्रीय कार्यालयका जस स्थानाका सूची द जहा असली खादी मिलती है और कहा भडार खोल जहा खादीकी माग है।

११ विदगी वस्त्र बहिष्कार समितिके नामसे अक छोटीसी कमटी बनाओ जाय असे अपना काम गट करनके लिअ रुपया दिया जाय और अधिक रुपया जमा करनकी मत्ता दी जाय। कमटीका फज होना चाहिय कि वह हर तीसर महीन आम-व्ययका जाचा हुआ हिसाब प्रकाशित कर।

१२ ग्मारहवें पर में प्रस्तावित कमटीको असे परच सूब बन्दान चाहिय जिनमें बहिष्कारकी आवश्यकता और सभावना बताओ जाय और व्यौरवार यह बताया जाय कि यकित अिस बहिष्कारको कसे सफलतापूर्वक कर सकत ह।

१३ प्रान्तीय और केन्द्रीय दोना धारामभाओमें प्रस्ताव रत जाय जिनमें सवधित सरकारसे यह कहा जाय कि कयिन महगपनकी परवाह किय बिना क अपन लिअ साग कपन खादीका खरीदें। यह प्रस्ताव नी रखा जाय कि विन्गा कपडक आमात पर अितना कर लगाना चाहिय जिसमें वह आ ही न सके।

टिप्पणी अपराक्त योजनाका आधार यह धारणा है कि भाप्रस कमटियोंका दगभरमें तुरन्त पुनगठन किया जायगा सदस्यताका

पुकारका बडिया जवाब मिलेगा और खादीके द्वारा विदेशी वस्त्र बहिष्कारकी मुहिमको चलानमें सभी कांग्रेस कमटियाका पूरा सहयोग होगा। कहना यह है कि अगर ये गते पूरी कर दी जाय तो वपके भीतर हा यह बहिष्कार सफल हो सकता है कमसे कम जिस हद तक तो सफल हो ही सकता है कि विदेशी वस्त्रके आयात पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़े।

यंग इंडिया २४-१-२९

म मानता हूँ कि जब हमने विदेशी वपडेके मोहमें चरखको तिरंग जलि देकर भारतकी आर्थिक स्वाधीनताको बेच दिया तब हमने भारतीय मानवताके प्रति बड़ा अपराध किया था। और आज हम जडताके वशीभूत होकर उस अपराधको दोहरा रहे हैं। जिससे मन अनुभव किया कि भारतका नीदसे जगाना मरा परम धम है। हमारे पास लाखों तदुक्त स्त्री-पुरुषाके बाजूआ और हायाके रूपमें बनी-बनाया ताकत मौजूद है जो आज भारतकी सार्वभूमिमें बेकार पडी ह। बाकी कारण नही है कि ये लावा बेकार हाय भारतके सात लाख गावाना आप डिमामें लावा तबुअे न चलायें। अंग्लण्ड रुआ पदा नही करना फिर भी उसके लिये यह समभव है कि भारतमें पदा हुआ रत्रीको पहासे लबागापर तक ले जाय और फिर उसे वपडेके रूपमें भारतको लौटा दे। तब हमारे लिये तो यह और भी आसान होना चाहिये कि हम जा रुओ खुद पदा करते ह उस भारतमें एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जहा उसकी जरूरत हो ले जाकर उसका वपडा चुनवा लें। युवासीनता तथा निष्क्रिय और सत्रिय विरोधके बावजूद यह काम जिस देशके दो हजार देहातोमें हो रहा है। और हमारी मोहनाज बहने अपनी नाजूक अंगुलिआसे काते हुअे सूतके बल्लेमें हर दिन या हर हफ्त पसे या रुओ लनेके लिये वही मीठ पदल चल्कर आनेमें कौओ बष्ट नही मानती। जिसलिये यदि हममें जिन मोहताज बहना और भारतके बराडा नगा भूसावे लिये कुछ भी भावना है—और जिनमें से दसवें भागको खुद अंग्रेज नामकाक बयनानुमार सार साठमें एक जून

भी भरपट खानको मुश्किलसे मिलता है—तो हम अक अक जिव विदगी कपडा बुतार फेंके और असे आगके हवाक बर देंग। कमसे कम अितनसे प्रायश्चितकी आगा तो भारतमाता अपनी सन्तानासे जरूर रखती है।

यह मातूम हो जाना चाहिय कि भारतमें लाखो लोग असे हैं जो रोजाना आठ घट चरखा चग सकत ह लकिन अुस सूतसे बनी हुअी सारी खादी व कामम नही ल सकत। भारतके अच्छ नागरिकोका यह परम धम है कि अपन अिन भाओ-बहनोके तयार किय हुआ अतिरिक्त मात्रको व ल लें। हम यह भी न भूज जाय कि पगु-सृष्टि और मनष्यमें यही भद है कि मनुष्य समाजका लिहाज रखता है। अगर अुसे स्वाधीन होनका विशपाधिकार प्राप्त हुआ है तो परस्परा धीन होना भी अस्का क्तव्य है। कोअी अहकारी मनष्य ही सबसे स्वाधीन और अपन आपमें समाया हुआ रहनका दावा कर सकता है। हमार गावोकी अिस प्रकार पुनरचना करना सभव है जिससे अग्य अलग ग्रामीण तो नही परतु दहात मित्रकर अपनी कपडकी जरूरतोके मामलमें आत्म निभर हो जाय। अिसी कारणसे मन असस्य बार कहा है कि जब खादी भारतमें चल निकलगी तब असे विन्सी कपड या भारतीय मिलोके कपडकी स्पर्धाका भी डर नही रहगा। थोडसे विचारसे मालूम हो जायगा कि यह स्वय सिद्ध बात है।

यग जिडिया २५-४-२९

हम जरा अिस कथनकी जाच करें कि खादीके द्वारा बहिष्कार सफू नही किया जा सकता। यह कहा जाता है कि खादीका अत्याग्न हमारी आवश्यकताओके लिअ काफी नही है। जो अिस तरहकी बातें करत या लिखत ह व खादीका क ख ग भी नही जानत। खादीका अनन्त विस्तार किया जा सकता है क्योकि हम चाहें तो अिसका बनाना अतना ही आसान है जितना रोटीका। बहिष्कारके कामके लिअ मझ खादीके अयगास्त्रकी चर्चा करनकी जरूरत नही।

मान लीजिये कि अंग्लण्ड और जापान हमें कपडा भेजना बन्द कर दें और किसी न किसी कारणसे हमारी मिर्चे काम न कर सकें तो हम खादीके अयगास्त्रका विचार नहीं करेंगे परन्तु अपने ही घरमें आवश्यक् मात्रामें कपडा तयार करनेमें जुट जायेंगे। जिन व्यापारियोंका कपडका व्यवसाय बन्द हो जायगा वे सब खादीके अयगानमें गग जायेंगे। चूकि हमने अपन आसपास विचारा और पुरपाय-हीनताका बरा वातावरण अुत्पन्न कर लिया है, सिफ अिसीलिजे हम मामूली सी बातके लिजे भी अपनका अमहाय समझत ह।

अिस आन्दोन्की सफरताका दारमदार लावा लागाके स्वेच्छा पूण और सगठित सहयोग पर है। यह सहयोग माग्ने भरने मिल भक्ता है यदि विचारणीय बग सफरताका दृढ निश्चय करके चरवा चलाने लगे। वे याद रखें कि यह असा आन्दोन् है जिसमें मामूली सी पूजी गी है जेकिन जिक पास बन्त जागरूक और गगतार बढ रहा सगठन है। राष्ट्र यदि पूरी गकिन लगाकर जिसे अपना ले तो सफरता निश्चित है।

अक बार सच्चे त्यागकी भावना राष्ट्रको अनुप्राणित कर दे तो बाजारमें हाय-वत मूतकी बाढ लाभी जा सकती है। और यह ता मन बना ही दिया है कि खादीके अुत्पादनका रहस्य अधिक सूत पदा करनेमें है। भारतके तमाम स्कूलोंमें ९७ लाख विद्यार्थी पढ रहे ह। यह सारी आवादीका अक तुच्छमा अनुपात अर्थात् ४ फी सदीसे भी कम है मगर यह सख्या यथाय कताभीका आमानोसे सगठन करनेके लिजे काफी है। अिस आकडेमें कभी और सरथावाका हिसाब नहा लगाया गया है जा बहुत प्रयत्नके बिना जिसी तरह सगठित की जा सकती ह। गत यह है कि यह दृढ निश्चय कर लिया जाय कि हमें खादीके द्वारा बहिष्कारको सफर बनाना ही है।

यग अिडिया २०-६-२९

बहुत गगाको यह डर मात्रूम हाता है कि खादी जल्दी ही बाजारमें गायब हो जायगी और हम फिर पहलेकी तरह देगी मिलाकी दया पर निभर हो जायेंगे। अुसके सिवा यह पतरा रहगा



कि हमें फिर मूखतावग या तो भारतीय मिलावे बन कपडकी जाडमें  
विनायती कपडा लना पडगा या कमसे कम बहुत भारी कीमते चकानी  
होगी। यह सतरा सच्चा है अगर हम अपना समय सभी अपुण्य अपाय  
द्वारा सादीका जत्यादन करनमें नही लगायें। अिसके अपाय य ह

- १ अपन लिअ कातना
- २ मजदूरीसे कातना और
- ३ यज्ञाय कातना।

पहला अपाय सबसे महत्वपूर्ण सांख्यिक और अक्व है। अक्व  
बार वह सगठित होना चाहिय। फिर तो वह खादीकी अत्यंतिका सबसे  
सस्ता तरीका है क्योंकि अिससे मात्की वित्रीके लिअ बाजार दूदनकी  
असट मिट जाती है। दूसरा अपाय है मजदूरी पर कातनका। अिसके  
लिअ बडी गजाअिग है। मगर अिसमें रअी जमा करके रखन और  
वित्रीको सगठित करनके लिअ पूजीकी जरूरत है। अलबता अिससे  
हमारी यवसाय गक्ति पर भी जोर पडता है हममें सूअ आती है हममें  
अक्व विगाअ सगठन बना उनका सामय्य पदा होता है और मध्यम  
वगके लिअ सम्मानपूण आजीविका मिल जाती है। तीसरा अपाय  
बुदात्त है परतु असे तो कुछ चुन हुआ लोग ही अपना सक्त ह। अगर  
राष्ट्र त्यागकी आवश्यकताको अनभव कर ल तो अिस अपायसे असीम  
मात्रामें सूत पदा किया जा सकता है। नगरपात्रिकाआकी तमाम  
पाठगात्रासे हमें लाखों गोगाको कपडा दनके लिअ सूत मित्र सपता  
है। नगरनिवासी लोग चरराको रोज आध घटा दें तो व कमसे कम  
१ गज अच्छा सूत दे सक्त ह। काअी बिना विचार यह न कह द  
कि हम तो कक् सूत कातनके बजाय किसी और अच्छ काममें आध  
घटा लगा सक्त ह। कोअी सठ किनी निजल मरुभूमिमें फन जाय  
तो ताजा पानी अिक्टटा करनसे अधिक अच्छ काममें वह अपना समय  
नही लगा सकता। भारतन यह ठान लिया है कि अिसी सालमें विदगी  
वस्त्र-बहिष्कार पूरा कर लना है, अिसलिअ वह अपन निवासियाके  
समयका अिससे अाअ अपयोग और क्पा कर सकता है कि जब तक  
बहिष्कार पूरा न हो जाय तब तक व सब सूत काते? हमें यह

मीघा-सादा प्रगट सत्य जिसलिये दिखायी नहीं देता कि हम अित बहिष्कारकी जरूरतको महसूस नहीं करते। कुछ भी हा ये तीना तरीके आजमाय जा रहे ह। और अगर हम अब अन पर भरमब कमल करें तो रानीके अकाका कोअी खतरा नहीं है।

पग जिडिया ३०-५-२९

अगर खादीकी भावना और असे तयार करनेका सवल्प पदा किया जा सके तो अक मासके भीतर किसी भी कठिनायीके बिना अमर्यान्त मायामें खादी बनाओ जा सकती है।

कुशल बनकर भारतभरमें पाये जाते ह। जिसलिये समस्या अकमात्र कताओकी है।

कताओ और असके पट्टेकी प्रक्रियाअें अक सप्ताहके भीतर सीखी जा सकती ह यदि सीलनवालोमें सवल्प और परिश्रमशीलता हो।

भारतमें अुसकी सारी जरूरतके लिये काफीसे अधिक रूअी पदा होती है।

जिसलिये जो विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके लिये काम करते ह अुह कताओक द्वारा रानीके अुत्पादन पर सारी शक्ति लगानी चाहिय।

पग जिडिया २४-४-३०

विदेशी कपडेकी दुबानो पर धरना देनेका केवल सीमित अुपयोग ही है। अमली चीज तो जनसाधारणका अिन मामलामें गिक्षा देना है। गिक्षासे भी अच्छा यह है कि कायकर्ता अुदाहरण पेश कर। और अुमसे भी बेहतर यह है कि लोगको अपन आप सूत कातकर खादी पदा करना सिखाया जाय। व्यवहारमें तीना तरीके साथ साथ चलेंगे। जिसलिये खादी द्वारा बहिष्कारके अधगास्त्रकी जानकारी लोगको जरूर करानी चाहिय। लोगको चुने हुअे अुदाहरण द्वारा यह बताना चाहिये कि खादी देहातमें वभव कसे ला सकती है और कसे लायी है। आदतन् खादीधारी सच्चे कायकर्ताओको लोगके सपकमें आना चाहिय और अुह यह ज्ञान कराना चाहिये कि वे अपन ही गावामें अपनो ही खादी कसे तयार कर। जिसलिये काग्रेसके काय कर्ताओको बहिष्कार और खादी-साहित्यका अुचित पान होना चाहिय,

वे खादीके प्रामाणिक पहननवाते जरूर होन चाहिय और नूहें छजीकी प्रश्रियाओका अतिना ज्ञान होना ही चाहिय जिससे व अून लोकाका शिक्षा दे सकें जो ओटाा घुनना कातना या बुनना भी चाह।

यग अिडिया १४-५-३१

जसे अहिंसा राजनातिमें नया माग है असा तरह खादा भा अयगास्त्रमें नया माग है। जस अहिंसान पुरान राजनातिक अपायाको परास्त कर दिया है अस खादा भी पुरान आर्थिक विचाराको गण्डडीमें डाग बिना नहा रहेगा। यह नया तराका पुरान अयगास्त्रीय ढग पर अक हद तक हा सिद्ध किया जा सकता है। बहिष्कारको जो चमत्कारी सफलता प्राप्त हुयी है वह खादीकी भावनाक ही कारण हुयी है। बहिष्कार स्वय तो कोआ नया नारा नही है। वह बगभगस पहलका नही ता अतना पुराना ता है ही। परतु सफरताकी आगाका जन १९१९में सानिक पुनजमके साथ हुआ है और यह आगा आंगिक रूपमें पिछठ साग फतीभूत हुयी जब कि खादीकी भावना खूब जोरा पर थी।

टाजिम आफ अिडिया के लेखका कहना है कि बहिष्कारका अदृश्य या परिणाम आम जनताकी नकसान पहुचाकर बचठ मित्रको फायदा पहुचाता है। मह कथन साधार होता यनि बहिष्कारके पीछ साने न होती। लेखक और अूनक जस आलाचक याद रखें कि काप्रसक मूत्रका तो भापा हा है खाने द्वारा बहिष्कार। दगा मिलें तो खादीकी सहायताये लिअ बीचमें आती ह। परतु भारतीय मिलें सानेका विराध करेगा ता अूनक वावजूद बहिष्कार कामय रहेगा।

यह काम काप्रसक है कि वह सतत प्रचार द्वारा मिलाका नफा खोरीके प्रलोभनसे दूर रखे और जनसाधारणको सिखाय कि अनका आर्थिक बल्याण हाय-बताओ द्वारा अपन ही घरामें खादी तयार कर लेनमें है। अक बार बिलायती कपण रास्तेसे हट जायगा तो देगी मिलें चटसे अपन भाव और अुत्थान सानेके अनुकूल बना लेंगी या स्वय विदगा मिलाका तरहक बहिष्कारका सामना करगी।

यग अिडिया ४-६-३१

२१

## खादी बनाम मिल्का कपड़ा

अगर मूला बूनी या रामा हाथ-कता हाथ-तूना खादी ही चलने-वाला है तो फिर राष्ट्रीय अवरचनामें मिल्का कपड़ेका स्थान है या नहीं यह प्रश्न अकर्म्य पूछा जाता है। अगर आज चरखा मूला लायों-जगना आतिया तक पहुँच जाय और व अमु मध्य लें तथा प्रश्न करें तो मैं जानता हूँ कि हमारी घर-तू अवरचनामें मूला या कित्ना कित्नी भी मिल्का कपड़ेका काजी स्थान नहीं है और अतः कित्ना गायब हो जानस राख्वा भग हो हागा।

त्रिम कयनका मणोनासि या कित्ना वस्त्र-वस्त्रिधारके प्रचारसे बाधा मवय नहीं है। यह केवल भारतीय जनसाधारणकी आर्थिक स्थितिका हो प्रश्न है।

परन्तु यदि भगवान ही दौकर सहायता कर द और जन-साधारणका चमत्कारपूर्वक और तत्काल चरखेका आश्रय देनेका मजबूर करे तो तब तो और बात अथवा कमन कम कुछ वष तक तो भागनाय मित्रे खाता-अत्युत्तिकी कमी पूरी करती ही रहेंगी। काग हमारे कसे मित्र-मालिकाका यह समझाया जा सक कि व मित्र-अध्यागकी राष्ट्राय यात्री मानने लगे और अमुक अमुचिन स्थानका समय लें। मित्र-मालिक जनसाधारणका हानि पहुँचाकर अपना जमा करना तो नहीं चाह सकन। अब भी कश्चित्त और दूसरे स्थानसे विवायते आता रहता हूँ कि यद्यपि भारताय मिलाका घातिया मैचेस्टरका घातियामे भगिया हूँ, फिर भी व दाम त्रिनस ज्यादा रता हैं। अगर यह खबर

सही है तो यह बात देश-प्रमदके बहुत विरुद्ध है और अतिलोभकी यह नीति काय और देश दोनोंके लिअे हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

यग अिडिया २३-२-२२

मिन्के कपडके स्यापी राष्ट्रव्यापी बहिष्कारका कोअी सवाल नहीं है। परतु जहा अकेली भारतीय मिले कपडकी मौजदा मागको कभी पूरा नहीं कर सकती वहा चरखा और हाथ-करघा कर सकते ह। परतु चरखकी पदावार खानीको अभी तो लोकप्रिय और सावत्रिक बनना है। यह तभी हो सकता है जब भारतका विचारील समदाय काय आरभ कर दे। असलिअ असे अपन लिअ कपडका अुपयोग खादी तक ही सीमित कर देना चाहिय। हमारी मिलोको हमारे सरक्षणकी जरूरत नहीं। अनका माऊ काफी लोकप्रिय है। साथ ही मिला पर राटका काअी नियत्रण नहीं है। वे परोपकारी सस्याअे नहीं ह। वे साफ तौर पर स्वार्थी ह। वे अपना प्रचार खु कर उेती ह। अगर वे समयकी गतिको पहचानेंगी तो अपना कपडा सस्ता करके और जहा आजकल खादीसे काम नहीं चलता अुन अिलाकोमें अपना कपडा पट्टा कर विदेगी वस्त्र-बहिष्कारको सहायता देंगी। वे चाह तो खानीसे स्पर्धा नहीं करेगी और असकी कभी पूरी करके ही सतोप कर लेंगी।

यग अिडिया २२-५-२४

अक भाअी लिखते ह

यह समझमें नहीं आता कि आप यह क्यों नहीं अनुभव करते कि खट्टरको व्यापक रूपमें अपनाअका आग्रह करके आप बहुतसे मिल-मालिको और अनसे भी अधिक सख्यामें हिस्सेदाराको भयकर हानि और विपत्तिमें डार देंग।

म चाहता हू कि पत्रलेखकका भय सच्चा सिद्ध हो। तब अुदे पता चेंगा कि मिलो और मिलोंके हिस्सेदाराकी होनवाली बर्वादीका समय ही अनकी अपनी और भारतकी मुक्तिका समय हागा। अुस समय अह माऊम होगा कि भारत नवजीवनसे अनप्राणित हो रहा

है और मध्यमवर्गको अपनी आजीविका आजकी तरह भूखे विमानामे नहा बकि अन्त खुगहाण विमानामे मिल् रही है जा अपनी अपुज अन्त चीजाकी अवजमें जिनकी अहें जरूरत है मगर जिहें वे खुद तथा नहा कर सकते खुगामे गें। बान्म विचारम पत्र-खबका अन्त तरह समझमें आ जायगा कि अहें और बाकीके हिस्सेतारा तथा मिलाके संचालकाको जनतास सहयोग करना पन्गा। तब कही चरखा जितनी अच्छी तरह जम पायेंगा कि वह मिलाका निकाल बाहर कर सके। पत्र-खबका अन्त वानसे सताप हाना चाहिये कि भारतिय मिलाके कपडका छूनस पहे चरखको गभग सान करोक स्पयन विलायती कपडको हुना है। परन्तु अन्त पन्नामें मन जो कारण बनाय ह अन्तका विचार करके भारतीय मिलाके कपडाका भी अन्त खबर हममें स प्रयक्का कवन खातीका ही विचार करना चाहिये। हमारी मिन्का मेरे या और किसीके भी सरक्षणकी आवश्यकता नहा है। अन्तके अपन ही दगल और अपन मान्के विनापनके विशेष तरीके ह। जा लाग काप्रेसमें ह अह मिन्का कपडा काममें अन्तकी डून दना सान अद्योगको मार गेना है। खातीका जितना मरक्षण दिया जाय अन्तना हा याडा है। तब कही वह बाजार परकोश्रो अन्तर डान मरेगी।

म चाहता हू कि पत्र-खब भात्री जनसाधारणकी दृष्टिम सचें और चरखका अपना कर अपने अभागे देगवासिमाने साथ वेक हा जाय।

अगर यह सच है जमा कि है, कि विलायती मिलाज जन साधारणके वभवका नष्ट कर लिया है, तो मानवताके विचारका यह माग है कि विन्गी मिन् मालिकाको कष्ट हो ता भी जनसाधारणका मिथाना चाहिये कि वे फिर चरखका अपनायें। अन्तमी प्रकार जरूरत हा ता देगी मिन्का अन्त लागके खातिर जिनकी दरिद्रताके आधार पर अन्तकी दौन्त बनी है, तबलीफ अुठानी चाहिये।

यम अिडिया १७-७-२४

म देगी मिलाके विरुद्ध हाय-बती खादीकी रक्षा करुगा। परन्तु मरा दड विश्वास है कि खाती मिलासे अन्तगोभनीय युद्ध किये विना

सही है तो यह बात देशप्रमदों बहुत विरुद्ध है और अतिलोभकी यह नीति काय और दण दोनोंके लिये हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

यंग जिडिया २३-२-२२

मिन्के कपड़ोंके म्यायी राष्ट्रव्यापी वहिष्कारका जोभी सवाल नहीं है। परन्तु जहां अकेली भारतीय मिलें कपड़ोंकी मौजूदा मागकी कमी पूरा नहीं कर सकती वहां चरखा और हाथ-करघा कर सकते हैं। परन्तु चरखकी पदावार खादाका अभाव ता लोकप्रिय और सामाजिक बनना है। यह तभी हो सकता है जब भारतका विचारणीय समुदाय काय आरम्भ कर दे। इसलिये उसे अपने लिये कपड़ोंका अुपयोग सादी तक ही सामित कर देना चाहिये। हमारी मिलोंको हमारे सरक्षणकी जरूरत नहीं। अुनका मात्र काफी लोकप्रिय है। साथ ही मित्रा पर राष्ट्रका कोई नियंत्रण नहीं है। वे परोपकारात्मक नहीं हैं। वे साफ तौर पर स्वार्थी हैं। वे अपना प्रचार (कम) लेती हैं। अगर वे समयकी शक्तको पहचानेंगी तो अपना कपड़ा सस्ता करके और जहां आजकल खानसे काम नहीं चलना अुन अिलाकामें अपना कपड़ा पन्चा कर विदेशों वस्त्र-वहिष्कारका सहायता देंगी। वे चाहे ता खादीसे स्पर्धा नहीं करगी और उसकी कमी पूरी करने ही सताप कर लेंगी।

यंग जिडिया २३-५-२४

अब भाभी लिखते हैं

यह समझमें नहीं आता कि आप यह क्यों नहीं अनुभव करते कि खहरका 'यापक' रूपमें अपनातका आग्रह करने आप बहुतसे मित्रमालिका और अुनसे भी अधिक सख्यामें हिस्सदारोंको भयकर हानि और विपत्तिमें डाल देंगे।

मैं चाहता हू कि पत्रलेखकका भय सच्चा सिद्ध हो। तब अहें पता चंगा कि मिला और मिलके हिस्सेदाराकी होनेवाली बर्बादीका समय ही अुनकी अपनी और भारतकी मुक्तिका समय होगा। अुछ समय अहें मान्य होगा कि भारत नवजीवनसे अनुप्राणित हो रहा

## हमारी मिलें क्या कर सकती ह ?

[ कुछ अग ]

कुछ अच्छ और कुछ बुरे बर्षोंका कमसे कम जोसत लेकर वे अपन भावाको स्थिर कर सकती ह ।

वे कपड़ेकी अनु किम्माको तयार करनसे अलग रह सकती ह जो खादी-सस्थाआ द्वारा आसानीसे और सुरत तयार की जा सकती ह और इस प्रकार अपनी शक्तिको वह माल अधिक् तयार करनके लिये मुक्त कर सकती ह जिसे वे खानी मस्थाआकी अपेक्षा फिलहात् ज्यादा सुगमतासे बना सकती ह ।

वे अपना मुनाफा कमसे कम रख सकती ह और कोअी बचत हा तो अुसे मजदूराकी हालत सुधारनमें लगा सकती ह ।

अिसका परिणाम हागा चतुर्मुखी प्रामाणिकता अ-यवसाय पार स्परिक विश्वास तथा श्रम पूजा और खरीदारके ग्रीच अक् स्वेच्छापूण और सम्मानपूण मत्री । अिसका अर्थ हागा अैक विगाल पमाने पर सगठनकी क्षमता ।

मेरी नम्र रायमें हम अिस कामके लिये खूब योग्य ह । अिस कामके लिय आवश्यक सगठनस हम अपरिचित नही ह । अक ही प्रश्न है कि क्या हममें सकल्पबल है ? क्या मिल मालिकामें पर्याप्त दृष्टि पर्याप्त देगप्रम है ? अगर हो तो वे अिस विषयमें नेतृत्व कर सकते ह ।

यग अिडिया १५-३-२८

‘ कुछ ही मिलें खादी न बनाती प्रतिज्ञा कर सकती ह । परन्तु अनुका क्या हागा जो केवल हन्के नम्बरका मून ही कातती है ? खानीकी आपकी बसौटी क्या है ?

यह मामला खानी-सस्थाआ और मिलाके बीचमें सामाय प्रामाणिकता और अ-यवस्थाका है । अगर कोअी चलन गायक व्यवस्था बनी



ही अपने परो पर सही हा नायगा। लेकिन जब तक खादीक धाड ही भक्त ह तब तक अन भक्ताको खादीका ही लाजिमी तौर पर प्रचार करना चाहिय और हमारी मित्रोमें तयार हुआ सूत और कपड पर भी खादीका तरजीह दना चाहिय और मिल्क कपडको दूर रखना चाहिय। अम कपडक अपयोगकी छट देना खादीका मार दना है।

मग अडिया २८-८-२४

राष्ट्रीय जीवनकी अयरचनामें मित्राका अमी ह् तक स्थान है जिस हद तक व हमारा लाजा झापडियाम हाय-बताओके राष्ट्रीय अद्योगका कमीको पूरा करती ह। अगर व कताओ अद्यागस स्पधा करन या असका स्थाप न्न न्गें तो वे बाधक बन जायेंगी।

मग अडिया ५-४-२८

अक अब गज खादा खरीदनका अय यह है कि कमसे कम ८५ फीसदी कीमत भारतक भस और गराब लोकाके पैरमें जायगी। मित्रक कपडका प्रत्यक गज खरीदन पर खच किम हुआ पसेका ७५ फीसदीसे ज्यादा पूजीपत्रियाकी जबमें जायगा—२५ फासदीस ना कम मजदूराका मित्रगा। य पूजीपत्रि कभी असहाय नही होने। व अपना रक्षा भलीभाति खुद कर सकते ह। वे कभी भूख नही रहन और अह भूल रहनकी जरूरत भी नहा पडता। यह नीवत ता जन लाजा लोकाको ही आली है जिनके गातिर खादीकी कल्पना का गभी है।

मग अडिया ४-१०-२८

## हमारी मिलें क्या कर सकती ह ?

[ कुछ अंग ]

कुछ अच्छे और कुछ बुरे बर्षोंका कमसे कम औसत रखर के अपने भावाका स्थिर कर सकती ह ।

व फण्डका अनु किम्मोको तयार करनसे अलग रह सकती ह जो खान्नी-सस्याआ द्वारा आसानीसे और तुरत तयार का जा सकती ह और जिस प्रकार अपनी गवितका वह मात्र अधिक तयार करनसे अिंजे मुक्त कर सकती ह जिसे व खादी सस्याआकी अपेक्षा किन्हा ज्यादा सुगमतास बना सकती ह ।

वे अपना मुनाफा कमसे कम रख सकती ह और कौअी बचत हो तो अुसे मजदूराकी हाउत सुधारनमें लगा सकती ह ।

जिसका परिणाम होगा चतुमुखी प्रामाणिकता अध्यवसाय पार स्परिक विश्वास तथा श्रम पूजी और खरीदाराक बीच अक स्वच्छापूण और सम्मानपूण भत्री । अिमका अय हागा अक विगा पमान पर सगठनकी श्रमता ।

मरी भध रापमें हम जिस कामके लिजे खूब योग्य ह । जिस कामके अिंज आवश्यक सगठनस हम अपरिचित नही ह । अक ही प्रश्न है कि क्या हममें सकल्पव है ? क्या मिल मालिकामें पर्याप्त दृष्टि पर्याप्त देगप्रेम है ? अगर हो ता वे अिम विषयमें नेतृत्व कर सकते ह ।

पग अिंहिया १५-३-२८

कुछ ही मिलें खान्नी न बनानकी प्रतिभा कर सकती ह । परतु अनुवा क्या होगा जो केवल हलक नम्बरका मूत ही बातनी है ? खान्नीकी आपकी कसौती क्या है ?

यह मामला खान्नी-सस्याआ और मिलाके बीचमें सामाय प्रामाणिकता और यवस्थाका है । अगर कौअी चलने गयक व्यवस्था बनी

तो म आगा रखता हू कि खान्ती-बे-द्रो और मिला द्वारा तयार हान वाठे कपडमें फिलहाल कोअी सीमारेखा तय हो जायगी। कपडके अुत्पादन पर वसा ही नियत्रण रखना होगा जसा यद्धके समय अकसर होता है। जो बात हम हिंसात्मक युद्धमें दवावसे करत ह वह अिस अहिंसात्मक युद्धमें स्वेच्छासे करेंग।

नफका नियमन कसे किया जायगा ? आप भी जानते ह और म भी जानता हू कि रओके भाव बहुत ही अनियमित ढगसे घटते बढते रहते ह।

अिसमें यह मान गिया गया है कि हम रओके बाजारका नियत्रण नही कर सकते। अवश्य ही यदि देगके बडसे बड जुद्योगपति अिस राष्ट्रीय कायके लिअ जव हो जाय तो वे रओके बाजारका नियत्रण कर लेंग। अमरीका हमारे रओके भावो पर अिसलिअ काबू रख सकता है कि हम मूखता विचारहीनता और स्वाथके कारण अपनी रओी बाहर भज देते ह। परतु बहिष्कारका अथ ही यह है कि जसे हम जीर बहुतसी चोजोका नियत्रण करेंग वमे रओके आवागमनका भी करेंग। तभी हम बहिष्कारको पूरा सफर कर सकेंग। और यह तो हमें करना ही है अगर हमने अपनमें सच्ची राष्ट्रीय भावना पदा कर ली है और हमें अपन आपमें तथा अपन राष्ट्रमें विश्वास है।

अगर आप जीमानदारी अफ्यवसाय पारस्परिक विश्वास अानि पर बहुत जोर देंग ता आपकी नाव पार नही गगी।

चूकि मेरे पास तन्वार नही है और हो भी तो म अुसे अपना अूगा नही अिसलिअ मझ तो अुही गुणा पर जोर देना होगा जिनकी अिन भाओके खयालसे बहुत कीमत नही है। मझे अुनके जसा अदेगा नही है। जितना ही नही मझमें अितना धीरज है कि य गण आज अगर काफी मात्रामें नही पाय जाते तो अुनके विकासकी प्रतीक्षा करूंगा। कारण यह राष्ट्र तब तक स्वतत्र नही हो सकता जब तक राष्ट्रके रूपमें हम अन गुणाका परिचय न देंग।

## खादी प्रचार मिलोका सहायक है

मिलान खादी प्रचारका कभी विरोध नहीं किया है। बुलटे अुनके बटुतसे प्रतिनिधियाने मुझे विस्वास दिलाया है कि खादी प्रचारम अुहें गभ हुआ है। क्याकि अुमसे विदेशी कपडके विरुद्ध वातावरण पदा हुआ है जिसक कारण वे अपना माट सूतका कपडा बच सके ह। केवल खादी ही लो वाला विगल खादीको प्रचारकाय बग कर नीजिये और मिलके कपडके साथ मिगवाड कीजिय तो आप खादीको मार देंग और अतमें मिलके कपडका भी मार देंग। क्याकि वह जकेला विदेशी स्पधामें टिक नहीं सकता। अगर खादीका भावना न हा ता न्देशी और विगयती प्रतिस्पर्धामें क्वावट पदा करनेवाली स्वम्य सामूहिक वृत्तिकी जा अेज बात है वह नहीं रहगी।

सबसे अतिम लेकिन महत्त्वपूण बात यह है कि खादीमें आम जनताको विगाल पमाने पर गिक्षा देने और अुसका सामूहिक अुत्यान करनेकी तथा बढती हुआी भुखमरीमें ठोस राहत पहुचानकी अमी क्षमता है जिसका मूल्य नहीं आका जा सकता। जहा मिलके कपडसे आम जनताको कोअी काम और कोअी आर्थिक सहायता नहीं मिलती, वहा खादीके अेक अेक गज कपडेका अय है अुन गरीबके लिअे जो काम और मजदूरीके अभावमें दोहरी बरबादीके गिकार हा रहे ह अतना काम और अुतना रपया। अिगलिअे प्रत्येक देगमकतेके लिअे अकमात्र खादीका अुपयोग और प्रचार करनेके सिवा और कोअी चारा नहीं है।

पग अिडिया, १०-५-२८

## मिल मालिकोका लोभ

हमारी मिलों जो नक्की खाती तयार की है उसके अन्तत आकड य ह ।

खादी डगरी या सहरके अत्यादनके अप्रउसे जनवरी तकके दस मासके आकड

	१९२५-२६	१९२६-२७	१९२७-२८
पी	२५८२२४४२	३११९५१६९	३,७०३६२०६
गज	७३२४४२३८	८५४३१६११	१०३०६१०७२

अिनसे जाहिर है कि अुहान हर महीन अक करोड गज या कमसे कम बीस लाख रुपयकी खाती तयार की । अिसका अर्थ हुआ असली खादीका अक बपका अुत्पान । यह तो स्पष्ट ही गरीबके मुहका कौर छील केना है और वह सी अेक अमे नादोलनके माफन अिमका हेतु करोडा भूखाकी सहायता करना या । अिससे अधिक नीचता और क्या हा सकती है ? अगर मिल मालिक खादीको अयापपूर्ण और अप्रामाणिक स्पर्धा द्वारा भारतकी कोणिंग करनके बजाय अुमक साथ मिलकर अुमकी सीधी मदद करते तो वह देशकी सेवा होती ।

यग अिडिया १०-५-२८

## मिलकी खादी

मुझ मडुरामें मालूम हुआ कि कपड़ेके कुछ व्यापारी मित्रके सूतकी बनी खादीको हाथ नती हाथ बुनी कह कर चला रहे ह। मुझे वे नमून दिखाय गये जो खादीके विशेष नमूनाकी हूबहू नकल थे। खादी प्रमिया और खादीकी हरिजन सेवाकी गतिकमें विश्वास रखनेवाले हरिजन सेवकासे मेरा अनुरोध है कि वे अस खादीको न खरीयें जिस पर अखिल भारत चरखा सघकी छाप न लगी हो। मने यह भी सुना कि देगी विदेशी दोनों तरहकी मिलाका कपड़ा भी बाजारमें खादीके नाम पर काफी मात्रामें बचा जाता है। और मेरे दुखवा प्याला भरनेको यह बतल जाता है कि मने खादीके बारेमें अपने विचार बदल लिये ह और ऐसी मिलोके कपड़ेको खादीके बराबर मान लिया है। यह मेरे खानी मवधी विचाराको गलत रूपमें रखना है। खादीमें मेरा विश्वास नतिव आर्थिक और राष्ट्रीय (व्यापक अर्थमें) दृष्टिसे पहलेसे अधिक दृढ़ हुआ है। खानी और मिलके कपड़में मिलाका कपड़ा देगी हो तो भी काआ तुलना नहा हो सकती। मिलके कपड़ या मित्रके सूतके द्वारा गरीबाना जो गोपण होता है वह खानीमें हो ही नहीं सकता। मिलके कपड़ और मिलके सूतसे गरीबाना गोपण किमी न किसी रूपमें हलका ही सही अनिवाय है। असके खादीके जुपयोगसे गरीबाना अस निगतर गोपणवा (थोडा ही सही) कुछ न कुछ बदल अपने-आप मिल जाता है जा अमीराने किया है और कुछ मित्रकर देहातके रहनवाल जनमाधारणके लिये यह बदला पूरा न होन पर भा काफी बडा हो सकता है। अगर हरअक मित्र भी राष्ट्रकी सपत्ति बना दी जाय तो भी जिनमें से कोभी काम मिलका कपड़ा हरगिज नहीं कर सकता। मित्र बुचोगमें यदि वह केवल राष्ट्रकी खातीके रूपमें चलाया जाय और बुमका योग्यतापूर्वक प्रवध किया जाय तो भी अपन आप वितरण

कभी नहीं हो सकता और विनाल पैमान पर मजदूरोंमें बेकारी तो उससे फलगी ही। खादीमें तो चरखा घर घरमें चलेगा अिसलिय अ मजदूरोंमें कोई बकारी पदा नहीं होगी और थमकी पदावारका वितरण तो खुसमें हमें आपने आप होता ही है। अिसलिय मेरी दृष्टिस खादी और मिलके कपडमें कोई तुडना नहीं हो सकती और वे साथ साथ नहीं रख जा सकते क्योंकि दोनों अक ही प्रकारकी वस्तुएँ नहं हं। सभव है खानी मिलके कपडकी सफाजी या अमका विविधता या बाजारके अधम अुसकी सस्ताअीको कभी न पहुच सके। दानाके अिय भाप अलग अलग हं। खादी मानवीय मूल्योंकी प्रतीक है जब कि मिलके कपडा केवल भौतिक मूल्य प्रगट करता है। मेरे अिय चार आन गजकी खादी सस्ती है और अुसी अक या पोतका मिलके कपडा दो आन गजका भी महंगा है। अिसलिय मेरा अनुराध है कि हमें विवेकसे काम लेना चाहिय और विचारोकी गडबडास बचना चाहिय। दोनों अपन अपन मच पर ही खड हों। मिन् मालिकोको खादीको अुसका आजका स्थान दनसे ह्वेप नहीं होना चाहिय। अहें असा कपडा तयार करना शोभा नहीं देता जो खानी जैसा दिखाअी देता है और अिसलिय ग्राहकोको खादी होनाका धोखा देता है।

हरिजन ९-२-३४

## कुछ विकट प्रश्न

खहर प्रेमियाके लिये कुछ विकट प्रश्न य ह

' क्या आप मुझ वृथा करके समझायेंगे कि कराची का प्रसमें खादी प्रचारके सबधमें स्वीकृत प्रस्तावस जुम अदृश्यकी पूर्तिमें कसे महायता मिनेगा ? देशा मिल मालिकामे अपी की गयी है कि वे स्वय खादी अस्तेमाऊ करके हाय-वताओक मगायक ग्राम-जुद्यागकी अपना नतिक समयन प्रान वरें । यदि मि मालिकाका अपनी मौजूना मिलाका विकास कग्नुक िजे अुहें चलात रन्नेका अबाध विनेपाधिकार प्राप्त है तो क्या हाय-वते कपडेके अुपयाग मात्रस यह समझ लिया जायगा कि खहरके लिये अुनका नतिक समयन है ? मरी नम रायमें खादीके लिये मिल मालिकाका नतिक समयन तव तव नही माना जा सकता जब तक कि व मिला और चरखेके बाधके विरोधका समझकर अपना प्रवृत्तिका धीरे धीरे सीमित करनका प्रामाणिक प्रयत्न नही करत । फिर यह समझमें नही आता कि अगर मिलें खहरकी जगह अुपयोगके लिये ज्याला वारीक और सन्ता मा पदा करती रहेंगी ता खहर कम अपना स्थान बनाय रख सकेगा । और फिर मिल मालिकाको कपडेकी कीमते नीची रखनेका कहना तो खहरका मारनेका निश्चित अुपाय होगा ।

य सब अच्छ प्रश्न ह । अिसमें गव नही कि अगर खहरका मिल मालिका द्वारा यक्तिगत अुपयाग अुत्वे भीतरी विश्वासका चिह्न नही है तो अुससे कोअी लाभ नही और वह दभवा चिह्न भी हो सकता है । अगर भीतरी विश्वास है ता जस अेक मात्री अपने भजनुत पोनीकी अिस तरह व्यवस्था करता है कि कमजार पौदाको हानि न पहुच



ठीक वैसे ही मिल मालिक अपनी मित्रों वैसे दृगसे चलायेंगे जिससे खहरको वभा नुकसान न पहुँचे। कायम मिलाको महन करती है तो अिस विश्वासके आधार पर करता है कि परिवर्तन कालमें मिलें अुपयोगी काम कर सकती ह। अगर देगी मिलें आदोर्नके साथ सहानभूति रखकर काम करें तो अुनकी महायतामे विनयती कपडका तात्कालिक बहिष्कार आसान हो जाता है। अकेली देगी मित्रोंसे निवटना और स्पर्धा करना खानोंके लिये ज्यादा आसान है लेकिन अुनके साथ और अयजी जापानी अिटार्मिन और दूसरी मिलाके साथ अिकट्टा निवटना अतना आसान नहीं है। खहरवालाको देगी मिलोकी मख्या बर्नमे र्ग नहा जाना चाहिये। यह वृद्धि नि सदेह अिस बातका प्रमाण है कि खानोंका आर्थिक प्रभाव अभी तक पूरे तरह महभूस नहीं हुआ है। जब खहर सावधिक हो जायगा तब मभव है बहुतायी मित्रका काम ही न रह जाय। यह अदाज लगाना गरजरूरी है कि खहरका लोगो पर असा प्रभाव होगा या नहीं। यह कायबनाजाकी कफालती पर निभर रहेगा। खहरके पक्षमें जो दलीलें की जाती ह अन्में काआ दोष नहीं है। यह कबल अारा ग्रामीणोंके साथी शिक्षा देनेका राष्ट्रीय र्चि बदलनका और दानमे दारिद्र्यको भगानके लिये चरबकी जवरदस्त ताकतको महमूम कर ननका प्रन्न है। अब असा माग बना सकना कोअी छोटी बात नहीं जिस अपनानस भलभरी और अमक साथ र्ग हुआ परिणामसे रना हो पाय।

अब दूसरा प्रन्न लें। अिसमें सन्का गुजाअिग नने कि मिला द्वाग बारीक कपडा पदा करानकी जरूरत है। खादीके युगमें लामाको बारीक खाने मिन्ती थी। वह आज भी तयार की जाती है। मगर वह अितनी ज्यादा और सस्ती नना होती कि जो चाहे अत सबको मिल सक। अिसलिये परिवर्तन कालमें मित्रका महीन कपडा तमार करनका प्रोत्साहन दिया जा सकता है। और यह समय लना आसान है कि मिलाकी पनादारको बारीक मात्र तक भीमित रखना खादीके लिये पूरे तरह लाभदायक है। दुखकी बात अिननी ही है कि मिलोकी तरफम राष्ट्रीय मागका काफा अच्छा अत्तर नहा मिलता।

आखिरी सवाल कीमतोंके बारेमें है। अवश्य देख यह तो नहीं कहना चाहते कि खद्दरको जिंदा रखनेके लिये मिलाकी अूचे दाम लगाने चाहिये। खादीके पुनरुद्धार आंदोलनका प्रवर्तक होनेके नाते मुझ स्वीकार करना चाहिय कि मेरे दिमागमें यह बात कभी नहीं आयी कि मैं खादीकी रक्षाके लिये मिलोके मालके अूच भावाकी जिंठा करू। हमारा भयकर स्पर्धसि बचाव चाहना एक बात है और जो चीजें थोड़ेसे लोग बहुतके लिये पत्ता करते ह अूनके दाम किसी मिलने-जुलते अद्योगकी रक्षाके लिय भी अूचे रखवाना दूसरी बात है।

यंग जिंडिया, १६-७-३१

## २७

### स्वदेशी प्रदर्शनियामें खादी

भारतके अय सब भागोंमें जहा स्वदेशी प्रदर्शनियामें मिलका कपडा रखने दिया जाता है वहा अखिर भारत चरखा सघने खादी रखनेसे नियमपूर्वक अिनकार कर दिया है और जिस हेतुमे यह नियम बनाया गया था वह हेतु अिससे पूरा हुआ है। परंतु अुत्तर प्रदेशसे अिम नियमको ढीला करनेकी माग आयी है। लेकिन मन अभा तक अिम लोभका स्वरण किया है। अुत्तर प्रदेशके कायकतअिअन अपने मागदानके लिय खास तौर पर पूछा है।

मेरा अपना अनुभव मुझ बताता है कि भडकाल बने मिलके कपडेके साथ साथ खादीको रखकर जनसाधारणके मनमें भ्रम पैदा करना खतरनाक है। यह बहुत कुछ जमा ही है जसा मानव प्राणियोंको यात्रिक मानवोंके साथ रख देना। अगर मानव प्राणी अिन यात्रिक मानवके साथ स्पर्धामें अुतरेंगे तो हार जायेंगे। मिलके बने कपडेकी स्पर्धामें खादीका भी यही हाल होगा। दोनोंके स्तर अलग अलग ह। रण्य विरोधी ह। खादी सबको काम देती है मिलका कपडा कुछको

काम देता है और बहुतोसे श्रीमानदारीकी मेहनत छीन लेता है। खादी सबसाधारणकी सेवा करती है मिलका कपडा अपरी वर्गोंकी सेवाके लिये बनाया जाता है। खादी मजदूराकी सेवा करती है मिलका कपडा अनका शोषण करता है। मेरे अनुभवका समयन भारत भरके खादी-कायकर्ता करत ह। असलिये मुझ आगा है कि श्री जवाहरलाल नहरूके साथ साथ बुत्तर प्रदेशके काग्रसजन चरखा सघके अनुभव और नीतिका आदर करेग और खुनकी अपनी राय चरखा सघके विपरीत हो तो वे चरखा सघकी रायको तरजीह देंग।

हरिजन १ -४-३७

२८

### भारतीय मिलोका संरक्षण

अगर भारतको आर्थिक दृष्टिसे स्वतंत्र राष्ट्र बनना है, अगर उसके किसानको चिरकाशीन श्रद्धतासे मुक्त करना है अगर उन किसानको अकाठ और जसी ही दूसरी विपत्तियोंके समय सम्मानपूर्ण धंधा दिया जा सके असी व्यवस्था करना है ता भारतके बाजारसे विदेशी कपडेको बिल्कुल बाहर निकाल देना चाहिये। अपने प्रधान उद्योगकी रक्षा करना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। जिससिद्ध म भारतीय मिलोकी विदेशी स्पर्धामें रक्षा करना चाहूंगा भल ही जिसका परिणाम किल्लहान गरीब लोगो पर दण्ड ही हाना हो। गरीबोके जिस तरह दण्डित होनेकी नीवत तभी आ सकती है जब मिल-मालिक अितन देन प्रम बिहीन हो जाय कि भुहें जो जकाधिकार मिल जाय उसके कारण वे अपन मान्का भाव बढा दें। जिससिद्ध मुझे रशीके भीनरी कराको अुठा दने और निषेधात्मक आयात-कर लगा दनेका समयन करतम कोओ सकोच नही है।

यग अिडिया २८-८-२८

यद्यपि मने अिस प्रश्नकी चचा अिस पत्रमें पहल भी की है फिर भी अक्सर पत्रलेखक पूछत ह कि विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके आन्दोलनमें माग्नकी दंगा मिलासे कयो नही कहा जाता ।

बनमान मित्रकी सहायतासे आन्दोलनका तत्काल पूरा सपादन होना असम्भव वस्तु है । नआ मिलें कहन मायसे खडी नही हो सकती अिसलिय बहिष्कार यदि सफठ हो सकता है तो खादीके जरिय ही हो सकता है । खादीको मित्रके कपडेके साथ साथ आग नहा बढाया जा सकता । लोगको चनावकी सुविधा दी जाय तो अफसोसके साथ स्वीकार करना पडगा कि विचारहान जनसाधारण तो मित्रके मस्ते और मुलभ कपडेकी ज्यादा पसद करेग और जाहिरा तौर पर महगी मोटी गिवाओ देरवाली और दुअम गालीको कम पसद करेग । अिसलिय यह निश्चय निक्लता है कि कायस कायवताआको चाहिये कि जहा तक जुनका प्रभाव पनुचता है — और वरु अभी दूर तक नही पहुचता — व खादीका ही प्रचार कर मिलके कपडेका नही ।

य ह वे गनों जिनके मातहन मिलें (विदेशी वस्त्र बहिष्कार)\* आन्दोलनमें पूरा या अधरा प्रत्यक्ष भाग ले सकनी है

१ व अपना अर्जेंसियकि जरिय खादी बच सकती ह

२ वे आन्दोलनमें अपनी बढिका लाभ ले सकती ह

३ चरखा सघस परामग करके व (विदेशी वस्त्र)\*

बहिष्कारकी दृष्टिस यह तय कर सकता ह कि जुहें क्या क्या माठ तयार करना चाहिय

४ वे खादीके नामस या और किमी नामसे खानी तयार करना बल कर सकती है

५ वे अपन भाव अिस तरहसे स्थिर कर सकती ह कि जिससे न तो अन्हें हानि हो और न अमका लाभ बल और

६ वे (विदेशी वस्त्र-बहिष्कार)\* आन्दोलनमें आर्थिक सहायता दे सकती ह ।

\* कोष्ठके गल हमार ह । — सम्पादक

जा मुख्य छह अुपाय मने बताये ह अुनसे और कअी अुपाय आसानीसे निकाले जा सकते ह । यह मदद तभी दी जा सकता है, जब मि-मालिका और हिस्सदारामें देशप्रेमकी भावना हो और वे अपना मुनाफा सीमित करनेको तयार हा । मुझे विश्वास है कि हिस्सेदारामें ठीक ंगस प्रचार किया जाय तो अुनमें से अधिकांका आपत्ति नहीं हागी ।

यम अिडिया, ४-७-२९

मिल माजिक चाहें तो खादीक द्वारा बहिष्कारकी सहायता अिस प्रकार कर सकत ह कि थ अुन मिलाकी सूची प्रकाशित करें जिनका स्वामित्व नियंत्रण और प्रबध भारतीयके हाथमें हो जो बुनाअीमें विलापनी सूत जरा भी काममें न गती हा और जो खादीसे मिलता जलता कपडा तयार नहा करेंगी अपने विनापनामें खादी या उरखेका नाम अिस्नेमाल नहीं करेंगी और भाव अनाप गनाप नहा बलायेंगी ।

मुझे पक्का विश्वास है कि जो लोग बहिष्कारका प्रचार करते ह और अिस बात पर जार नहीं देते कि बहिष्कार करनेवाक खुद कातकर या कातनवाल जुटाकर खादीके अुत्पादनमें सहायता दें और जो स्वदेशीका डीलीगली बालें करते ह व अगर बहिष्कार-आंदोलनको सचमच नुकसान नहीं पहुंचात तो अुसकी प्रगतिको अवश्य रोकते ह । बहिष्कारक हिमायतियाको अपने मागस विचरित नहां हाना चाहिये भू ही थोडे समयके लिये वे खादीकी मागको पूरा न भी कर सकें । अहें जान गना चाहिये कि खादीके अुत्पादनक लिये यही समय अत्यत मूल्यवान है । हमें विलायती कपडेके बहिष्कारकी जम्मत अग्रेजाको सजा दनके लिये नहीं बल्कि करोग भूखाका चरण द्वारा काम और अमक जरिये अन देनके लिय है ।

यम अिडिया २४-४-३०

## मेरी स्थिति

मेरी स्थिति साफ है।

१ अगर मेरी चूने तो भारतमें कपडा खानीका ही होगा। दूसरा कोओ कपडा देगाकी मिलामें बना हुआ कपडा भी नहीं होगा।

२ जब तक भारत अपनी जरूरतकी सारी खादी तयार करनकी तयार नहीं है (असमथताका कोओ प्रश्न नहा है) तब तक म देगी मिलोंके कपडको खानीकी कमी पूरी करन दूगा।

३ विनायती कपड पर धरना अिगलिअ है कि विनायती कपडा खानी और भारतीय मिल-कपडा दोनाके साथ स्पर्धा करता है। अिस सम्बन्धमें यह सवाल अप्रासंगिक है कि यह स्पर्धा 'यायपूण है या अयायपूण यानी जि देगामें विदेगी कपडा तयार किया जाता है वहा 'यायपूणक तयार किया जाता है या नहीं और यहा 'यायपूणक गया जाता है या नहीं।

४ अगर स्पर्धा न हो और यह स्पष्ट हा जाय कि थोडा कपडा भारतमें बाहरसे मगानकी जरूरत है और अगर अिग्लण्ड स्वतंत्र भारतका साझदार हा तो म अय सब देगो पर अिगण्डका तरजीह दूगा। मगर मेरा विश्वास है कि जब भारत आजाद हा जायगा तो वह अपनी जरूरतकी काफी खानी थोड ही समयमें तयार कर लगा और परिवर्तन-कालमें अपनी कमीको देगाकी मिठाके कपडसे पूरा करेगा।

यग अिडिया ३०-७-३१

## खादीका आधार मानव हितका विचार है

खादीका परित्याग करना जनसाधारणको, भारतकी आत्माको बेच देना है।

यग अिडिया १५-१-२८

खादीका अर्थशास्त्र साधारण अर्थशास्त्रसे सवया भिन्न है। साधारण अर्थशास्त्रमें मानव तत्त्वका कोअी विचार नही किया जाता। खादीक अर्थशास्त्रका मारा सम्बन्ध मानव तत्त्वसे हाता है। सामान्य अर्थशास्त्र साफ तौर पर स्वार्थी है खादीका अर्थशास्त्र गजिमी तौर पर नि स्वार्थ हाता है। खादीकी कल्पनामें स्पर्धा और असलिख कीमताकी गुजाअिग नही होती। हाटला और घरेलू भाजनालयामें काअी स्पर्धा नही हाती। गृहस्वामिनीके दिमागमें अपनी महानक मूल्यका और रमाअीके काममें लगनवाली घरकी जमीनक क्षत्रपत्या हिमाव लगान बगराकी बातें कभी आता ही नहा। यह सिफ अितना जानती है कि जितना बच्चाकी परवरिग करना अुमका कतय है अुतना ही घरका भाजनालय चलाना भी है। अगर वह कीमत गिनन ग्य तो वस्तुस्थिति अुस बगत् वम हात्तमें ल जायगी जिममें बच्चा और भाजनालय दानाका विनाग निरिचत है। कुछ लगाने दोनाका ही नाग कर दिया है। परतु अीश्वरकी कृपासे अिम पयमें कोअी खाम बद्धि हानक आसार नजर नही आत। हम अपन स्वभावगत आलस्यक कारण ही यह नही दस पाते कि जब हमने घरेलू बरखका नष्ट किया तब हमने भारतीय मानव-समूहक प्रति पाप किया। हमें अपने पापका पश्चात्ताप करना चाहिय और धार्तिदायक चरखका फिरसे अपनाता चाहिये।

यग अिडिया १६-७-३१



## खादीके अथशास्त्रके नियम

मन देख लिया है कि अब खादी-कायकर्ताओंके लिए खादीके अथशास्त्रके नियमोंके पालन पर शक्ति केन्द्रित करने पर पहलेकी अपेक्षा अधिक जोर देना समय आ गया है। उनमें से कुछ नियम सामान्य अथशास्त्र पर लागू होना चाहते हैं नियमोंसे वास्तवमें भिन्न ह। अदाहरणके लिए आम तौर पर एक जगह तयार का हुआ वस्तुअसससारके तमाम हिस्सामें भेजी जाती है या उन्हें भजनकी कोशिश की जाती है। जो अब वस्तुआके नया करके ह उनके लिए अनुयायियोंके उपयोग करना बिल्कुल जरूरी नहीं है। खादीका बात असंभव है। जिसका विशेषता यह है कि उसे जहां पदा किया जाता है वहां काममें लेना पड़ता है और अच्छा तो यही है कि कातन और बुननवाले खद असे काममें लें। जब खादीका उपयोग जिस तरह किया जाता है तो उसकी मांग अपने आप निश्चित हो जाती है। बल्कि यह विचार कभी पूरी तरह कार्योचित नहीं होगा। परंतु खादीका मूल्य जिस हद तक हम जिस वस्तुको प्राप्त करेंगे असा हद तक लगाया जायगा। खादी असा ग्राम अद्योग है जमा और काशी अद्योग न तो है न हो सकता है। अल्बत्ता मणि कुपिको अद्योग माना जाय तो वह भी असा ही ग्राम अद्योग है यद्यपि खादीका अपेक्षा सामित अथमें। जिसमें अकातन और बुननवालाको खादीके साधसाद अथशास्त्रका समझनका शिक्षा देना जरूरी है। जहां कातन और बुननवाले अपने ही उपयोगके लिए कातते-बुनते ह बल्कि खादीका अनुकूल अथ सबसे सस्ता होना स्वाभाविक है।

अससे यह परिणाम निकलता है कि हमें खादीको उसके उत्पादनके स्थानसे बहुत दूर बिकाने के लिए भजनकी कोशिश नहीं करनी चाहिये। फलानु खादी असा गावमें बचनी चाहिये जिसमें वह तयार की जाती है। अगर फिर भी बच रहे तो वह उसके उत्पादनके

जिलेमें बेच दी जाय। अवश्य ही खास नमून अुन धराना द्वारा तयार हाते रहेंगे जो अतीत कालस कागपूण नमून पुनत रहे ह। अस प्रकारकी खादी जिदा रहेगी, भजे ही ग्रामीणाकी खानीका कुछ भी हाल हो। यह खादी तो देहानियाके लिये थम और आयके स्थायी माधनके तौर पर है।

अपरोक्त बातका अथ यह नहीं है कि चरवा सघके प्रवधमें तुरत काजी क्राति कर दी जाय। अुसके भण्डार पहलेकी तरह रहेंगे। परतु असका अय विचार जगतमें क्राति अवश्य है। खादी काय कताअामें जुत्तम विचारक अपनी सारी शक्ति ग्रामाण खानी तयार करने पर लगायेंगे। व अस बातका ध्यान रखेंगे कि अुसका रग रूप और टिकाअूपन ग्रामीणाकी रुचिक अनुकूल हा। अस प्रकार अक तरफ आटनवाला धुननेवाला कातनवाला तथा बुननेवालाक बीच और दूसरी तरफ खादी-कायकर्ताअिके बीच अधिक अच्छा और मच्छा प्रम-मवध रखना होगा। नगरामें बित्री बढानकी हाय हाय नहीं रहेगी। अस बित्रीका नियमन गहरी लोकाकी माग और खानीप्रेमियाके प्रचार कायके अनभार किया जायगा। य ाग सीधे ग्रामाणाके पास नहा पहुँचेंगे या नहीं पहुच सर्वेगे। मगर व अुस समय तक सतुष्ट नहीं हागे जब तक गरीब कस्तिनो और जुगाहाके खातिर कुछ खानी बच नहा लेंगे। यह याद रह कि खादी स्थायी तभा हा सकती है जब वह स्थायी रूपमें देहानियाक पहनावेकी वस्तु बन जायगी।

हरिजन २७-४-३४

## भाव

जीवन रूपसे बड़ी चीज है। अपन बूट माता पिताको मार डालना सस्ता है क्योंकि व बाधा वाम नहा कर सकते और हमारे जल्पसाधना पर अंक भार होत ह। हमारे बच्चाको मार डालना और भी सस्ता है क्योंकि हमें अपने भौतिक आरामक अति अतकी जहरत नहा और अनुसे बदलेमें कुछ भी प्राप्त हुआ बिना हमें अनुका पालन-पोषण करना पडता है। परन्तु न हम माता पिताको मार डालते ह और न बच्चाको बकि अनुका पालन-पोषण करना अपना सौभाग्य समझत ह भे ही अनु पर कुछ भी खच करना पड। जिसा तरह हमें और सब कपडका छाडकर खादीका पोषण करना चाहिये। खादीका विचार भाषाका दृष्टिसे हम केवळ जादतके कारण ही कर्ते ह। हम खादीके अय्यास्वके बारेमें अपनी कल्पना बदल दनी चाहिये। और जब हम अनुका अध्ययन राष्ट्र कल्याणकी दृष्टिसे करत तो हमें पता चगा कि खादी महगी नहा पडता। अलवत्ता परिवर्तन-कालमें हमें घरेडू अथ-यवस्थामें कुछ गडबड बरदान्त करनी ही होगी।

जिस समय तो हम एक भागी बाधाके गिकार ह। कपासका उत्पादन लकागायरके खातिर या कहिये कि दगी मिश्रक खातिर बढित कर दिया गया है। कपासक भावाका निणय विदेशीके भावासे किमा जाता है। जब कपासका उत्पादन खादीके अय्यास्वका भागके अनुसार बट जायगा तब कपासके भावामें अतार चढाव नहा हागा और हर मूरतमें भाव आजसे कम रहेंग। जब लोगको रायके सरक्षणके कारण या स्वेच्छापूण प्रयत्नक फलस्वरूप कवल खादी ही काममें लेनका आदत पड जायगी तब वे अनुका विचार रूपकी दृष्टिस नहीं करेंगे। करोडो गावाहारी अपन निरामिय आहारकी कामतका तुलना मासाहारकी कीमतसे कहा करते ह ? उन्हें मासाहार मुफ्त भी दिया जाय ता वे मूला भर जायग मगर मासाहार ग्रहण नहा करेंग।

हरिजन १०-१२-३८

## खादी-कायकर्ताओके समक्ष प्रवचन

अपनी खादी-अुत्पत्तिका पुनगठन करते समय आपको यह नहीं मूलना चाहिये कि कुछ बातोंमें खादीका शास्त्र साधारण व्यवसायसे बिल्कुल अुट्टे ङ पर चलता है। आप जानते ह कि अडम स्मिथने किम प्रकार अपन वेल्थ आफ नॉस नामक ग्रथमें पहल तो कुछ असे सिद्धात बताय ह जिनके अनसार आर्थिक घटनाक्रम चता है और बातमें कुछ जसी बातें बयान की ह जो जिसमें गडबड पदा कती ह और जिनके कारण आर्थिक नियमाका पूरी तरह अपना काम करनेका मौका नही मिना। जिनमें से मुख्य है मानव तत्व। यही मानव तत्व है जिस पर खादीके समचे अयशास्त्रका दारमदार है और मानवकी स्वाधपरायणता जिसे अडम स्मिथ गुद्ध आर्थिक हेतु कहता है वह गडबड पदा करनेवाला तत्व है जिस पर हमें बाबू पाना होगा। अिमलिअे जो बात मिल्क कपडके अुत्पादन पर लागू होनी है वह खादी पर लागू नही होनी। व्यवसायिक अुत्पादनमें घटिया माल बनाना मिगवट करना और मानवकी हीन रुचियाको सन्तुष्ट करना वगरा आम बातें ह खादीमें जिनके िअे स्थान नही है और न खादीमें अधिकसे अधिक मुनाफा और कमसे कम मजदूरीक सिद्धातकी गुजाअिग है। अिसके विपरीत खादीमें खालिस लाभ जसी कोअी वस्तु नही है। और घाटा तो होना हा नही चाहिये। घाटा है जरूर लेकिन जिसीलिअे कि हम कायकर्ता अमी तब अयाग्य और नौमित्कुअे ह। खादीमें जा दाम कमूल किये जाते ह वे मूल अुत्पादका अर्थानि कतिनाको वापस मिल जाने ह और दूसरे लागाको अपनी मजदूरीसे अधिक कुछ नही मिलता।

अब समान स्तर (स्टण्डड) वायम करनेका सवाल लें। खादीमें अुते जारी नही किया जा सकता। जसा राजगोपागचायन अब धार कहा था अक गरीब कतिन हमगा अेक ही तरहका सूत नहा कात

सकती। वह कोसी यत्र नहा है। आज उसकी तबीयत अच्छी न हो कल उसका बच्चा बीमार पड़ जाय तो उसका मन अद्विग्न हो सकता है। अगर आपमें गरीब बर्तन या उसके बच्चेके प्रति प्रेम हो तो आप यह आग्रह नहा रखें कि उसका घागा हमारा चिकना और अकसा हो बल्कि जो वह दे दगी उससे सतोप कर देंगे। शत यही है कि अपनी स्थितिक अनुसार वह यथाशक्ति अच्छा सूत काते। उसके हाथका पवित्र स्पर्श खादीको वह जीवन और अतिहास देता है जो यत्रसे निकला हुआ सूत कभी नहीं दे सकता। यत्रके बन पदायमें जो बला है वह सिफ आखको भाती है खादीकी बग पहले हृदयको जोर बादमें आखको भाती है। अिसलिअ म माड निकलवाकर खादीकी धलाओ करवाना नापसन्द करता हू। उससे अुत्पादनका खच बढ़ता है कपडेके टिकाअूपनमें फव आता है जोर धोखवाजीका पता लगाना जोर भी मुश्किल हो जाता है। हमें लोकरुचिका अनचित्त सतोप नहीं देना चाहिय परतु अक नओ रुचिके निर्माणका प्रयत्न करना चाहिये। साधारण क्रममें कुछ धुलाजियासे खादी बिल्कुल सफ़्त निकट आयगी और असमें वह मुलायमा आ जायगा जा लार्चिगस नष्ट हो जाता है। हम सबको अनावश्यक खच कम करनेके लिअ भरसक प्रयत्न करना चाहिये।

### कतिनाका विचार-परिवर्तन

अिसलिअ खादीको हम अगर यवसायकी वस्तु नहीं बल्कि चरोडा अघभूखाके सहारेके लिअ जरूरी चीज मानते हा तो हमें कतिनाके घरामें प्रवेश करके अन्हें अपन ही सूतकी बनी खादी पहननको राजी करना चाहिय। अिससे अुत्पादनका खच अकम्न घट जायगा और बटवारा अपने आप हाने लगगा। अब तक हमन सिफ गहरी लोगकि लिअ खादी तयार करनेकी कोशिश की है। तुछ प्रारभसे खादीका अत्यान्त बओ गत वार्षिक तक् वर गया है। हमन प्रकार भी बहुतसे निकां ह। परतु अब मुने अिससे सतोप नहीं हाता। खादीकी कल्पना बहुत बड महत्वाकाक्षी हेतुसे की गयी थी। वह हेतु यह था कि हमारे

देहानमें कभी भुत्तमरी न आन पाव । यह तब तक असभव है जब तक हमारे देहाती लाग गुद्ध खादी न पहनन लगे और गहराको सिफ फाल्नु खानी न भेजे । खादीका विगप रहस्य जिस बातमें है कि वह अपन उत्पादनके स्थानमें बची जा सबती है और अुमे तयार करने बाल खु अुस काममें ले सकत ह ।

### व्यवस्था खच

मेरी दष्टिसे हमारा मौजूदा व्यवस्था खच बहुत ज्यादा है । अगर हम अपना ध्यान खादीके मुख्य हेतु पर केन्द्रित करें तो यह खच बहुत कम हा जायगा । खानीके भाव कम करनेक नियम पूरी तरह नहा ता अगत अुन नियमसे भिन्न ह जो मुख्यत लाभके लिअ तयार किये जानवाठ निरे यावसायिक पदार्थों पर लागू हात ह । खानीमें औजारका सुधारकी मर्यादा हाती है । परंतु मानव बुद्धि और प्रामा शिकताक सुधारकी बासी मर्यादा नही हाती । अगर हम जिन दोमें सफलताकी आगा छोट दें तो हमें खानीकी ही आगा छोड देनी चाहिये । अिसांज खादीमें जहा तक सगठनके व्यवस्थित संचालनम रकावट नही होनी वहा तक हम बीचक लागाको हटाकर खच घटाते ह । और जब खादा स्वावलम्बी और अपने आप काम करनेवाली प्रवृत्ति बन जायगी तब तो सगठनकी भी अस्तन नही रहेगी ।

खादागास्त्र अभी तक गगन अवस्थामें ह । अुसका विकाम हा रहा है । अममें जो भी नजी खोज म करता हू अुसमे मुझे और भी अच्छी तरह यह अनुभव हाता है कि जिस गास्त्रका मुझे कितना घाडा पान है ।

हरिजन २१-९-३४

## छादीशास्त्र क्या है ?

मन अक्सर यह कहा है कि अगर खाने अब सही आर्थिक योजना है तो वह शास्त्र भी है और काव्य भी है। हरअेक चीज शास्त्र और काव्य बनाओ जा सकती है यदि अमक पीठ शास्त्र अथवा काव्यकी दृष्टि है। कुछ लोग खानेकी खिलती अटाते हैं और जब कोई हाथ कताआकी बात करता है तब अधीरता मा जरूरी प्रगट करने हैं। लेकिन ज्या ही आप यह कहते हैं कि अममें भारतवापी आर्य्य बकारी और अससे पदा हानवापी दरिन्नाका दूर करनकी शक्ति है वह अरुचि या हसीकी वस्तु नहीं रहे जाती। वास्तवमें यह जरूरी नहीं कि वह अिस त्रिविध दुःखको दूर करनवाला जिग्ज है ही। अुमे रसमय बनानक अिअ श्रीमानदारीस अितना मान ेना काफी है कि अुममें वह शक्ति है। ेकिन यदि हम यह मान लें कि खादीमें वह शक्ति है तो फिर अिस कामको हम अस तरह नहीं कर सकते जिस तरह अपना और गरजमन्द कारागर करते हैं। वे जोटाओ पिजाओ कताओ मा बनाओ अिसाअिअ करते हैं कि पेट असा करनेको अुहें मजबूर करता है। परनुअमका शक्तिमें विश्वास रखनवाअ अमे मोच समझकर बुद्धिमानोसे और यवस्थित ढंग पर तथा शास्त्रीय भावनासे अपनायगा। वह किसी चाजका मानकर नहीं चलेगा हर बातकी परीक्षा करेगा, तथ्या और आकडाकी जाच करेगा हारसे धवरायगा नहीं छोटी छांग सपलताआये फूलवर कुप्या नहीं हागा और जब तक लयकी पूर्ति नहीं हो जायगी कभी सनुष्ट नग होगा।

शास्त्र तभी शास्त्र है जब वह शरीर मन और आत्माका भूखको मिटानका पूरा मौका दे। शकालील लगाका आर्य्य हाता है कि

खानीसे असा सतोय बस मित्र सवता है या दूमरे गन्गमें, जब म खादीगात्र गन्वा प्रयाग कन्ता हू तो मेग क्या मतलब होता है? अिस प्रश्नका सत्रमे अच्छा अुत्तर म नीच अन प्रश्नाकी नकल करके ही द सवता हू जो मन जब खादी कायकर्ताक जिजे जल्नी जल्नीमें बनाय थ। अुसने कहा या कि म अुसकी परीक्षा लू। प्रश्न न तो ताक्कि त्रमम तयार किय गय थ और न अुनमें सारी बातें ही आ गयी थी। अुन्हें किले त्रमबद्ध किया जा सवता है और अुनमें वृद्धिनी गुजाअिग भी है।

### पहला भाग

१ भारतमें कपाम कितनी और कहा पदा हाती है? अुसकी किम्मानें नाम बताओ। असमें से भारतमें कितनी रह जाती ह हायस कितना कानी जानी है कितनी अिग्लण्ड और दूमरे देगानो चली जाती है?

२ (क) भारतीय मित्रामें कितना कपडा तयार हाना है? अुसमें स भारतमें कितना काम आता है और कितना बाहर भेजा जाता है?

(ख) अुपरोक्त कपडेमें म कितना स्वल्नी मित्राके सूतसे तयार किया जाता है और कितना विदेशा मिलाक सूतमे?

(ग) बाहरमे कितना कपडा मगाया जाता है?

(घ) भारतमें कितनी खानी अुत्पन्न हाती है?

टिप्पणी अपन अुत्तर वगगजा और रुपयामें दा।

३ अुपरोक्त तीना प्रकारक कपटक गुणन्पाकी चचा करा।

४ कुछ लोग बहते ह कि खानी महंगी पडती है माग हाती है और त्रिवाअु नही हाती। अिन त्रिवायताका जवाब दो और जहा किमा त्रिवायतका आधार हा बहा अुसका हल बनाओ।

५ (चरखा सघके) खानीवायमें कितनी कतिनें ग्या हुआ ह? अिन तमाम कर्षोंमें अुद्धान कितनी कमायी की है? मिलेमें कातने वालानी सस्या और अुनकी कुल सालाना कमायी बताओ।



पिछले खेममें मने यह समझानेका प्रयत्न किया है कि खादी शास्त्रमें क्या क्या बातें आ जाती चाहिये। मरी रायमें चरखा सधके किसी भी उत्पत्ति केन्द्रमें काम करनेवाले प्रत्येक खादी-कायकनके लिये लाजिमी होना चाहिये कि वह जिस शास्त्रकी प्रारम्भिक बाताको जान। श्री लक्ष्मीदास खादीप्रमी ह और खादीशास्त्रके एक अत्यन्त सावधान विद्यार्थी ह। परन्तु म बुझे भी जिस शास्त्रका आचाय नहीं बहूगा। अन्हाने नवम्बर १९३६ में मुझे एक पत्र लिखा था। उसमें अन्हान प्रत्येक खादी-कायकनाकी यूनतम परीक्षाकी गतें बताआ था। वह कसौरी नीच दी जाती ह

१ कायकनाको बढिया और घटिया दर्जेकी कपास विनीते और रशीकी पहचान होनी चाहिये।

२ असे हाथ-ओटनीकी मरम्मत करना जोर तनमें आवश्यक सुधार करके उस गटके साथ बाकायग बिठाना आना चाहिये। तनकी लकड़ीकी गालाजीमें असमानता हो या वह बहा ग्नी हो गया हो तो वह युसे सुधारेगा जोर असकी जगह ठीक बिठा देगा।

३ असे धुनरी सजाना तथा तात और काकर बनाना आना चाहिये।

४ असमें हाथ-आगना पर चार घंटे तक काम करने और पाच घंटे का घटा आटाओकी गति दिखानेका सामर्थ्य होना चाहिये।

५ अमका धुनाओकी गति दस तोण प्रति घटकी होनी चाहिये। जिसमें पूनिया बनानेका समय शामिल नष्नी होगा।

६ जम हर विस्मक चरखेकी बनावट मात्रूम होनी चाहिये और उसके अलग अलग हिस्साको जोडना भी आना चाहिये। सकुआ ग्नी हो जाय तो असे सीधा करना और माल व दामण (ओतर) बनाना भी जाना चाहिये।

७ असमें चार घटका पराक्षामें २० नम्बरका ३०० तार (४०० गज) सूत कातनेका गति कायम रखनेकी क्षमता होना चाहिये। जिसका कस ८० प्रतिगत और समानता ९५ प्रतिगत होना चाहिये।

८ खुसे कताजीकी आध्र त्रिया आनी चाहिय और दा घटेकी पगभामें ७० से ८० नवरका ८० प्रतिगत कम और ९५ प्रतिगत समानतावाला २०० ताग मूत कात मरना चाहिय ।

९ खुसे खाटी करघा और फटका करघा दानागी बनावट माग्म हाना चाहिय और राठ बडी कधी तथा कूच बनाता आना चाहिये ।

१० अुममें ५० अिच अजकी खानी २० नवरके मूतम फटका कग्घ पर घुननकी क्षमता हानी चाहिये और सादिपाकी कमस कम पाच अग्ग अग्ग तरहकी किनारिया डाग्नेके लिअे आवश्यक सारी विधिया करनकी क्षमता होनी चाहिय ।

११ घुनाडीकी गति अक घटमें २० नवरके मूतका अेक गज कग्घा घननकी हा जानी चाहिये ।

१२ अुसे अग्ग अग्ग प्रकारकी कपास अुगानके वारेमें सव जानकारा हानी चाहिय और अुममें हाथ-चरकी, घुनकी तथा चरखा करघा और अुनके भिन्न भिन्न भाग स्थानीय सामग्रीस अपने ही गाव या गग्गमें तयार करा ग्नकी योग्यता होनी चाहिय । अिसके लिज नीच लिपा याताका जानकारी जरूरी होगी

(क) कपक भिन्न भिन्न भागामें बना कहा कितना हानी है और किस खात्का अुपपाग होता है तथा जमीन कसी है ।

(ख) भिन्न भिन्न प्रकारकी लकडी और लकडीके माप-तौलका हिमाज कितान ।

(ग) अुपराक्त आवश्यकताअके लिअे रेखाचित्र खीचनका काम कग्गअु पान ।

१३ भिन्न भिन्न यत्राकी मरम्मतक लिअे बग्जीगिरीका काफी पान ।

अिस परीक्षामें अुत्तीण होना बिग्कुग्ग आमाम नही है । केकिन काफी ग्गन और परिश्रमगोग्ता हो तो अच्छी गिहा पाया हुआ काजी भी यकित थ्रा अ्दमीदामका परीक्षामें पान हो सकता है । फिर

भी जिसमें खादी-शास्त्रके 'यावसायिक' पहलू नहीं आते । व मर तयार किये हुए प्रश्नोंमें आते हैं । श्री 'धमीदासके तयार किये हुए पाठपत्रमें कारीगरीवाला पहलू आता है । अतः दोनों क्षेत्रोंमें प्रवीण होकर ही कीर्ती खादी-शास्त्रके मूल तत्त्वाका पाता कहला सकता है ।

हरिजन १३-२-३७

जो व्यक्ति किसान विषयका अज्ञान बनना चाहता है उसका लिए पहली जरूरी बात यह है कि उस विषयमें उसकी सजीव श्रद्धा हो । उसके बाद उसमें सीखनकी अतिसुखता और उसके खातिर जरूरी त्याग करनेकी तयारी होनी चाहिये । बशक पुस्तकें शिक्षा और शिक्षाकी दूसरी सामग्री थोड़ी-बहुत मात्रामें जरूरी है परन्तु पानकी विपत्ता और जिनासा सबसे अधिक आवश्यक है । ये बातें ही तो और सब बातें अपन आप आ जाती हैं । जिसलिए खादी-शास्त्र सीखनका अच्छा रखनवाले अतः विद्यार्थियोंको मरा सुभाव है कि वे तुरन्त ही इस बातका पता लगायें कि खादी-अल्पत्तिकी कौन कौनसी प्रक्रिया अतः उनके नजदीकके पड़ोसमें की जा रही है । और तत्सबधी सारी अपुयागी जानकारी जो वहां उपलब्ध है सग्रह कर लें । आजकल खादी-शास्त्रके विद्यार्थियोंके सामने जो मुख्य काम है वह व्यक्तिगत अनुभवके सग्रह और सामंजस्यका है । इस समय देशके भिन्न भिन्न भागोंमें खादी अल्पान सबधी अनेक भिन्न भिन्न प्रक्रियाओं प्रचलित हैं परन्तु अब भी आत्मी असा नहीं है जो जन सबको पूरी तरह जानता है । फिर भी खादी शास्त्रके विकासके लिए अतः तमाम अलग अलग प्रक्रियाओंका संपूर्ण और 'योरवार पान आवश्यक है । जाहिर है कि यह काम कितना अकर्मिकके बूतका नहीं है । परन्तु यदि कुछ व्यक्ति अस हैं जिनमें खादीकी वनानिक भावना सचमच तीव्र है और जो 'यवस्थित ढंगस इस काममें जुट जाय तो वे अपनी बुद्धि और अनुभवकी जिकटठी गतिम धोर ही समयमें अब सजीव और विकासशील शास्त्री-शास्त्र तयार कर लेंगे । परन्तु यह तभी हो सकेगा जब वे देशमें इस समय प्रचलित खादी-अल्पत्तिकी तमाम प्रक्रियाओंमें सामूहिक प्रवीणता प्राप्त कर लेंगे ।

एक ठोम अनाहरण लीजिय । जिस समय आध्रके अग्न अलग भागामें कभी तरहकी खादी तयार होती है जिसमें धननेक अलग अलग तरीक काममें राये जात ह । अब आध्रका कोभी खादी-कायकर्ता जो खादीशास्त्रको जाननेके लिअे अुत्सुक है अिन तमाम भिन्न भिन्न तरीकाका अुस्ताद बनकर काम शुरू कर सकता है । अिसके लिअे अमे अपना प्रान्त छाडनकी जरूरत नहीं है । आरम्भके तीर पर वह अम प्रश्रियाको ले जो अुसके नजदीकके पडोसमें प्रचलित है । वगैर धनाओके बनानिक अध्ययनमें विद्यार्थिके अिअ धुनकी बनानेका ज्ञान शामिल होगा । साथ ही अुमे अुस सामग्रीकी जानकारीका भी जरूरत होगी, जिससे तातका तार और धुनकीके दूसर अग बनाये जाते ह । अुसे यह भी जानना चाहिये कि अुत्तम परिणाम लानके लिअ धुनकीकी ठीक लबाओ किननी होनी चाहिय और आदश लबाओ न होनेके क्या नतीजा हाना है धुनकीकी तात पर चोट ठीक किस तरह पडनी चाहिये और क्या पडनी चाहिये । अिसी प्रकार बहुतसे दूसरे सवाल ह अिनके बारेमें हमारे अच्छेसे अच्छे पेशेवर पिजारे आजकल बहुत कम जानत ह और अुससे भी कम ध्यान देते ह । अिसी प्रकार रबीके बारेमें जो कायकर्ता धुनाओका एक शास्त्रके रूपमें अध्ययन आरम्भ करता है अुस भिन्न भिन्न प्रकारकी रबीके बारेमें सब बातें जाननकी आवश्यकता हगी । असके रेगाकी लबाओ कस और बारीकी अुमक हायामें पहुंचनसे पहल किन अग्न अग्न प्रश्रियाआमें होकर अुस गुजरना पडता है वह कहा अुगाओ जाती है प्रति एकड अुसकी कितनी पत्तवार है और फसलका रूपके रूपमें कुल मूल्य कितना है रबीका कान्तका दान कितना लबाचौडा है पहलें वहा कौनसी फसल हाती थी जिसका स्थान क्यासने ल लिया है अथवा क्या पहलें वह प्रयोग बजर या क्यासक स्थान पर और कोभी फसल अगाओ जाय ता किसानके लिअे असके क्या फक पडगा अित्यादि अित्यादि । अिस प्रकार अुसके व्यावहारिक अनुभवमें शास्त्रीय ज्ञानका पुट लग जायगा और अुमका अपने विषय पर अितना मजबूत काबू हा जायगा और अुमकी पचीदगियामें अुसका अितना प्रयोग हो जायगा कि आध्रके भिन्न भिन्न भागामें प्रचलित

पिजाओकी दूमरी प्रक्रियाआमें प्रवीण होना उसके लिए काफी आसान बात हो जायगी और उसमें थोडासा ही समय लगगा। इसके अलावा यदि वह अपन प्रयोगा और अनभवाकी नियमित नाथ रखगा तें समय पाकर उसकी ये टिप्पणिया पिजाओी शास्त्र पर अक अधिष्ट पुस्तिकाका स्थान उ लेगी।

अस प्रकार यह समझमें आ जायगा कि किसी भी छात्ने बाप कतौका छात्नाशास्त्र सीखनके खातिर अपना कायशत्रु छोनकी जरूरत नहीं। अगर भुसमें जिजासाकी वृत्ति प्रवर्धित है और जकनिष्ठ परिश्रमकी शक्ति और धीरज काफी मात्रामें है तो वह भुन प्रक्रियाआका जितने लिए उसके पडोसमें विगय सुविधाओं प्राप्त हा गहरा अध्ययन करनमें जट जायगा और न सिर्फ जन विगय प्रक्रियाआमें ही विशपन बन जायगा, बकि धीरे धीरे अपन ज्ञानका जसा और अतना विस्तार करगा कि वह शास्त्र नामका पान हो जायगा।

हरिजन १०-४-३७

३७

### यथायताकी जरूरत

अक भाओन अलवारका अक कतरन भजी है जिसमें छादीकी प्रशसामें अक विनापन छाया है। उसमें से ये नीच लिख प्रमगोचिन अक अद्धत करता है

विलासनी कपडे पर लच विद्य गय अक रुपयका अर्थ यह होता है कि उठ आना तो भारतीयको मित्रता है और साज चौदह आन मीध दिग्गी व्यापारकी वृद्धिमें जात है।

मित्रके कपड पर लच होनबाक अक रुपयका यह अर्थ है कि आधी रकम तो मित्र-भाणिकाको मित्रता है छह आन मत्र दूराको मित्र है और दो आने विनेगियाके जवमें जाते है।

खादी पर खच होनेवाले अब स्पष्टता मतलब यह है कि व्यवस्था-खचके अंक आनके सिवा बाकी सारी खच केवल उत्पादकका मिलता है।

पत्रप्रेषक पूछते ह कि क्या यह सच है कि खादीमें लगाये गये प्रत्येक रुपयेमें से पन्द्रह आने उत्पादकके पास जान ह और सिर्फ अंक आना विक्रेताआको मित्रता है। म यही उत्तर दे सकता ह कि चरखा सघक भंडारोके 'यवस्थापकोक' सामन आदग यह खला गया है कि भावाका नियमन अस प्रकार किया जाय कि उत्पात्ति-केन्द्रसे प्राप्त हानवाली हू पन्द्रह आनकी खादी पर कुल विक्रीकी दृष्टिसे एक आनकी बचत रह ताकि सारा खच वसूल हा जाय। असलिअ अिन पन्द्रह आनामें भाडा आदि दूसरे कभी खच शामिल हाग। असलिअे यह कहना विकूल गलत है कि खादीमें लगाये गये प्रत्येक रुपयेमें से पन्द्रह आने उत्पादकको मित्रते ह।

बनकरोके हाथस निकलनके बाद खादी कभी प्रक्रियाआसे गुजरनी है जस धुलाओ रगाओ अिस्तरी बीचके भंडारामें जमा किया जाना आदि। अगर उत्पादक गद सिफ अुगानवाल बाननेवाले जाटनवाते पीजनवा पूनिया बनानवाले कातनवाल परेतनवाले ताना बाना करनवाले मात्र लगानवाल और बुननवाल तक सीमित रखा जाय और बुनाओके बादकी प्रक्रियाअें करनवाल मजदूर जुसमें शामिल न किय जाय तो गायन उत्पादकको रुपयेमें आठ जानेस अधिक नयी मित्रता। आम तौर पर दूसरी प्रक्रियाआको शामिल नहीं किया जाता और यह ठीक ही है क्योंकि खादीक जुहृदयकी पूनिके अिअे व जरूरी नहा ह। और संभव है जिहें सचमुच प्रामीण या मजदूर कहा जा सकता है अुनके द्वारा वे प्रक्रियाअें होती हा या न भी होती हा। धुलाओ रगाओ वगरा अक्सर संगठित अर्थान पूजीवादी संस्थाआ द्वारा की जाती है। अब वे सब लोग जो खादीका मूय बढ़ानेमें सहायक होत ह उत्पादकके साथ मजदूरी बाटते नहीं ह। दूसरे गणामें व उत्पादकके मुहना बौर छीनत नहीं बल्कि अुस अपने मात्रके लिअ मडी जुटानेमें मदद दते ह और यह वे पूजीवाक होत हूअ भी करते ह। कारण

लेना चाहिये। परन्तु मुझ डर यह है कि भावाके मामलेमें काफी ग्राज नहीं की गयी है। आम लोग यह सवाल पूछते हैं खादी मिलके कपड़स महंगी क्या है? जिस प्रश्नका सतोपजनक उत्तर देना पगा। जो उत्तर प्रगट हं अन्हें म सतोपजनक नहीं मानूंगा। अुन अुत्तराकी पूरी जाच-पडताल करनी पडगी और कठिनाप्रियाका पता ग्गाकर उन पर काबू पाना पडगा और यह प्रयत्न तब तक जारी रखना हागा जब तक कि खादी अपन स्वाभाविक वचस्वको प्राप्त न करे।

यह रामकी बात है कि हम अपनी जरूरतसे ज्यादा रुयी पगा तो करते हं लकिन हमें असका कपडा बनानके लिअ असे बाहर भजनकी जरूरत होती है। अतनी ही रामकी बात हमार लिअ यह है कि हमार पास दहातमें बसमार बकार मजदूर मौजूद हं और हम माल बनानके दहाती औजार आसानीसे प्राप्त हो सकत हं फिर भा हम अपनी रुयी अपन कामका कपडा तयार करानके लिअ अपन गहराकी मिलामें भजत हं। हमें अिस लज्जाका अितिहास मालूम है। परन्तु हम अभी तक पता नहीं लगा पाय हं कि जनतासे दंगभक्तिकी अपीलें करनके आग अिस दोहरी गमको मिटानका अचूक अुपाय क्या है। जनतान अुत्साहवधक अुत्तर दिया है। परन्तु जब तक खादी सावत्रिक पहनावकी चीज न बन जाय तब तक हम सतुष्ट नहा हो सकते। हो सकता है कि अपनी खोजके दौरानमें हमें यह पता चल जसा कि कुछ लोगोका कहना है कि खादी कभी आर्थिक दृष्टिसे सफर नहा हा सकेगी। तब हमें यह स्वीकार कर लनमें काअा सकोष नहीं होना चाहिये चाह अिसमें हमार अहकारको कितनी ही ठस पहुच और हमा जो दाव अब तक अितन विस्वासके साथ दिय हं व गलत साबित हो जाय। परन्तु यह बात हम तब तक स्वाकार नहीं कर सकत जब तक कि हम मानव प्राणीके लिअ सभव सारी खोज करके मर द्वारा प्रतिपादित प्रश्नाका असदिग्ध अुत्तर प्राप्त न कर लें।

## असका अर्य क्या है ?

अक १११ जिसकी मस्कृतिका आधार अहिंसा पर है यह जरूरी समझगा कि असका प्रत्यक घर अधिकसे अधिक स्वावलम्बी हो। किसी समय भारतीय समाजकी अनजाने ही अहिंसक आधार पर रचना हुजी थी। घरेलू जीवन अर्थात् दहाती जीवनका जगगी लोगकी टोलियावि समय समय पर हानकाजे आक्रमणाकी बाधा नही सताती थी। मने बताया है कि भारतवपके देहात गणतत्राक समूह थ। उनमें सामाय जनतास बढा माना जानवाग कोआ भद्र बग या तो था ही नहा या सभी भद्र मान जात थ।

म यह कह बिना नही रह सकता कि हमारी अहिंसाकी बमी हमार खादी कायनमकी बमीसे नापी जा सकती है। दानामें ही हमार विद्वास अधूरा रहा है। म चाहता हू कि दोनामें हम पूर मनसे विद्वास करें।

जिस पृष्ठभूमिको ध्यानमें रखकर काग्रेसजन आगे (प ११२) दिय हुजे नकीका सावधानीक साथ अध्ययन करें। यह श्री कृष्णास गाधीका बनाया हुआ है, जो उन थाडस खानी विगपनामें से ह जिहान खानीके सब पहलुआका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है।



सूत

गगत

नबर तार वगगज

गुडो वजन

बुनाओ

अपना

प्रति कपडा

सोगमें

कपडा

वाता

अिच प्रति ३६ दिन

रही पिजबी

कपडा

अपना

सो गज के फिअ

कताओ

कपडा

पीजा

सूत सो गज

सो गमें

कपडा

कपडा

सूत रोजके

सो गमें

कपडा

कपडा

हिसावसे

हिसावसे

खाबी

	आ	पा	आ	पा	आ	पा	आ	पा	आ	पा	आ	पा
१०	३८	१/३०	१२	३०४०	१४ $\frac{१}{२}$	१-१० $\frac{३}{४}$	०-८ $\frac{३}{४}$	२-६	१-५	६-६	४-०	३-३ $\frac{१}{२}$
१२	४	१/३२	११ $\frac{१}{२}$	३२०	१२ $\frac{३}{४}$	१-६ $\frac{३}{४}$	०-७ $\frac{३}{४}$	२-१०	१-६	६-६ $\frac{१}{४}$	३-८ $\frac{१}{४}$	३-० $\frac{३}{४}$
१४	४२	१/३४	१० $\frac{३}{४}$	३३६०	११ $\frac{३}{४}$	१-५	०-६ $\frac{३}{४}$	३-१	१-६ $\frac{३}{४}$	६-७ $\frac{३}{४}$	३-६ $\frac{३}{४}$	२-११ $\frac{३}{४}$
१६	४५	१/३६	१०	३६०	११	१-४	-६	३-५ $\frac{३}{४}$	१-८	६-११ $\frac{३}{४}$	३-६	३-०
२	५	१/४	९	४००	९ $\frac{३}{४}$	*१-५	-८ $\frac{३}{४}$	३-९ $\frac{३}{४}$	१-१	७-९	३-११ $\frac{३}{४}$	३-३

\*यह हिसाव अूच दर्जेकी रही पर लगाया गया है।

(नबगके साथका नोट अगउ पृष्ठ पर देखें।)

नोट १ चूकि सामान्य आवश्यकताओं ८ से २० नवरवाले मूतस पूरी हा जाती ह अिमलिअे हमार नीच िग्वे हिसारके लिअ अुम बीचका अर्यात १२ नवरका मान लिआ गया है।

२ यथाथ घात गये मूतसे बने हुअे प्रत्यक् गज वपड पर ३ आन ८ $\frac{१}{२}$  पाअी खच आयगा।

३ यह मूत १०० गज रोजक् हिमावसे ११ $\frac{१}{२}$  वगगज वपडा प्रतिवप पन्ग करेगा अर्यात् १५ वगगजक् हिसावसे आदमीकी तीन चौथाअी आवश्यकता पूरी हो जायगी।

४ बच्चा बीमारा और दूसरे असमय ब्यक्तियाको छोरकर स्वस्थ काननवाअाकी सख्या सारी आबादीकी ४० प्रतिगत मानी जा सरती है। (अवश्य ही यह अदाजा नजूसीसे लगाया गया है। सही आनडा ४० प्रतिगतकी अपक्षा ६० प्रतिगतके अधिक् निकट होगा।) अिमन्िअे  $२ \times 2 = 4$  या सारी जरूरतके वपडवा लगभग तीसरा भाग अपनी कताअीम तयार होगा और बाकी दोनिहाअी भाग मजदूरीकी कताअीसे पूरा करना होगा। अिस प्रकार अब वगगज खादीकी लागत लगभग ५ आने ८ पाअी होगी।

मे आकडे सादीप्रेमियाके लिअे अध्ययनकी दिलचस्प मामग्री पग करते है। य कामचलाअू है और वृष्णसके अनुभवके आधार पर निकाले गये ह। घटिया ाजके रओवे लिअ मिन्न आकडे हाग। परतु कामचलाअू सबेसके िअे ये काफी अच्छे है। जो मारे नकशका अध्ययन करनेका कष्ट नही अुमाना चाहते अुहें १४ नवरको ही खेवना चाहिये। वे देखेंग कि खद कातनेवालेकी खाअीका खच ३ आने प्रति वगगजके कम पडेगा। मन कल्या की है कि प्रत्यक् काप्रेसजन कमस कम आध घट रोज कातेगा। नोसिखुअका भी ३० मिनटमें १०० गज मून आमानीसे कात लना चाहिये। बहुत लोग अितने समयमें आमानीसे २०० गज मूत कात तेते ह। मान लीजिय कि स्वय कातनवाअको साअरमें २० गज वपडकी जरूरत होनी है ता अुसे अधिकसे अधिक्

अब घटा रोज कातना पड़गा। अग प्रचार मारी आबागीक पाचवें हिस्सेको २० गज प्रति मनुष्यक हिगावग मारे भारतका जरूरी कपण दनक अिअ अधिवग अधिव ५ घट राज कातनकी जरूरत हागी। आजकक आगत प्रति मनुष्य १५ गज बताया जाना है। अधिव कामताग कामके घट काफी घटाय जा सकत ह। मेरी रायमें खाक अिग तरह घट दूअ अत्यागमें कमग कम प्रयत्न और कचकी जाकय पता हाती है। अिसका अथ वतमान काकमें जितन बढ पमान पर कभी कभी नही हुआ वसा स्त्रेच्छापूण सह्याग है। अगर क छित सकल्प हो तो यह योजना पूरी तरह कार्याकित हान गायक है।

हरिजन ९-१२-३९

४०

## चरखेका सुधार

कताओ-आदोलनके जमदाताअकि अिस प्रयत्नमें कोओ विराधा भास नही है कि कोओ जमा चरखा या यत्र अपक्य किया जाय जिससे हापडियामें रहनवाल लाग अपनी ही थापडियामें मौजूग चरखके बरा वर समय देकर भी अधिक मात्रामें या ज्यादा बारीक सूत कात रें। घरेलू यत्राके सुधारकी प्रगतिशील पद्धति प्राचीन काकसे चली आओ है। तबलाका स्थान चरखने लिया। स्वयं चरखमें धीरे धीरे सुधार हुआ जमा कि हम आज भी भिन्न भिन्न प्रातामें काम करनवाले भिन्न भिन्न पुरान नमूनामें दखत ह। जब चरखका रिवाज बढ हा गया तब सुधारका सिलसिला अचानक हक गया। अिसअिअ चरखा सघकी समिति केवअ अस मागका अनसरण कर रही है जो जीस्ट अिडिया कपनीके गुमाताके छलकत्रसे अचानक बढ हा गया था। हकीकत यह है कि न तो समितिकी और न मुअ यत्राके खिगाफ कोओ आपत्ति है। परतु हमारा निवेदन यह अवश्य है कि अुद्योगके यत्रीकरणकी प्रश्रियाको अिस ह

तब जाना वजा है जिससे गृह जुद्योग मार जाय और अक सकुचित क्षत्रमें सीमित हो जाय दूसर गणमें हम भारतकी मस्तिष्क और प्राणी जीवनको हानि पहुँचाकर उसे गहरी बना देनेके विरुद्ध ह।

यग जिन्दिया २१-११-२९

४१

### खादी विद्यार्थी

मुझे आजकल खादी विद्यार्थियोंके बारेमें कुछ लिखना पड़ा है। मने तो कुछ पहले ही लिख दिया है। मगर जिस बारमें जितना साफ साफ कहा जाय या जोर दिया जाय अतना ही था है कि केवल कताओ धुनाओ आदि प्रतियाओकी जानकारी ही मची खानी विद्या नहीं होती। अत इसका यत्रासत्र कहा जा सकता है। खादीका भीतरा अथ समयनेके लिये यह जानना पडगा कि असे हायस ही क्या तयार करना पडता है और कितस चलनवाये यदोने क्या नहीं। जब अकेल आदमी किसी जसे रोजिनको चला सकता है जिनमे बहुत छोडे समयमें अतना ही कपडा तयार किया जा सके तब अिस काममें अमस्य हाथ क्या उगाय जान चाहिये? अगर खानीका हायसे हा बनाना है तो फिर केवल तकली द्वारा क्या नहा? और अगर तकली ही रखनी है तो कामकी तकली क्यों नहा? और अगर हम सूतको पत्थरमे लटकाकर काम चला सकने हा तो फिर तकलीकी भी क्या जरूरत? असे प्रश्न बिन्कुल स्वभाविक ह। अिन सबके अचित उत्तर खाना खानीकी खोजका जरूरी भाग है। म यत्र अिन प्रश्नाकी चर्चा नहा करना चाहना। म अितना ही करना चाहता हू कि खानीका मच्चा पान यत्रिक प्रतियाओंसे बहुत आग जाता है और धक्कण अनुमधान चाहना है। आज हफारे पाम अिम प्रकारका पान देनक साधन नहीं ह। अिमलिये गिना देते हूअे

दानोंके बिना काम नहीं चल सकता — दोनों अपनी अपनी जगह अपनागी है।

जब मुझ पहलू-पहलू परगना पता लगा तो बेवकूत अल-प्ररणा में ही लगा था। अमुक पीछे जान नहीं था यद्यत् कि मन चरखे और करघेका अर्थ ही चीज समझा था। अतिन बादमें मने स्वर्गीय मगनगल गोधाकी मन्त्रमनुष्यकी सभाबनाआका हिसाब लगानकी कोशिश की। अन्तर्हरणार्थ यह सवाठ अंग तजुजा लाहका क्या बनाना चाहिये पीतका क्या नहीं? यह पतला होना चाहिये या मोटा? अस्की ठाक मोटाभी क्या होगी? हमन प्रारम्भ मित्रके तजुवासे किया। अम समय तजुवाका चमरख बाग और लकड़ीकी हाती थी। बादमें हम चमडे और तातकी चमरख पर आय। पता लगा कि तजुवे आसानीसे मुड जाने है और अहें सीधा करना कठिन हाता है। अिसलिय हमन बुननकी सलाअियसे तजुव तयार किया और अतमें छतरीकी ताडियोके तजुवे बनाये। अिन सब काममें आविष्कार शक्ति और शास्त्रीय खोजके प्रयोगकी जरूरत माक्रम हुआ थी।

शास्त्रीय मानमवांग खादी-कायकर्ता मही नहीं एक जायगा। यह अपने मनमें पूछगा चरखा क्या कताभी मित्र क्यों नहीं? अुत्तर यह होगा कि हरअके हाथमें कताभी मिल नहीं हो सकती। अगर लोग अपने कपडके लिये कताभी मिला पर निर्भर रहेंगे, तो जिसके भी हाथमें मिले हागी वही अुन पर नियंत्रण करेगा और जिस प्रकार व्यवितगत स्वतंत्रता समाप्त हो जायगी। आज काभी भी बिजली और पानीके साधनाका काटकर २४ घटमें सारे लदन और ययाकको अपने अधीन कर सकता है। सामाजिक जीवनके लिये यवितगत स्वतंत्रता और परस्परावलंबन दोनों अत्यावश्यक है। केवल राबिसन प्रूसो ही पूरी तरह स्वयन्मपूण बनकर रह सकता है। अपना मूल आवश्यकताआकी पूर्तिके लिये आदमी जो कुछ कर सकता है वह सब कर देनेके बाद ही अुसे बाकी बातोंके लिये पडोसियाके सहयोगकी तरंग करना चाहिये। यही मन्त्रा सहयोग होगा। अिस प्रकार चरखका शास्त्रीय अध्ययन हमें समाज विज्ञानकी दिगामें ले जायगा। अगर हम चरखसे

मरघित विविध शास्त्राका गहरा अध्ययन नहीं करेंगे तो चरना हमारा हाथमें भारतकी आजादी हासिल करनेवाला गतिनामी हथियार नहीं बनना। लेकिन यदि हमने अमा किया तो फिर वह न केवल भारतको ही आजाद करेगा बल्कि सारे समारका आजादीका रास्ता दिखायेगा।

जब किसी मनुष्यका दष्टिकाण शास्त्रीय होता है तब उसकी पर छाया बुमके खान-पान विधाम और निद्रा आदि सभी काममें पडता है — बुमके मारे काय शास्त्रीय त्गसे नियमित हाग और अस हरअक कायका कषा और कमलिअ पूरी तरह मालूम रहेगा। आपिरी वान यह है कि शास्त्रीय मानसका आत्मीमें जनामक्ति हानी चाहिये नग ता बुम पागखानकी हवा खानी पडगा।

हरिजन ३१-३-४६

४४

### बोलनेवाले आकड़े

मनास प्रान्तीय कषडा कमिनर थी अेम० बेंकटस्वरन खाग तीर पर मनास खानी-याजनाक कामके लिअ लि्ली आय थ। बुम ममय मन अनस कहा था कि थ यह मानकर अपन आकड़े मअ बनायें कि मनासमें मिरे नहा ह और मारे जातका खानीका कषडा हो दना है।

य ह वे आकड़े जो अपनी कहानी आप मुनास ह

मनास प्रान्तकी जनमस्या

५२० लाख

प्रान्तमें परिवारानी मस्या

५३० ०००००

१३२५००००

४

हायजेन मूतना माना जा प्रत्येक वातनवाग

अक पग रात्र काम करके वात सतना है

३ गुना

४५

### बुनियादी जरूरतें

हमन माना है कि खातीकी जड सत्य और अहिंसा है। अगर हम अिम मौलिक बातका भूलकर खातीका चाह जिम तरह अल्पमत करत रहेंग ता अब समय जसा आयगा जब हम स्वयं जैसे नष्ट कर देंग। अगर हम अपनी बुनियाती बाता पर कायम नही रहेंग तो अिसम हमारा पतन हो जायगा। कायकर्ताआका यह देखते रहना घम है कि खातीकायके प्रत्यक भागमें गृद्धि बनी रहे। म आज यह आगा नही करता कि हमारी बत्तिनें सत्य और अहिंसाकी भक्त हागी परतु यह आगा म हमारे तीन हजार खादी-कायकर्ताआसे अवश्य खता हू। अगर व असे नही ह तो हमारे कामकी प्रगति नही होगी और हमारा नाम हा जायगा।

दि आभिडियालाजी आफ दि चरखा पृ ८१ (दिस० १९४१)

खादी-कायकर्ता जयक अुत्साहके साथ खातीगास्त्रके नियमाका अनुमधान करें खादीका ज्याण टिकाअू तथा अधिक आकषक बनानकी कागिंग करें और खादीको सावत्रिक बनानके साधनाका पता लगानकी जिम्मदारी स्वीकार करें। जीश्वर अहाकी मदद करता है जो सदा जागरूक रहत ह और अपने जीवनकायमें अपनी सारी बद्धि लगात ह।

हरिजन १०-१२-३८

खातीकायके प्रत्यक कायकर्ताको वे प्रक्रियाओं जानी चाहिय जिनमें हाकर खाती बननसे पहल रुओ गुजरती है।

हरिजन ६-७-३५

कायकताआको युस रहनमाओी पर चलना होमा जो बद्रकी तरफम ममय ममय पर भिउ और ओहें जिन दहातियाका संवा करनी है अनके आशपाका पहंस खयाल रखना होमा । अस कामके लिअ ओहें शमीणाके साथ गन्दे सपकमें आना हागा । ओहें शमीणाक पाम सहा नुभुति और विश्वास कर पटुचना चाहिय । व शमीणाक मामन कभी मरक्षक बन कर न जाय बकि ओहें अम स्वेच्छा-सेवक बनकर जाना चानिये जिहान अब तक अपन बन-य-पान्तको अपेक्षा की है । अिम प्रारभिक अनिवाय गनका ठीक तरह पान्त हा जाय ता बाकी बातें अपन आप धमे हा हा जायेंगी जमे न्निब बाल रात हाती है ।

हरिजन २४-८-३५

४६

## राजनीतिक दलबंदीकी गुजाशिश नहीं

अक तरहम खहर अक शुद्ध आर्थिक याजना है । खहरका किमी मस्याका पहें व्यावसायिक मस्या होना चाहिय वादमें और कुठ । अिमन्त्रे (राजनीतिक दलबंदीका) गकतरीप सिद्धान्त अम पर गग नग हो सजता । गेकतधमें अिच्छाआ और विचाराका सधप गजिमी



चरखा सघक अेक प्रतिनिधि (अजट) पूछते ह कि वह अपन साथी कायकर्ताआस क्या कहें जिहान अक सघ बनाकर उनुके सामन अपनी गतें पग की ह । म अस मघाता बनना गत समचता ह । अिन कायकर्ताआन साफ तौर पर चरखा सघके कायक्षण और सणैका भुग दिया है । वह काग्रसका बनाया हुआ अक परापकारी सगठन है और असे स्वगामनके अधिकार अस विगप हेतुस त्रिय गय ह कि वह हाथ-बताभीके मुख्य ग्राम-अुद्योग और अुसने साथ लगी हुआी और सब चीजांा विकास करे । जो लाग जिस स्वच्छा सवाके काममें गग हुआ ह व अुसस काओ आर्थिक लाभ नही अुठाते । अितना ही नही अगर हो सके तो अुनमे यह आगा की जाती है कि व कुछ भी मजदूरी न ठकर महनन करेंग । और अूकि ससारके अस सबस गरीब मुकमें बहुत जाग्मी असा नही कर सकन जिसलिजे बहुत गोगाको गुजारे भरवे लिअ वेतन त्रिया जाता है । अहें आराम पहचानके सब प्रयत्न त्रिय जान है फिर भी अुहें माधारण अथमें नौकर नही माना जाना । मनाफमें किमीको हिस्सा नहा त्रिया जाता । अगर असके काओ हिस्सेगार या मानिक ह तो वे कतिनें और बनकर वगरा ह । ग्राग्का तकको कोओ लाभ नहा हाता । खानी पहननकी आगा जनस असलिअ नही रखी जाती कि वह मिठके कपडसे सस्ती या नीसनमें अच्छी है बल्कि जिसलिअ कि वह आध भूख जाध बकार गोगा — यादातर औरना — की सबसे बड़ी सस्थाको काम दनी है । जिस विगाग् परापकारी सगठनको अगनमें होनवाठे वेतनके और दूसरे खचका त्रिकालनके बाद वाकीका सारा रपया अिन मुक कारीगराक पास जाता है ।

अिसलिअ अगर कोओ कायकर्ता चरखा सघके विरुद्ध सघ बनाते ह ता अुसका अय यह हागा कि वे अिन कारीगराके खिलाफ ह । जो कुछ वे गैते ह वह अिन कारीगरा या ग्राहकाकी जबसे आता है । कायकर्ताआके अाभके लिअ ग्राहका पर वोन डाग्ना साफ तौर पर बेदूदा यात होगी । क्या कायकर्ता यह अनुभव नही करेंगे कि प्रति निधि (अजट) गोग भी वम ही कायकर्ता ह जैसे वे खद ह ? कओ जगह ता प्रतिनिधि त्रिल्कुग् अवतनिक ह । अल्बत्ता यत्रि कहा कोओ

प्रतिनिधि अपने कृत-पक्षकी सीमाका युत्लघन करके असा आचरण करता पाया जाय कि वह अपने साथ और अपने अधीन काम करने वाले लोगोंका साथी न होकर मालिक और प्रभु है तो वह दूसरी बात हागा। अभी मूरतमें वायवताआके पास केन्द्रीय वायायके मारफत अुपाय है। परतु दूसरे क्षत्रामें प्रचलित प्रकारके सघ बनाना अवश्य ही वह अुपाय नहा है। दूसरे क्षत्रामें सघ अवयवक हू नेकिन महा वे ई केवग गरजहरी हू वन्कि जमा म अुपर वह केवा हू गलत चीज ह। और अगर किसी वापक पमान पर अुनका आग्र रता जाय ता वे अुम चरला सघका नष्ट कर सकते हू जिमके वे अब हूद तक स्रण और सरक्षक ह।

हरिजन १६-३-३८

४७

## खादी, ग्राम-अद्योग और ग्रामोत्थान

म स्वीकार करता हू कि अगर किसी व्यक्तिवाका सारा समय खादीवापमें लगता है ता अुमके अिअे ग्रामोत्थानमें या ग्राम अुद्योगमें ध्यान लेना सम्भव नही है। जिन तीन कामके अिअे तीन व्यक्तिवाकी आवश्यकता हागी। मरा अिचार यह है कि अब मु सगलित मारमें जेक आत्मी काफी हाना चाहिये। अुत्तरणके अिअे यह अब वायवता ना घटे सूत उन पूनिया और कताअीके औजार वाता और खादी बचनेमें अुगाय ग्राम-अद्योगके काममें सम्भवत जिसस भी हम बनत लगगा और बादका समय वह ग्रामोत्थान और लोगोंको सामाय शिक्षा देनेमें अुगा सकता है। अब तक यह सम्भव नहा हा मका है क्वाकि व्यक्तिवाका समय लागानो कताअी बनरा मित्तानेमें लगता रहा। परतु अब समय आ गया है कि खादी और दहातकी बना चारें जहा बने बनी सपनी भी चाहिये। अुम मूरतमें जेक व्यक्ति

ये सारे काम कर सकेगा। आज तो अतना कहना काफी है कि ये सारे काम अब दूसरेके सहायन से और जहाँ तक हाँ सके अब बन जाय चाहिये। अकीकरण अपरमे घोषा नहीं जा सकता असवा स्वाभाविक विकास होना चाहिये। वनमान स्थितिके अन्ध म विमीको काजी दाप नहा देता नहा दे सकता। हमारी याजनाआकी प्रगति अतनी ही हुअी है जहा तक हमारी बुद्धि और अनभव नहँ ल जा सकता था। खादी विद्यालयाकी स्थापनाका अद्भुत यही है कि काम करनकी कलामें बुद्धि और सुधार हो। अनुसे हम यह सीखेंगे कि ग्रामबायके सारे विभाग मिश्रकर अब कसे किय जा सकते ह।

हरिजन ३१-५-४२

४८

## कायकर्ता और पसा

आजकल चरखा-सघके कायकर्ता भारतभरमें पन हुअे ह। अनुकी सख्या लगभग ३ ० है। म असे छाटी सख्या समझता ह। जब खादी भारतमें सावत्रिक हो जायगी तब अिन कायकर्ताओकी सरया बहुत ज्यादा बन जायगी। अगर अब गावके लिअ अब कायकर्ता हा तो चरखा-सघकी सूधीमें ७ ० ० कायकर्ता हाग। अिसके लिअ विशाल धनराशिकी जरूरत होगी मगर अिसस हमें करना नहा चाहिये। अगर काम लाभदायक है और लोग अनुकी बद्र करते ह तो रुपया मिश्र जायगा। म जीवनभर सस्याअें बनाता और चलाता रहा ह। मरे अनुभवमें किसी सस्थाको द्रव्यके जभावमें अपना काम बद्र या कम नहीं करना पडा। अिसके विपरीत अगर सस्याओको बद्र करना पना या अनुका काय घटाना पडा तो असा कायकर्ताअिके अभावमें हुअा है। अुत्तरमें यह पूछा जा सकता है बड़ी बनी व्यापारिक सस्याआ और सरकारी नौकरीमें काम करनके लिअ रुपयके सिवा और क्या

आकषण है? जिन गगान मरी बान पूरा तरह नहीं समझी है व ही अिम तरहकी आपत्ति बुना सक्त है। मन यत् नहीं कहा कि रूपसे कुछ नहा किया जा सक्त। रूपमें अगर अनक परिणाम लानेकी शक्ति नहा हानी ता लाग अुसक गगाम क्या वनत? मरे कहनका मत यह था कि अगर हम रूपक गलाम ह ता हमें गोगाकी सेवा करनका विचार छोड देना चाहिये। गुलामक भाग्यमें सताया जाता ही हाना है। परन्तु यदि हम रूपका माधन समचकर वाममें लें और और अुम अपना सक्त मानें और वह भा सवाकी भावनामे ता हम अुसका मत्पयाग करेंगे। लोगाकी सेवाक शिअ पहली और अनिवाय आवश्यकता अच्छे कायकर्ताकी है। जब अम कायकर्ता हान ह तब रूपया अपन आप आता है और अुहें अुमका तगामें जानकी जरूर नहा हानी। अिसलिये मने कहा कि अगर हमें सात गव कायकर्ता और मिट जायें तो भी हम यह मान कर चत् सक्त ह कि रूपया आ जायगा। यह मना है कि गगाका हमारे काममें आकषित करनक शिअ हमार पास रूपया नहा है। अिमे म स्वीकार करता हू। यत् ता आकषित करनवाली चीज भागना और कायनिष्ठा ही है। जा लाग चरखा-मघ जमी तस्यामें गरीब हा अुहें वेतनक वजाय सेवाभावम गरीब हाना चाहिये। अगर अुहें याडामा वनन देना पन्ता है ता अिमलिये कि खानको ता गरीब-अमीर मभीको चाहिये। परन्तु कायकर्ता सेवाक खानिर ही जिन और तदुस्त रहनके शिअ वनन गना है। अम कायकर्ता मुख या गौकने शिअे कभी मान-मीत या पहनने नहा ह।

शि अजितियालाजी आफ शि चरखा १० ८५ ८६ ३ ११ ४५

य सारे काम कर सकेगा। आज तो अितना कहना काफी है कि य सारे काम जब-दूमेरेके सहायक ह और जहा तक हा सके जब बन जान चाहिये। जकीकरण अूपरमे थोपा नही जा सकता असका स्वाभाविक विकास हाना चाहिये। बतमान स्थितिके अिअ म किसीका काजी नप नहा देता नही दे सकता। हमारी योजनाअकी प्रगति अुतनी ही हुजी है जहा तक हमारी वृद्धि और अनभव अन्हें ल जा सकता था। खादी विद्यालयाकी स्थापनाका अुद्देश्य यही है कि काम करनकी बगमें वृद्धि और सुधार हो। अुनसे हम यह सीखेंगे कि ग्रामवायके सारे विभाग मिलाकर अक कम किय जा सकत ह।

हरिजन ३१-५-४२

## ४८

## कायकर्ता और पसा

आजकल चरखा-सघवे कायकर्ता भारतभरमें फरे हुआ ह। अनकी सख्या लगभग ३० है। म अिसे छोटी सख्या समझता हू। जब खादी भारतमें सावत्रिक हो जायगी तब अिन कायकर्ताअकी सख्या बहुत ज्यादा बन जायगी। अगर अक गावके अिअ अक कायकर्ता हा तो चरखा-सघकी सूचीमें ७००० कायकर्ता हाग। अिसके अिअ विगाठ घनराशिकी जरूरत होगी मगर अिससे हमें डरना नही चाहिये। अगर काम लाभदायक है और लोग असकी बन करते ह तो रपया मिल जायगा। मैं जीवनभर सस्याअें बनाता और चगाता रहा हू। मरे अनुभवमें किमी सस्याको द्रव्यके अभावमें अपना काम बंद या कम नही करना पडा। अिसके विपरीत अगर सस्याओको बंद करना पडा या अुनका काय घटाना पडा तो असा कायकर्ताअाके अभावमें हुआ है। अत्तरमें यह पूछा जा सकता है बडी बडी आ्यापारिक सस्थाअा और सरकारी नौकरीमें काम करनके अिअे रपयके सिवा और क्या

आवष्य है? जिन लोगान मेरी बात पूरी तरह नहीं समझी है वही अिन तरहकी आपत्ति बुठा सकते हैं। मने यह कहा कि रूपसे कुछ नहीं किया जा सकता। रूपमें अगर अनक परिणाम लानेकी शक्ति नहीं होती ता लोग अमके गुणम क्या बनते? मेरे कहनेका मतलब यह था कि अगर हम रूपके गुणम ह तो हमें लोकाका सेवा करनेका विचार छोड देना चाहिये। गुणमके भाव्यमें बताया जाता ही होता है। परन्तु यदि हम रूपके साधन समझकर कामम लें और और धुम अपना सेवक मानें और वह भी सेवाको भावनासे तो हम अमका सदुपयोग करेंगे। लोकाकी सेवाके लिए पहली और अनिवाय आवश्यकता अच्छे कायकर्ताकी है। जब अमे कायकर्ता होत ह तब रूपया अपने आप जाता है और जुहें अुसकी तलाशमें जानेकी जरूरत नहीं होती। अिसलिए मन कहा कि अगर हमें सात लाख कायकर्ता और मित्र जायें तो भी हम यह मान कर चल सकते ह कि रूपया जा जायगा। यह गही है कि लोकाको हमारे काममें आवपित करनेके लिए हमारे पास रूपया नहा है। अिसे म स्वीकार करता हू। यहा ता आवपित करनेवाली भीज भावना और कायनिष्ठा ही है। जो लोग चरखा-मघ जसी मस्थामें गरीब हा अुन्हें बतनक बजाय सेवाभावमे गरीब जाना चाहिये। अगर अुन्हें थोडासा वेतन देना पडता है तो अिसलिए कि खानको ता गरीब-जमीन समीको चाहिये। परन्तु कायकर्ता सेवाक खातिर ही जिंदा और तडुरस्त रहनेके लिए वेतन लता है। अस कायकर्ता मुज या गौडके लिए कमा खाते-पीत या पहनन नहा ह।

'दि आभ्रिडिमालाजी आफ दि चरखा, पृ० ८५ ८६ ३ ११ ४५

## खादी कायकर्ता और राजनीति

खादी-कायकर्ताओंको राजनीतिमें भाग न्क लिअ समय नही मिअ सकता । चरखा-सघ अपना काम पूरी तरह नही कर सकता अगर उसके कायकर्ता सिफ जाठ घट काम करें और अपना बाकीका समय मौज करनमें और विनोत्के दूसरे काममें ग्गार्यें । चरखा-सघका बनाना और बिगाडना आ पर ही निभर है जिसलिअ अहें अपना बचा हुआ समय खानी लयार करनकी विविध प्रक्रियाआ जोर खादीके ग्गस्त्र और क्गका अध्ययन करके अपने काममें अविक् कु्ग और योग्य बननम ग्गाना होगा ।

किंतु अुसका यह अथ नही है कि चरखा-सघके कायकर्ता राजनीति या दूसरे मामलामें काओ दिक्चस्पी नही रखेंग । दिक्चस्पी अहें है और रखनी चाहिय परंतु राजनीतिका वही ठीक तरह समझता है जो चरखा-सघके कामके द्वारा ही सारी दिक्चस्पी लेता है और समयके साथ अुसका सदुपयोग करता है । वह सधमच अच्छा मतलता होगा और काग्रसकी तरफमे खड होनवाल जम्मीन्वारके लिअ मत देगा । मगर वह किसी क्कविन विगपके पक्षमें मत देनके लिअ दूसराको राजी करनके काममें नही फसेगा और न ग्गार्यान देगा । काग्रसका काम जनताका काम है । काग्रस जनताकी प्रतिनिधि है । काग्रसन चरखा सघका जन्म दिया है । चरखा सघ भी जनताका है । जन्म राज नीतिक काम काग्रसकी अक् प्रवृत्ति है ठीक असी तरह चरखा-सघ भी काग्रसकी अक् प्रवृत्ति है । परंतु कौओ दा घाडाकी सवारी कसे कर सकता है ? जा चरखा-सघमें काम करना है अुसे पूरी तरह असीमें लगना चाहिय । और जो राजनीतिमें घुसता है असे राजनीतिमें लगना चाहिय । अिस प्रकार दानाको आपसमें काम बाट ेना चाहिय । अिसलिअ चरखा-सघका यह नियम रहा है कि अुसके कायकर्ताओंको राजनीतिमें सक्रिय भाग नहा ेना चाहिये ।

दि आर्जिडियालाजी आफ दि चरखा प० १ ८ १ ९ ३ ११ ४५

म त्वका सवध ग्रामीण वायवर्ताश्रामे है। अनुना कतय है कि व अपना ममय मुख्यत वातन जीर दूसरास वनवानमें ल्गायें। ग्यानी वायकी नही बल्पनामें कपामकी खतीसे ल्गाकर कपका तमारी तवकी मारी प्रत्रियाओं गामिल ह। जो वायवता त्रिन मवको बुद्धिपूर्वक जानता है जीर बरखे या तनुअकी भरम्भन कर सकता है अुम अपनी राजा कमान और दूसराका कमाना मित्रानमें कभी कोत्री बठिनात्रा नही हागी। जिसक साथ साथ और खानीवायका हानि पट्टुचाय बिना खानीवायवता माधारण बीमारियाका अिगज कर सकता है जीर गावना मफात्रीनी तरफ ध्यान द सकता है। गिगा किमी बुद्यागने द्वारा दनी पन्गी। अिमजिजे म अिस खानक कामम अग्ग नहा ममपता। जा गिक्षार ल्पि जाये अहें खानी पहनना चाहिय और खानीक जरिये गिगा प्राप्त करनी चाहिय।

दूसरा सवाल यह है कि ग्यानीवायवर्ताको किनने अमें तव वतनित्र वायवर्ताके रूपमें काम करना चाहिये। मरे विचारम अस गुरुय ही स्वावन्वी हाना चाहिये। यह समव न हा ता अय अपने त्रिअे खुद कात्री मियात् मुक्कर कर रना चाहिये। मरी रायमें अधिनम अधिक अवधि पाच मात्का है। जिस वायवर्ताका पाच कपक अतमें स्वावन्वी बन जाना है अम हर मात् अपना भत्ता घटाने जाना चाहिय। अनुम यह आगा नहा रखी जा मरती कि वह पाच मात्क आगिरमें अचानक अपन परा पर लडा हा जायगा। यह अेक बला है जिसमें सावधानीम विचार जीर याजनाकी जरुरत हाना है। जा दूसराका स्वावल्मी बनना मियाता है अवय ही अुमे पट्टु खु स्वावन्वी बन जाना चाहिये।

हरिजन ४-८-४६



## सरक्षक कौन हो सकता है ?

चरखा-सघन जो काम हाथमें लिया है वह अितना विनाल और महान है कि जसके लिख चरखा सघने सरक्षक (ड्रस्टी)की जरूरी योग्यताआवा अत्यंत ध्यानपूर्वक विचार होना चाहिय। मरी रायमें वे ये होनी चाहिय

(१) किसीको भा नाममात्रका या नामके खातिर सरक्षक नही होना चाहिय।

सरक्षकमें यह श्रद्धा होनी चाहिय कि भारत जसे देशमें जहा कराडा आदमी वषमें चार छह महीन बवार रहते ह अगर वे सब गोग जा गरीरसे तदुस्त ह राज काफी बकन अर्थात् औसनन अब घटा कालनमें खच करें ता सबको अपना काता हुआ कपडा आसानीस मिल सकता है और अुहें और किसी कपडको छूनकी जरूरत नहा होगी।

(२) जिस सरक्षकमें यह अटल श्रद्धा हागी वह दूसरके सामन अच्छी मिसाल कायम करनेके लिख और देशकी सेवामें भरसक मह्यता देनेके सतापके लिख नियमित रूपसे कातगा।

(३) वह भारतके देहाती जीवनसे अपन जीवनको अकरस बनानकी पूरी कोशिश करगा।

(४) भारतवष गावासे बना है। परंतु हमारे शिक्षित वर्गों गावाकी अपेक्षा की है। चरखानसघका सरक्षक हमारे ग्रामीण जीवनको दु खमय बनानवागी बाधाओका अुपाय करनेका पूरा प्रयत्न करेगा। असा करत हुआ असे यह याद रखना चाहिय कि ग्रामीण जीवन गहरी जीवनकी नकल या पुछला नहा बन जाना चाहिय। गहराकी ही देहाती जावनका नमूना अपनाना हागा और देहातके लिख जिदा रहना सीखना हागा।

(५) अगर किसी महिला सरसकका पति मित्र जुधात सब रसता है तो उसे अपने निजा शयम जेक बुनकर रस गना चाहिये ता बुनका या अुसक अिष्ट मित्राका काठा हुआ सूत बुन द और जम जिम प्रकार तयार किया हुआ कपडा पहनना चाहिये ।

( 6 ) सरसकका हाथ-बताजी और हाथ-बुनाजाक बारमे मारा चाहिये पना चाण्य और जिन अुद्याकि आरिज और नजिक महत्वका समथना चाहिये । उसे यह भा समथना चाहिये कि जिनका सबक प्रचार कम किया जा सका है और यह सब दूसराका समथना चाहिये ।

( 7 ) सरसकका प्रारभत कर जब तक चरना-सथक जिनियासका जानना और समथना चाहिये और य भा समथना चाण्य कि जुान ब-ब-निमाका विविध प्रक्रियाजामे कम कानि कर ग है ।

य सर विवाह है । जब तक भय जन्हें स्वाकार न कर न ब ब-पनकारक नहा हो सकन । सुगमन या परिवसनक तो पर मुझे जा ना महासक मुधाव मिलेग अनका में स्वागत कम्गा ।

५२

### यज्ञाय कताओ क्यों ?

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि मम खानके किज काम करनेकी जरूरत ही नहा तो म क्या कावू ? अत्तर है — अिमलिअ कि म वह खाता हू जो मेरा नही है। म अपन देगवामियाम छीनी हुओी कमाओी पर गुजर करता हू। जब पसा भी जो आपके जवमें जाता है वह कहासे जाया है अिस बातकी खाज कीजिय और म जो लिख रहा हू अुसकी सचाओीका अनुभव आपका हो जायगा।

यग अिडिया १३-१०-२१

अगर म अडीसाके नरककालाके आग चरखा रत द तो व असकी तरफ आख अटाकर भी नही देखग। परतु म अुनक बीच बठकर कातन लगू ता वे अुस बसे ही अपना लेंग जैसे मछली पानीका। आम गग बडाके अुपनेका नहा अुनके आचरणका अनकरण करने ह। अिसलिअ कताओीके प्रस्तावकी जरूरत है। वह हमें अामी णाके प्रति मच्चो जिम्मेअारीकी भावना प्रदान करता है वापुमण्लको कातनकी रचिस भर दता है और खालीका सस्ता बनाता है। अगर कताओीके प्रस्ताव पर दग वफादाराम अमठ कर ता असमें व गक्ति छिपी हुओी है जिमकी हमें अभी तक कोओी कल्पना नही है।

यग अिडिया ७-८-२४

अब जीअर कृपासे हम गिभित मध्यम अगके लोगमें अपनी पतित बहना और भूख भाअियाके साथ तागतम्य स्यापित करनेकी अिछा जागी है। हम स्वराय अिसलिअ चाहते ह कि वे जिदा रह

मर्के । पर म सब गावामें जाकर ग्रामीणाकी मन्द नहा कर मवत । हमारी पत्तिन बहनावा चित्र हमें मन्त्र अिम अतनी यात्र लिगता है कि हमारा चरित्र गढ और निमल बने । ता फिर हम क्या करें जियम हमें बराबर अनवा खया बनार रह और अनक प्रति हमारी मन्त्रभूति तीव्र हानी जाय ? हम प्रतिदिन अनक रिअ क्या कर मवत ह ? हम अितन दुःख ह कि हम यथागभव कमस कम काम करना चाहन ह । वह कमस कम क्या है ? चरखक सिवा म और काआ चीज माच नहा मवता । वह काम आमान हाना चाहिय — पडित और अनाना म और बुर जवान और बूटे पुरख और स्त्री दुःख और मवत म व किसी भी धमक हा सबके बूतका हाना चाहिय । काम कारगर तभी हागा जब वह सबके रिअ अवसा हागा । उरखा अिन सत्र गनोंका पूरा करता है । अिमरिअ जा आघ घटे राज कातता है, वह जनमाया रणकी अत्यत कारगर म्गम मवा करता है । मनी नही वह भारत भूमिक पतित मानव मभाजकी भी पूर रिअ पानपूण मवा करता है और अिम प्रकार अस मवाक रिअ स्वरायना दिन दिव अधिक निवट लाना है ।

हमारे रिअ चरखा समूच मावजनिक सामूहिक जीवनकी धनिया है । अिमक बिना किसी स्थायी मावजनिक जीवनका निर्माण असभव है । यही अेक प्रत्यक्ष कटी है जा हमें दवाक छटस छट गगाके माय अट बधनमें बाधकर अुन्हे आगा प्रदान करता है । हम अुममें और बृत्तमा चीजे जाड मवत ह हमें जाननी चाहिय । मगर हमें पहल अिम बुनियातका मजबूतीका निश्चय कर रना चाहिय । हागियार पारीगर अिमारतका अूपरी रिमा बनाना गु करनम पन् अमनी नावकी मजबूतका निश्चय कर रना है और जितनी बग अिमारत का अनना गहरी और अुननी ही मजबूत नीव डालता है । अिमरिअ अपने अुद्देशकी गिदिक रिअे पन् सार म्गमें कताओ मावत्रिक हा जाना चाहिये ।

मगर कताओ जनमाधारण और वर्गोंका ही जाहनवागे बनी नही हागी वह अग अग राजनीतिक दलके बाधकी कडी भा हागी ।

वह सब दवायें जिसे सामान्य हा जायगी। वे चाहें ता और सब बातोंमें मतभद रखें मगर कमस कम इस बात पर ता वे सहमत हा सकते ह।

जिसलिअ जो दास प्रम करने ह सबसे गरीब और गिरे हुआ गगाम मुहबत करते ह अन सब लोगाम मेरा अनुराध है कि अिन लोगाके खातिर और औश्वरक नाम पर समान और अच्छ बग्वाग सूत कातनके रिज अब घटा रोज थमनान कीजिय। चूकि यह राष्ट्रको अनकी भेंट हागी जिसलिअ अहें जिसे अतिर भारत सानी मडग्वा धार्मिक नियमितताके साथ अपण करना चाहिय।

यग अिटिया ४-९-२४

म जितनी बार चरख पर सूत निगालता ह अतनी ही बार भारतके गरीबाका विचार करता ह। भूखकी पीनास व्यथित और पेट भरनके सिवा और काजी अच्छा न रखनवाके मनुष्यके जिअ असका पेट ही जीवर है। अस जो रोगी देता है वही भुमका मालिक है। उसके द्वारा यह औश्वरके भी दान कर सकता है। उसे गगाको जिनके हाथ-पर सही सलामत ह दान देना अपना और अनका दोनाना पतन करना है। अहें तो किसी न किसी तरहके धधरी जरूरत है और यह घधा जा करोडाकी काम देगा केवग हाथ कताओका ही हो सकता है। ठेकिन म भारतके मेहनत मजदूरी करनवागे लोगाके मनमें हाथ-कताओकी छिपी हुआ गकिनके प्रति अपनी उद्धा भापण देकर नहा बल्कि स्वय कातकर ही भर सकता ह। जिसलिअ मन कताओका प्रायश्चित्त या यज्ञ बताया है। और चूकि म मानता ह कि जहा गरीबाके लिअ गुद्ध और सत्रिय प्रम है वहा जीवर भी है जिसलिअ चरख पर म जा सूत निगालता ह उसके अब जब धागमें मज जीश्वर दिताओी दता है।

यग अिटिया २ -५-२६

## यज्ञाय कताओ वाछनीय है ?

अब भाओने कताओनी वाछनीयतामें गवा प्रगट की है और गभीरतापूर्वक सुनाया है कि अगर सब गोग कातेंगे तो जो गरीब अपनी गजीक लिंअे कताओ पर निर्भर करते ह वे घाटमें रहेंग। यह भाओ भूट जाने ह कि जो लाग यनाथ कातते ह वे खहरका वातावरण बनात ह कताओको आसान करते ह और छोटे छोटे आविष्कार करके असे अधिक गभदायक बनात ह। यनाथ कताओमे पेगवर कतिनाओ मज दूरीको किसी नी तरह हानि नही पहुच सकती।

यम अिडिया १७-६-२६

अब पत्रलेखक पूछते ह

आपका यज्ञाय कताओ या खुद काने पर क्या आग्रह है ? यनाथ कताओ तो दान देनक लिंअे कातना है। खुद कातना अपने निजी अुपयोगके लिंअे अपना सूत खादीमें बदल लना है। दोना ही हालतामें आप जिन गरीब कतिनका सबसे कम वेतनवाला मजदूर कहते ह अुसके मुहमे कुछ न कुछ छीन लेते ह। यनाथ कताओमें आप बेगक ग्यानीका भाव घटाकर गरीबाकी घाडीगी सवा करते ह। पर अपने लिंअे की जानवाली कताओमें तो अिसके सिवा और कुछ नही होता कि हम कतिनके मुहकी रोटी छीन लेते ह।

अगर कताओ सावत्रिक हो जाती ता यह बात थोडी या पूरा सच होती। परन्तु आज कुछ हरिजन अम हैं जिनकी कमानेका गविन आधी रह गओ है, क्याकि अुनके पास—क बुननका धधा करते ह—बुननका हाथ-कना सूत नही है। अिन समय क किगी तरह बडी कठिनाओमे गुजर करनकी कोगिग कर रहे ह। अिन बुननराकी यह दुःख न हो यदि देगमें बड़ पमाने पर यनाथ कताओ हो रही हो।

म अिस पत्रमें पहले ही यह चुवा हू कि किस प्रकार अुडीसामें गभग दस हजार बुनकराके प्रतिनिधि जो (किसी जातिमें परिगणित न होनेके कारण) हरिजना जैसे ह कामके अभावमें या या यह लीजिय कि हाथ-बते सूतके अभावमें भूषा मर रहे ह। यह कहना व्यय है कि वे मिल्का सूत बुन सकते ह। यह काम य दस हजार जुाहे कर रहे थे। मगर जापानी स्पर्धाके कारण मिल्के सूतके हाथ-बुन बपडकी माग बहुत घट गयी है। सादी बुननवााकी अपनी सादीके लिअ स्थानीय ग्राहक मित्र सक्त ह मगर मित्रके सूतके हाथ-बुने बपडके स्थानाय ग्राहक नहा मिल् सक्त। अब समय था जब हाथ बत सूतका बहुतायत थी क्याकि हजारों नही ता सक्डा यज्ञाय क्तातनवाते थे और बुनकरोकी बमी थी। अब यनाय क्ताओका रिवाज अठ गया है और बुनकरोकी सेना मौजूद है जो हाथ बते सूतको खुशीस बुन देंग। असलिअ बहुत समय तक और जब तक बाजारमें खादीकी माग है तथा जब तक क्ताओ अितनी सामान्य न बन जाय कि अुससे माग पूरी हो जाय तब तक यज्ञाय क्ताओ और अपन लिअ क्ताओ दोनाका राष्ट्रीय अयरचनामें निश्चित स्थान है। अिससे गरीबोकी और अनमें भी खास तौर पर हरिजनाकी निश्चित और ठोस सेवा होगी।

अिमक अावा चूकि यह क्ताओ बुद्धिमान और गिक्षित स्त्री पुरुषाका करनी पडगी यह क्तायुक्त होगी और अुसमें बडा विकास किया जा सकेगा। चरखे और अुसके सरजाममें तथा हाथ चरखी और धुनकीमें जा अदभत सुधार हो गय ह वे अुस दिलचस्पीके कारण हूअ ह जो गिक्षित मध्यमवर्गकी स्त्रिया और पुरुषोअ अिस आदोलनमें श्री है। हरिजन के सब पाठकाको गायद मालूम न हागा कि चरखा सघके मंत्री अक अम० अ और बम्बयीके अक मगाहूर और सफल बकरक लडके ह अुसके अयग देगके याग्यतम व्यापारियामें स अब ह तामिनाामें खानी-मगठनके सचाक भी अक सुप्रसिद्ध भूतपूव बकीठ ह वगाअक सगठनकर्ताअामें अक भूतपूव डाक्टर ह और दूसरे योग्य रसायनशास्त्री ह। अिमी प्रकार अत्तर प्रदेशमें यह काय अक राष्ट्रीय महाविद्यालयके भूतपूव आचार्य द्वारा चलाया जा रहा है। य थोडस

नाम है। अमे और भा बहुतम लागान नाम म बता सकता है जिहोन खालीके द्वारा दरिद्वारायणकी सवामें अपनका मर्मपित कर लिया है। यह भक्तसमूह न ज्ञाता ता यालीका जो ठाम प्रगति हुआ है वह असभव थी और जा आधा करोड रुपया गामग अदाञ्जी लख मजदूरामें दानके रूपमें नहा मगर प्रामाणिक श्रमकी मजदूरीके रूपमें खाली-आदो-गने अिन वर्षोंमें बाटा गया है यह न बटता। चरखक मिवा और किसी तरह या बेहतर रग पर अिनती जल्दी अमा काम नही हो सकता था। अुससे दीन-दु गियाका देगके कुछ अत्यन्त सुमम्भृत नर नारियाके माय सजीव सम्भन हुआ है अधरी झापटियामें प्रकाशकी अक किरण पहुंची है जजर गरीरामें साहम आया है, हजार दुगधिविहीन बालबाको दूध मिला है। अिन देगतियान अुस अपनाया है अुहें अुसने अकालके खिलाफ जपनी रक्षा करनका अेक महज साधन द लिया है। अुसने आलस्यका कम किया है और हजाराका भिव्वारी जीवनम अद्वार किया है।

अिसअिअे यह कहना गन्त है कि यथाय क्ताञ्जी या अपने अिय वातना मजदूरीसे वातनवागके लिय हानिकारक है। अिन गणके अिअ मभव है अुन सबका निदिचत धम है कि भारतके हरि जना — अछूना — के खातिर कमसे कम आध घटा कातें।

हरिजन १०-१०-३४

कथित अुच्च वर्गोंन युगा तक नीच वर्गोंकी विभु अुपभा को है। नतीजा यह हुआ कि नाच वर्गोंका जीवनका रग नही आती। व ममसते हैं कि हम ता केवल लकडा चीरने और पानी मरनवाग ह। कथित अुचे यग अपन अिन कुवमोंका दण भागनसे बचे नहा। कयाकि अुहें भी जीवनकी रग नही आती और यअि अुहें नीचे वर्गों का महायना र मिग तो व आज नग हा आय। खालीका अुदृश्य अुच वर्गों स नीच वर्गों के प्रति बिय गय अिस अयायना प्रायदिचत करानर अिम दुहरी बुराअाका टोक करना है।

हरिजन ६-७-३५



## खादीवृत्ति

खादीवृत्ति का यह मतलब है कि खादी पहनने के साथ जा अथ लगा हुआ है वह हमें मान्य होना चाहिये। हर बार जब हम प्रातः का खादीके बपड बाहर जानको पहननेके लिये निकारें तब हमें याद रखना चाहिये कि यह काम हम दरिद्रनारायणक नाम पर और कराडा भूख भारतीयकी सवाके खातिर कर रहे हैं। अगर हममें खादीवृत्ति हा तो हम जावनके हर क्षणमें अपन धारा ओर सादगी पदा कर लेंगे। खादीवृत्ति का अर्थ है असीम धर्म क्याकि जो लोग खादीकी अत्यन्तिका कुछ भी जान रखते ह अुहें मालम ह कि कतिना और जुगाहाको अपने धर्ममें कितना घोर परिश्रम करना पडना है। इसी तरह हमें भी स्वरायका तार कातने हुजे धीरज रखना होगा। खादीवृत्ति का अर्थ अपार श्रद्धा भी है। जैसे चरण पर कातनवातेको यह असीम श्रद्धा हानी है कि वह जो मूत कातता है वह भले ही थोडा हो फिर भी कुछ मिगाकर जितना हो जायगा जिससे भारतके प्रत्येक मानव प्राणीको बपडा दिया जा सके अुसा तरह हममें असीम श्रद्धा होनी चाहिये कि अन्तम सत्य और अहिंसाम हमारे रास्तेकी सब बाधाओं दूर हो जायेंगी।

खादीवृत्ति का अर्थ है ससारके प्रत्येक मानव प्राणीके साथ अपनापन। असका अर्थ है प्रत्येक अुस वस्तुका सपूण त्याग जो हमारे मानव भाविकाको हानि पहुचा सकती है। अगर हम अपन करोगे दंग घासियामें यह वृत्ति पदा कर दें ता हमारा यह भारत दंग बसा सुन्दर बन जाय !

लेकिन म स्वीकार करता हू कि जिस बातके पीछ अक गत है, जिस वृत्तिकी अभिव्यक्ति अक ही गत है। रामनाम हमारे मनमें अक सजीव बड असलिल बन गया कि अुसके पीछ हमें रामनाम प्रान्त

करनवालाकी अद्वितीय तपश्चर्या थी यही बात खादी-आन्दोलनकी भी है। खादीके पीछे खादाके समयवाकी तपश्चर्या होनी चाहिये। मेरे मनमें यह विचार हर क्षण बना रहता है कि जिन लोगोंने अपने जीवन खादीका अपन कर दिया है वे अगर जीवनकी शुद्धताका मतलब आप्रह नहीं रखेंगे तो खादी पर हमारे देगवासी नाक भी मिकोडेंगे।

यग अिडिया २२-९-१७

५५

### कताओ आत्मदर्शनका साधन

आप पूछ सकते ह कि चरखके द्वारा जीश्वर प्राप्ति कसे सम्भव है। जसा म आपको पढ़ते वता चुका ह, चरखा कराडो लोगोके साथ हमारा तादात्म्य करता है। करोडपति लोग समझते ह कि समारमें रुपया जुहें बोझी भी चीज प्राप्त करा सकता है। परतु बात असी नहीं है। मौत किसी भी समय आकर भुनके जीवनीपको घुसा सकती है। कुछ गग रोज छुरीके गिकार होते ह। परतु अस तरह अपन प्राण गवाना और अह को छोडना अब ही चीज नहा है। जीश्वर प्राप्तिव सिजे स्वार्थ और अहवाको स्वेछासे और भीतरके प्रति निवेन्ति पवित्र यिज्ञानके रूपमें मिटा देना सोखना पडता है। चरखमें अन्धकारके सिजे स्थान नहा है। वह गरीबस गरीबस साथ सबका प्रतीक है। अिगलिअे यह चाहता है कि हम नम्र बनें और धमन्को पूरी तरह छोड दें।

जब अहभाव छूट जायगा तब हमारे बाह्य व्यवहारमें अुम परि वननकी परछाआ पडगी। वह हमार छांस छाट कापोंमें प्रग्नित होगा। हमारा जीवन-सबधी गारा दुष्टिबिन्दु बदन जायगा। हम जो कुछ करेंगे यह अपन दुः अहके सिजे नहीं परतु सबक सिजे करेंगे।

## खादीवृत्ति

खादीवृत्ति का यह मतलब है कि खादी पहननेके साथ जो अर्थ उगा हुआ है वह हमें मादूम होना चाहिये। हर बार जब हम प्रातः काग खादीके कपड बाहर जानको पहननेके रिज निकालें तब हमें याद रखना चाहिये कि यह काम हम दरिद्रनारायणके नाम पर और करोडा भूख भारतीयोकी सवाके खातिर कर रहे ह। अगर हममें खादीवृत्ति हो ता हम जीवनके हर क्षणमें अपन चारा ओर सादगी पदा कर लेंग। खादीवृत्ति का अर्थ है असोम धय क्वाकि जो गेग खादीकी अत्युत्तिका कुछ भी ज्ञान रखत ह अुहें मालूम ह कि कितना और जुलाहाको अपने घघमें कितना घोर परिश्रम करना पडता है। इसी तरह हमें भी स्वरायका तार कानते हुअ धीरज रखना होगा। खादीवृत्ति का अर्थ अपार श्रद्धा भी है। जैसे चरख पर कातनवालेको यह असीम श्रद्धा होती है कि वह जो सूत कातता है वह भले ही थोडा हो फिर भी कुछ मिश्रकर अितना हो जायगा जिससे भारतके प्रत्येक मानव प्राणीको कपडा दिया जा सके अुसी तरह हममें असीम श्रद्धा होनी चाहिये कि अतमें सत्य और अहिंसासे हमारे रास्तेकी सब बाधाओं दूर हो जायगी।

खादीवृत्ति का अर्थ है ससारके प्रत्येक मानव प्राणीके साथ अपनापन। अुसका अर्थ है प्रत्येक अुस वस्तुका सपूण त्याग जो हमारे मानव भाअियोको हानि पहुँचा सकती है। अगर हम अपन करोण देश वासियोमें यह वृत्ति पदा कर दें तो हमारा यह भारत देश कसा सुदूर बन जाय !

लेकिन म स्वीकार करता हू कि इस बातके पीछ अक गत है, इस वृत्तिकी अभिव्यक्तिकी जक ही गत है। रामनाम हमारे मनमें अक सजीव बज अिसलिय बन गया कि अुसके पीछ हमें रामनाम प्रदान

करनवालाकी अद्वितीय तपश्चर्या थी यही बात खादी-जादोलनकी भी है। खादीके पीछे खादाके समथवाकी तपश्चर्या होनी चाहिये। मेरे मनमें यह विचार हर क्षण बना रहता है कि जिन लोगोंने अपने जीवन खादीका अपण कर दिये ह वे अगर जीवनकी शुद्धताका सर्वत आग्रह नहीं रखें तो खानी पर हमारे देशवासा नाक भों सिकोड़ेंगे।

मग अिडिया २२-९-'२७

५५

### कताओ आत्मदर्शनका साधन

आप पूछ सकते ह कि चरखे द्वारा शीशर प्राप्ति कमे सम्भव है। जसा म आपका पहलू बता चुका ह चरखा कराना लागाने माय हमारा तादात्म्य कराता है। कराडपति लाग समझते ह कि समारमें राया अहूँ कोश्री भी चीज प्राप्त करा सकता है। परतु बात असा नहीं है। मौन किसी भी समय आकर अुनके जीवनशीपका वृणा सवजा है। कुछ गग रोन छुगीके विचार जाने ह। परतु जिस तरह अपन प्राण गवाना और अह को छोडना जेक ही चीज महा है। आकर प्राप्तिके शिअे म्वायें और अहकारको स्वच्छास और शीशरक प्रक्ति निवन्ति पवित्र बलिदानके रूपमें मिटा देना सीखना पन्ता है। चरखे अन्गावसे शिअे स्यात नहा है। वह गरावस गरावक मार न्ता प्रतीक है। शिमशिअे वह चाहता है कि हम नम्र बनें और नन्व पूरी तरह छोड दें।

जब अहभाव छूट जायगा तब हमार बाह्य अहकारके अन्व वनकी परछाआ पन्गी। वह हमार छान्नु छान्नु करेगा होगा। हमारा जीवन-मवधा सारा दृष्टिकोण अन्व अन्व कुछ करेगा वह अपन शत्रु अहके शिअे नन्व पन्तु नन्व अन्व करेगा

श्रीश्वरकी खोजके लिये वहा बाहर जानकी आवश्यकता नही। वह हमारे हृदयमें निवास करता है। परन्तु अगर हम वहा स्वाय या अहंकारको प्रस्थापित कर लेते ह तो हम वचारे जीश्वरको सिंहासन च्युत कर देते ह। मन यहा वचारा 'विगणण जानबूझकर अस्तेमात्र किया है। क्योंकि यद्यपि वह राजाआका राजा सबसे अूचा और सवगक्तिमान है फिर भी वह जसे हर यकिनकी सेवाके लिये अुसके सनेतमात्र पर हर दम तयार रहता है जिसन अपन आपको गूय बना लिया है और जो अत्यंत नम्र भावसे श्रीश्वरोमुख हो गया है। इसलिये आश्रय हम नम्रभाव रखकर असे अपन ही भीतर खोजें।

हरिजन १३-१ - ४६

५६

### वेदोंमें चरखा

श्रीधरके पंडित सातवेंकरजीन १९२२ म हिन्दीमें वेदमें चरखा' नामक एक पुस्तिका लिखी थी और जब म यरवडा जलमें आराम कर रहा था तब अहोने कृपा करके मुझ अुसकी एक प्रति भेजी थी। यहा ग्रथकार द्वारा अद्वैत अुग्वेद १० ५३ ६ का जिसे वातने और घुननेवाआका मूल मंत्र कहा जा सकता है स्वतंत्र अनुवाद दिया जाना है

'मृत वातकर और अस धमकदार रग दकर गाठोके बिना बन ला और इस प्रकार जुन मार्गकी रक्षा करो जो पानियान अकित किये ह और अच्छी तरह विचार करके आन वाली सतानाको दिव्य ज्योतिका भाग दिखाओ या (ग्रथकारके अनवादके अनुसार) दिव्य सतान अुत्पन्न करो। सधमुच कवि याका यही काम है।

अगर अनुवाद कुछ भी सही है—और लेखकने केवल अपना ही अनुवाद नही दिया है, बल्कि अपनी पुस्तिकामें ग्रिफियका अनुवाद

भी बुद्धत किया है—तो जिस मंत्रसे न केवल यह मावित होता है कि बदिक् काष्में कताओका अस्तित्व था परन्तु यह भी प्रमाणित होता है कि यह छाटसे छोटे और अचस असे स्त्री-गुरप दोनाका घधा था। यह अणु मार्गोंमें स जेव था जिहें नानियाने तयार किया था और गिनकी रक्षा करना बवियावा काम था। जब मने हमारे कवि सम्राटने सामने यन्के रूपमें नम्रभावसे चरखा पग किया था तब मुझे क्या मान्म था कि मरे पीछे सबसे प्राचीन समने जानवाले वेदका प्रमाण है? जा लोग जिस प्राचीन और पवित्र बुद्धोग तथा कलाका पुनरुद्धार करनेके काममें गे हूअ ह अणु सबसे म अिन मंत्रकी सिफा रिग करता हू। यनाय कताओ करते समय के अिस मंत्रका विचार पूवक गप करें। वे अुस अपने हृदयाम अकित करके रखें और अपनी आगेबूचमें निरागाअें और हार होन पर भी अपनी यद्धा अविचिन्तित रखें।

जिस पुस्तिकामें से अेक और सुदर मंत्र बुद्धत किये विना म नही रह सकता। वह भी अुवेद १० १३० १ में स है। अुमका अथ यह है

यन्में अेक सी अेक कतावार काम कर रहे ह और वह लाखी घागवे द्वारा पृथ्वीतल पर फला हुआ है। यहा वुजुग सरक्षक अुपस्थित हैं। वे अिन प्रक्रियाआकी घ्यानमे देख रह ह और कह रहे ह 'यहा धुनो वहा वह गुधारो।

जिस प्रकार हम देखते ह कि अुम प्राचीन काष्में कताओ और बुनाओकी अेक यन माना जाता था और वुजुग अुमकी सावधानीसे रक्षा करते थे। यद्यवारने प्रचुर प्रमाणामे सिद्ध किया है कि कताओ और बुनाओ स्त्री-गुरप दाना करते थे। वास्तवमें यह बुद्धोग अुतना ही ग्रावणिक था जितना खेती।

यग अिदिया २-६-'२७

## चरखा मडल

१ चरखा मडलके सदस्य प्रति बर्ष ६ गुण्टी सूत या प्रति मास ३२० तार देंग। तत यह है कि सूत मडलके निश्चित बिय हजे दिनमें और सामूहिक बतानीक त्रिअ निश्चित बिय हुअ स्थान पर बतानी जाय। सन्स्थाको तुनात्री द्वारा अपनी पूनिया आप बतानीक अहुँ बतानी होगा। असे सदस्य सहयोगी सदस्य बहे जायेंग।

२ सहयोगी सन्स्थ १ रुपया प्रवेग गुल्ब देगा और कन्म न १ के अनुसार बतानी हुअ सूतके ३२ तार प्रतिमास देगा। जब तब वह सूतकी मासिक मात्रा देता रहेगा तब तब वह सहयोगी सदस्य रहेगा।

३ महीनमें बब और बित्तन दिन सामूहिक बतानी हो अिसके लिय जरूरी नियम स्थानीय मण्डल खुद बना लेंग। जो दो मास तत निश्चित मात्रामें सूत नही दे सकेगा अुसका नाम सदस्य सूचीस बाट दिया जायगा। अगर वह फिर सदस्य बनना चाहेगा तो अुसे दुबारा प्रवेग गुल्ब देना होगा। जब ही सन्स्थमें कोओ तीसरा बार सदस्य नही बतानी सकेगा।

४ प्रत्येक महत्े ग्राम और छोट बस्वमें असे मडल खोल्नका प्रयत्न हाना चाहिय। प्रत्येक जिउ या प्रातके त्रिअ अब केन्द्रीय बाबालिय हो सक्ता है।

५ असा अिरादा है कि सारे देशमें प्रति मास जन राष्ट्रीय दिवस नियत किया जाय। अुस दिन सब मडलामें अक ही समय पर सामूहिक बतानी रनी जाय।

६ विविध स्थानामें मडलके साथ साथ बतानीक बग गरू बरनकी कोगिंग की जा रही है। अिन बगोंम सलात्री द्वारा

आटाओस गुरु वरखे तुनाओी पूनी बनाओी और कताओी तत्रकी विविध प्रक्रियाओं सिखाओी जायेंगी। प्रवण गुल्ब अब रपया हागा। चरखा-वगमें अिन प्रक्रियाओका सीग लनके त्रिअ अेक महीनके भीतर जा मडलमें सम्मिश्रित हाग अहें मडलमें भरली हानके त्रिअ अब रपया और नही देना पडेगा। अुहें सिफ ३२० तार सूत ही रना हागा।

७ यद्यपि प्रति माग वाता हुआ सूत मडलका हागा फिर भी सवपित वातनमाना अिस मूलसे खानी खरीद सवेगा। खानी खरीदनेमें सहयोगी सदस्याका प्राथमिकता दी जायगी।

वनु गायी

चरखा मडल भगी बस्तीमें चर खीन बनाओी-वगोंमें स निकल है। वाग असे मडल देगभरमें पना हो जाय। असा होनस पहले दिन्गीमें कओी मडल खुल जान चाहिय। खेल्बूद और मनोरजनके त्रिअ कओी कय है। राष्ट्रीय कायके त्रिअ अनक मडल क्या न हा?

हरिजन २७-१०-४६



क - कताओकी मजदूरी

५८

निश्चित और समान मजदूरीकी जरूरत

खादीको व्यवसायकी चीज बनानेके प्रयत्नमें चरखा सघ पर अब तक प्रचलित भावोका मुख्य प्रभाव रहा है। फल यह हुआ है कि किसी भी तरहकी मेहनतके लिये सब मजदूरियामें कताओकी मजदूरी खराबसे खराब रही है। मजदूरिया विविध प्रातमों विविध रही ह। जिसलिये खादीके भाव भी प्रात प्रातमें जग्य अलग रहे ह। जिहें सिफ मुनाफा ही करना है उसी सस्थाआके लिये तो यह ठीक है कि वे जिस तरहकी घातकी स्पर्धाको सहन करें और अत्साहित भी करें मगर जिन सस्थाआका अेकमात्र हेतु बरौने ओगोकी सेवा करना है वे उसी स्पर्धामें शरीक नही हा सकता। कोओ कारण नही कि बिहारकी अेक कतिनको अपनी गुजराती बहनसे कम मिले। बरशक भिन्न भिन्न प्रान्ताके भावामें फक है क्यकि रहन-सहनके मापदण्डोंमें फक है। परतु चरखा सघ वस्तुस्थितिको जसी वह है वसी ही कायम रखनेकी बात नही मान सकता। अगर वह अयायपूण है तो सघको उसे बदलना पडगा। जिसका भी कोओ कारण नहा कि अक घटकी कताओकी मजदूरी अक घटकी बुनाओसे कम हो। साधारण बुनाओसे कताओमें ज्यादा कारीगरी है। सादी बुनाओ तो निरी यानिक प्रक्रिया है। लेकिन सादीस सादी कताओमें भी हायकी कारीगरीकी जरूरत होती है। फिर भी जहा बुनकरको कमसे कम छह पाओ फी घटा मिलती ह वहा कतिनको अक पाओ ही मिलती है। पिजारेको भी ज्यादा मिलता

है यानी ग़मभग अतना ही जितना बुनकरको। जिस अवस्थाके जिसे अतिहासिक कारण ह। परंतु अतिहासिक हानेमे ही वे मायपूण नहीं हो जाने। सधवे जिसे अब समय आ गया है कि वह जितने प्रकारके परिस्थमका नियमन करता है उसो मूल्य स्थिर न भी कर सवे ता समान अवश्य कर दे। कभी जगह जिसमें बुनकरका जहा अक आना प्रति घटेस अधिक मिलता है वहा जुमे अपनी मजदूरीका स्तर घटानेको कहना पडगा। मभव है असा समय कभी न आय कि बुन कर स्वेच्छासे अस समीकरणकी प्रक्रियाके जिसे रजामद हो जाय। परंतु यदि सब प्रकारके उत्पादक श्रमके लिये समान मजदूरीका सिद्धांत नहीं है, तो सधको आदगके अधिकसे अधिक निवट पहुँचनकी कोशिस करनी ही चाहिय। अगर पूरी छलाग अवदम नहीं मारनी है ता कतिनाकी मजदूरीका घटभरवे अच्छे कामके जिसे अच्छ स्तर तक बढा कर हमें अस दिगामें गुरुजात अवश्य कर लेनी चाहिय।

मेरा योजनामें यह पल ही मान लिया गया है कि कतिनके जीवनसे कायवर्ताआना सजीव सपक रहगा। जो सस्या मजदूरीमें आगासे अधिक वृद्धि करेगा वह यह भी देखगी कि जो पसे रह बाट रहा है व किस तरह सब हाते ह। अगर मजदूरी गरावधोरी या व्याह गानी या दमरी दावतामें अडा दी जाय तो मुफ्तमें मजदूरी बनाना बकार होगा।

हरिजन १-७-५५

अखिल भारत ग्रामायोग सधने अपने प्रतिनिधिया (जेजेटा) और दूरर लोगको निम्नलिखित प्रस्तावली भजी है। जिन प्रस्तावे अत्तर केन्द्रीय कापालय बनमें अगली १ अगस्तम पट्टे पहुच जाने चाहिय

यह प्रस्ताव पग है कि अखिल भारत ग्रामायोग सधकी एत्रछायामें तमार होन या बेची जानेवाडी तमाम चीजके सबधमें देहाती कारीगरका असकी मेहनतका पर्याप्त पारिश्रमिक मिठे असा आग्रह हमें रगना चाहिय। अस हतुके लिसे मजदूरीका

कौआ समान व्यावहारिक मान स्थिर करना जरूरी होगा। यह मान समान मात्रावाते कामके लिए स्त्री-पुंस्य दोनोंके लिए अव ही होना चाहिये। अतःवा आधार आठ घटके लिए और निश्चित की हुआ कमसे कम अल्पत्ति पर रखा जा सकता है। यह मजदूरी खचमें जुड़गी और भाव अस्तीके अनुसार वायम होन चाहिये। आम तौर पर स्पर्धावात् बाजारमें हम निश्चित भाव नहीं ठहरा सकते मगर जा पन्थ स्पर्धामें नहीं अंतरत और जित्त मालका विशय गुणाके कारण ग्राहक चुनता और पसंद करता है अतःक भाव हम स्थिर कर सकते ह।

यह प्रश्नावली नीचे दिए मुद्दा पर आपकी राय जाननके लिए भेजी जा रही है

१ क्या आप अिसे व्यावहारिक समझत ह कि कमसे कम दैनिक मजदूरी स्थिर कर दी जाय और भाव स्थिर करके मजदूरके लिए अुस मजदूरीकी गारंटी कर दी जाय ?

२ हम मजदूरीका अपना जित्तमान निश्चित कर लें और अुत्तरोत्तर जुमकी ओर वृत्त जाय या गृहमें जब अल्पतम दर निश्चित करें और असे धीरे धीरे ऊंची करत जाय ?

३ मजदूरीके अिस मानका निणय किस आधार पर होना चाहिये ? क्या आप फिलहाल सिर्फ भोजनका विचार करके ही काअी गुजार वायम मजदूरी मुझा सकते ह क्याकि कपडा तो यकिनगत प्रयत्नसे बनना चाहिये ? आधा आना भी घटा बहत कम तो नहीं होगा ?

चरणा सघ और ग्रामोद्याग सघ जसी परापवारी सस्थाओं सस्तसे सस्ता खरीदन और महंगसे महंगा वचनके व्यापारिक सिद्धांतका अनुसरण नहीं कर सकती। अवश्य ही चरणा सघन सस्तसे सस्ता खरीदनकी वाणिज्य की है। ग्रामोद्याग सघको सादीके विकासके अपन अनुभवका लाभ दनकी अिच्छासे मन धमके अंतरम काम करनवाल कारीगरका मिलनवांगी मजदूरीके विषयमें चर्चा आरभ की यह प्रश्नावली अुसीका परिणाम है।

अस बातका पता तो पहले ही लग चुका है कि प्रतिनिधियामें कमसे कम कीमत पर आवश्यक पन्थ तयार करनी प्रवृत्ति है। वारीगरकी बमाजी पर कुरहाडी न चग्यी जाय तो और कहा चलाओ जाय ? अिमलिअ अगर कम से कम दर निश्चित की गयी ता देहाती वागीगरका नुवसान पहुचनेका पूरा खतरा है यद्यपि अुमीके खातिर ग्रामोद्याग सघका जम हुआ है।

गरीब धयगाली ग्रामीणाका गोपण हमन बहुत दिन तक किया। अब ग्रामोद्याग सघ परोपकारकी आडमें अिम गोपणको तीव्र न करे। अुमका अुद्दय मस्तस सम्ते न्हायी पन्थ तयार करना नहा है अुमका अुद्दय है जीन गयक मजदूरी पर बकार ग्रामीणाका काम दना।

कुछ गोगाने यह दलील दी है कि यदि बिना भी कारणमे देहातमें बनी वस्तुओका मूल्य बढाया गया तो असमें वह अुद्दय विफल हो जायगा जिसके अिधे ग्रामोद्याग सघ स्थापित किया गया है कयाकि यह कहा जाता है कि अगर भाव बहुत अूच हुआ तो देहाती वस्तुओको वाओ नही खरीन्गा। मगर किमी वस्तुकी कीमत बहुत ज्यान्ग मानी ही कया जाय यदि वह बनानेवाल्को सिफ गुजरके गयक मजदूरी न्ती है ? ग्राहकोका यह समझाना पडगा कि लागाकी कमी बुरी हात्त है। अगर हमें कराना अमिकाके प्रति गाय करना है तो हमें अुनका हक देना ही चाहिये हमें अुनसे असी मजदूरी देनी चाहिये जिसमे अुनका गुजर हा सके हमें अुनकी लाचारीम फायन्ग अुठाकर अमी मजदूरी नही देनी चाहिये जिसमे अब जून भी अुन्हें पूरा खानको न मिन्।

यह बिन्बुन् स्पष्ट है कि चग्गामघका मिलके मालम स्घा करनसे अिनकार कर न्ना चाहिये। जिस वाजीमें हम जानत ह कि हमें हारना ही पडेगा अुगमें हमें भाग नहा लना चाहिये। स्पये पनकी दृष्टिम बडे बड व्यापारिक सघ, वे देशी हा या बिन्नी मनुष्यके हाथकी बनी हुआ चीजाको भावमें हमेंगा ही हरा सवन ह। चग्गामघ ता झूठे और अमानुषिक अयगाम्त्रके स्थान पर सच्चा और

मानव अयोग्यता चलाता चाहता है। मानव प्राणियाका घम हत्यारा स्पर्धा नहीं जीवनदायी सहयोग है। सहृदयताकी अपेक्षा करना यह मूल जाना है कि मनुष्यमें भावना है। अगर हमें श्रीश्वरन स्वयं अपना प्रतिरूप बनाया है तो हम चंद गंगाकी भगौ नही बहताकी भलाभी भी नही परंतु सबकी भलाभी बनाने बनाय गये ह।

ग्रामाद्योग सघ जसी परोपकारी सस्था जिस प्रश्नावशमें निहित समस्याआका विचार करनेसे बच नहीं सकती। अगर सच्चा ह् अव्यावहारिक शिक्षाभी देता है तो उसे व्यावहारिक बनानेवा प्रयत्न करना असका धम है। सत्य सदा व्यावहारिक हाता है। जिस तरह सोचा जाय ता मपके कार्यक्रमको प्रौढ शिक्षा कहना ठीक ही होगा।

और अगर सघको अपने अधीन काम करनेवाले कारीगरको गुजरके गायक मजदूरी दिलानी है तो उसे जिस बातका भी पता लगाना चाहिय कि असका कारीगर अपनी गहस्थीकी किस मदमें क्या खच करता है। उसे देखना चाहिय कि उसके दिय हुअे अक-अक पसेका क्या अपुयाग हो रहा है। सबसे कठिन प्रश्न तो कमसे कम या जीन लायक मजदूरीका प्रमाण तय करना है। मन सुझाया है कि आठ घण्टेका कठोर परिश्रम करके अच्छी योग्यतावांग कारीगर अमक माल जितनी मात्रामें तयार करता है उसका विचार करके आठ घण्टेके परिश्रम पर आठ आना मजदूरी दी जाय। आठ आन तो जीवनकी आवश्यकताआकी अमुक मात्रा बतानेवाला प्रतीकमात्र है। अगर पाच आदमियाके परिवारमें दो पूरा काम करनेवाले ह तो व प्रस्तावित दरसे ३० रुपये मासिक कमायेंगे। जिसमें कोई छुट्टी या बीमारीका समय शामिल नहीं है। पाच खानेवालाके लिए तीस रुपये मासिक कोई बहुत बड़ी आमदनी नहीं है। यहां जिस पद्धतिका प्रस्ताव किया गया है उसमें अवश्य ही स्त्री-पुरष या अमुकका भदभाव नहीं रखा गया है। परंतु प्रत्येक निर्णायक अपन निजी अनुभवके आधार पर अमुक प्रश्नका जवाब दे।

जा यात श्रामोद्योग सघन कार्यकाल काम करनेवाले कारीगराके लिये सही है वह चरणा सघन द्वारा काम करनेवालाके लिये ना सुतनी ही सही है। फव जितना ही है कि श्रामोद्योग सघनो साफ पट्टी पर लिखना है — बुसका काम गुरु ही हा रहा है। क्विन चरणा सघनो यदि बुसे सबसे लिये कमम कम समान मजदूरी जारी करी है तो पद्वह सघनो पुरानी परम्पराको मिटाना हागा। बहुमूल्य कर्त्तनोकी मदद करनमें बुम बुनकरामे जो कर्त्तनोका सम्बन्धो दसवा भाग ह पिजारासे ओटनवालाके और दूसरे गेगासे भी निवटना हागा। प्रत्यक् कर्त्तनी मजदूरी भिन्न है। बुनकराकी कमाओ और कर्त्तनोकी कमाओका अंतर जितना बरा है कि बुसमें समानताकी गुजाओ दिखाओ नही देता। जहा कर्त्तनोका दो पाओ प्रति घटे मिन्ती ह वहा जुलाहो केसे कम अक आना और बहुधा दो जान मिल जान ह। कर्त्तनोको दोसे बारह पाओ तक ल जाना बहुत बही समस्या है साम तौर पर जम हम यह याद रखें कि बुननी सम्बन्ध लगभग डढ़ पाओ है।

परंतु सघनो अपने प्रति गणना जो विश्वास है बुमका पात्र बनना हा ता बुसे सहा बान करनेका हिम्मत पदा करनी हागा। कठि नाजिया सामना करनेको हीतो ह न कि हमें कायर बनानेका। हम विश्वास रखना हागा कि जो गण दरिद्रनारायणक प्रसवे खातिर खादी सरील्ल है व पहलेम ज्याण कामत अक कर देंग। अगर यह विश्वास गणत है तो बिनीमें किन्ती ही बही कमी हा जाय ता भी बुमका सामना हमें करना हागा। जिहें राष्ट्रीय प्रेम है वे बुमे किमा भी नाव खरील्लेग अगर बुहें मातूम हा कि सौमें से पचानवे रुपये दरिद्रनारायणक जबमें बाने ह।

यह अच्छा हा है कि हम कर्त्तनोको बाधा मजदूरी दकर अपनी मुल मुषार लें। वह आर आन राज हा या कम? वह सघनो कुछ भी हा कर्त्तनम प्रति घट वित्तन सूतकी आगा रखी जाय जिसत वह निश्चित मजदूरी पानकी हक्कार हा जाय? यही प्रश्न आटनवाला

कठिनाभिया पर तो विजय प्राप्त करनी ही होगी। क्या मैं नहीं जानता कि काफी लम्बे समय तक यह दारण क्या करनी रहनी — कुछ लोग कहेंगे कि हम कत्तिनाको अपना मुद्दे के लिए बातचीत की राजी नहीं कर सकते कुछ कहेंगे कि हम उनमें अपनी आवश्यकता नुसार काम नहीं करा सकते।

मगर मान लीजिये कि वे हमारे नियमांक पालन करती हैं और हम उन्हें पहले से अच्छे मूल्य और तुरंत दे दें तो वे अपने आप अधिक काम और दुगुनीसे ज्यादा मजदूरी कर देंगी।

यह तो वे अपने आप करेंगी, परन्तु जिसमें आप क्या पुण्य करेंगे? यह तो स्पष्ट ही है कि जितनी अधिक उत्पादित अतनी ही अधिक कमायी जायेगी। परन्तु जिस 'यायसे हमने उन्हें बचिन रखा है' अमुके लिए हम क्या करन जा रहे हैं?'

गांधीजीन अपसंहार करत हुआ कहा नहीं हमें भूठ जाना पडगा कि खादीकी मिठके कपडसे स्पर्धा है। मिलका कपडा मिलका कपडा है और खादी खादी है। मिलके कपडका उत्पादन सदा असे सस्ता बनान पर शक्ति केन्द्रित करगा हमें 'याय और 'यायपूण मजदूरी पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी होगी। अिसलिए दोनोंकी कोशिश करना नहीं हो सकती। रही बात 'यावहारिक कठिनाभियोकी। सो हम अपना 'यवस्था-सूच कम कर दें बिनापन बढ़ कर दें और खानगी उत्पादकाका मात्र न लें। अममें उन 'योगाती परीक्षा होनवागी है जो खादीके लिये प्रतिज्ञाबद्ध है। वे या तो खादी खुद तयार करें या अपने भांगिया और बहनाको गजरक लायक मजदूरीके दाम चकायें। यह तमाम खादी पहननवालाकी जात्मशुद्धिका सवाठ है। हम यह न भूठ जाय कि हमारा अदृश्य दरिद्रनारायणकी सेवा करना है। कठिनाभिया हो सकती है मगर हम उन्हें धीरे धीरे हल कर दें।

आम तौर पर अिस बातमें सहमति मान्य हुआ कि जहा कही संभव हो यह प्रयोग शुरू कर दिया जाय और कत्तिनाके लिए मजदूरी भिन्न भिन्न भल ही है मगर वह बनी हुयी होनी चाहिये।

## शुरूआत कैसे करें ?

खातीके कारीगराके अ मजदूरीकी दर स्थिर कर दी जाय या न्यूनतम मजदूरी तय कर दी जाय मगर काशी परिवर्तन निश्चित प्रस्ताव होता है। जेक विरोधी मतक मिया अब तक जा बहुतसी रायें मिली ह उनमें स किसीन भी बढी हुआ दर निश्चित करनके मर प्रस्तावका विरोध नहा किया है। आठ आनेवाले प्रस्तावका अभी तक कोजी समयक नही मिया है। कुछ लेखक आठ जानवाल प्रस्तावको खादीके अ घातक समझत ह। वे कहते ह नि अूस मूरतमें खातीकी कीमत अितनी अधिक बू जायगी कि अूसक बहुत थोड गाहक रह जायेंगे। कुछ भी हो किसी भी अ-उपनीय परिवर्तनमें कुछ गते तो पूरी करती ही हागी। अिमलअ समयस पहू ही चत जाना और जहा भी सम्भव हो नीचे लिखा वाता पर तुरत अमल शुरू कर दना बुद्धिमानी होगी

१ वायकर्ताआको कपास चुननसे गगाकर दुनाथी तककी सब प्रक्रियाअमें पारगत हो जाना चाहिय ताकि व दूसराका सिखा सकें।

२ मगठन करनवालाको अपने अपन हके या अिलाकेमें तमाम पिजारा बत्तिना जुगहा आदिनी मूची तपा करना चाहिये।

३ अहें मालूम हाना चाहिये कि अुनवी कत्तिन कौनसी रथी काममें लेता ह और अुसमे जितन नबरका मूल बन सकता है अुसमे अुचे नबरका न बानन लिया जाय।

४ कत्तिना और दूसरे कारीगराको चनाग्रनी द दना चाहिये कि अगर व अपने अपने घरामें खाती अिमनमाउ नही करेंगे ता अुहें काशी काम नही मिलगा।

५ जिन कारीगरास यह चेतावनी दी जाय अतक अिअ असी सुविधाअें कर ना जाय जिनसे वे अपन परिधमके बालमें हमगा खाती न सकें।



६ मूतकी अथ अथ गुदी जो मिठ असावी समानता जीर बनवी जाच की जाय और जमे कम सिक्की राटी नही ली जाती वसे ही असमान और कच्चा मूत भी न गिया जाय ।

७ आम तौर पर प्रत्येक कस्तिनवा मूत अग्न जमा किया जाय और जब अथ धानके लायक हा जाय तब अलग ही बना जाय । जिमने खादीके टिकाभूपन असावी बनावट नया असाके स्वरूपमें सर्वांगीण सुधार निश्चित हो जायेंग ।

८ अिस प्रकार तयार हुआ सब धाना पर कागज चिपका होना चाहिय जिसमें ओटनवाला पीजनवाला वातनेवाला और वृननशाशके नाम दिय जाय जहा व सब अग्न अलग यक्ति हा ।

९ जहा कारीगर गहस्या हा वहा अुहें सारी प्रक्रियाओं अपन ही घरामें करनके अिअ रजामद और प्रोत्साहित किया जाय । जब मज दूरी समान या लगभग समान हो जायगी तब यह काम आसान होगा ।

१० जा परिवार कायकर्ताओके अमरमें जायें अुनके जीवन जीर आय-धयका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाय और जो अपनी कमाओ विवकपूर्वक खच करत है अहें मदद दी जाय ।

११ सध जिन कारीगराकी सेवा करता है अुनकी सख्याको ग्राहकोकी कमीके कारण कभी घटाना जरूरत हो जाय तो पहल अहें अग्न किया जाय जिनके पास आजीविकाके दूसर साधन हा । मुझे मालूम हुआ है कि आजकल कभी प्रान्नामें वातनवाली वहनें व ही नही ह जो सबसे ज्यादा मोहताज ह वकि मितव्ययी स्त्रिया भी ह जिहें अधिक अच्छ भोजनके या कज चकानके बजाय अपन अिअ कुछ छोटी छोटी चीजें खरीदनके योग्यता रुपया चाहिय ।

१२ हर जगह कायकर्ताओको धनकिया और चरखाकी ध्यान पूर्वक परीक्षा करनी होगी । आम तौर पर अुहें दखना होगा कि तकुअ कसे है और व कसे घूमत ह । कारण मजदूरीमें प्रस्तावित वडि अपन आप हरगिज नही हो जायगा । वह कुछ तो अतने ही समयमें पहलमे ज्यादा जीर वहनर माल तयार करनसे मिलगी और कुछ अपन

आप हागा। अगर खादीकी माग न बनी ता किसी भी कातनवालका जा अपने कामके पगमें सुधार नहा करगा वृद्धि नही मित्रगा।

१२. पिछ्छ परम यह निष्कष निक्त्ता है कि पहली बार तो सघ आमन गतों पर नये यत्र या पुजें मुहया करेगा। कभी जगह माल और तबुआमें अपन आप अधिक परिवतन हान लगेंगे और कपडा बढिया निक्त्ने लगगा।

य सब गतें तभी पूरी हा सक्ती ह जत्र कायकर्ता अच्छी तरह समझ लें कि अुनके सामने अेक बन्ग म्प है और वे आध भूख या पूरा भाजन न पानवाके कारीगरा और मजदूरके अेक बिगाल परिवारक ही नम्र मल्म्य ह।

हरिजन २७-७-३५

६०

## अूचे भाव

यह खालीके प्रेमिया दरिद्रनारायणक भक्ता का चनावनी दनके त्रिअ है कि खालीके भाव जरूर अूच जान चाहिय खालीकायक्ता आमें अधिक बला और कारीगरीका विनाम होना ही चाहिय और खालीक अत्यान्त और बिनरणमे सघ खनवाल सब वर्गमें यामकी अधिन भावना जाप्रत की जाना चाहिय। त्रित्री भडारान प्रमग भावाकी कमी खिनामें य ही मानी है। मुय वह समय यात् है जब मने बहन माती खालीका पहला धान अर म्पय मजग अूपर बचा था। बमा माती खालीके जात्र दा जाने नहा मिर्गे। वह खाली भगरा पर रचा नग जात। बीमताकी यह कमी खालीक हू विभागमें प्रमग कायक्षमता गनम दुना है त्रिकिन त्रिमकी ज्यात्तर कामन कतिनाका चुरानी पडा है। फिर भी बलिा दरिद्रनारायणका प्रयत्न मृति है कयार्कि सार भारतमें वत् कमेमे कम मजदूरी पानवाला मजदूर है। यह अच्छा हुआ कि खग्यामघन खवारीके पुरान बीमागक त्रिअे अेक पात्री प्रति घत् जमी थाही मजदूरी पर भी

अधिनसे अधिक् व्यापक् पमान पर काम न्ना साधन जगया । परन्तु अस सौपा हुआ काम पूरा करना हा ता कतिनके लिअ कमसे कम गुजारके न्यक् मजदूरी जगानी पडगी । आगसे चरखा सघकी रिपोर्टमें यह वणन नही हाना चाहिय कि आगचना-नाल्में सागीकी कीमत कितनी कम हुआ है परन्तु अस यह दिग्गानमें गव होना चाहिय कि कताओकी मजदूरीमें कितनी वडि हुआ है । अस तब तन सताप नही हाना चाहिय मुक्त तो नही हो सकता जब तक कि कतिनकी मजदूरी फी घट जुगहके बराबर न हा जाय । खरीदार जनता या न रग कि वह अिस ट्रस्टकी बनाम सरक्षक है और कतिनें असकी सरक्षित ह । जब बार यह सबष अच्छी तरफ समन गिया जाय तो सादीकी नित-नयी प्रगति होनमें बोधी कनिनाओ नही होनी चाहिय । काग प्रत्यक् सादीप्रमी अपना धम जान ल और खादी कायकर्ताओंमें जो अध्रद्धातु यह समझत ह कि जनता खादीके लिअ जूची कीमत कभी अदा नही करगी अुनके डरको झूठा साबित कर द । । ।

हरिजन १ -८-३५

६१

### खानगी अुत्पादक सावधान रहें

जब कि खानगी निर्माणमें काम करनवाली कतिना जीर दूसर ढोगाको काफी मजदूरी दनकी नओ नीति बन रही है तब खानगीके प्रमाणित खानगी अुत्पादकको सवाल गभीर विचारके लिअ मामन आता है । खानगीकी जब बडी मात्राके लिअ व जिम्मदार ह । सघका मजदूरी कमानवात्राके प्रति जितना धम है अुतना ही अिन ढागाके प्रति भी है । अन्के साथ किय गय करार वाजिब तौर पर पूर किय जान चाहिय । परन्तु वह कतय यहा पूरा हा जाता है । चरखा सघका सारा सगठन कतिनाके लिअ अब सरक्षकके रूपमें ह या चगया जाना चाहिय और प्रमग जुनकी हालन सुधारी जानी चाहिय ।

खानगी अत्यादक साधना मुन्धत कतिनाक गमक त्रि प्रमाणपत्र त्रि जाते ह । अहुँ अपना मुनाफा कतिनागी सेवा करव गना चाहिये न कि यतकी कमायी छीन कर जगा कि हमें मान्य हुआ है कि व और दूसर आग बह रहे ह ।

परन्तु यदि वे सधक माघे प्रतिनिधियोंकी पक्षमें अपना प्रिण लें ता अनगो त्रिये गये प्रमाणपत्र वापस लनका जरूरत नही है । मगर धमा करनके त्रि अहुँ अपन कामका तरीका त्रि कु वण लेना पडगा । अहुँ अपना मुनाफा घटाकर मनाप करना पडगा अत्रे हानि भी सहना पड सकती है । सधका गतके अनमार अहुँ जिन कतिना और दूसर श्रमजीवियोंकी वे सेवा कर रहे ह उनकी गूधिया रचना हागा । अहुँ मजदूरी चुकानेका मबूत पग करना और अखक मबधमें आवडे अमा करना और मुहया करना हागा । यह अखक लिज अदून हा भारम्बर हा मक्ता है । खानगी कामन बनका सभावनामें जा खतरा है वह अिनना बडा हा मक्ता है जिन वे बरणात न कर सकें । सधकी गते अत्यादकके त्रि अहुँ अघिन बठार हा मजना ह कषाति नि मन्ह व जा मुनाफा कर रहे ह अुसके त्रि अहुँ बडी महनत करनी पन्ती है । जिनका यह खमा हा अहुँ अनामे अपना खानीका व्यवसाय बन् करना गु कर दना चाहिये । जा खानीका काम जारी रखना चाहत हा अहुँ सधके प्रतिनिधियोंमें सधक साधना चाहिये । अहुँ अितना जरूर जान गना चाहिये कि गतके पात्रमें जरामा भा गफणत हानम प्रमाणपत्र रहे कर त्रिये जायेंगे । सधक माघ अुतरा करार नामा जारी रहनेकी आवश्यक गत यह है कि हानि हा या न हा बडाम बडी प्रामाणिकता रखी जायगी । जिा त्रि अन्ही लागता काम जारी रखना चाहिये जा खानीक प्रमी और दखिनारायणक भवत हा और अखक गानिर नुबमानका परवाह न करें । जा स्वय अपन शरीर और घरक त्रि खानी काममें न गने हा अहुँ करारनामके जारी रहनेकी कामा आगा नहा रखना चाहिये ।

## यूनतम मजदूरी

जसा कि अिस नामस जाहिर होता है हमारु अुद्दय कम-से-कम मजदूरी पानवाल मजदूरा अर्यात कतिनाके प्रतिनिधि बनना यानी अनकी हात्त सुधारना है। अिमलिअ हमें अनुकी स्थितिमें प्रगतिगीठ सुधार लिखाना पडगा। आपको मरा सत्रसे प्रारभिक सूत्र याद रखना हागा जा आज भी अुतना ही गगू हाता है जितना जुम वक्त था। वह मूत्र है हरअक परमें अक चरसा और प्रत्यक गावमें अक करघा या करघ। यह आत्म निभर खानीकी कल्पना है। और अगर म आपको अपनस सहमत कर सकू तो म चाहूगा कि आप कतिनाकी सवा अनुकी खादी बचकर नया बलि जुनम अपन ही अपयोगके लिअ खादी तयार कराकर कीजिय। यह बात नहा है कि अनुमें से कुछ कतिनों फालतू खानी नही बनायेंगा। परतु यह भाग पर ही निभर हागा। गहरके जो लोग हमारी खानी चाहेंग जुनसे हम जरूर आडर लेंग और वह खानी हम अनम बनवायेंग जिन्हें अपना दनिक आवश्यकताके अनसार प्रति घट मजदूरी मिती हो। अिसका यह नतीजा हो सकता है कि खादीके मौजूग भावमें कुछ समयके लिअ वृद्धि हो जाय। लकिन हम अब कोगाकी दरिद्रताका शोषण नही करेंग। मन यह कभी नहा कहा कि यह गापण जान-बूझकर किया गया है। पिछल पन्द्रह वषमें हमन जा कुछ किया है असकी पूरी जिम्मदारी म लता हू और जो कुछ हमन किया है वह अिवाय था। परतु अब हमें नया रास्ता अस्लियार करना पडगा। हमन सदियो तक जनसाधारणकी अुपक्षा की है और जहा हमन अनुस परिश्रम करानकी अिक्वार अपन ही हाथमें ल लनकी धृष्टता की है बहा यह विचार तक हमार मनमें कभी नहा आया कि अुहें अपनी मजदूरी निश्चित करनका हक है और जस रुपया हमारी पूजी है वस ही उम अनुकी पूजी है। अब समय आ गया है कि हम अनकी

आवश्यकताओं, अन्के काम और अवकाशके घण्टा और अन्क रहन सहनके स्तरकी दृष्टिम सोचन लगे।

हरिजन १४-९-३५

श्री गांधीजी चौधरीने बड़ी कटकमें लिखन हुआ ये तीन प्रश्न भजे ह

१ आत्म निर्भर खालम बची हुआ तादाका क्या भावना चाहिये ?

२ अगर किमा ग्रामवासीके पाम रही है मगर अमक परिवारकी आवश्यकताओं पूरी करनको कतिने न हा और वह अपने खुदके परिवारकी जरूरताके लिअ अपन गावके या पढामक गावके लोगाम अपना रही बतवाना चाहता हा तो मजदूरा क्या हानी चाहिये ? क्या व्यापारिक खातीके लिअ प्रस्तावित गुजरक गयक मजदूरी यहा गभू हागा ? या वह आपसमें तय कर लनका छोटे दो जायगी ?

३ जब कतिनक पाम अुसकी अपनी रही न हा और वह आजीविकाके लिअ नरक मजदूरी पर न कातकर रहीके लिअे कातनी हो और वह भी अम वरन तब जब तब वह अपना जम्बरतेके कपडेके लिअे काफी न बमा ल ता अुमकी मजदूरा क्या होना चाहिये ?

चरणानुषक माफत आनवागे बचन खातीका भाव बही हा गरता है जा प्रानमें और किमी खातीका हागा। अब चकि अहाराकी जम्बरतक अन्का खातीका अधिकांग वित्री अहा प्रान्तामें गामिन रहगा जग वह घनाआ जायगी अिमलिअ भिन्न भिन्न प्रान्ताके भावामें गायक आजम अधिक फक रहगा। परन्तु बचन खाती और दूमरी दिगी खातीमें कोसी भू नना न गरता। अमलमें गारी खाता बचन खाती ही होगी क्याकि जो पूरा नरह खातीघारा नहा हागा जम किमी भी व्यक्तिकी खातीका चरणानुष या अमकी गायामें स्वारा नही करेगा। अवय हा परिवतन-कालमें अिम नियमका ढोला रुपना पर गरता है।

पहले अत्तरपी तरह ही अगमें गव नहा कि जहां तक मपका सपथ है अुगे ता सभी कतिनासा अकगी मजदूरी दनी पडगी। परंतु कतिनासे अपन बीचक लन-दनका नियंत्रण सध नहा करगा। अुहें अपन परस्परक सम्बन्ध खल ठीक कर लन दना चाहिय। दूसरी कात्री भी नीति असफल रहगी।

तीसर माम्में भी पहल दावा सिद्धांत ही गणू हाना है। याद रखनकी बात यह है कि सध गुजारके गयक यूनतम मजदूरी दनके लिअे वही जिम्मदार रहगा जहा जसवा खुदका सम्बन्ध जाता हागा। अगर असकी नीति ठोकप्रिय और असिन्जिज सामाय हा जाती है ता जिसमें सन्ह नहा कि कम मजदूरी पर काम कराना किमीके लिअ भी असभव नही तो कठिन जरूर हो जायगा। और चरणा-सध तथा ग्रामोद्योग-सधमें सहयोग अितना प्रबल हा सकता है कि और सब विभागाता मापदण्ड तुरत अूचा होकर बराबरी पर जा जाय। जिस प्रयत्नकी सफलताका आधार खरीदार जनताकी तरफसे हात्कि अुत्तर मिलन पर रहेगा। अगर वे अच्छी तरह समझ लें कि जिन गरीब ग्रामीणा पर अुनका अस्तित्व निभर करता है अनका व जब घोषण नही कर सकेंग ता बेकारी और आधी भूखकी समस्या अपन आप हल हो जायगी।

हरिजन ५-१ - ३५

सधको जनताकी तरफसे भाग कम हो जानके डरसे कतिनाके साथ ग्याय करनसे विमुख नही होना चाहिय। उकिन अगर जरूरत हो तो जिन कतिनाको अपन खानके लिअ कताअीक सहारकी जरूरत नही है अुनका नाम अपनी सूचीसे निकाठ दना पन्गा। हजारा नही ता सकडा कतिनें जसी ह जो जन खरीदनक लिअे नही परंतु तम्बाकू, चूडिया या असी ही अय चीजें खरीदनके लिअ कुछ पसे प्राप्त करनक खातिर कातनी ह। अगर दबाव हो तो अुहें कहा जा सकता है कि जिन कतिनाका अन्नके लिअ पसेकी जरूरत है अुनके साथ व स्पर्धा न करें। बहुत अधिक कतिनें असी हा ह।

असलिये कायकताआवे सामन ता सघकी योजनावा दृष्टिम गरजम कतिनाका तरगा करनमा प्रान है। अिम यास्यामें वे छोट छोट किमान धामि नही हाग जो मजदूरास काम लत ह जिहें काम तीर पर भोजन-वस्त्रका अभाव नही हाता और जो अन्न लगीदनक अिअ अपनी जमीनें या दूसरी सम्पत्ति बचनको मजदूर नही हात। परन्तु सघ पूरा जोर उगाकर बताओ या कनाओम सम्बध रखनेवाला कोओ दूसरा काम दनवा भरमक वाणिज्य करगा और विश्वास लिलापगा कि हरअक घघमें ८ घट राजव हिमावन कमसे कम गुजारके गयव मजदूरी अुन सब भूमिहान और सम्पत्तिहीन श्रमि काको अवश्य मिल जायगी जा चरखा-सघ या ग्रामाद्याग-सघ द्वारा लियेय हुआ कामवे बिना आध या पूरे भूये रहेंग। दूसरी तरफ अिम सघावा अुन लोगासे काओ सराकार न होगा जा थीर किना तरहम गुजर कर लत ह। अिसमें सघाकी अिच्छाका अभाव नहा हागा परन्तु सामप्यका ही अभाव हागा। अगर य मस्याअें अपने अुत्स्यमें पूरो तरह सफ हा जाय ता अुनका हतु ही पूरा उहा हागा बल्कि अप्रत्यक्ष रूपस व जीर सज माहताजाका भी मदद देगा और अुनके निनात निराशामय जीवनका अ-व-आशामय जीवनमें व-डा-रेंगे।

हरिजन ५-१ - ३५

चरखा-सघके मडकी अब सभा अपनी खादी-नीतिमें नया लिया अपनातक लिये गापाओक प्रस्ताव पर गभार विचार करनके लिये हुआ। जसा कि जब सदस्या कहा पिछते पद्रह वषमें अुहान जितना चठरामें भाग लिया था अुन मवमें यह बढत गभीर थी। जसा कि सघ सन्स्थाने मजूर विद्या खादी-अत्यतिमें तमाम श्रमजीविघाने लिये गुजारके लायक मजदूरीका प्रस्ताव मोधा-नाग था और अुनका आधार नूत सिद्धान्त निविदा था। परन्तु अुनमें स कुछका अुम अमलमें लाना अत्यन्त जटिल प्रान मालूम हाता था। नया लियामें महाराष्ट्रमें पहलमें ही अम होन लगा था और कुछ लोग कहत थे कि अुस प्रातक अनुभवका प्रतीता की जाय और अुमन लाने अुठाया



अब अहा असे छोड दिया है जोर श्री गवरगा ववरका जो अुतर मिल है अतमें से अब अुतर बाठियावाड गाताके मत्रीरी आरम जिस बागयवा आया है कि बुहें नआ नीति पर काभी आलाचना नहा करनी है और न कोभी राय जाहिर करनी है। क्याकि यहाके केद्रमें सारी स्वावग्म्बी गानी बनती है।

अिस चर्चाका परिणाम यह हुआ कि नीच गिया प्रस्ताव सबसम्मतिसे स्वीकार किया गया

जिस परिपत्रकी राय है कि अिस समय कनाडीकी जा मजदूरी दो जानी है वह काफी नहीं है और अिसअिअे परिपत्र निश्चय करती है कि असे बढाया जाय और कोभी अचित स्तर तय किया जाय जिससे कतिनाको जाठ घन्के अछ कामके आधार पर निश्चित की गयी यनतम मजदूरी मिल सके। वह अितनी जरूर हो जिससे २० गज बापिन्के हिमावसे कपडा और आहारकी कमसे कम आवश्यकताके अनुमार गास्त्रीय ढगसे निश्चित किये हुए पमाने पर आजीविका प्राप्त हो सके। जैसे जस स्थिति अनकू बनती जाय सभी सवधित लोगको मजदूरीका दरें कमग बढानी चाहिय ताकि व जैसे स्तर पर पहुच जाय जिससे कातनवाले परिवारका उसके काम करनवाल सदस्याकी कनाडीसे अच्छा तरन गुजारा हा सक।

अिम प्रस्तावक आधारभूत सिद्धांत पर अमल करनमें चरखा सघके कायकर्ताआका मागदशन करनके लिज सघकी तमाम गाखाआ और असेसे सबध रखनवाली या जोर किसी तरह अुमके अधीन काम करनवाली सस्थाआको निम्न लिखित बाताको अम समय तक सघकी निश्चित नीति मानना चाहिय जब तक कि परिपद अधिक अनुभवक प्रकारमें असे बदल न द।

१ सघका मुख्य काय यह है कि कपडकी जरूरताक वारेमें भारतके प्रत्यक घरको खादीके द्वारा स्वावलम्बी बना दिया जाय और खापीके कारीगरमें सबसे कम मजदूरी पानवाली कतिना तथा कपास अुगानसे लगाकर खादीकी बुनाजी तककी भिन्न भिन्न प्रक्रियाअमें लग हुए अय लागाका कयाणभाधन किया जाय।

२ जिसके लिये यह परम आवश्यक है कि जो खादी-उत्पत्तिका काम करें व भले ही कारीगर हा विप्रेता हा या अय रूपमें खादी उत्पत्तिका काम करते हा और किसी प्रकारका कपडा काममें न लेकर अपनी कपडेकी जरूरतें खादीसे ही पूरी करें।

तमाम गाखाओं और सम्बद्ध सस्थाओं इस योजनाका जिस तरह कार्यान्वित करें कि कुछ भी नक्सान न रह अर्थात् व अपनी उत्पत्तिको अपन नजदीकके पडोससे गुरू करके अपन ही चुन हुआ खिलाकाको मागके भीतर सीमित रखें और अपन प्रांतस बाहर कभी नुत्पत्तिका विस्तार न करें। जब दूसर प्रांत अपनी माग पूरी करनका कहें तब अपवाद किया जा सकता है।

४ अतिरिक्त नुत्पत्तिसे बचनके लिये उत्पादक लोग अपना काम सुन कतिना तक ही सामित रख सकते हैं जो सार कप और सुसके कुछ भागमें अपनी रोजीके लिये अकेमात्र बताओ पर ही निर्भर करती ह। गाखाओं और दूसरी सस्थाओं अपनी तमाम कतिना और दूसर कारीगराका सही रजिस्टर रखें और अनुम सीधा सरकार रखें। भाजन और वस्त्रके लिये मजदूरीके अुपयोगका निश्चिन बनानके लिये मजदूरों पूरी या सुसका अके हिस्सा पणायों यानी तानी या जीवनकी दूसरी जरूरी चीजाके रूपमें चुनाया जा सकता है।

५ दाहर काम अनुचित स्वर्धा या गहर कचम बचनेय लिये जहा अक्स अधिन खादी-उत्पत्तिका सस्थाओं ह वहा हरअकेका कामदात्र पहलेमे निश्चित कर लिया जाय। मघ खानपी प्रमाणित उत्पात्तिका प्रात्माहन नही ग्या। जो पहल्लेमे प्रमाणित ह अनुमें स केव अुहाका फिरम प्रमाणपत्र दिव जायग जा मघकी गाखाआ पर गगु हानवाक नियमारे अधिन काम करेंग और तमाम गगिम मघसे किसी सहायताकी आगाव त्रिना अुठायेग। अनुक साथ यह कठार गन हाणी कि ममघ समय पर बनाय जानवाले नियमा अयवा दी जानवाली सूतनाआना जरा भी मग हान पर अनुके प्रमाणपत्र अपन-आप र ह जायग।

६ यह समय रना चाहिये कि सघक मातहन काम करनवाणी तमाम सस्थाआना यह पहला और परम आवश्यक कनव्य है कि व

स्वावलम्बी रानीकी योजनाका बढावा दें। गहराकी या सुदक लिख न फातनवाये गहरामे बाहरके रानी न पहननवाशकी माग पूरी करनके लिख रानी-अल्पति करना गौण अथवा सहायक बतव्य है। असी रानीको पत्न करना या बचना किभी मस्याके लिख गजिमा नही माना जायगा।

हरिजन १९-१ - ३५

जब कतिनाके लिख बढी हुओ मजदूरीकी योजना गुरू की मत्री थी तब बहुतसे कायकर्ताओओ जमकी सफलताके बारेम गभीर गवाये थी। अन्हें गता था कि जिससे रानीके भाव बल जायग और विनी पर बुरा असर पन्गा। अनुभवन यह डर दूर कर लिया है और चरखा सघकी केन्द्रीय समिति अलुख है कि जल्दी ही कोभी आगवा कर्म अठायो जा सस्ता हा तो अठायो जाय। अिमलिअे जहा आगका बढम अठानके बारेम जल्दबाजी करनकी जरूरत नही बहा कायकर्ताओओ अमके बारेम सुस्त भी नहा हो जाना चाहिय। अहें मानूम होना चाहिये कि अश्य तो आठ घटके दिनके लिख आठ आने दमेका है। हम केवल नामको तीन आने तक पहुच ह और व बढि और क्षमताके बीचमें बराबर बराबर बढ हुअ ह। क्षमताकी कमाओका वित्रीके भाव पर सीधा असर नहा पडता। काभी असर पडता है तो यह कि कतिनाकी क्षमतामे खादाक गुणमें बढि हाती है। मजदूरीमें प्रत्यक्ष बढि होनसे कीमतें वगैर बढ जाती ह परंतु खादीके गणमें वृद्धि होनके कारण जनका बोझ महसूस नही हाता। फिर कीमताकी बढिका अिस प्रकार विवक पूवक नियमन किया जाता है कि सबसे गरीब ग्राहक पर या ता त्रिकुट बुरा असर न पये या बहुत ही घोडा पन्। मुझ जरा भी गवा नहा कि अगर कायकर्ता स्वय अधिक क्षमतावान अधिक जागएक और अधिक श्रद्धावान हा तो वह दिन जल्दी आ जायगा जब वित्रीके भावमें बहुत ज्यादा बढि हुओ विना ही कतिने आठ घटके कामके लिख आठ आन रोज आसानीसे कमा लें। अधिक गारवीय

ज्ञानसे हाथ चरखी धुनकी और चरखकी काय-काममें सुधार जरूर होगा। कतिनाके कामको अधिक ध्यानसे देखें तो वे अवश्य ही अधिक निपुण और क्षमतावान बनेंगी। किसी तरह प्रवध सम्बन्धी व्योरे पर अधिक काबू रखा जाय और काम अधिक कफा-गरीसे किया जाय तो व्यवस्था-वचमें जरूर काफी कमी हो जायगी। दूसरे काममें आठ आने राजके लक्ष्यको पहच सक्नमें हमारी मौजूदा असमयताका असली कारण हमारा खानी-गाम्बवा अज्ञान है। प्रस्तावका हनु प्रयत्नको गति देनेका है। भीश्वर सदा जाप्रत रहनेवालाकी ही सहायता करता है।

हरिजन १७-४-३७

म सघको प्रेरित कर रहा था कि कतिनाके लिये आठ घटके दिनकी मजदूरी बढाकर आठ आन करदी जाय। म जानता था कि जिस लक्ष्य तक अब छलागमें नही पहुचा जा सकता। फिर भी मन यह आगा रली थी कि छोडे छोड महीनाके काम मजदूरीमें कम वृद्धि नजर आयेगी। परन्तु भिन्न भिन्न गाखाआम जा विवरण मिले ह और श्री विनोवाके पयप्रदानमें श्री जाजूजा द्वारा वृद्धि हाती रहनेकी बडी बडी आगाअके साथ मरी नाकके नीचे हा रह प्रयोगामें जो आगिक अमफता हुआ है असे देखकर मेरी आंख खुल गयी ह और मरे सामन यह गभीर और भयानक हकीकत स्पष्ट हा गयी है कि यह दग अिननी भयकर दरिद्रतामें फसा हुआ है कि करोडा स्त्रियाको आठ घन्के दिनकी आठ आन मजदूरी नहा द सकता। आम तौर पर दहाती अिगकामें कही भी ग्रामीण मजदूर या कारीगर आठ घटे काम करके आठ आने नहा कमा सकते। और सब दग अितना नही कमा सकते तो कतिनों भी आठ आन नहीं कमा सकती। और जब तक परिस्थिति जहमे न बदल दी जाय तब तक स्वरीदार वर्गके पाम अितना रपया ही नहा है कि वे आठ आने राजकी मजदूरी सबको दे सकें। सेनाका भार अितना कुचल देनेवाला और अनुत्पाक है कि वह दगके सारे धनका सफाया कर देता है। अिसमें अगाधारण तौर पर अूचे वेतन और अुतनी ही अूची पैगने और

जोड़ दीजिये जो कित्नामें दी जाती है और वहां लच हाती है। जिस कुत्तर कर खानवाली दरिद्रताके लिये और कभी भीतरी कारण भी हैं। मगर मुझ अिम लखक अुद्देशसे भटक नहा जाना चाहिये।

कारण कुछ भी हा खानी-कायकताआन यह दु सन तथ्य मली भाति साबित कर िया है कि अिराना जितना हो हो फिर भी मध्यम श्रेणीके खानी-ग्राहकाके पास अितना रपया ही नही है जिससे वे तीन आनस आगे मजदूरीकी वृद्धिके कारण बढ हुअे भावा पर खानी खरीन सकें। अुनकी सूचना है कि कमसे कम अभी तो यही हन रहनी चाहिय जिससे आग बनकी गुजाअिग नही है।

हरिजन २६-८-३९

प्रन आपन हरिजन में अक बार कुछ असा लिखा था कि देहातियाको छूट है कि व गुजारके लायक मजदूरीवा विचार किये बिना अपन अपने गावोंके कत हूअ सूतकी खरीद ें और अ० भा चरखा सघवा अुहें अिस मामलमें अपनी अिच्छानुसार चने दना चाहिय। क्या असे सूतकी बनी खादीका पहननवाल लोग काप्रसके प्रतिनिधि बन सकते ह? और अिस बारेमें ग्रामसबक क्या करे? यह स्वभावत गुजारके लायक मजदूरीक पक्षमें प्रचार-काय करता है। ग्रामवासियाकी अक निश्चित सख्या तो सदा असी होती है जो चरखा सघकी खादी खरीदती है, परंतु साथ ही बहुतसे असे होते ह जा असा नही कर सकत। और अगर व गुजारके लायक मजदूरीस काम दते ह तो अिसमें एक नही कि कस्तिनाको अधिक राहत मिलती है और खादीको ग्रामीण जीवनमें भी निश्चित स्थान प्राप्त होता है। ता क्या ग्रामसबक असी खादीको प्रात्माहन दे?

अुत्तर अगर हम सदा यह सावधानी रखें कि किसी लेखकके वाक्यांवा असा अथ न लगायें जिससे अुसका अुद्देश्य ही विफल हो जाय तो असे प्रन क्वचित ही अुठें। जहा कोअी मजदूरी नही दी जाती हो और सूत अपना ही काता हुआ हो वहा किसी प्रकारकी प्राबन्दी नही लगाअी जा सकती। अवश्य ही यह मान िया जाता है

कि चरखा सघका नियम आत्म निभरताके झठे दाव पर नही तोडा जायगा। यही वान ग्रामसेवक पर लागू होती है।

परन्तु आपके सवागमें जब महत्त्वपूर्ण मुद्दा जुठाया गया है। किसी विगप गावमें चरखा मघका कायकर्ता अगर गावका खान्नी काममें ले तो वह गुजारेके लायक मजदूरी नहा दे सकता। जिसलिजे वह कम दर पर मूल खरीदगा और जिन कतिनाका दूसरी तरह कुछ भी नही मिलगा अुहें कुछ काम द दगा। परन्तु वह काप्रसका मन्स्य न बन। वह काप्रसकी बाहरसे सेवा करेगा। कभी कभी अस लोग काप्रसकी अधिक सेवा करत ह और साथ हा य अुन महत्वाकाक्षाआस बच जाने ह जो सदम्यताके साथ अक्सर ँगी रहता ह। स्पष्ट है कि असी खादी अुस गावसे बाहर नही बचा जा सकती। वह मत्र वही खपनी चाहिय। ज्या ही अप्रमाणित खान्नी बाजारमें रख दी जानी है त्यो ही चरखा मघका कानून भग हो जाता है और असली खान्नीकी प्रगतिका घक्का ँगता है। कतिनाकी मजदूरी बन्तानवे प्रयत्नमें चरखा सघ पर बडा जोर पड रहा है। ससारमें कभी यह नहा सुना गया कि मजदूरी करनवालाकी तरफम मजदूरीमें वृद्धिकी भाग द्रुअ बिना ही मजदूरी अकन्ता पससे बढाकर आठ वार्ह पम कर दीयी हो। चरखा सघन अिय मामलेमें चिरस्मरणीय काम किया है।

हरिजन १-९-४०

## स - अप्रमाणित खादी

६३

### अप्रमाणित बनाम प्रमाणित

कताओके लिए नय पमान पर मजदूरी जारी करनेसे तामिल नाडमें जो कठिनाओ पदा हो गयी वह और स्थाना पर भी और खास तौर पर आंध्रमें भी खडी हो गयी है। यह भारतके अुस भागसे प्राप्त हुअे कभी पत्रासे लिखाओ दता है। खादीके अप्रमाणित 'वापारी अुन गरीब स्त्रियाक' हिताको जिहें अेक पससे अधिक कमानेका कोओ मोरा ही नहा है जो नुकसान पहुचा रहे ह अुसकी पत्र-सक बडी कटु गिवायत करते ह। पता नही अप्रमाणित व्यापारी मरा यह अनुरोध मानेंग या नही कि अुहें अितना स्वार्थी नही बनना चाहिये कि हजार गरीब कतिनाक पसे छीन लें। आगा है वे मानेंग। परंतु असनी जुपाय खादी खरीदनवाक लोगके हायमें है। अगर व चरवा सध द्वारा प्रमाणित भडारके सिवा और कहींसे खादी नही खरीदेंग तो अप्रमाणित भडारको बंद हो जाना पडगा। जनताको मालूम होना चाहिये कि सधकी दरसे ही कतिनाको अुची मजदूरी दी जा सकती है।

हरिजन २९-८-३६

दुर्भाग्यसे काग्रसजन अज्ञानवग या खादीमें विश्वास न होनेके कारण आत्म-वचनाके अिअे अप्रमाणित भडारासे सस्ती खादी खरीदते ह और अिस प्रकार खादी-सम्बन्धी काग्रसकी नीतिको विफल करत ह तथा जितनी खरीदारी करत ह अस हद तक कतिनाको मजदूरीकी वृद्धिसे वचित रखत ह। जनता अच्छी तरह समझ ल कि खादीका भाव जितना बडगा कतिनाको कमसे कम अुतना तो अधिक

मिल ही जायगा। 'कमसे कम म समझकर वह रहा हूँ क्योंकि मजदूरीकी सारी वृद्धि ग्राहकमें वसूल नहीं की जाती।

जो काप्रेसी नेता उरखा सघसे पूछ विना या खुसने वहे विना खादी भडार खोलते ह वे अवश्य ही अपनी खुन्की सस्थाको हानि पहुचान ह घोखेबाजीका प्रोत्साहन देते ह और काप्रेसकी नीतिका भग करते ह अिनके विपरीत प्रत्यक काप्रेसजनका यह धम और गव होना चाहिये कि वह सबसे नि सत्ताय मानव समूहकी दगा सुगारनेमें चरखा मघका काशिशामें हर तरहसे मदद द।

हरिजन १५-१ - ३८

जब सघने शक्तिनाकी मजदूरी वगानेका निगय किया तब महा राष्ट्र गाथा अस प्रस्तावका अुत्साहपूर्वक समयन करनमें सबसे आग थी। अुम थी विनोबाका सीधा मागदान प्राप्त है। अुसने वृद्धिके कायक्रम पर जितना सही सही अमठ किया है अतना दूमर प्रातान नहीं किया। नतीजा यह है कि चकि दूसरे प्रान्ताने अुसी हद तक मजदूरी नहीं बढ़ाओ है जिस हद तक महाराष्ट्र साखान वगजी है असलिअे वे महाराष्ट्रकी खानीम कम कीमत पर अपनी खादी बेच लेते ह और महाराष्ट्र गाथाक अिलाकेमें अपना माग भेजनमें सकोच नहीं करत। अिम स्थितिमे लाभ अुठानमें वैअपूठ यापारियाको देर नहीं उगती। अिम प्रकार नागपुर वर्षा और दूसरी जगहा पर अप्रमाणित खानी भडार खुल गय ह। भोलाभाली जनताका नभी व्यवस्थाका पता नही और वह सस्ती खानी खरीदनकी अुत्सुक होती है असलिअे वह अप्रमाणित भडाराने अडाना अधिक पसन्द करती है और अिम प्रकार महाराष्ट्र गाथाक भडारका बडी हानि पहुचती है। परिणाम यह है कि महाराष्ट्र गाथाको या तो मजदूरी घटानी पडेगी या अपना व्यवसाय बन्द कर देना पडेगा। असका अर्थ यह हुआ कि खादी हां खानीको मार रही है। खानीप्रेमियाको जानना चाहिये कि खानीका अथगास्त्र सर्षा प्रणाणीवाल माधारण अथगास्त्रसे भिन्न और अक्सर विपरीत हाता है। सर्षावाली प्रणाणी सर्वोत्तम अर्थात्



पद-दलिनमें सबसे छोटकी भलाभीवे मिट्टातके अनुसार नहीं चलनी ।  
 अिस प्रकार अिस पत्रमें मने यह सि्गानका प्रयत्न कियाहै कि  
 अगर खानीको अपना विाग उ्थ पूरा करना है तो

१ जब तक हम कमसे कम एक आना प्रति घटे तक न पहुच  
 जाय तब तक कतिनाकी मजदूरी क्रमग बढ़ती ही रहनी चाहिय ।

२ आदग यह है कि प्रत्यक गावको अपनी खानी स्वय पैदा  
 और अिस्तमाल करनी चाहिये । अिमने यह स्पष्ट है कि फिल्हाल कमसे  
 कम अितना होना चाहिय कि प्रत्यक प्रान्त अपनी अपनी जरूरतके  
 लिअ ही काफी अल्पति करें अुसमे अधिक नहीं । अपनी सीमासे  
 बाहर जुसी खानीको बचनकी अिजाजत होनी चाहिय जा सिर्फ अुमी  
 प्रातमें तयार हो सकती है । अुणाहरणाथ आध्र अपनी सीमासे  
 बाहर ८ नम्बरके सूतकी खादी भज सकता है मगर मोटी खादी नहीं  
 भज सकता भले वह कितनी ही सस्ती हो ।

३ मुनाफके लिअ मुनाफा नहीं किया जा सकता । मसारकी अिस  
 सबसे बडी सहकारी सस्थामें मजदूर ही हिस्सदार और मालिक ह ।  
 अिसलिअ यदि किसी एक वषमें मुनाफा हो तो अमका सदुपयोग यह  
 हाना चाहिय कि जब तक कोअी जरूरतमद कतिनें हो तब तक  
 अुसे कतिनोकी सहाय बानेमें लगाया जाय या मौजूग कतिनोकी  
 मजदूरी बानेमें लगाया जाय ।

४ कोअी भी प्रात वाछित स्तर तक कतिनाकी मजदूरी  
 बानका प्रयत्न कर ता दूसरी शाखाओ और खानीप्रमियोको अुसे  
 प्रोत्साहित करना चाहिय ।

५ आम जनताको दूसर प्रातमें महगी होन पर भी अपने प्रातकी  
 बनी खानी ही काममें लना चाहिये । अहें वि्वास रखना चाहिये कि  
 चरखा सघ प्रत्यक प्रातके लिअ भरमक जडा करगा ।

६ बगक चरखा सघकी नीति यह होनी चाहिये कि हिन्दुस्तान  
 भरमें मजदूरी और भाव अवस हो जाय । परन्तु जब तक यह आदग  
 स्थिति प्राप्त न हो जाय तब तक जनताको यह याद रखन जितनी  
 मानवता अवश्य रखनी चाहिये कि अपन अपन प्रातके मजदूरोके

प्रति अमुका कोसी धम है। बाहरी दुनियाके साथ स्पर्धा करना जिनना बुरा है लगभग अतना ही बुरा अेक प्रातका दूसर प्रातके साथ स्पर्धा करना है।

तुरन्तके लिख वाछनीय वस्तु तो यह है कि तमाम अप्रमाणित मण्डल बंद कर दिये जाय। काप्रमजन और दूसरे लोग जनताको सावधान कर दें कि असे मण्डारोमे खरीद न की जाय और प्रातीय गावाआका चरखा मधकी मम्बन्धित प्रातीय अजेमियोकी मूचनाक सिवा अपना माल बाहर बेचनेसे मजबूतोके साथ जिनकार कर दना चाहिय।

हरिजन २४-६-३९

जिहें श्रद्धा नही है वे समझने ह कि खानी लम्बडा रही है। वास्तवमें अमुकी जड जम रही है। वह गरीबके जीवनका सहारा तो पी हा अब स्वाधीनता प्राप्त करनका अहिंसक माधन बतनेकी कोशिश कर रही है। तामिन्नाडमे आये कुछ अेक पत्रके नीचे दिय हूय अनाम बठिनाओ कापी स्पष्ट रूपमें प्रगट होनी ह

चरखा सघके नामने अिम बाल ओ समझ्याअे ह। अक तो यह है कि मौजूग तरीका पर खानी अुत्पत्ति जारी रखी जाय। दूसरी यह है कि जिन कारीगरा और अुनक देहाताकी हम सेवा करते ह अुनास सम्बन्ध रखनेवाणी अपनी प्रवृत्तिको नया रूप दिया जाय।

खानीके अप्रमाणित व्यापारियाका स्पष्टके कारण पिछले कुछ महीनामें मौजूग व्यापारिक अुत्पत्ति पर गभीर अमर पडा है। अप्रमाणित व्यापारी हमारी बठिनामे मून खरीन्ते ह जा हमारी दी हुई बहनर भी बतनी ह। वे हमारे मूनसे जुगगारा बुनी हुआ खानी खरीन्त है और अुने मुनाफके साथ बचत ह। व हमारे जुगहाके घरा पर जाकर अधिक मजदूरी दन ह और खानीक बराबरवा मून कर हमारे अिअे बुनी हुआ खानी गरीब लन है। जुगने हमारा खानी अिमलिअ दे दते ह कि अुहें अपन ही घरा पर अधिक मजदूरी और मून मिल

पद-दलितानमें सबसे छोटीकी भलाभीके मिद्धातके अनुमार नहा चन्ती ।  
अिस प्रकार अिस पत्रमें मन यत् शिवावका प्रयत्न कियाहुइ कि  
अगर खानीको अपना विाप लभ्य पूरा करना है तो

१ जब तक हम कमसे कम अर आना प्रति घटे तक न पहुच  
जाय तब तक कतिनाकी मजदूरी कमग बढ़ती ही रहनी चाहिय ।

२ आगा यह है कि प्रत्येक गावको अपनी खाी स्वय पैदा  
और अिस्तमाउ करनी चाहिय । अिससे यह स्पष्ट है कि फिलहाल कमसे  
कम अितना होना चाहिय कि प्रत्येक प्रान्त अपनी अपनी जरूरताके  
लिअ ही काफी अत्पत्ति करें अमस अधिक् नहा । अपनी सीमासे  
बाहर अुसी खादीको बचनकी अिजाजन होनी चाहिय जो सिर्फ अुसी  
प्रातमें तयार हो सकती है । अुनाहरणाय आध अपनी सीमामे  
बाहर ८० नम्बरके सूतकी खानी भज सकता है मगर मोटी खानी नही  
भज सकता भन्ने वह कितनी ही सस्ती हो ।

३ मनाफके अिअ मुनाफा नही किया जा सकता । ससारकी अिस  
सबसे बडी सहकारगे सस्यामें मजदूर ही हिस्मदार और मात्रिक ह ।  
अिसलिअ यत् किमी अक वपमें मुनाफा हो तो अमका सदुपयोग यह  
होना चाहिय कि जब तक कोअी जरूरतमद कतिनें ही तब तक  
असे कतिनाकी सख्या बगानमें लगाया जाय या मौजूदा कतिनाकी  
मजदूरी बगानेमें लगाया जाय ।

४ कोअी भी प्रान्त वाछित स्तर तक कतिनाकी मजदूरी  
बढानका प्रयत्न करे तो दूसरी शाखाओ और खादीप्रमियाका जुसे  
प्रीमाहित करना चाहिय ।

५ आम जनताको दूमर प्रातसे महगी होन पर भी अपन प्रान्तकी  
बनी खाा ही काममें लेना चाहिय । अहें विश्वास रखना चाहिय कि  
चरखा सध प्रत्येक प्रातके लिअे भरसक अच्छा करगा ।

६ बगक चरखा सधकी नीति यह हानी चाहिय कि हिन्दुस्तान  
भरमें मजदूरी और भाव अकसे हो जाय । परन्तु जब तक यह आदश  
स्थिति प्राप्त न हो जाय तब तक जनताको यह याद रखन जितनी  
मानवता अवश्य रखनी चाहिये कि अपन अपन प्रातके मजदूरीके

चाहे गरीबाकी दृष्टिमें दखें चाहे अहिंसाकी दृष्टिसे अप्रमाणित खानीके व्यापारी खादीके लिझे जबरदस्त खतरा ह। क्याकि व्यापारी सिफ अपन ही जवको जानता है खुमे और किसी बातकी परवाह नही होती। हा वह जुगहा और कतिनाके पास जाकर तरह तरहके वादे जमर करता है। वह नही जानता कि अगर वह चरखा सधको मार देता है तो स्वय भी मारा जायगा।

सबसे दुखकी बात यह है कि कांग्रेसजन अनि अप्रमाणित व्यापारियके हाथमें जान-बूझकर हथियार बनते ह। अन्होंने विापनीका एक सध स्थापित किया है। फिर भी वे नहा जानते कि व अिच्छा या अनिच्छासे सोनका अण्डा देनेवागी भुर्गोको मार रहे ह। अिसके अतिरिक्त खानीसे सखजनिक अधिमानकारीको बडी परीक्षा होती है। यह मावजनिक व्यवहारमें प्रामाणिकता राजका अुत्तम अुपाय साजनका एक बडा प्रयन है क्याकि अिसका अय गावके बटाडा म्त्री-मुदपकि पनिष्ठ और नि स्वाथ मपनमें आना है।

मारी बाताका निचोड यह है कि खेवक जसे कायबनाआको अपने विषयमें पूरी श्रद्धा रखकर अपना काम जारी रखना पन्गा और परिणाम ओवरक हाथमें छड दना पडगा।

हरिजन १२-५-४६

अेक गुजराती भात्री पूछने ह

अनका राष्ट्रीय सस्थाअें आग्रह करती ह कि अुनके समाम बमचारियानी पागार ही खानीकी नहा हानी चाहिये परंतु अुनका पुम्नवाकी जिल्ला भी खानीको हानी चाहिये। खूबि प्रमाणित खानी तो निश्चित मात्रामें मूल देन पर माय किये हुअें भडारामे ही मित्र सकनी है अिसनिअे वे क्रुदरती तीर पर अप्रमाणित खानीका आश्रय लेते ह। क्या यह ठीक है? क्या मित्रका बपडा अप्रमाणित खानीस बहतर नही है? क्या खानीक जिग आग्रहवा परिणाम अुसे अप्रमाणित दुवानामे गरीबनेमें आता है यह वास्तवमें अक मृटा दिखावा नहों है?

जाता है। इस प्रकार परीने हुई खानी अूचे भावा पर विशेष खादीके रूपमें बची जाती है।

अिम क्षेत्रमें पचामसे अधिअ अप्रमाणित खानीके व्यापारी ह। कहा जाता है कि वे प्रतिमाग लगभग सात लाख रुपयकी अप्रमाणित खादी तयार करते ह। अिनमें काप्रेसजन भी हैं जो काप्रेसकी वायकारिणीमें स्थान रखते ह।

हम कारीगरा पर यह अमर डालनेमें असमथ हैं कि वे अप्रमाणित व्यापारियाक चगामें न फसे यद्यपि कारीगराना रुपया हमारे पास जमा रहता है। वे अितना ही कहते ह कि जब अुहें घटिया मेहनतकी अूची मजदूरी मिती है और बढिया माल तयार करने और खादी पहनने बगराकी जो गते हम अगाते ह वे नही अगाती जाती तो वे अुसका अोभ सवरण नही कर सकते। अिसके सिवा कतिनाको बाढा नामक घटिया रकी दी जाती है जिसे पीजनेकी जरूरत नही होती। यह मिलकी रकी रही होती है जो अच्छी रकीकी पीनी कीमतमें मिल जाती है। बता हुआ मूल लच्छियोंमें ही होता है अुसकी गण्डिया नही बनाती जाती। यह तरीका अरिब सीधा है और अिसलिअ कतिने अिस रकीकी ज्यादा पसन्द करती ह। अूकि घटिया मेहनतके लिअ अूची मजदूरी दी जाती है कतिनासे खादीके लिअ अमानत रकम नही ली जाती और मूल बगराके बढियापाका अप्रह नही रखा जाता अिसलिअ कतिनाकी यह वृत्ति है कि अप्रमाणित व्यापारियाके मातहत काम करें।

कारीगराकी यह वृत्ति चरखके द्वारा ग्रामाकी पुनरचनाके हमारे आदर्शको अुन तक पहचानेमें अक बडी रुकावट और बाधा है।

अगर खादी-अत्पत्तिका मौजूदा तरीका खादी प्रवृत्तिको नया स्वरूप देनेमें बाधक होता है तो असे बलिदान करना पडगा। अिसके लिअ अ्रद्धाकी और अ्रद्धासे आनेवाली जागरूकताकी जरूरत है। आरुसियामें अ्रद्धा कभी नही होती।

चाहे गरीबाकी दृष्टिसे देखें चाहे अहिंसाकी दृष्टिसे अप्रमाणित खादीक व्यापारी खादीके लिये जबरदस्त यत्न हैं। क्याकि व्यापारी सिध अपने ही जेबको जानता है अग और किसी बातकी परवाह नहीं होनी। हा वह जुगहा और बत्तिनाक पास जाकर तख्त तरहवे वादे जरूर करता है। वह नहीं जानता कि अगर वह चरवा सघको मार देता है तो स्वय भी मारा जायगा।

सबसे दुःखकी बात यह है कि वाप्रमजन जिन अप्रमाणित व्यापारियोंने हाथमें जान-बझकर हुयियार धनते ह। अन्हाने विशेषज्ञाका अेक सघ स्थापित किया है। फिर भी वे नहा जानते कि वे अच्छा या अनिच्छासे सानेका अण्डा देनेवागी मुर्गाको मार रहे ह। अिनके अतिरिक्त खान्नीसे सावजनिक ओमानदारीकी कडी परीषा होती है। यह सावजनिक व्यवहारमें प्रामाणिकता लानेका अुत्तम अुपाय खानेका अक बडा प्रयत्न है क्याकि अिसका अय गावके कराडा स्त्री-मुन्पाके घनिष्ठ और निस्वाय सपरमें आता है।

सारी बातका निबोड यह है कि खैर जस कायकनाआका अपने विषयमें पूरी श्रद्धा रखकर अपना काम जारी रखना पडेगा और परिणाम ओवरक हाथमें छड दना पडेगा।

हरिजन १२-५-५६

अेक गुजराती भाओी पूछते ह

अनेका राष्ट्रीय सस्योअें आग्रह करता ह कि अुनके तमाम कमचारियाओी पोशाक ही खादीकी नहा होनी चाहिये परतु अुनकी पुस्तकाश जिल्द भी खान्नीका हानी चाहिये। पूरि प्रमाणित खान्नी का निश्चित मात्रामें सूत देने पर माय विधे हूअे मडागमे हो मिश्र सकती है अिसमिश्र व कुत्रती तौर पर अप्रमाणित खान्नीका आग्रय गते हैं। क्या यह ठीक है? क्या मिश्रका बपडा अप्रमाणित खान्नीसे बेहतर नहीं है? क्या खान्नीके जिग आग्रहका परिणाम अुसे अप्रमाणित दुकानासे खरीनेमें आता है वह वास्तवमें अेक मूठा खियावा नहीं है?

जब और खानाके सिवा खातीकी कमी भी है अतः समय जित्त  
 बचाओ यगराके कामके लिये असका आप्रह ररना अनुचित है। जब  
 खातीकी बहुतायत थी तब मने ही सिफारिश की थी कि असे अने  
 सब काममें अस्तेमाल किया जाय। १९२१ में अहमदाबादकी बाग्रसवा  
 सारा मण्डप खातीसे सजाया गया था। आज असी कोशिश करना  
 पागल्पन होगा। समय और परिस्थितियासे तरीके बन्न जाने हैं।

परन्तु अप्रमाणित खातीके विरुद्ध मित्रके कपडके पक्षमें लेखकी  
 बकालन मरी समझमें नहीं आती। अप्रमाणित खाती क्या है? क्या वह  
 अप्रमाणित होते हुए भी हाथ-कता और हाथ-बुना कपडा नहीं है?  
 जिसमें धोलबाजी होना दूसरी बात है। प्रमाणित खातीमें भी चरखा  
 सघ सौ फीसदी गुद्धताकी गारण्टी नहीं दे सकता। जिस दुनियामें  
 धागबाजीका कोशिश अशक्य नहीं है। यह बात युग-युगसे सही है।  
 अप्रमाणित खादीकी श्रुटिया सबको मान्य ह। अतिसमें कतिना और  
 जुलाहाके लिये मजदूरीका कोशिश बधन नहीं है। असे बचनवाले मन  
 माना नफा कमाते ह। अक्सर लोग चरखा सघके भण्डारासे दुश्मनी  
 निकालनके लिये ही दुकानें लगा लेते ह। फिर भी जहा धोलबाजी  
 न हो वहा जो भी कपडा हाथका कता और हाथका बुना हो असे  
 खादी ही कहना पडगा। कोशिश खुद कातकर अपन लिये अस सूतका  
 कपडा बनवा लेता है। यह कपडा कानूनी अर्थमें तो प्रमाणित नहीं  
 है लेकिन वह अचेसे अचे और गद्दसे गद्द अर्थमें खादी है। अतः  
 आदमीके लिये यह पाप होगा कि अपन ही हाथकी मेहनतसे बने  
 हुए कपडके बजाय वह मिलका कपडा काममें ले।

निष्पत्त यह है कि मित्रके कपडका बहिष्कार जारी रहना चाहिये।  
 जहा तक सम्भव हो अप्रमाणित खादीसे बचना चाहिये। लेकिन जहा  
 प्रमाणित खाती न मिल सके और मिलके कपड और अप्रमाणित खादीके  
 बीच चुनाव करना हो वहा अप्रमाणित खादीको पसन्द करना चाहिये।  
 जिसमें यह तो मान ही लिया गया है कि वह गुद्ध खादी होगी।  
 आप चाहें तो अपन ही हाथकी मेहनतसे बन हुए कपडको अप्रमाणित  
 बताकर अतःकी निन्दा कर सकते ह परन्तु सच्चाभी यह है कि वह

अप्रमाणित खादीसे अधिक शुद्ध है। और अगर सब लोप अपनी जरूरतवा बपडा बनवानके लिये काफी सूत कात लें तो फिर चरखा सघकी जरूरत ही क्या रहे? फिर ता चरखा सघके जय-जयकारसे पध्वी और जावान गूज अछैण।

हरिजन २२-९-४६

अब और मद्म्यन पूछा आपने हमें हर बातमें सरल और शुद्ध हाना सिखाया है। क्या यह बहीमानी नही है कि अप्रमाणित खादी पहनकर खादीवा कहलार्ये जब कि हम खादी पहननेकी सब बातें पूरी नही करते? क्या अिमके बजाय अीमानदार बनकर मिल्का बपडा काममें लेना बहतर नही है?

गांधीजीने अुत्तर लिया म अप्रमाणित खादीका समर्थन नही करता परंतु मेरी राय है कि खादी शुद्ध हो तो वह मित्रके बपडेसे अच्छी है। सभी अप्रमाणित खादीम अप्रमाणिकता नही होनी। बुना हरणक लिये जो लोग अपने या अपने परिवारके लिये कातकर अपने सूतका बपडा बुनवा लते ह व प्रमाणित खादी अिस्तमाल नही करते। फिर भी अुस खादीका सबसे अधिक महत्त्व है। प्रमाणित खादीमें यह आश्वासन होना है कि चरखा सघके नियमाका पालन किया गया है मसलन कतिनाको अेक निश्चिन अल्पतम मजदूरा दी गयी है। जब कतिनाका चरखा सघके मापदण्डक अनुसार मजदूरी नही दी जाती थी तब भी खादी मित्रक बपडेसे अच्छी थी। कनाअीकी मिशामें मजदूरारा जा अधिक मजदूरी दी जाती है वह वास्तविक नही दिग्वावटी ही है। आज मित्रका बपडा खादीमे अगाअी गुना मस्ता है। विगपचान मुक्त बनाया है कि यदि मिल्-अुचागको व विगप सुविधाअें और रिआयतें न मिल जो अम आज कअी तरहसे मिठ रही ह ता मिल्का बपडा खादीम मरगा नही विक सकता। बुनाहरणक लिये हम मिलाका अेक स्थानसे दूसरे स्थान तक कच्चा माल और बडे पमान पर तयार माठ जा सकनके लिये मन्त्र यावायानकी सुविधाअें देने है। अिमक अगाथा अम्ब तारकी रसा अुगान या अुचोा विगानकी



सस्याओं खोदने और खोजवा काम करनेके लिये भारी रकमें खच की गयी है। लेकिन भारतके सात लाख गावामें से किसीके लिये कुछ भी करनेकी किसीने चिन्ता नहीं की। इस प्रकार किसी न किसी रूपमें इस समय मित्रको अन्तर्में सरकारी सहायता दी जा रही है। यह सब हटा लीजिये और फिर देखिये कि मिलवा कपड़ा सस्ता है या खादी।

गांधीजीन आगे कहा मैं अप्रमाणित खादीको किसी तरह प्रोत्साहन नहीं दे सकता परन्तु मित्रके कपड़ेका तो विरुद्ध बहिष्कार ही हाना चाहिये। कोसी लिन असा आ सकता है जब चरखा सध प्रमाणपत्र देना बन्द कर दे। फिर ता सभीको खादी बचनेका छूट होगी। जब खादी सावत्रिक हो जायगी तब यह अनिवाय होगा। उस समय चरखा सध खादीके नीतिशास्त्र और सामान्य नीतिके रक्षकका काम करेगा। उसका 'यापारिक' कामकाज बन्द हो जायगा। लोगको आदतसे भीमानदार बनकर आग्रह करना चाहिये कि खादीके उत्पादक और 'यापारी' अितनी सस्त जीमानदारीसे काम करें कि केवल गृह माल ही बचा और खरीदा जाय।

हरिजन २०-१०-४६

वही भाजी जो सुझाव देते हैं कि खादी कपड़ेकी कमीको दूर कर सकती है लिखते हैं जब भारतको आजादी मिल गयी है तब प्रमाणित और अप्रमाणित खादीमें और मिलके कपड़ तथा विलायती कपड़में शायद ही कोसी अन्तर रह गया है। जो सूत कातकर अपने लिये कपड़ा बुनवाता है उसके लिये खादीका महत्व हो सकता है मगर लोग असा नहीं कर सकते। भण्डारोंसे खादी खरीदनेके लिये निश्चित अल्पतम मात्रामें सूत ही कात सकते हैं। शुद्ध खादीके बन्दियापनमें कोसी मुधार नजर नहीं आता जब कि अप्रमाणित खादीके कभी अपुयागी प्रकार अपुप्य ह। अिनके अतिरिक्त जिस गुजारेके लायक मजदूरी कहा जा सकता हो उसी मजदूरी आजकल खादी-अुद्योगमें दे सकना कठिन है। लिखते हैं कि अिन कारणोंसे

अप्रमाणित खाली खरीदनेकी छूट होनी चाहिये। वे यह दलील भी करते हैं कि देशभरमें कपडकी अत्यन्त कमीकी और इस बातको देखते हुआ कि सघ-सरकार स्वयं विलायती कपडा आयात करती है यह कपडा खरीदनेमें भी कौआ आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

जसे प्रश्न अठाय जा सकत ह अमीस जाहिर होता है कि समय कितना बन्त गया है। मरा उत्तर यह है कि केवल प्रमाणित खादी ही काममें लनी चाहिये। म इस गल्फा अथ बता दू। चरखा मघकी याख्या भी अधूरी है। असमें जिस गल्फा अथ यह है कि कितना और जुगहाका वाजिव मजदूरी दी जाय और खालीका भाव मुनाफकी भावनाके बजाय जनहितको ध्यानमें रखकर मुकरर किया जाय। अमी खालीको चरखा मघका प्रमाणपत्र देना जरूरी हो जाता है क्योंकि लोगको जाम तौर पर स्वावन्त्री खालीके अतिरिक्त खादी खरीदनेका आश्रय लना पडता है। बाकी सब खादी अप्रमाणित और आपत्तिजनक है जिसलिअे असे काममें नहा लेना चाहिये। जनताको अधिकार है कि खादीका प्रमाणपत्र देनेके लिअे रफी गयी गतीमें सुधार मुनाये, परतु प्रमाणित और अप्रमाणित खालीका भेद मिटा देना निश्चित रूपम गलत हागा।

और विन्गी राज्य खतम हो जानेसे ही खाली मित्रके कपड और विगपना कपडक भेदकी अपुदा कमे की जा सकनी है तथा विगपती कपडेका आयात कमे अचित हो सकता है? हमें याद रखना हागा कि हमने विन्गी राज्यका विरोध जिमलिअ किया था कि अुमने देशका आर्थिक विनाश होता था। अिसलिअे आजखालीका पहला परिणाम अिस अभिगापका मिटा देना हागा चाहिये।

मारग यह है कि स्वराजमें केवल गुड खालीका ही स्थान है। अिसीमें लोक-कल्याण है और सच्ची आर्थिक समानता है।

हरिजन ११-१-४८

खादी भंडार\*

कोभी खादी भंडार घाटमें नहीं चलाया जाना चाहिये। चरखा सघका मुख्य लक्ष्य खादीका गुण बढ़ाना होना चाहिये न कि कलाकी आडमें केवल दिखावा करना। कौन जानता है कि सच्ची कला क्या है? अधिकसे अधिक यह अंक सापेक्ष गद है। चरखा सघका मौज्जिबता दिरताना चाहिये गहरामें घामीण कला जारी करनी चाहिये और विश्वास रखना चाहिये कि अंतमें अुसकी जीत होगी। खादीका प्रत्येक थान मजबूत और टिकाऊ होना चाहिये। हमें टिकाऊपनको हानि पहुंचाकर बारीकपन नहीं लाना चाहिये। कपडा टिकाऊ न हुआ और कमजोर हुआ तो खानी मर जायगी। यदि हम मजबूतीका बलिदान क्रिय बिना बारीक खादी पदा नहीं कर सकते तो हमें अपनी असमथता स्वीकार कर लेनी होगी। मन देखा है और अक्सर देखकर म धुलाआक वारेमें डर गया ह कि मसालेसे धुली हुआ खानी लगभग पहली ही बार पहनन पर फटन लगती है। मेरा कहना यह नहीं है कि यह बात सदा ही सच है। मेरे कामके लिअ अितना हा कहना काफी है कि मसालसे धुली हुआ खादी टिकाऊ साबित नहीं हानी यह बात अितनी अधिक बार देखनमें आती है कि ग्राहक कम हो जाते ह। अिसलिअ मन महा जो कुछ कहा है अुसके प्रकागमें जितना जरूरी मातूम हो अुतना सुधार खादी भंडार अपन पमानमें कर लें।

हरिजन २९-३-३५

\* खादी भंडारके विषयमें अधिक लेखाके लिअ देखिय विभाग १३ अध्याय ७४ और विभाग १४ अध्याय ८२ से ८४।

६५

### स्वावलम्बी खादी

स्वावलम्बी खातीका अय वह खादी है जो स्वयं ग्रामीणाकी बाती हुयी थीर बुनी हुयी हो और जहा भी सभव हो अपने अपने गावोमें अुगाआ हुयी ओगी हुयी और पाजी हुयी रुओसे बनी हा। खातीका यही असली मिगन है। यह अुदृश्य गाववाल्किे साथ लगातार मानव-सपकं रखकर हो पूरा किया जा सकता है। अुहें इस कामके आर्थिक मूल्यके सिवा अुसका गौरव और महत्त्व जानना चाहिये। इस योजनाके अनुसार टानी देहाती रचिक अनुकूल तयार की जायगी। अुसमें मसालेकी धलाओ और सादी घुलाओ भी टाली जायगी क्यकि हर देहाती अपन त्रिअे आप घुलाओ बर ेगा। इस प्रकार अुत्पन्न की हुयी खादी अगर अुसके टिकाअुपनका विचार किया जाय तो किमी भी बपटसे सस्नी होगी। गहरी खातीके साथ सब तरहके सच लगे हुअ ह जस फालनू प्रक्रियायें मालका सप्रह यातायात भाडा और कमीगन। देहाती खादीमें ये सच नहो होते। बस्वा और शहराको अपनी जरूरतकी खादीके लिअे गावाके अुपयोगके बाद बची हुयी अतिरिक्त टानी पर आधार रखना चाहिये।

हरिजन २९-३-३५

जब स्वावलम्बी खादी पर जार किया जायगा तब व्यापारिक अुत्पत्ति गहरके लोगकी सची आवश्यकताया तक सीमित रहणी। फिर वह सपके हायामें बेद्वित होनके बजाय मानगी व्यापारियोंके हायामें बली जायगी।

हरिजन, ६-७-३५

तमाम खादी-संस्थाओं में स्वावलंबी खादीको प्रथम स्थान देना पड़ेगा। अब प्रचारसे स्वावलंबी खादी और विप्रीके लिये अल्पति साध साध चलेगी। विप्रीके लिये अल्पति स्वावलंबी खादीको एक अनुपाता होगी और स्वावलंबी खादी विप्रीके लिये अल्पतिकी सफलताको पक्की करेगी। चूंकि अल्पतिकी बात यह है कि मजदूरोंको खादी पहननी ही चाहिये अतिलिये उन्हें अपने लिये खादी बनानी या लेनी पड़ेगी। यह वे अपनी मजदूरीमें होनेवाली (अनुके लिये) अनुस बहुत बड़ी वृद्धिमें से आसानीसे कर सकते हैं जो उन्हें बिना किसी आगा या माग किये मिलेगी। परंतु मजदूरीका मित्राना अनुस अतिरिक्त अल्पति पर निर्भर करेगा जो आसानीसे बिकने पर ही अनुपयोगी होगी। इस प्रकार स्वावलंबी खादीका प्रयोग वहां आसान होगा जहां अल्पति-केन्द्र है। कारण जिन लोगोंके साथ कर्मकर्ताओंका कभी कोई सम्पर्क ही नहीं आया अनुकी अपेक्षा कतिना और दूसरे कारीगरोंको समझाना आसान होगा।

परंतु कुछ लोग पूछते हैं 'अबे भावा पर खादी कौन खरीदेगा?' मेरी रायमें जिससे अनान तथा श्रद्धा और सूक्ष्मज्ञका अभाव प्रगट होता है।

अब तब हमन अपना ध्यान गहरामें खादीकी माग बढ़ान पर केन्द्रित किया है हमारा मानस गहरी रहा है। हमने अल्पति-केन्द्रके बिल्कुल आसपासके स्थानोंका भी अध्ययन करनेकी कभी परवाह नहीं की हमन तो खुद उत्पादकोंकी ही अपेक्षा की है। अब अनुकी परीक्षा लिये बिना ही हमें विश्वास होता है कि उनकी तरफसे ठीक उत्तर मिलेगा। आसपासके स्थानोंके लोगोंके बारेमें भी हमें यही विश्वास क्या न होना चाहिये? अवश्य ही उन्हें अपने दैनिक अनुपयोगके लिये कपड़की जरूरत है। क्या उनसे यह आशा रखना बहुत अधिक है कि वे अपने ही निकटके पड़ोसियोंकी तयार की हुई कुछ खादी ले लेंगे? मैं जानता हूँ कि जिहोन जिस दिगामें लगनके साथ प्रयत्न किया है वे कभी असफल नहीं हुये। असफलता हमारी रही है न कि सम्भावित ग्राहकोंकी। आज वे कुछ भी खरीदते और काममें लेते हैं।

लेकिन वे सदा हमारे साथ ह। अगर हम आसपासके स्थानाकी आवश्यकताआका अध्ययन करें तो हम असी खादी तयार करेंगे जो अनुकी रचिबे अनुकूल हो और अनुका ध्यान आकर्षित करे। खानी वापकनाआन अबसे पहलू गहरवालाके खातिर यह काम सफरनापूवक बिया है। क्या अब वे अपना ध्यान देहाती जिलाकात्री तरफ मोडेंग ? लागाका खादीसे विमुक्त करनवाणी चीज खादीकी महगाभी बितनी नही है जिनती हमारी श्रद्धा और मूलवृद्धकी बनी है। अगर हममें श्रद्धा है तां हमें पता चल जायगा कि ये ही कराडा भाग जसे दूर पूवमे आनवाला बटपीम बचनवालाके अतरमें आते ह वस ही हमार असरमें भी आ सकने ह।

चरखा मधकी वायवारिणी ममितिने जा यह आप्रह बिया है कि प्रत्येक खादी-सस्या स्वावन्नी और अिसात्रिअ स्वगासनभोगी हो यह विन्कुल ठीर है। अुहें अब बेद्रकी आरमे प्राप्त मन् पर आधार रखनी जरूरत नही। बेद्राय बोपको अनु अिगकके लिअ जिनती अब तक हमन अपुगा की है मुक्त कर देना चाहिय।

हरिजन २६-१०-३५

खादीगास्त्र अुत्पत्ति और शिक्कीक विनेद्रीकरणकी माग करता है। सपत खादीके अुत्पत्ति-बेद्रके अधिनम अधिव निकट स्थाना पर हानी चान्बिे। सब प्रयत्न जिनती लिगमें होन चाहिय। हम गहराकी मागके लिअ अुत्पत्ति कर सकन ह मगर सपतके लिअे हमें अनु पर बगा आधार नहा रखना चान्बिे जमा स्थानीय विक्ती पर। हमें पहलू स्थानीय चात्राखा अध्ययन करके अमकी जरूरतें पूरी करनी हागा। और चूकि खादीके तमाम कारीगरमि और जग बहा मभव हा बहा चरगा सप या प्रामोद्याग मधकी छत्रछायामें काम करनेवाके तमाम कारीगरमि खादी अिसलमा करनी आगा रखी जायगी अिसलिअि अब अयनम निन्चन मागका नो मन् भगमा रहेगा ही। मनीगावाडू और अनन्तपुरवाके थी जगानने स्वतंत्र खादी गाया है और यह ननीजा निवाग है कि स्वावन्नी खादीका अय यह हागा कि

खादी बेदर तो हू ही। वहा कायकर्तामानो कत्तिना और दूसरे कारी गराको खादी पहननेके लिअ राजी करना चाहिय। वे अनुसे यह कहें कि अगर मुन्हें सघवे माफत काम पाते रहना है ता अन्हें खाती पहनना चाहिये। अनुमें अनका जसे हू जो कताभी बुनाभी धुनाभी या रगाभी पर रगाभी हुभी अपनी मेहनत पर ही अपने गुजारेके लिअ पूरी तरह निभर करते हू। अगर व अतिरिक्त खाती तयार करते हू और जिस मालकी विश्वा चाहत हू ता खुद मुन्हें तो बेवन् खाती ही पहनना चाहिय। यह कठिन नही होना चाहिय अगर कत्तिनकी मजदूरी बढ जान पर खादीकी मौजूदा माग बनी रहे।

यवहारमें सारी मजिठें साथ साथ तय होती रहेंगी। नजी योजना जितना ही करती है कि ठीक जगह पर जोर देती है और लभ्य क्या है यह असन्दिग्ध भाषामें बताती है। खादी-कायकर्ता अब बिनी बढान और खादीका मूल्य घटान पर सारी शक्ति नही लगायेंग। वे आगसे जिस बात पर ध्यान केंद्रित करेंग कि लोग कमसे कम कताभीकी हद तक अपनी कपडेकी जरूरतके बारेमें स्वावलंबी बन जायें। मुन्हें कारीगरोके साथ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करना होगा अनुसे मित्रता करनी होगी जुनकी आवश्यकताओं जाननी हागी और सबको समान अवसर देत हुअ अनुके अवकाशका भरसक सदुपयोग करके त्रमग अपनी आर्थिक स्थिति सुधारनमें अनुकी मदद करनी होगी। अधिकसे अधिक महत्वाकांक्षी कायकर्ताके लिअ भी यह काफी अच्छा कार्यक्रम होना चाहिय। सबसे मुश्किल काम अक ओर तो यह होगा कि करोडो लोगोके ज्ञानचक्षु खल जाय और वे अपनी ही भलाओके लिअ अपनी फुसतका समय काममें नैनको राजी हा जाय और दूसरी तरफ ग्राहको—गहरवासियो और दकालोको यह महसूस कराना होगा कि अगर वे देहातका घना माल खरीदेंग तो अतमें मुन्हें फायदा ही रहेगा भन्ने ही स्वच जाहिरा तौर पर मामूलीसे कुछ ज्यादा पड जाय और दीखनमें भी माल अनुकी अब तककी आदतके बिल्कुल माफिक न हो। फायदा जिसलिअ रहेगा कि जिससे लोगोकी माली हालत सुधरेगी और अनुकी खरीदनकी शक्ति भी बन्गी। जिसलिअ

नकी याजनाका हेतु यह है कि जाति रग या धम के भदके बिना समूचे राष्ट्रकी अुत्तम शक्तिपाका अनुपयोग हो। अतमें प्रश्न यह रह जाता है क्या अिम कामक लिअे हमार पाम आवश्यक गृद्धता त्याग परिश्रम और बुद्धिवाक काका वायवर्ता ह ?

हरिजन ३०-११-२५

६६

### देहातके लिअे खादी

शान्ति-वायवर्ता अच्छी तरह समझ लें कि शान्तिका वाय गहरा तक ही सीमित नहीं रहना है अुम करोडा ग्रामीणामें पगाना पडेगा जो अनक आह्वानको मुननेकी राह दान र ह। गहरामें ता अनिरिक्न शान्ति ही जायगी। अमका बहुत बडा लिस्मा खु ग्रामीणाका ही बनाना और काममें रना हागा। ग्रामीणा तक पडचनेका सही तरीका यह है कि अुनकी अपनी क्षापडियामें हा जमकर अकाश्रनामे काम किया जाय। अिमलिअे गहराकी बिश्रीम खाका वायकी प्रगतिका पता नहा लग सकता। शान्तिक भावी आकडामें यह लिखाना पडेगा कि देहातमें कय प्रनिवध क्या प्रगति हुभी। अगर देहातमें सादीके फलाके लिअे बहुतसे वायवर्ताओको मुक्त करना है ता हमें गहरामें अपना परिश्रम पदाना पडेगा।

हरिजन ७-१२-२५

मैं वायवर्ताओका मुसाअुगा रि अब चुनि शान्तिका मच्चा मदेग अुनकी समझमें आ गया है अिमलिअि अहें शान्ति-सवर्वा तनाम काम अेरभाय हायमें रने चाणिय। आरम कपाम अुगानम किया जाय। अुमके लिअे कपासरी शान्तिका अच्छा जान जाना चाणिय। अुगतक कामके लिअे अुगनग मभी जगह कपाम अुगाना समक जाना चाहिय। समारकी अरत पूरी करनकी महत्वावाशा हा तो ही सबसे अनुकू मूमिमें



शक्ति केन्द्रित करना जरूरी होता है। तबिन जब गावकी आवश्यकता पूरी करनेकी महत्त्वावांशा हो तब अलग अल्टी बात गावू होती है। ग्रामीण किसानके अति बाफी कपास खतने अक कानमें आमानीसे अुग सक्ती है अथवा सहयोगसे गाव अपन अिअ कपाम अुगा सक्ती है। अगर असा किया जाय तो यह समझना आसान है कि लागत या टिकाअूपन किमीमें भी अिस तरह तयार किया गय कपडकी बराबरी कोअी बाहरसे मगाया हुआ कपडा नही कर सक्ती। अिस प्रक्रियामें शक्तिका अधिकसे अधिक सचय होता है।

हरिजन २०-४-३५

खुद कतिनाके द्वारा या लगभग हर गावमें कपास अुगाये बिना स्वावलंबी खादी कभी सफू नही होगी। अिसका अथ यह है कि जहा तक स्वावलंबी खादीका सबध है कमसे कम वहा तक कपासकी खतीको विकेंद्रित किया जाय। अिसक अिअ हमें जिन गावाकी सेवा की जाय अुनका जनगणनाकी जरूरत होगी। क्याकि प्रत्यक कान या वननवालेके पास (छोटासा भी) अमीनका टुकडा असा नही है जहा वह कपास अगा सके। स्वावलंबी खाती ही असी योजना है जितने लिय चरखा सधका अस्तित्व अचित माना जा सक्ती है। यह असा क्षत्र है जिसमें सधन किसी अल्लेखनीय पमान पर अभी तक कोअी काम नही किया है।

हरिजन २७-७-३५

जब कोअी पन्थ शक्तिगत अुपयागके अिअ तयार किया जाता है तब अक ही परिवार या अक शक्तिमें सारी प्रक्रियाअका जितना अधिक केंद्रीकरण होता है समय और धनकी किफायत अुतनी ही अधिक होती है। अिस आशुमीके पास याडीसी असी अमीन हो जिसे वह अक पयाप्त अवधिक लिये ही अपनी कह सक्ती है और अुस पर रोज काम करता है असे फुसतके समयमें अपनी या अपन आदमियांकी मेहनत भरमें जरूरतकी खादी मिल सक्ती है। अुसे यह दिखानकी कि हरअेक आदमी लगभग मपतमें अपनी खादी कसे बना

प्राप्रयाम अधक समय लगता है। अगर बीजा आदमी अपने लिए आदता पाजता और कातता है जो वह आसानीसे कर सकता है तो उसे लगभग उसी कीमत पर अपनी खादी मिल जाती है जितनी कीमत पर मिल्का कपडा। किसी पदायकी गगत उसके उत्पादन पर खच किये गय धमका कीमतमे गिनी जाती है। अिसलिये जब सारा धम स्वय अपभोवताका ही हो और वह भी फुरसतके समय किया गया हो तब लागत लगभग कुछ भी नहा होनी। स्वावलंबी छाणी विचौनियाको त्रिभुज अडा देती है। यह गावाके करोडा अधभूल लोगाकी आमनी प्रत्यय रूपमें ध्यानका सबसे सरल अुपाय है।

परतु क्या ग्रामवासी कभी स्वावलंबी खादीको अपनायगा? हा यदि हममें रूढाके साथ साथ बानिक कौगड हा या जमी सजीव थरुडा हा जा पहाडाको हिंग द और हम मजदूरको अुसके कामके लिये आवश्यक सारी कुगन्ता प्रदान करें। यह वाक कठिन है। परतु कठिन हा या आसान अुसका अभी तक किसी बडे या सगठित पमाने पर अथवा किसी सुकल्पित याजनाक अनुसार प्रयत्न नहा किया गया। जब तब कौत्री सुकल्पित भारतवापी प्रयत्न गावडालाको यह शिक्षा लनवा न होगा कि वे अपना कपडा आप तयार कर लें और अिस तरह अुनके देहातमें जो थोडी-बहुत सपत्ति बाकी है अुसका अनावश्यक रूपमें यहामे चंग जाना रोका नही जायगा, तब तक चरमा सधवा अस्मिन्व अुचिन नहा माना जायगा। कारण, जमा म कुछ समयसे अिस पत्रमें आग्रह कर रहा है खादीका गदेग यही है कि स्थानाय अुत्पादन और स्थानीय अुपयोगक द्वारा वह देहातमें सबत्र पाम आन लग। प्रत्यक गावमें अुन गावामें भी जहां पहले कपाम कभी नही बात्रा गत्री हो कपामदरी खती कराकर बायारभ करना पडया। कपामकी सतीव विवेकीकरणके बिना देहातमें छाणीकी गावत्रिक अुत्पत्ति

सम्भव नहीं होगी। हमारे पास अगले प्रामाणिक अनुकरण है कि जमीनके विवेकपूर्ण सुधार और समाजके मरस्यल भी लहनेके अर्थान बन गये हैं। अिससे प्रत्येक ग्राममें वहीके अनुयायक अिअ काफी वृत्त अगा केना सम्भव नहीं होना चाहिये। अिससे सादी ग्राम वासियोंके लिये सस्ती ही नहीं हो जायगी परन्तु रागीका टिकाअपन भी बढ जायगा। अनुभवने अंतिम रूपसे प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया है कि मूलकी मजदूरी और पदावार पर काममें लानी जानवाली रानीकी विस्मय और वृत्तको चुनन साफ करन ओटन धुनने और कातनकी पद्धतिका प्रभाव पढता है। जिस रानीसे ढाकाकी प्रसिद्ध मलमल तयार हो सकती है अुरा पर होनवाली समाज प्रक्रियाओंमें कोमलता रहनी चाहिये। तभी वह जीवनमें बदली जा सकती है।

हरिजन ३-८-३५

## ६७

### तकली

गावमें वृत्त सबधी स्वावलम्बनका सदेव पहचानकी कोशिश करन वाटे जो अनेक कायकर्ता भारतके भिन्न भिन्न भागोंमें काम कर रहे हैं उनसे मैं अनुरोध करूंगा कि वे कताअीके साधारण रूपमें तकलीकी निहित शक्तियों पर अपना ध्यान लगायें। वधके सत्याग्रहाश्रम और वसी ही दूसरी सस्थाअके निवासियोंके प्रत्यक्ष प्रमाण देकर लिखा दिया है कि साधारण कातनवालेके लिये तकलीकी उत्पादक शक्ति यदि असेसे ठीक तरह काम लिया जाय हर प्रकारसे चरखके बराबर है। जो शक्ति बिलकुल कमजोर नहीं है और जो अवकाशके समय और कामाअीका हेतु न रखकर कातना चाहता है असेके लिये तकली चरखका स्थान पूरी तरह लेनमें समथ है। अिसलिये कायकर्ताओंको तकली चरखका नया तरीका सीखकर देहातमें चरखके बजाय असे जारी करना चाहिये। बूदा और दुबलके लिये फिर भी चरखा आवश्यक होगा।

कारण यत्रगास्त्रके सिद्धांतके अनुसार चरखा 'लीवर प्रणालीसे चन्तवाली तकली ही है। और जसे किसोकी मासपेशियामें हाथसे वजन जुठानका सामर्थ्य रहता उसे जिसके लिजे किसी 'लीवर की सहायताकी जरूरत हागी वसे ही जो अपना ह्यूमेलीकी मासपेशियामें तकलीकी गतिमें जरूरी तजी नहीं ला सकता या सतत अपना हाथ ऊँचा-नीचा करनका जोर बर्दाश्त नहीं कर सकता उसे चरखेकी जरूरत हागी।

हरिजन २२-३-३५

६८

### घनुष तकली

आप जानते होंगे कि मैं मामूली चरख पर अच्छा कात सवता हूँ। मगर मैंने घनुष तकलीको ही काममें लेनेका नियम बना लिया है और अब मैं उसमें लगभग प्रवीण हो गया हूँ। कारण यह है कि जहाँ लक्ष्मीदासभात्री २५ गल चरखाकी फरमाजिग पूरी नहीं कर सकते वहाँ अतनी घनुष तकलिया तो लाग खुद ही बना सकते हैं। वह बनानेमें बहुत आसान और बहुत सस्ती है उसमें बहुत कम सामान चाहिए और लगभग कुछ भी बारांगरी नहीं लगती। यह गन्त नीति है कि पंजाब या दक्षिण भारतमें बेजनेके लिजे चरखे गावर मनीमें तयार कराए जाय। वे सब जगह स्थानीय रूपमें बनाये जान चाहिये और अिस कामके लिजे घनुष तकली ही ठीक चीज है। अिसका सवत्र प्रचार हानसे अत्यन्त खूब बढ़ जायगी।

हरिजन २२-३-३५

## तीन जरूरी बातें

यह मान लें कि करोडा लागामें अच्छा तो है ता फिर हाय कताओका साध प्रचार नीचे लिखी तीन बानाओ अपनाणे पर हा सभय है

१ कपास अगर अपनी गुदकी जमीन पर बोओ गओ हो तो बहुत अच्छा न बोओ गओ हो तो बिना ओणे हुआ कपास निकटतम स्थानसे लायी जाय और बुसका अिस्तेमाल किया जाय ।

२ अुसे चिकनी पट्टी पर किसी ठोहे या चिकनी लवडीकी सहाओसे ओटा जाय और स्थानीय बने हुआ लकडीके चाकूकी मददसे अगुलियों द्वारा धुन लिया जाय । अिस प्रक्रियाको तुनाओ कहते ह ।

३ पूनिया धनुष तकली पर बानी जाय ।

हाय घरखिया आज कहते ही नहीं बनाओ जा सकता । जितनी भी बिना ओटा ओओ मित्र सकती है अुसे काम न २ में समझायी गओ पद्धतिसे पहले तैयार कर लेना चाहिय ।

जहा बिना ओटा ओओ अपलक्ष न हो वहा कारखानामें ओटी हुआ ओओ अिस्तमाल करनी हागा । अिसकी भा तुनाओ हो जाता है यद्यपि जब गाठका ओओ कामम ली जाती है ता अुस तुनाओ पद्धतिसे धुननमें बहुत अधिक समय लग जाता है । जहा धुनका मिल सकता है वहा ता स्वभावत वह काममें ली हा जायगी । लकिन जो बात ओटाओके लिअ सची है, वह धुनाओके लिअ भी जुती ही सही है । क्षणभरमें धनकी ओर तात तयार कर लेना सभव नहा है । तुनाओका पद्धति श्री बिनोबान निवाओी है ओर अुसे वे अक कलाकारकी कुशलता ओर अत्सात्से पूण बना रहे ह ।

जब कताओ करोडा लोगोमें फल जायगी तो किसी केन्द्र या वेदरासे पूनिया पहुचाना असभव हागा । परिवार या समूह अधिकसे अधिक यह कर सकते ह कि धुनाओके लिअ अक निश्चित सख्याके पीछ अक या दो आदमी अलग रख दें । आदश जुत्तम ओर अन्तमें

सबसे जल्दीका माग यही है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपनी पुनिया बनाये। जिसमें कताथी निलचस्प हो जाती है और त्रियाओकी विविधताके कारण कामकी नीरसता मिट जाती है।

हरिजन २२-२-४२

७०

## बम्बयीका खादी-भंडार

बम्बयीका खादी भंडार चरखा मधका सबसे बडा खादी भंडार है। चूंकि खादीके सबसेमें नयी नीति अपनाओ जा रही है जिसलिओ नयी नीतिकी आवश्यकताके अनुसार कमचारियाकी सख्या घटाओ जा रही है। श्री जराजाणीओ अपनी गोधक बुद्धिसे सोच-मोचकर नये नये डिजाइनानी खाता बहा मगवात ये भारतवपके तमाम भागामे आयो हुओ जिस खादीकी विक्री बडानका अमाधारण प्रयत्न बहा हाता रहा है। परंतु जिस प्रयत्नके फवस्य-सख जितना अधिर बन गया कि अमकी तुलनामें दरिद्रनारायणकी दृष्टिसे परिणाम बहुत कम आया और जिसमे प्रातीय कायकर्ताओका ध्यान अपन मुख्य कायसे हट गया। जनका काम तो यह था कि वे खादीको अपन अपने प्रांतमें स्वावलंबी या लाभप्रिय बनायें। खादीका नावत्रिक मिशन सच्चे प्रांतीय प्रयत्नक बिना पूरा नहो किया जा सकता। यह खादीका ययामभव असह्य जुत्पत्ति-वेडामें बाटनसे ही हा मवता है। बाक कुछ खादीकी जम्हरत बम्बया जम बड नगरामे जिओ मदा रणेगी क्याकि व सुद अम कमी पदा नही करेंगे। यह जब स्वस्थ माग हागी और वह अमाधारण प्रयत्नक बिना पूरी की जा मवेगी। गहरकी खादीका दुकानामें हमें जा तरह तरहके नमून दियायी गत ह व जिसीजिअ मभव हुआ कि मधन गहरी जनताकी विविध रचियाका पूरा करनेकी यागिण का। परंतु यदि खादीका अपना मिशन पूरा करना है तो यह समय आ गया है जब जुत्पत्ति वेडोका तरफ ध्यान माग जाय। परंतु वे बहुत हा

पाठ है। जसे प्रत्येक पर पराय हूअ भोजनकी अत्युत्तिका केन्द्र है अुसो तरह प्रत्येक घरको नही तो प्रत्येक गावरो साणीकी अत्युत्तिका केन्द्र बनना पडगा। रसोत्रीघरकी अयव्यवस्था जिताबाकी अयव्यवस्थासे बिक्रु मित्र है। साणीकी अयव्यवस्थानी भी यही बात है। तब प्रस्तावित परिवर्तनका अर्थ यह है कि चरखा सघव द्वारा या असकी तरफसे चंगाय जानवाल बड भडारनि कमचारियामें काफी बमी की जाय। जिसका यह अर्थ भी है कि प्रमाणित खानगी अत्याव दित कुल खतम चाहे न किय जाय पर अनकी सह्या जरूर कम ही जाय।

हरिजन १०-८-१३५

## ७१

### कताओके पहले और पीछेकी प्रक्रियाअें

कातनेवालेको कताओके पहले और पीछेकी सब प्रक्रियाअें स्वयं करनी चाहिये। अर्थात् अुसे बुनाओ तककी सारी प्रक्रियाअें करनी चाहिये। यही स्वराज्यका भाग है। अब तक हम सिर्फ 'यापारिक खादा बनात रहे ह। 'यापारिक साणी हमारे लिअ बच्चाकी गाडी थी। असन हमें चाना सिखाया। अब भी वह वहा है। पिजाओ और दूसरी क्रियाअ औरासे करा लेना बच्चाका चारुनगाडीकी तरह या और अब भी है। जैसे जसे हम जिन सहारोको छोडते जा रहे ह हम स्वराज्यका साणाक नजदीक पहुच रह ह। चरखा सघव अत्युत्तिकाके अंशमें यदि पिजाओ वगराका प्रक्रियाअें अलग अलग का जा रही ह तो यथा संभव यह सब अब बंद कर देना चाहिये। समसौतेके बिना मनुष्योका काम नही चल सक्ता। य सहारे चालनगाडी जैसे ह। जिसलिअ जितना जल्दी संभव हो जुहें छोड देना चाहिये। जिसका जिसमें विश्वास हो और जो जिसके मूलाय समझता हो वह जिहें छोड देने वाला पहला आत्मी हागा।

कि आशुविद्यालयाजी आफ दि चरखा' पृष्ठ ९२ ३-४-४६

## नयी योजना

खादीकी कथित नया योजनाको पाठक पूरी तरह समझ लें। म अिमे कथित अिसलिज कहना हू कि जा कुठ आज किया जा रहा है वह तो लाजिमी चीज है वगैरे कि खानीक द्वारा ही ग्रामीणाकी कपडकी जरूरत पूरी करना हा। और खादीक वारेमें यह बिचार तो धुम्स ही रखा गया है। खादा सिफ गहरके लोगाके अिमे ही कभी नहा सोची गयी थी अुमवा अह्म्य देहातियाका खून चूसना नहीं था जमा कि गहरके आगाका जिदा खनके लिअ आज हा रहा है। खानीकी कल्पना गम्से यह रही है कि यह क्रम अग्ट दिया जाय यर्थाप अुसमें गहरकामियाका खून चूमनका अह्म्य विरुद्ध नहीं है। अिस क्रमको अलट दिया जाय तो गावा और गहरामें फिर स्वाभाविक संवध कायम हो जायेंग। गहर जग्गेजाने आनसे पहल भी ये। तब भी हालत काफी खराब था। अब तो वह और भी खराब हो गयी है। कस्य गहर बन गय। और गहर अपने भारतीय कग्गेडपतियाके होते हुअे भा मुख्यत अपज माटिकाका ही हित-आधन करने रहे। खादीका अुद्देश्य अिसी गमार बुराअी ना भिगाना है। मिलका कपडा ग्रामीण भारतकी गुणमोका चिह्न है अुमी तरह खानी अमकी आर्थिक और राजनीतिक आजातीकी निगानी है या हानो चाहिय। अगर खानी असी नहा बन मरती तो खाना निरखक है। अिनीलिअे खानीके विभागकी प्रमियामें जा भी अच्छा परिवतन किया जाय, वह स्वागतक योग्य माना जाना चाहिये। अमी तब जा विवाय हाना रहा वह यद्यपि अछा माकूम हाना था फिर भा अममें यह दाप था कि वह ग्रामकामियाके लिअ जितना चाहिय अतना लाभप्रद सिद्ध नहा हुआ। अुहान मूत काना और खानी बुना परतु मु



असुखी अस्वयोग करता रहा गोता। वे गाँधीक अस्वयोगमिन्नवा  
 गौरव और महत्त्वरो न ता ममता पाप और न अस्वगत अगरी कर  
 की। शमूर अनया नहा था। कायकर्ता स्वयं रहा ममता थ। मर  
 वागता गाँधी पहनकर प्रायचित्त करता पडता था। वे चर रूप  
 यान्त सच करण अगि तरहता प्रायचित्त करीनेक तयार थ  
 क्याकि वे अिनन रूप जगानीग बचा मवन थ और बन्में रेग  
 भवन पहन्ता थ। परतु चरगा-मप गाँधीकी बुनियाती हा अपना  
 करके अपन जीमानर गिनाप क्याकर जा सक्ता था? अिमलिअ  
 वह अब अपने सारे माधनाका जपयाग ग्रामीणाता म्वाणीधारी बनानमें  
 कर रहा है। पुर्तली तीर पर वह अिसाती गुम्भात हाथ-वने मूतवे  
 वातन और बतनवालास कर र्ना है। अगर यह प्रकृति मफूठ हुआ  
 और हागी ही ता गहरा जोर कस्वाके बाजारामें कुछ ही समयके  
 वा विपु गाँधी मिन्न लगगी। फिर ता भारतमें अबमात्र कपडा  
 गाँधीका ही मिल् सवेगा। चरगा सध य परिणाम अानके अिअ  
 मेहनतमे काम कर रहा है। अगर खोजमे यह जाहिर हो जाय कि  
 खातीमें अमी कोअी गकिन नही है तो अुस अपना अिवाअियापन  
 घोषित करनमें कोअी सकोच नही हागा। पाठनाको या रहे कि यह  
 असा गास्त्र है जिसे अिस यत्रयगमें चाअीन करोड गोगाके मनमे निब  
 टना है। अिस तरह सोचा जाय ता यह अज जवरस्त समस्या है  
 अगरच साय ही वह मनोहर और अिचस्प भी है। अगर हार हुआ  
 ता वह भी हार नही होगी। यह समय लेना चाहिय कि यह अस  
 अधकारमय यगमें वापस जानका प्रयत्न नहा है जियमें चरगा अम  
 लोगाकी दामताका चिह्न था। जब भारत चरवके द्वारा अपन अधन  
 तोड फेंकनका प्रयत्न करगा तो सचमुच ही वह मनुष्यकी समयदारीका  
 अर्थात् भारतकी आत्माकी विजय होगी। स्वतन्त्र मनुष्य वही रोनी  
 खाता है जो गुगम खाता है। अकिन अब आजादीकी रोटी खाता है  
 दूसरा गुगमीकी।

परतु यदि गहरोके निवासी और कस्वाके निवासी चरखके गभ  
 सदेगका सुनना चाहें तो वे अपना समय घुडदौडका जआ खल्कर

या अपने बन्धुधरामें शराव पीकर बरवाद करनेक बजाय खुशीस  
 खुस पिजाओ कताओ और बुनाओमें लगायेंग। और अनुक वच्च ?  
 वे भी अपने माता पिताके लिअ भारतकी आजादीक लिअ बान करते ह  
 और भारतका जिन ढगकी निभा चाहिय वह प्राप्त कर सकते ह। जब  
 म राममें था तब मुसालिनीके कमचारियान गवके साथ मुझ छोट  
 बच्चाके नाविक दाव-भेच दिवाये थे। अनु बच्चाको नौविद्याकी ह  
 तरहकी तरकीबें सिखायी जा रही था। और अघर अग्रज बच्च भी  
 जिस चीजकी अिलषको जरूरत है अनु अपनी मानमापाक द्वारा  
 मौखनके सिवा और क्या करते ह ?

चरणा सघके विधी भडाराका अुपयाग अब पहलेसे ज्याग अ-ठ  
 कामके लिअ किया जायगा। वे आगाको कताओ और बुनाओकी  
 गारी तरकीबें सिखायेंग। मुझे आगा है गग जिन कामाना सीपनके  
 लिअ अितना महयामें पहुचेंगे कि बहा अनुको भी लगी रहेगी। बुहान  
 अमा किया ता अनुहें अपनी जरूरतकी तमाम खादी मि जायगी। जहा  
 चाह होती है बहा राह निकल ही आती है।

हरिजन २१-७-४६

७३

## सादीका नया युग

सादीका नया युग समाप्त हो गया। सादीने गरीबके कामके  
 लिअ कुछ करके लिया लिया। अब हमें यह लिखाना होगा कि गरीब  
 स्वावन्त्री बने बत सकते हैं। सादी अहिंसाका प्रताक बने बन सकती  
 है। यही हमारा अगली काम है। अिममें हमें अपनी अढारा प्रत्यक्ष  
 प्रमाण देना होगा।

दि आश्रिडियागरी आप दि चरणा पृ० ९४ चरणा अपनीका  
 अगस्त १९४७।

## सम्मेलन\*

१

## खादीके बारेमें नया दृष्टिकोण

दो सत्रके लंबे अरसेके बाद १९४४ में गांधीजी तथा चरखा सघके हमारे कुछ ट्रस्टी जगसे रिहा हुए तब १ २ ३ सितंबर १९४४ को सेवाग्राममें सघकी सभा बरगामी गयी। सभामें तीना दिन गांधीजीन जो महत्वपूर्ण भाषण दिये अउनका साराग यहा दिया जाता है।

पहला दिन ता० १-९-४४

जलमें मन खादीके बारेमें काफी विचार किया और जिस नतीजे पर पहुँचा असे सक्षपमें कहूंगा।

सबसे बड़ी बात जो मन जलमें पायी वह यह थी कि मन देखा कि चरखा सघकी हस्ती मिट सकती है। सरकारन असे मिटानकी काफी चेष्टा की है। हमारा काम कुछ-न कुछ चरखा तो रखा लेकिन मन देख गया कि सल्लागत चाहे तो हमें नाबूद कर सकती है। यानी मेरी जो कल्पना रही कि अिस देशमें चरखकी प्रवृत्ति तो किसी हालतमें नाबूद नहीं हो सकती वह सिद्ध नहीं हुयी। म जल्दीस हार कबूल करनबाग आदमी नहीं हूँ लेकिन जल ही में मन पाया कि हम सरकारकी दया पर जीते ह। यह बात मझ चुभती है।

जलमें मन सोचा कि हमारी चरखा प्रवृत्तिमें कुछ अब है, असे सुधारग होगा। मन हिन्दुस्तानको कहा चरखा चलाओ। किस तरीकेसे चलाना है सो भी म ठीक-ठीक जानता था। परन्तु जिस दृष्टिसे और जिस दिमागसे असे चरखना है अुस पर मन असा चाहिय था

\* यह सारा प्रकरण यहा यहा कुछ गान्धिक परिवर्तन करके अखिल भारत चरखा सघ द्वारा प्रकाशित चरखा सघका नवसंस्करण नामक मूँ हिंदी पुस्तकमें से लिया गया है।

बना जा नहीं सिया। मैं अन्नेको व्यवहार-कुशल मानता हूँ। व्यवहारक पहुँ पर हा भव मायी तार दत रह। युस मैंने बरणात्र किया। अममें मैं माय भी गता रहा। आज अब मैं सिर्फ अितना हा बहता छ कि चरखा चलाओ ता हमारा काम नहो चलागा। अब हम काफी चर खाये हैं।

मैं माचता रहा कि अब आगे क्या काम चलाया जाय। मैं दता कि जब तक हमारा चरखका पगाम हम घर घर नहा पहुँचात तब तक हमारा काम अधूरा हा है। यही कारण है कि हम अन्न आगम अभी बहुत दूर हैं। मात लान दहात पडे हैं। अिनमें क्या गतात अछ होंगे अिनको हमारी चरखा प्रवृत्ति क्या चीज है अिसका पना नहीं है। यहा हमारा अब है। अिस बात पर आप विचार करें। अिसा विचारधारामें न विवेकाकरणको बात निकला है। आर हम चान्त ह कि खादी फल और अुसको जड मजबूत बने ता हमें अिम कामका विवेकाकरण करना होगा।

अम पर अिगजाम लगाया जाता है कि चरखा मधवाले ग्रामो छाग मधवाग गाधावाग मव जड होने हैं। लोगका अुन पर अिदा है अिन व जनताका दणक मव हालात टोक तरहस नहा बता सकत। मात्मका माहिय हमारे वाचमें आ रहा है। अिन बाहर गक्तिमाके प्रभावक आमने व टिक नहीं सकत।

जब हम अयनको अहिमाके पुजारी बतलाने हैं तब हम अहिमाकी गभिन क्या है यह बतला न सकें ता हम कमे गाधीवाणी? अमलमें तो गाधीवाग जमी कोधी चाज ही नहीं है। वास्तवमें कुछ तो ता वह अहिमावाग है। चरखा मधका हरअक अ्यक्ति अहिमाकी जाकित भूति हाना चाहिये। अहिमावादी या गाधीवादी बहो—तेजस्वी हाना चाहिय। आज तो गाधीवाणी शम् गानी हो गया है। वह गान् स्तुति-भूचक नहीं रहा। हम अहिमाभय नहीं ह मो स्वाकार कर लें, अि अहिमाभय होने तो आज हरअक देहातमें चरखा पाने। मैं बबूल बरखा ह कि म यह नहीं कर सका। अि यह अितम मन पाया होना ता कमन कम सेवाग्राममें तो अुसका दान करवाता। अकिन अभी ता

यहाँके लोगोके हाथमें चरखा रस भी दूँ तो भी व असे नहा अपना। हम अहें ज्याण पसा देत ह, सिगाने ह अन्य काम आनि देवर लालच भी दिखते ह तरह तरहन अनकी सेवा करत ह तो भी हमें सफता नही मिठ रही है। फिर भी चरखकी दकिन परका मरा विन्वास अटल है।

यह बात नही है कि हममें त्यागी कम ह। काफी त्यागी भाभी बहन हमारेमें पड ह। मैं अनकी बदना करता हू। अब-अबकी या करता हू तो मरा हृदय भर आता है। मेरी आत्मा कहती है कि जहाँ अितने त्यागी कायकर्ता पड ह अुस देगवी अवनति हो ही नही सवती। परंतु अितना त्याग होने हुआ भी मुत्वकी आजागी नही आगी। आजादी आ तो रही है कदाचित्त हम मानते ह अससे कही अधिक जल्दी आ रही है। लकिन अससे मेरा पेट नही भरता। मैं अपन खदको पूछता हू कि असमें तेरा हिस्सा कितना? जपन लिखको मना लेता हू कि हमन यथाशक्ति प्रयत्न तो किया है। जिसलिख मं किसी पर अिल्जाम नही लगाता। केवल परिस्थिति सिवा रहा हू। परिस्थितिको अच्छी तरह पहचानना भी तो अक बडिका श्रमण है। हमने जो कुछ किया अुससे हम सतुष्ट न रहें। जो कुछ हमसे बन पाया यथाशक्ति हमन किया। परंतु जो गज हमन अपनका नापनके लिअ रखा था अुसके अनुसार सधका काम यदि हम फग सकते तो आज हममें जो निराशा-सी छा गजी है वह नही लिख पडती। क्याकि अससे हमन अहिंसक स्वराज्य हासिल किया होता।

आपके सामने अक कडा-सा नुस्खा रखता हू। अगर आप अुसके लिअ तयार ह तो मुझ भी आप अुसमें शामिल समझें। लेकिन यह अपाय अज्ञानवग नहा स्वीकारना है। वह निरे साहसकी भी बात नही है। बुद्धिपूर्वक विचार करके अस नतीज पर पहुच सकें तो ही ठीक। यदि आप टीक निणय पर पहुचे तो आप चरखा सधको बिल्कुल बंद कर देंग। असकी जो कुछ जायदाद है पसा है, सब कायकर्ताओंमें कामके लिअ बांट देंग। आगका काम चलानके लिअ अेक कौड़ी भी रखनकी आवश्यकता नही। हम सब यही मानें कि चरखा ही अन्तपूर्णा

है। अगर चात्तीस करोड जनता यह समझ जाय तो फिर चरणेकी प्रवृत्तिके लिये जेब कौडी भी गगानेकी जरूरत नहीं। फिर सलनतकी ओरसे निक्लनवाले परमानासे घबडानका कौडी कारण नहै। पजी-प्रतियाके मुहुरी ओर ताकनेकी जरूरत नहै। हम खुद ही केन्द्र बन जायगे और गेग दौडने हुआ हमारे पास आवेंगे। काम दूडनेके लिये कुहें बही जाना न होगा। हरअब देहात आजात हिन्दुस्तानका अक-अक चरित्रिदु बन जायगा। बम्बडी कठकता जसे गहरामें नही कितु सात लाख देहातामें चालीस करोड जनतामें आजाद हिन्दुस्तान विभक्त हा जायगा। फिर हिंदू मुसलमानका ममला अस्पृश्यताकी समस्या झण्ड फिसाट गलतफहमिया हगीफात्री कुछ न रहेंगा। इसी कामके लिये सधवी हस्ती है। इसीलिये हमको जोना है और मरना भी है।

आप कहेंगे यह बहुत बडा काम है। इसके लिये बडी बुद्धिकी आवश्यकता है। म कहता हू कि वह बडी बुद्धि गतिप्रियामें पठकर पठन-पाठन करनेसे मिलनेवाली नहै है। अपने हाथामे महनत करके बुद्धिका तेजस्वी बनाना है। इसीमें स युनियादी तालीमका जन्म हुआ। अिम तालीममें हाय-परक श्रमक जरिये बुद्धिका तेजस्वी किया जाता है। पुस्तकाका जगना तो नहै है किन अुनका स्थान गौण है। पहला स्थान चरणेका है। जुमकी साधनासे हा प्रामोद्योग नत्री तालीम आनि अय दूसरी चीजें पदा हुआ ह। अगर हम बुद्धिपूर्वक चरणका हासिल कर लेंगे तो देहाका फिरसे जितना कर सकत ह।

हमको देखना यह है कि हमन चरणका गाय पर्याप्त मात्रामें कर लिया है क्या? हमने अुसके पीछे काफी तपस्वियाकी है आविष्कार किय है। चरण ता बहुत बनाय किन अब असा गाल्त्री पदा करना है जा मन्नाकिसे पूरा परिचित हा। वह अने चरणे बना द जिममे आज हम जितना मूत निवालन ह अुसमे अधिक अच्छा और अधिक मूत निवाल मवें। यदि असा गाल्त्री न मिगता भी म हारनेवाला नही ह। बुद्धिसे बतना दूगा कि मेरी बान सही है। यह काम विभागसे करना है। जब विश्वास मूर्निमान हाता है ता बुद्धिके मारफत

चमकता है। यह चीज अपने आप चमकनवाली नहीं है। जब थ्रद्धा अत्यधिक बढ़ जाती है और उसको दूसरा धातन मिल जाता है तब वह चमक अटनी है। थ्रद्धा कभी गम नहीं हानी। वह आगे आगे ही बढ़ती चगी जाती है। उससे सहारेम बुद्धि तेजस्वा हाती जानी है और फिर थ्रद्धा बुद्धिवाग्वा सामना कर सकती है। हमें ध्याभ्यान नहीं देन ह सच्चा वज्ञानिक परिणाम निवाल्ना है। हम सारी दुनियाको अपनी थ्रद्धाका अज्ञान करेंग और कहेंग तुम सच्चे नहीं हो हम सच्चे ह।

दूसरा दिन ता० २-९-४४

कल रातको और आज प्रात काल काफी विचार करनेके बाद मने जेव ढाचा तयार किया है। जसा लिखा है वसा पढ़ता हू।

१ चरखकी कल्पनाकी जड देहात है और चरखा सघकी कामनापूर्ति उसके देहातमें विभक्त होनमें है। असि ध्यको खयालमें रखते हुअ चरखा सघकी यह सभा असि निणय पर आती है कि कायकी प्रणालीमें निम्न लिखित परिवतन किय जाय —

(अ) जितने कायकर्ता तयार हा और जिनको सघ पसद करे वे देहातमें जाय।

(आ) विशी भडार और अल्पत्ति-केन्द्र मर्यादित किय जाय।

(अि) जो शिक्षालय ह अुहें विस्तृत रूप दिया जाय और अभ्यासक्रम बढाया जाय।

(अी) जो सूबा या जिला स्वतत्र और स्वावलंबी होना चाहे, उसे यदि सघ स्वीकार करे तो स्वतत्रता दी जाय।

२ चरखा सघ ग्रामोद्योग सघ और हिन्दुस्तानी तालीमी सघकी अब स्थायी समिति नियत हो जो नअी पद्धतिके अनुकूल आवश्यक सूचना निकाला करे। तीनो सस्थाओं समक्ष

कि अून पर पूण अहिमाको प्रकट करना निभर है। जिसके सपूण विकासमें पूण स्वराय छिपा है।

तीना सस्याआका जान असा हाना चाहिय कि मारा राजकारण अून पर अवन्वित रहे न कि वे प्रचलित राजकारण पर अवन्वित रहें।

जिमका अय यह हुआ कि जिन तीना सस्याआके कायकर्ता स्थितप्रन-से होने चाहिये। अगर यह सम्भव न हो ता हमारी कायरेखा बदन्ती चाहिये। हमारा आग्न नीचे जाना चाहिये। आज हमारी हालत विचित्र-सी मालूम हानी है।

जिममें चरखा सघ ग्रामायोग सघ और तालीमी सघ जिन तीना सस्याआकी सम्मिलित समिति बनानकी सूचना मने की है। हमारा काम असा होना चाहिय जिसस मारा राजकारण अून पर अवन्वित रहे।

हमारी बहुत दीन स्थिति रही है। चरखा सघके कत्री लोगाने मुझस बताया कि हमें काग्रसवालामे सहायता नहा मिन्ती। आज तक हम पगु रहे ह जिमन्त्रे हम काग्रसवा मुह लेय रहे ह। मानते ह कि अगर काग्रस मन्द दे तो हमारा काम चणेगा। लकिन हममें अितनी गक्ति होनी चाहिय कि काग्रसवाउ हमारे पाम पूछने आयें कि बताओ देहातमें हम कसे काम करें। फिर चरखा सघके बाहर कौनसा काग्रसवाग रह जाता है? अगर हममें यह जान होता तो हममें आपन-आपसमें मेग रहता। दोना अक्-दूगरमें सम्मिलन हो जान। हम काग्रसवा रचनात्मक काय करत और काग्रस सरकारके साथ ग्टाअीका धारामभाआका काम करती। वे दोना परम्पर विराधी काम मालूम नहा हान।

जिमन्त्र मग बानाका हमें नय मिरेम और नय आपहमे सापना चाहिये। आज तक जिन रगमे खानीका काय हम करत आयें हैं अुगने जा गक्ति मने चरणेके मानर मानी है अुग हम सिद्ध नहा कर सकत। जिन वातवा मरे जिन्में कौत्री सनेह नहा रहा।



जो लोग यत्रवातमें मानत ह व भी हिन्दुस्तानके मित्र ह अिनमें कोश्री गवा नहा। लकिन अनमें और मुझमें दो घुवा जितना अतर है। यत्रवादियकि कथनानुमार गन्तवाले भल ही चलें परन्तु आप दहाती लोग यदि गन्तीसे भी अुम पर धरें तो हिन्दुस्तानका नक्का बदल जाय। यानी करोड। गरीब मर जाय और अक करोड तगड योद्धा यहा रहें। मुझ १२५ वष जीनकी अभिगपा है परन्तु ३९ करोडको तबाह करक जब करोड रहें — अनुचालीस करोड मस्म हो जाय यह मुझसे नही दगा जायगा। मरी तागीम तो यह है कि जो सबसे अधिष पगु है असकी रावा कट और वह चर जितन ही काम चलू। यही काय खातीके जरिय करनकी अितने वर्षोंमें हमारी कोगिग रही है। हमारा अितिहास चर वर्षोंका है। लेकिन अितन अरसमें हमन कितन परिवतन किये? यन्ि आपकी यही राय रही कि परिवतन नही करना है तो वही सही। म हार न मानूगा। आप सब भाति साच विचार कर अिसे हठ करें। अितन लोग फिर कब मित्र सकेंग क्या ठिकाना है? जो मरे दिमागमें चीज आशी वह जसीकी तसी मन आपके सामने रखी है।

अगर हम मानत ह कि चरखा ही हमारे लक्ष्यका सर्वोपरि प्रतीक है और अगर हम आजके तरीकेसे अपना दावा सिद्ध नही कर सकने तो हमें अपनी कायप्रणाली बदलनी ही चाहिय।

यह नही कि आज तक किया सो गन्त ही गलत था। जो कुछ हमने किया सत्यनिष्ठासे किया। और वह क्या कम था? थोडीसी पूजीमें साठे चार करोड रुपये दहातामें पहुचाय। दहातामें पसे पहुचानके अिधे जो खच किया वह परिमाणमें कम है। लकिन फिर भी हमार मकसदके जदाजसे काम दूसरे दर्जेका हुआ। अिस प्रकारके व्यापारी कामके नीच दब नही जाना है। जवाहरल मर पास चीनक सहवारी कायकी कितान भजी है। हम जो काम कर रह ह अुसके मवाबलमें बहाका काम कुछ नही है। लकिन कामकी हसियतसे हमन कुछ भी काम नही किया। हम सात लाख दहातामें नही पहुच सके ह। मिलाके मवाबलमें अक प्रतिगत काम हम कर पाय ह।

फिर उसे अपने कामके जिन्हे गमान क्या करें? जिसीसे मं बहता हू कि यदि हम यह परिवर्तन नहीं कर सकते तो अंक निरी पारमार्थिक सम्पाक नाते काम करते हम रह जाय। मुझ जिसमें गम नहीं मालूम हागी। अपने दावको सिद्ध करना है और यह करनेमें किसीको धोखा नहा गना है। यदि यह करना है तब फिर गकिन वसे बताना है यह माचें। परिवर्तन करनेके जिन्हे अगर आप अपने हाथसे सय बन्द कर देंगे ता अपनी गकित बढनवागी है।

तीसरा दिन ता० ३-९-'४४

हमारे कामका आरम्भ छोटीसी बातसे हुआ था। जब मन चरखका काम गुरु किया तबसे मेरे साथ विट्टल्लासभाभी और चर बहनें थी। उनको म अपनी बात समझा सका था। मगन गल्भाभा आदि दूसरे भी थे। वे जात ता कहा जाते उनको ता मरे ही साथ जाना था — मरना था।

आज कराड दो करोड आत्मी चरखके असरमें आ गये ह। चरखमें स्वराय पानकी गकित है अमा हम आज तब कहत आ रहे ह। चरखके द्वारा अितन सामों देहातके लोगके बीच काफी पैसा मा म गहुचा पाये ह। क्या आज भी हम कह सकते हैं कि चरखके बिना स्वराय नहा आ सकता? जब तक हम अपना यह दावा सिद्ध नहीं कर सकत तब तक चरखा चगाना हमार लिज अब लाचारीका सहाय मात्र बन जाता है। यह मुक्तिमत्र नहीं हा पाता।

दूसरी बात यह है कि हम हमारा यह बात करोडाका नहा ममज्ञा पाये ह। आज उन करोडामें चरखके विषयमें न जिज्ञासा है, न पान।

बादसने चरखा अपनाया था मही लेकिन क्या अुमने यह अपना खुगीमे अपनाया? नहीं बहता चरखको मरे खातिर बरदान करना है। समाजवादी ता अुमकी हनी अुडात हैं। अुसके गिगक अन्धान व्याख्यान भी दिय ह लिया भी काफी है। अुनका प्रत्यय अुत्तर हमारे पाम नहा है। म अुनको वसे विवास दिगभू कि

चरमस स्वराज्य हासिल हो सकता है। अतः वर्षोंमें ता नहा बना  
सका कि अतः अतः प्रचारण हमारा दावा सिद्ध हो सकता है।

अब तीसरी बात।

अहिंसा तो बोधी आकाशकी चीज नहीं है। अगर वह  
आकाशकी चीज है तो मर कामकी नही। म पृथ्वीमें से आया हू  
और अमीमें मुझे मिल भी जाना है। अगर अहिंसा सचमुच ही  
बोधी चीज है तो अतः दान मेरे पैर पृथ्वी पर हू अतः बीच  
करना चाहता हू। कराटा लोग जिसका पालन कर सके अतः अहिंसा  
मुझे चाहिये। जिस समाजमें कोमलता आदि गुण बसते हू वही  
अहिंसा न होगी ता कहा होगी ?

हिंसावादीके घर पर जाया तो देखोगे कि वही शरका चमड़ा  
टगा है तो वही हिरनके सींग। दीवार पर तलवार है बंदूक है।  
म बाजिसरायके घर गया हू मुमालिनीके यहा भी मुझ ल गय थ।  
तो दखा कि चारा और शस्त्र लग हुआ हू। मुझ नास्त्रोकी सलामी  
दी गयी। क्योंकि वही अतः प्रतीक है।

अतः प्रकार हमारे लिये अहिंसाका प्रत्यक्ष दान कराना  
प्रतीक चरखा है। लेकिन हम जब बसा ही काय कर बतायेंगे तब  
न वह सिद्ध होगा ? मुसोलिनीके दरबारमें तलवार थी। वह कहती  
थी — अगर तुम मुझ छुओगे तो म काटूगी। अतःमें हिंसाका प्रत्यक्ष  
दान हो सकता है। वह कहती है मुझे छोओ और मरा प्रताप दखा।  
अतः प्रकार हमें चरखका प्रताप सिद्ध करना चाहिये कि चरखके  
दशन मात्रसे अहिंसाका दशन हो जाय। लेकिन आज हम कगाऊ  
बने बठ हू। समाजवादियाकी क्या जवाब दें ? व कहत हू अतः  
वर्षोंसे आप चरखा रटत रह। आपन कौनसी सिद्धि हासिल की ?

मसमानाके वक्त भी चरखा चरखा था। अतः अतः ताकाकी  
मलमल निकलनी थी। तब भी चरखा कगायतकी ही निगानी  
या अहिंसाकी नहीं। वात्साह लोग औरतसे और नीचसे नीच  
प्राणियोंसे बगार कराते थे। बादमें अतः अहिंसा कपनीने भी वही

किया। कौटिल्यके अथदाम्त्रमें भी वही बात कही गयी है। तब ही से चरखा हिंसा और जोर-जबरदस्तीका प्रतीक बन रहा था। चरखा चलानेवालेका मुट्ठीभर अनाज या दो दमडिया मिलती थी। और अक्सरसे प्राप्त मलमल गज्रा पहनन पर भी बादशाहोकी स्त्रिया विवस्त्र दिखायी देती थी।

लेकिन आपको जो चरखा मने दिया है वह अहिंसाके प्रतीकके तौर पर दिया है। अगर यह बात अिस्के पूव मने आपको नहा कही तो वह मेरी त्रुटि है। म पगु हू आहिन्ते आहिस्ते चलनेवाला हू। तो भी म मानता हू कि आज तक जो काम हुआ वह बेकार नहा गया है।

अब चौथी बात।

बगर चरखके स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता यह बात हमने सिद्ध नहीं की है। कांग्रेसवाणोके यह बात न समझा सके तब तक वह सिद्ध नहीं होनेवाली है। चरखा और कांग्रेस अेक-दूसरके पर्याय वाची गल् बनने चाहिये।

अहिंसाके प्रतिपादनका काम कठिन है। जब तक हम अुमकी तहमें न घुस जाय तब तक अुमकी सच्चायी हमारे ध्यानमें नही आयगी। आज तक मन जो कुछ कहा सबका म समथन करता आया हू। जगन मरी परीभा करनेवाला है। अगर मेरी अिन चरखकी बातमें वह मेरी मूनता सिद्ध करे तो हज नही है। जो चरखा सदिया तब कर्गाण्यत लाचारी जुल्म बगारीवा प्रतीक रहा अस हमने आपुनिक सत्कारकी सबसे बडी अहिमक गकिन मगठन तथा अध-ध्ववस्थाका प्रतीक बनानका बीडा अुठाया है। हमन अुल्टी बात सुनूटी बना दी है। और यह सब म आपक मारफत करना चाहता हू।

य सब बानें समझ कर भी यन्ि आप नही मानने कि चरखमें स्वराज्य पानकी गकिन है तो आप मुझे छाड दें। अिनमें आपकी परीसा है। श्रद्धा न हान हूज भी अगर आप मुझ घाना

देंगे तो देना बड़ा अन्याय करेंगे। मर अतवे दिनमें आप मुझ घोसा न दें। वैसी मरी आपस विनम्र प्रायना है।

यदि आज तबकी कायप्रणालीमें दोष रहा हा तो अमुका जिम्मवार म हू। क्योंकि यह सब जानत हुआ भी म अुसका प्रमुत रहा हू। उकिन हम अब गभी-गुजरी सब छोड दें। क्या आज हम सच्चे लिखत मानन ह कि चरखा अहिंसाका प्रतीक है? जो लिखी तहसे मानत हं कि चरखा अहिंसाका प्रतीक है असे हममें कितन ह?

यह जो आपका तिरगी झडा है, वह क्या है? अितन गज चौडा अितन गज लम्बा अब खानीका टुकडा ही है न? अिसवे बन्में आप दूसरा भी लगा सकते हं। लकिन अिसमें भावना मरी पडी है अिसन भावना पदा की है अिसवे पीछे मरनकी आपकी स्वाहिा रही है। वह स्वरायका प्रतीक है, जातीय ममज्ञीतका वह प्रतीक है। अुसे हम नही भला सकन नहा मिटा सकत। अुसी प्रकार अहिंसाका प्रतीक यह चरखा है।

अिस चरखे नाम पर मर विचारका स्रोत आप गोगा पर  
। कहा रहा हू। अिस स्वावलम्बन कहो या जो कुछ कहो। राष्ट्रीय मगठन और स्वावलम्बनके नाम पर खुण पश्चिमी मुल्कोमें और अुन मल्काकी ओरसे करोडाका रक्त गोपण हो रहा है। वसा स्वावलम्बन हमारा नही है। यह तो non-exploitation का exploitation से और जोर जबरदस्तीसे भुवित पानेका तरीका है। मरा मत्तलब गल्से नहा है चीजसे है। फिर भी गदामें चमत्कार भरा होता है। गब्द भावनाको देह दता है और भावना गब्दके सहार साकार बनती है। हमारे धममें साकार निराकारका झगडा हमेंगा चलता आया है। साकार वादी सगुण भक्तिको रेष्ठ मानता है। अिस भावनाके अनुसार यदि अहिंसाकी अुपासना करनी हे तो चरखको अुसकी साकार मूर्ति — अुसका प्रतीक — मान कर जसे आखाके सामने रखना चाहिय। म अहिंसाका दगन करता हू तब चरखका ही दगन पाता हू। जो निरा कारवादी है वह तो कहगा वृष्ण कौन है? वह तो पगडाकी चोटी पर और आसमानके बादला पर पर रखकर चरनवाला है। हम पध्वी

पर चलनेवाला हूँ। हम हमारी मर्यादाका समझकर चुन लेते हैं कि असी कौनसी चीज है जो हमारे गिज साकार श्रीस्वरका — हमारी अमृत श्रद्धा और भावनाका — प्रतीक हो सकती है। यदि आप इस सत्यका दान कर सकने हूँ तो मेरे कथनकी दृष्टाको समझ जायग। जाजूजीस भी अितनी दृढतासे मने आगे कभी वातें नहो की थी। जेराजानी कहते हूँ म जल्दबाजी कर रहा हूँ। निन्तु चरखकी मरी अुपासनाके पीछे जो भावना है अुमको अपने दिलाम म्यान दिये गिना सौ कपमें भी अहिंसाका दान न हागा। मुझ चरखमें अहिंसाकी गकिनका जो दान हुआ है वह आप जब मराना हूय केर अुसके पास जायेंगे अुमे घमायेंगे तभी न हागा? अिमलिअे कहता हूँ कि या तो मुझ छाड दो या मेरा साथ दा। अगर मेरे साथ चलना है तो म आपको याजना दूगा सब कुछ करूंगा। अगर अभा आप सब समझ नही पाय है तो सारा दिन आपक साथ करूंगा। बिना समझ कहेंगे कि समझ गय तो घागा लायेंगे और धावा देंगे। हमन कोओ गिवजीवी बरात जमा नहा की है। हम अम पामर धा ही बन गय ह जो कम भी खल-मूख टुक्क लिअ प रहेंगे। दामें सवाके काम द्वारा पड हूँ अनेको माग मौजू हूँ। मेरी श्रद्धा मुझ अूच ल जायगी आपका नहा। अिमलिअे धात्वमें मन रहिय। मुम अपना रास्ता काटन दीजिये। यदि यह भाविन हुआ कि म धात्वमें रग मरी चरखके विषयको मायता निरी मूर्तिपूजा थी तो या ता आप अुमी चरखकी श्रद्धियामे मुझ जगयेंगे या ता मैं ही खु अुम चरखका अपन हायास जगजूगा।

अगर चरखा सधको मिटाना है ता अपन ही हाया अुम बद कर दाजिये। अिममे मारी धकट अपन आप मिट जायगी जम मूरजक साधन आम। फिर अिम चरखन हमें रोष रखा है — फमा रखा है यह बद लागाके हायमें रह जायगा। तब गाय अुनके हाया बड अब बडा गस्त्र भी भाविन हा। अगर आप अुम मूवनामरी चाज मानने हूँ तो म अब मूरता-सध चलाना और हिदुमनामको गिराना नहा चाहता। अगर आप अिम चरखमें स अहिंसाका दशन करा सरेंगे तो फिर आपका चरखा गिफ चलगा नहा वन्कि दौडन लगगा।

म नहीं ले जा सकूंगा। चुनि ममीनी जन्म प्रामावी मेदा और भुत्यान है असल्लिअ यन्नि सचालन और कायकर्ता अन्ग अन्ग मधामें सच्च हृदयसे काम करत हाग तो भी व स्वच्छापूवक अवसाय बठ कर सब कुछ जरूर साचेंग ही। यह भी साचेंग कि चरगा मधवा काम क्या रका? बोधी कहगा कि काम तो बोधी रका नहीं है। १५ हजार दहातामें मधवा काम फग साठ चार कराड रुपय गरीवामें बाटे गय। यह सब तो ठीक है, पर जितनसे हमें सताप न होना चाहिये। बल्कि यह बात हमें चुभनी चाहिय कि अभी तक हम हमार कायवा केवठ अक सौवा हिस्ता ही अन्ग कर पाये ह।

वहा यन्नि चरगा मधवा काम करनवाला कायकर्ता हागा ता वह केवल खादीका ही विचार नहीं करगा किन्तु ध्यापक अथमें वह ग्राम-अुद्योग गोमवा आदिका प्रतिनिधि बनेगा। असा न हो कि कायकर्ता अिन सब कामाको अपने क्षत्रके बाहरके मान कर अपन पर यह अक नया बोझ पड रहा है अैसा मान ले। यन्नि अैसा हुआ तो हमारी दृष्टि और नीति अर्हिंसक नहीं रहगी। कायकर्ता असा हो जो गावमें जाकर अिन सभी कामामें—यानी गावके समग्र जीवनमें ओतप्रोत हो जाय और अिन सब कामाका कुछ भी बोझ महमूस न कर।

जाजूजी—असे कायकर्ता कही गासेवा मधकी ओरसे कही ग्राम-अुद्योग मधकी ओरसे कही सात्रीमी मधकी ओरसे और कहा चरखा मधकी आरमे हो सकत ह।

बापूजी—अिसीके मानी हुजे सब मधका जेकीकरण और सम्मिलित नीति। अिसमें कायके नियमनकी बात नहीं है सबके सम्मिलित नतिक प्रभावसे और अक समग्र दृष्टिम काम करनेकी ही बात है।

जाजूजी—चरखा मधमें यापार विभाग और जनसवा (welfare) विभाग क्या अलग अलग चगन हाग? गावके सार कामाका असी समग्र दृष्टिम चगन और मागदगन करनके लिअ अिन कायकर्ताअिसा नियमन भी मर लयाल्से सब मधकी सम्मिलित समिति द्वारा हाना आवयक होगा।

बापूजी — मेरा खयाल ठीक वसा नहा है। जब बार सधोंकी सम्मिलित समिति मिल कर यह साब सक्ता है कि कौनमी व्यवस्था ठीक होगा। असी व्यवस्था यत् सभी मध जकत्रित होकर मगठित रूपन करें ता तत्र-मचालनका काय बहुत ही सरल बनगा और कृष्णा नली जा मरमें १०-२० बिन्दुकी जरासी धारा थी और जिसका आग चलकर कृष्णसागरका सा विनाल पट बन जाता है वगे ही हमारे कायका अलख प्रवाह बढने लगगा। मरी सम्मिलित समितिकी कल्पना अिस प्रकारकी है।

### कायकर्ता

जाजूजी — सारी मुसीबत कायकर्ताआक धारमें है। आप तो नय नये काम निकालन ही रहन ह जकिन कायकर्ताआके अभावम सब कामका हम पहुच नहा सक्ता। फिर आप कहेंगे कि हमें ता मात गस दहानामें पहुचना है।

बापूजी — अलबत्ता कहूंगा। लेकिन जर हारेंगे तब म भी तो आपक साथ ही रहूंगा ?

जाजूजी — तब जितना निश्चय मममें कि अच्छ कायकर्ता तयार करने ह। फिलहाल अधिक मस्यामें सपुण योग्य अम कायकर्ता मिलनकी आशा न रखें। आज दूसरी शणीके कायकर्ताआम ही काम चगना हागा। बादमें अुन्हीम स प्रथम शणीक कायकर्ता निकल सकेंगे।

बापूजी — क्या घरका मधवे कायकर्ता दो हजार हाग ?

जाजूजी — करीब तीन हजार ह।

बापूजी — तब जिहीस काम ला। जिन मत्र नय कामका वास जिन्हा पर डाला। काम करनमें जिनका कुछ अधिक स्वतंत्रता भी दा। कुछ मतरा अुठाकर भी यह विवरीकरण हमें करना हागा।

जाजूजी — आपवे अिस विवरीकरणका ठीक अय मरी ममामें नही आया है।

बापूजी — कामका गाव गावमें फगना है। जब जितना बग काम करता है ता वह दबावने गही हागा। कायकर्ताआका मध्यकर्ती



देहाती जुधाग चउ सवत ह यह भी अग लगना हागा। जिममें प्रथम आयगी तपानी। मगननाशक शवरभात्री पत्तन जिमका पूरा गाम्न बना गिया है अस भी जानना हागा। तीगरा जुधाग है हाथ-बागजका। अिस सार हिन्दुस्तानका बागज पूरा बरतकी दृष्टिम नहा एकिन अपन गावका स्वाकम्बी बनान जोर कुछ आमनी बढानकी दृष्टिम सीसना है।

जाजूजी — बागजका काम बन्द पर अुस अक छागीसी फक्दरी चलानका ही स्वरूप आ जाता है।

बापूजी — म सिफ एपरखा द रहा हू। तए हाथ-बागजक अपरात आटकी हाथचक्की हर देहातम सजीवन करनी चाहिय। यह न हुआ तो आटकी मि हमारे नमीबमें लिखी है ही। अिस बातका लकर मर दिलमें कभी कपोस घबराहट-सी है। जस आटका बस ही चावका। यदि पूर चाव (whole rice) खानकी आदत हम देहाती लोगोमें फिरस न डालेंगे तो खुराकको समस्याको हम ह न कर पायेंगे। Polished rice (मिल-कुटा चावल) सफ चीनी बगरा सब मनुष्यके स्वास्थ्यक लिअ बड ही हानिकारक ह यह तो अब भानी हुजी बात है। सभी बड बिगारदान अिसे स्वीकार किया है। अमरिकासे बहुत कुछ साहित्य अिन विषया पर आता है। वहा अब ब्राब्रुन यानी पीनी चीना चउ पडी है। यहा तए कि व्यापारी लाग सफ पालिशड चीनीको हानिकारक रग उगाकर पीला बनाते और बचने ह। चावलके लिअ भा हाथचक्की ही चलानी होगी।

### खती और गोपालन

अब म खतीको लूगा। देहातियाका गुजर खती पर हाता है और खतीका गाय पर। म जिस विषयमें जधा-स्ता हू। निजी अनुभव मुझ नहा है। परन्तु असा जक भी गाव नही जहा खती नही और गाय नही। भसों ह लकिन व काकण बगराका छोडकर खतीक लिअ अधिक अपुयागी नही ह। तब भी भसका हमन बहिष्कार किया है असी बात नही है। अिसलिज ग्राम्य पशुधनका खासकर अपन गावक

मन्गियाका हमारे कायकर्ताका पूरा खयाल रखना होगा। जिस बड़ी भारी समस्याको यदि हम हल न कर सके तो हिन्दुस्तानकी बरवादी होनेवाला है और साथ-साथ हमारी भी। क्याकि युस अबरयामें हमें पश्चिमी देगारी तरह जिन पशुओको अुनके आर्थिक दृष्टिस योजनरूप होन पर कनल किये बिना चारा न रहगा।

अिसत्रिअ हमार कायकताको जिन वाताका भी कुछ-न-कुछ अिलम हासिल करना ही हागा। अिस प्रश्नका हल करनके लिअ हिंसक तराका कौनसा है और अहिंसक तरीका कौनसा है यह भी समझ लना हागा। जिसीमें हमारी जनवृद्धि (surplus population) की समस्याका भी हल है। हमारा अहिंसक तरीका सफर हागा या अमफर, यह न नहा जानता। यदि अहिंसक तरीका न चला ता हम निरम्म साबित हाग न कि अहिंसा। हमारा तपस्या यानी सामाय भापामें हमारा प्रयत्न अकूरा साबित हागा। लकिन हम सभी सेवकाका कुछ-न-कुछ प्रयत्न ता करा ही हागा।

फिरस यती पर आना हू। वहा भी आज बेबल अराजकता है। सब जमीन टुकडा-टुकडामें बट रहा है। भाभी भाआ अलग हात ह और खताके टुकडे हात जाते ह। अब छाग-सा रास्ता निकालना हा ता बीचक स्वतवाग नही निकालन दता। अिस टुकडकी नातिम ता हम मर ही जानवा ह। गावमें लोगका मित्रुलकर सहयागम खती करनका सिद्धांत अपनाता हागा। ग्रामनवक अपन महाकी परिस्थितिकी पूरी जाच करगा और लागाता जिस और गाचगा।

### पीतका पानी और ग्राम-सफाअी

जमीनक बाअ अपन-आप ही पानीकी बात आना है। यह पानीकी बात यतीके पानीकी नहीं पातरे पानीरी है। सेवक कायकता गावक सभी कुआरी जाच करेगा। वर अुनक जरकी और बाहरकी भारी मफाअी करगा। गावमें कितन कुअें ह कितना पर सब गेग पाना भर भक्त ह अुनके अिदगिनकी मफाअी कमी है पावान या पावान जानकी जगह कुआम कितनी दूर है यह सब दखगा। नजरीक हा ता पावाने नजरीक रहनके खतर गाववालाका नमशापगा और अुनका

सन्धोग प्राप्त करने अनुरो दूर हटायगा। अंतिममें मार गावकी सफाईकी बात आ जाती है। ग्राममवका बिनती हूँ तब जाना है अिसवा अब हमका समाप्त आ गया है। ग्राममवा करनेवाणोंके लिअ सार ग्रामकी सफाई व साधनचरक व्यवस्थित गहद वगराव विषयमें जानना तथा करना अनिवार्य है। ग्रामरा बदवारा ता हागा ही लकिन यह नहीं कि रस्दकी सडी हिननवाल पाटकी तरह या चमडकी फक्दरीमें ग्राम करनेवाली ओरतकी तरह अपन ता (soles) बनानके अतिरिक्त अुसका और किसी क्रियाका अिल्म ही न हा। वह निवम्मी चीज है। हमार यहा तो हम ममीको सारा गरीर बनानका पूरा अिअ प्राप्त करना हागा। गावमें घोडी सिलाई भी चलगी। गावके कान्तवार लाहार बडई चमार आदि ममीका आपसमें सहयोग कराके अनमें मल विठाना अिसके मानी हुअ ग्रामवा समठन। ये सब बातें दीखनमें बहुतसी दीखती ह परंतु असामें वसी नहीं ह। निश्चयी तथा शरीर और बडि दोनोमे पूरा काम लनवाल कायकर्ताको य बहुत कठिन नहीं लगनी चाहिय।

अतमें मेरी आखिरी बात सुना दू। गावमें जाकर बठनवाला कायकर्ता यदि अहिंसामें अनपढ होगा ता वाम नहीं चरगा। यदि वह केवल अयगास्त्रको ही सामन रखगा और नीतिगास्त्रका जहरी नहीं समक्षगा तो सब वाम अतमें केवल ढकोसत्रा हो जायगा। अहिंसा ही हमारी बनियाद है और असी पर हम अपन पर जमा कर स रह सकत ह। अुस आडमें रखनस हमारा काम नहा चलगा। चाह लाग भर ही आरम्भमें कुछ कर भी जाय स्वरायका मकान वगर बनियादक खडा नहीं होगा। सबकोको अपन हूँ व्यवहारमें अपन चरित्रस ही अिसकी शिक्षा देनी होगी सिफ पुस्तकोम या वग चलाकर नहीं। यन्ि यह सब वह नहीं कर सकेगा तो गालमात्र ही होगा। हमारा अितिहास जसा ही गालमालसे भरा है।

जाजूजी — दहातम जके बदर दा कायकर्ता रहे तो अधिक सुभीता रहेगा। कुछ काम अब करगा और कुछ दूसरा और अन्हें अब-दूसरेका सहारा हागा।

जब आर्थिक परिस्थिति हमको रोवेगी तब हम देख लेंगे। जीर मत ता यहा तक जानको तयार हू कि विवाहित कायकता जायगा ता वह जब जीर अुसकी पत्नी दूसरा कायकर्ता होनी चाहिये।

जाजूजी — कुछ कायकर्ता अूच दर्जेके हाग और कुठ सामान्य। अठ कायकर्तके हाथके नीचे यदि आसपामके देहातामें पाच-सात कायकर्ता हा तो ?

बापूजा — कजी आगति मन अिसकी चचा की है। लेकिन हर जगह यह सब गम्य नहा हागा। तिमप्या नाजिकम मन कहा था कि तुम बहुतम कायकर्ता तयार करा नही ता मुम्हारा काम चलनवाला नहा है। व बनाटक्क बड मुपाय्य कायकर्ता ह। पाच-सात रुपेमें अपना गजर करते थ। जब कायकर्ता तयार करन पड तब अहान देता कि स्थानीय कायकर्ता ही कम खचमें तयार हो सकेग। और अस ही कायकर्ताआका अुन्हाने अिल्म लिया आर तयार किया।

जाजूजी — लेकिन अक्सर अनुभव अुलटा आता है। विवाहित कायकर्ताकी पत्नी कभी बार अुसकी मन्त्रण नही पर प्रसन्नरूप हानी ह।

बापूजी — अिसीमे तो म जिम बारेमें कात्री कायक नहा बनाअूगा। राजाजी तो कहन ह कि कायकर्ता विवाहित ही हाना चाहिय।

### कायकर्ता पर खच

जाजूजी — अेव कायकर्तके पीछ बिनना खच करना हागा ?

बापूजी — आज ता पद्धत महगाजीका समय है। मुज भय है कि अर समय तक अगा ही खर। म अमे कायकर्तके पाठ माहवार पचास भा खच करुगा और मौ भी।

जाजूजी — सानवा ता गभीरा दना हागा फिर परिवार बालबाना पढात्री अनवा बाता भी ता है ?

बापूजी — हमको मध्यम भाग रना होगा। अधिक सभ्रटवागता छोटना हागा। पुसप पत्नी और दा बाबू जम चार या अधिकतम पाचवी परिवारका भार हो अितनी ही मर्यादा समझा जाय। अिममे अधिक सभ्रटवागको न रें तो अच्छा।

जाजूजी — वआ कायकर्ता अपन भाभी-बहनाका मातापिनाका जसी ही अयाय जिम्मेवारी यहा पेश करत ह।

बापूजी — अताकि रिश्र स्यात नहीं रहेगा।

जाजूजी — कायकर्ताका वेतन निर्दिष्ट करनमें हम जुमको योग्यताका महत्त्व दें या जुसके परिवारके बाझको ?

बापूजी — बल्भस्वामीको ता म पाच दूगा सौ नहा। अकिन किसी बर परिवारवागको अधिकतम देकर भी न छाडूगा। यानी दाना रहेय और दोनाको आपसमें कोसी द्वय न हला न किसीकी आगा।

जाजूजी — हमारे कायकर्ता दहातियोंमे किस हट तक महायता (response) की अपगा रखेंगे ? क्षत्र चनावके समय क्या अन पर कुछ गते रगाना अुचिन होगा ? आजकी हालत तो जसौ है कि हम देशतमें जाते ह तो लोग समझते ह कि य पसेवाले ह। अनस जितना मिरे जतना उ अे। दो साल काम करनके बाद जब कायकर्ता गाव छाडकर चग जाता है तो पीछ साग गूय हो जाता है।

बापूजी — मेरे विचारमें हम कोसी गत नहीं कर सकेंगे। अदाहरण-स्वरूप आदिवासियोंक बीच जनकी सेवा करनक हतु हम जाकर बसेंग तो उनसे क्या गत हा सकनी है ? पर असर बात ता यह है कि जहा हमन कुछ-न-कुछ काम किया है कुछ अनुभव लिया है वहा बठकर काम करग तो ही काम आग बगा और फलगा।

अकिन सब कुछ आखिरमें कायकर्ता पर ही निभर रहेगा। देहातियाका भ्रम सपादन करक उनके पाससे वह अगर कुछ उ सक ता भले ही ल।

## कायवर्ताकी परीक्षा

जाजूजी — कायवर्ता कितने वषमें स्वावर्ती हाना चाहिये ? पाच वषमें ?

वापूजी — आपन ही ता कहा कि पाच वष ।

कायवर्ता अक मामवा खच कर गावमें जायगा । दहातियामें हा जमानका अक टुकटा माग रगा और अम पर झापडी बना रगा । यदि किसीका घर खानी मिग्गा ता रगा । जेवम तकगी निवाग्गा पड त् रहेगा चरगा गाववालोंके पाम हागा ता जुमे या कर दुग्म कर रगा और चलायेगा । गावने ँडकाका नमा करेगा ख खगायगा बहानिया बहेगा गाना सिखायगा और गावकी मफाजा करगा । बेतनव अगावा अगावक या अय कामर लिअे पूजीक रूपमें मै अक कौरी भी नहा दूगा सब कुछ वह अपना अपज-गक्ति (resourcefulness) और प्रमस जुगायगा । जियामें अुमक प्रमका अुमक मवाभावकी अमकी गक्तिकी परीक्षा है ।

जाजूजी — बरा बठिन परगा है ।

वापूजी — अवय बठिन है । यहा त्वाग खानी ही रगा है ? प्रमका और मवाका माग ता कहा है जा मन बनाया है । अहिमक तरीकेम स्वराय रगा है ता मरे पाम दूगरा तगाका नहा है ।

तीसरा दिन भगलवार ता० १०-१०-४४

## स्वावलंबन कसे होगा ?

जाजूजी — कायवर्ता स्वावर्ती कम बनेंगे ? गावरा अु या ता दान द मबने ह या राजगार द गबन ह या गाववाग् खु काशी युद्याग चगाकर अुमर मुनाफमें न कायवर्ताका निवाग् रगा मबन ह ।

वापूजी — जाना करना हागा । कायवर्ताका हम बतन ना रगे ही और अुसर बलावा गाववाग् या वह म कुछ-न-कुछ गावरा गनका धपा करेगा ही ।

काशी अति यद्विगानी कायवर्ता देहातमें बर जाय और अग्रा ही नहा बनि अपन मारे कारोवाग्वा ख अपना बुद्धिम निगा

और मित्राणि कुछ न ७ यह हा मानता है। फिर भी अगि तरह बुद्धिम धन अुपाजन करनका मन बढिका दुध्यम कहा है। अमी मव आमनी मुवाा ही जानी चाहिय।

जाजूजा — हमारे बायवताका मानी ही आधार पर जाना हा ता वह गिक स्वाववा मानी नहा हो मरगा। ध्यापारी उगवा मानी तयार करवाना बचना बाहर भिजवाना आनि काममें स अुमे अवगम करना हागा।

बापूजी — मरी याजनामें यह बात अगि तरह नहा। म मानता हू कि यनि खादीम ग्रामका स्वाश्रमी बनाना हा ता अनिरिकन मानी बा ७ भजनी पगी।

किमीन मुझ अक वार यह बात समगापी थी कि स्वाववतनका मानी मिवा और भी मानी यदि काफी मात्रामें हम न बनायेंग और हमारे पास या हमारे द्वातियानि पास जमीन आनि जय कात्री आधार नही हागा ता कव स्वाववती खादी बनाना काफी नही हागा। आज मरी कल्पना जितनी हा है कि वस्त्र अनाज आनि बुनियाती आवयवताआका म्हाता अपन यहा ही पदा कर लें। जिसीको हम स्वाववती (self sufficient) कहेंग ?

एकिन अिसका भी अनय होना समव है। अिमलिअ अिस काजका अच्छी तरह समझ गना चाहिय। Self sufficiency का अथ रूपमणूकता नही है। Self sufficient यान Self-contained नही। किमी भा हालतमें हम मभी चीजें पटा कर भी नहा मक्त और न हमें करना है। हमका ता पूग स्वाववतन नजतीक पहुचना है। जा चाजें म्म पटा नटा कर मक्त अह पानव अिअ अनक बालमें इनक लिअ हमें अपनी आवयवतास अधिक पटा करना ही हागा। एकिन जा कुछ अयिक पटा करग वह बवती नहा भजेंग और न अस दूरक मन्रा पर नजर रखकर अुन्हान कामकी चीजें पदा करनका अिछा रयेंग। वमा करग ता वह मरी स्वामीकी कल्पनास विरुद्ध हागा। स्वामीका अथ है अपन नजतीक पडामाका छाकर दूरक बसनवाल्की सवा करन न जाना।

दृष्टि यही रखनी चाहिये कि प्रथम जिम्गिदवे देहात पीछे जिग्ग पीछे ग्रान्त। असि डगम वाम करन पर चरखा सघको सिफ नातिका रक्षक बनकर ही सत्ताप मानना पडगा। हम सभी झझटोमें पडना नही है। हमारे पास तान हजार कायकर्ता और कभी बित्री भन्गर बगरा ह। अुहे आज हा भस्म नहा करना है। परतु हमारा झुकाव किम तरफ रहगा चाहिय यही म बता रहा हू।

### कायक्षत्रकी व्यापकता

जाजूजी—कायकर्ता अपने कायक्षत्रकी मर्यादा पाव मील त्रिज्याकी रखेगा?

बापूजी—हा कही जुससे भी कम होगी। जसे बगाल बिहारमें तो पाव मील त्रिज्यामें कजी दहात आ जाते ह।

जाजूजी—कायकर्ता सुबह अपने यहास निकलकर शाम तक घूमकर वापिस लौट सक अितना मर्यादा ठीक हागी।

बापूजी—हा हो सकती है।

जाजूजी—क्या चरखा सघ ही यह काम प्रथम करेगा?

बापूजी—जम्बर बयोकि चरखा सघ सूय है दूसरे अुद्योग ग्रह ह। सूयकी गति ठीक रहेगी तमी दूसरे ग्रह चलनेवाल् ह। आज तो ग्राम-अुद्योगाकी स्थिति घूमकतु जसी है।

### कायकर्ताकी मर्यादा

जाजूजी—अस्वस्थता निवारणके वामम कभी-कभी बहुत झझटें पन्त हा जाती ह। हमारे कायकर्ता अन झझटोमें कहा तक फनें?

बापूजी—जिसमे काम रक जाय जसी झझटोमें नहो गिरना चाहिय। केकिन कायकर्ता मुन्के जीवनमें अम्पूयनाका विन्कुन् स्थान नही ग्या। हरिजन जहास पानी भरन हाग वहीसे ग्रामतक भा भरेगा अुनक कुअे साफ करेगा बाध नाला जाति बाधना मफाआ करेगा।

जाजूजा—दूमरी बात राजनीतिक है। मान लाजिय कि म बक जगह काम करता ह और मर मम्मान पर हमग हाता है मरे बान नान पर पाउदी लगाओ जानी है। तब मग मकिनप भग करता



अबिन हागा? परतु अय राजनीतिक मामलामें सायत मुझ अल्पित रहना पड। अकिन जब आम सविनय भग चन्ता है तब सायकता असग बच नहीं सवता। अगी दगामें क्या करना चाहिये?

बापूजा—जाम सविनय भगमें ता जक प्रवारकी अराजकता सी चन्ती है। मत्र जन अपन सरकार हा जात ह। अगआका भापा चन्त लगती है। मगर आम सविनय भगवा जो बोअी प्रधान या सनापति हागा अुमकी आझानुसार चलना हागा। आम सविनय भगमें स तो सायत ही बोअी अल्पित रह सकता है। अकिन तब भी जो बोअी चरखा-गषवा प्रधान हागा अुसकी सायकता अपनी परिस्थिति निवेदन करेगा और प्रधान भी परिस्थितिका समथकर अपनी राय देगा। वसा आम मत्याग्रह आज मेरी दृष्टिकी मर्याममें नहीं है।

घोया दिन बुधवार ता० ११-१०-४४

### विकेद्राकरण

जाजूजी—म आपकी विकेद्रीकरणकी बात अभी तक ठीक नहीं समझ पाया। अस ममझाअिय।

बापूजी—मरा दृष्टिकोण यह है कि जितन प्रान्त कह कि हमको आजाद करो अुनको आजाद कर देना है। वे कट्टग नतिक व्यवस्था भले आपकी रहे जितनी हमभ बन पन्गी निभायेंग बाकी सब थारोबार हमारी ही रायस और अपनी ही जिम्मेवारीसे करण तो मुझका अच्छा लगगा। वे यदि मेरी नीति पर चन्त हाग जोर स्वय साधु चरित्र हाग जीमान्तारीसे स्वच्छ प्रामाणिक प्रयाग करणके पीछ अुन्हान खतरे जुठाप हाग तो म जह पूरी आजादीसे काम करण दूगा। वस मरी गन जितनी ही रहेगी कि जितनी खानी पदा करा वह सब वही अिदगिदके गावमें तहसील जिगा या आखिर प्रान्तमें ही बचा। यह नहा कि चिकाकावागने माफिक सब कुछ बबअीक लिअ ही पदा कर और खुद धरमें पहनें ही नहीं।

जाजूजी—चिकाकोलकी एस बात है। दगभरकी महीन खानीका वही अक अुत्पत्ति-न्द्र है।

बापूजी—हा अमी हाजतमें भी म पदा करनेवाला और पग करानेवाले विक्रताओंको ही बहूना कि यदि वहाका काम चलाना है ता मल ही चगाआ परतु यन्ति वहाक कारीगर खानीको छत्रे भी नही और मिलवा हा कपडा पहना हाग और सिफ बवजीन लित्र ही खानी पग करत रहग ता सघकी ओरमे बगका केद्र नहा चल सकता। म असे बर कर दूगा जिनती सस्ती मरेमें है।

### हमारा अधशास्त्र

जाजूजी—कारीगराकी मजदूरीम स कुठ जग काट कर आज हम अुह अुममें स कुठ खानी पहनात ता ह। परतु अुममें कुछ जबरदस्ती है व अपनी मर्जीसे नहो पहनत।

बापूजा—जिनतम भी म मताव मान रूगा परतु कुछ समय तक ही। अस्तिताको स्वीकार करके लाग तुरन्त खादी पहनने लग जाय जमा मरा आगम नही है। मच्चे अधशास्त्रकी दृष्टि यदि हम अुहें बना सकेंग तो वे अतमें अहिंसाको भी समझ जायेंग। जिन अध-मपत्तिवे साथ गुद्ध नीतिका मल नहा बठ सकता वह गुद्ध अध नही हा सकता। हमारे बायबर्ता गुद्ध अहिंसा और नीतिस प्ररित होकर काम करनेवाल हाग ता सच्ची अधदृष्टि लागामें आयी। यत् तमा होगा जय हमारा आचार गुद्धतम हागा और हम गगाका गायण नहा करेंग। यह नहा कि कारीगराको दुखी कर पाग्य दाम न दें अुनके दुख-मुगमें गामिन् न रह व गरावी हा मत्र भा अुम तगप ध्यान न दें और मारे हिन्दुस्तानका गानी पहनानका प्रयाग कर। जित तरह हिन्दुस्तानका भग करनसे ता गानीको जग दना अच्छा हागा। म गरावीका भी निभाअूगा अुम काम दूगा हटाअूगा नहा अकिन अुमकी मत्री बरूगा और राज अुमे मममाअूगा। जिना जिनना विष बेवग खादीका काम में नहा बरूगा।

चिरापालकी खानी मब अत हैं और दूर-दूरन प्रान्तकी विशामें भी अुगवा हिंसा काफी रहता है यह म जानता ह अकिन यह मुग चुभता है। किगी प्रान्त जिग ताअुका या दहातमें वहा भी यन्ति हम नभी प्रणालीअ गानी-काम करतमें सफलता चाहत हा तब

य चीज नहा चलनी चाहिये। हमारी य नीति है ही नहीं कि अक जिला किमी अय जित्त अपु जाकर पड यानी अगम स्पधा करे। गभी जिने अपनी अपनी आवश्यकताओं पूरी कर लेंग। अगम विदानी सब समटाग हम छटबारा पायेंग। मन्व है कि जिम नभी नीतिका अमल करनकी बजहग पिन्हा हम गुभवन् बन जायें परंतु चामें यह काम आग बढगा। हिमाय जाडबर तो म नही कह सकना। सिवा अगम कि हिमायका अभी म जानता नही हू। वह ता मुम आप ही बता सकत ह। लकिन अितना म जानता हू कि खादीस अहिमाकी प्रतिष्ठा करनी है तो यह करना ही हागा।

### अलग-अलग ट्रस्टीमडल बनाना

जाजजी — असिलिअ क्या प्रान्तामें अग्य अग्य ट्रस्टीमन्ड या बेमासिअगन बनाकर सधका सब काम अुनकं सुपुन् करना हागा ?

बापूजी — ठीक क्या करना पडगा यह मेरी बुद्धिमें अभी नही आया है। अितना जानता हू कि जसा मेरे खयालमें है वसा विक्री करण करना ही तो आज जसा सब कारोबार बेजित हाकर चउता है वसा न चलेगा। आज तो हमारा यत्र top-heavy हा गया है। दूसरा हो भी क्या सकता या ? हा यदि गुम्स हा म समझ जाता और आग्रह रखता कि बस असा करना है अन्य तरीकेस नही तो बदाचित्त असा हा पाता। यह सब ठीक दिनामें नही चल रहा है यह बात विन्कु हा मेरे ध्यानके बाहर रही हो असी भी बात नहा थी। लकिन म भी कुछ काम कर उना है अस लाभमें पड गया और किमी तरह भी काम आग बन्त लिया और असोम स बेद्रीय मडल बना।

जाजूजी — फिर भी कुछ विधान तो सोचना ही हागा। प्रान्ताका काम यदि किसीके हवाले कर देना है तो रजिस्टड सोसायटिया बनानी हागी और हरअक सोसायटीके कम-से-कम सात ट्रस्टी हो।

### सिफ बिक्रीके विकेद्रीकरणमें खतरा

आप आज्ञा दें ता बिक्रीका विकेद्रीकरण म जल्द ही कर दू। आज खादीक व्यवसायमें अितना मुनाफा और गुजाअिग है कि यापा

गियाकी भीड़ लगा है। मरे पास चिट्ठिया आ रही ह कि हमका पन् भंडार मौप दो वह भंडार मौप दा। क्विन जो विवन्दीकरण हानवाग है वह कसा हागा जिनका चित्र अभा तक मरा आखान सामन नहा आया है। जिनमिअ मझ अभा ठीक नहा सूझता कि क्या करें? यकिनका या किमा मडर या मस्याका खादा-काम मौप दना हो तब भी तीन बातें देखनी ही हागा— १ खादाका गुद्धता २ जावन मजदूरी और ३ नकापाराका जभाव। य तान बातें हम समाल न मके ता सब ढकासग हागा। जा कुछ करना है वडी सावधानीम करना है। मघर कामका ही जुदाहरण लाजिय। हम बार-बार परिपत्र निका कर मजदूरा बढान तथा किमी भा तरह कामगाराका नुबमान न हा जिन बारेमें कायकर्ताजिसे अनुराज कग्ने रहने ह। फिर भी अनुभव यह है कि मूनका अक निवालना हिसाबमें पसे-दा पम अघर या अघर मिलाना असी ही कजी छाणी-भागी बातामें हरअक कग्ने हरअक कायकर्ताका पूने नियत्रणमें रखना अमभव-मा हा जाता है। जिनमें भा खपा करनका बात तो यह है कि जिनमें हमारे कायकर्ताका निजा स्वाथ कुछ भी नहा रहता है। अक आरम हमन खाणीकी कीमतके बारेमें खरीणाराकी भूषा भावनाआका जापत करर अनुर मुह बन्द किये और दूमरी आर कारीगरोंका मजदूरी कम पढुची।

यह ता हुजी चरवा मघके प्रत्यय नियत्रणमें चरनवा कग्ने या कायकर्ताजिसे व्यवहारकी बात। जिन दगामें जब हम विवन्दीकरण करन निवल्लेग और नियत्रण बहुत कुछ टाग हा जायगा या नहा-मा रहगा तब प्रमाणित ब्यापारी गग मार क्षत्रमें कितना गालमा करग जिनका काभी ठिकाना नहा है। क्या व्यक्ति क्या मस्या जा काआ छाणी वित्राका काम आज कर रहे ह अनमें काफी स्पर्धा है। मस्यावा भी काफी नफा करते ह। जिन अवस्यामें यजि चरवा मघका विशा काममें म ह्ता है ता फिर य काम जिन मौपना जिन प्रकारका पाने या मर्त्याजें लगाना म अक जजि मस्या है। ग्रान्ताका खाना अरना अिनजाम मौप दना हा ता अनुर पाग भा गागा ममुकिन दृष्टि रखनवा कायकर्ता मौजू ह अगी बात नहा है।

बापूजी — क्या अमरी काभी बुर्जा नहा मिलनी ?

जाजूजी — घाड प्रान्तामें गाय यह प्रान्तीय स्वतंत्रताकी ममस्या जितनी बटिन न हागी बटिन बहुतसामें ता अमर्य बटिन जायगी। फिन्हाल विक्लीकरणरी नातिका प्रात तव न ए जाकर जित तव ही मयात्ति रखना शाय अधिक् अचित हागा। आज ही मारा परि वनन अवदम न रिया जाय।

### भुत्पत्तिका विक्रीकरण

बापूजी — विक्रीकरण फिन्हाल भुत्पत्तिका हा रह। भुत्पत्ति करनवाले अपन आसपासक प्रदगामें ही खादा बचें असी मर्याता अन पर रह। यदि दूर कही भजना हा ता मध्यवर्ती दपनरकी समनि जहरी समसी जाय।

जाजूजी — हरजक कद्र अपनी तहसीलकी मयात्तामें ही खादी बचे, असा मर्याता रखनमें काभी हज नहा है।

बापूजी — ठीक है। अमर बात यही है कि जो वनाय वही पहन। या भुसी गावक या आसनासवे रहनवाठे पहनें। यह तो हम मानते ह कि जय स्थानाके त्रिअ भी खानीकी जरूरत तो रहेगी ही।

जाजूजी — कायकर्ताओको हम कहग जहा खानीका काम ठीक चलता हो वहा जाओ और अस नयी नीतिके अनुसार जितना काम बढा सको बनाओ। जहा-जहा असे कायकर्ता जाकर बठें वहासे सघ हट जायगा और अस तरह विक्रीकरण होता जायगा। लेकिन अक बात रहेगी। कायकर्ताओको हमें कहना होगा कि जहा खानी पदा करो वहा बचा तहसीलमें बचो बहुत-बहुत जिले तकमें बचो। अितन पर भा जो खानी नहीं बिकेगी असे बचनम फिलहाल सघ सहायता करेगा। अब यह सिद्ध बात है कि जित काममें घाटा नहीं है। आज जितनी खादी पदा हागी भव बिक जायगी। अब बिभीमें दिक्कत नहीं है जो है सो भजन भिजवानकी है।

बापूजी — खानी जिन अत्पत्ति-के-द्रामें बनती है वही बिक जाती है ?

जाजूजी—नहा यहा तक कि जासपासमें भी नहा। आज बित्रीवा जा तत्र बना है वह यह है कि जिल्लेके शहरमें सघवे खानी भंडार ह कही तहसीलकी जगहमें। कही-कही अजसा प्रया भी चलती है। य अजन्मिया जिग भंडारसे खानी ल जाकर जिल्लेके अय स्थानामें बचती ह। अल्पति-बद्रोमें कामगाराकी मजदूरीमें से रुपयमें दा आन चार आने आठ आने तक भी काटकर हम कामगाराको खानी देते ह। भिसक अतिरिक्तकी अधिकांश खादी गहरामें ही बिकती है।

बापूजी—जिसके बदलेमें म चाहता हू कि कायकता देहातमें जाय और अतना हा खादी-अल्पति करे जितनी कि बहाक गागाका पहना सके। बाहरखालके जिजे पदा न कर। और वह कवल खादी ही पदा करना सिखा कर चुप नहीं बढगा दूसरे व्यवसाय भी लगाका सिपायगा। अमुमें से जा प्राप्ति होगी मा भा देहातियाव जेवम ही जायगी। जहाक देहाता कहगे— हम गाना पदा करेगे। हमारा सारा परिवार अुस पहन तो भी हमें नक पमाती जकरत रहता ही है। जिसजिजे हम खादी अधिक मात्रामें पदा करेगे। आपका ही लनी होगी। बहा पदा हुआ अतिरिक्त खानी भी हम गेग लौगायेंग नहा। लेकिन मभव है कि असे गाव खानीके हाय-अुद्योगक केद्र बनेंग। परतु मेरी नजरके सामन यह परिस्थिति नहा है। मेरी कल्पनामें अमे ही देहात और शायकता-कामगार ह जहा खानीकी अल्पति दोषम धध ही ठगम चलेगी और जहा गाव कवल अिस धध पर निर्भर नहीं रहेगा किन्तु अयाय धध भा करेगा। अधिकांश गाव यही करेग। यही हुआ सच्चे अयमें विरोडाकरण।

खादी बेकारीके लिअ नहीं

जाजूजी—देहाताका मुख्य पना शान्तकारा है। तल्पाना चगरा अल्पता चउ मवत ह परतु असम अयलाभ पाडाका ही हागा। गरीबाकी बेकारीके लिअ व्यापक मात्रामें देहातमें खानी ही काम आ सकती है। स्वावचनन लिजे खानी पना करनमें अयगमना गुजाअिया बहुत कम है। स्वावचनन अुपरात यि प्रत्यग अयलाभक रूपमें

दो पम दहातियाँ जबमें टाउन हाग तो पर कुछ अगमें बित्रीक लायक सानी भी दहातियाँ धरामें पग हा और बट बित्रीक लिअ बाहर भजी जाय असा प्रबध करना हागा। अिसते बिना जिनका त्तिभरका पूरा घधा नती है जस आगिब बनार दहातियाँका राहत दनमें हम असफ रहग।

बापूजी—अिसमें अडचन यह है कि सानी मवव्यापक नहा बनगी। कुछ गगाका ही पेगा बनी रहगी।

जाजूजी—बताभी तो सब जगह चन्गी और नुनाभी ता आज भी खास पगा है। और जब तक मिलें ह तर तक सानीकी सुरति बड पमान पर नही हो सकगी। सुरगावमें हमन बस्त्र-स्वावलवनका काम गुरु किया। पाच बपका कायक्रम रखा। बल्भस्वामीका अनुभव यह है कि गग खाटाको अपनाते ह सही त्रेकिन समजने नहा ह। हम बहास हट तो कुछ समयके बाद खादी भी हट जायगी। गग गावके सामुदायिक अथगास्त्रको समझेंग तब ही टिकेंग अयथा नही। स्वावलवनमें अयलाभ यत्किचित् है। वह अितना थोडा है कि आकपक नही हाता।

बापूजी—वही मेरी भी दिक्कत है। बल्लभका कयन भरे कानोमें गूज रहा है। गावमें दम्बदी हुआ। अुपवास करन पड। अिन सब घटनाआके पीछ कही न-कही विचारदोष है असा मुझ लगा है। हमन लोगाको प्रलोभन त्रिय मुधिघाअें दी। त्किन अिस तरह काम नही चलेगा। खादी अपने ही बल पर हिदुस्तानको कहा तक ले जा सकती है अिसकी हमें खोज करनी है। जिस खाजमें हम अब तक यहा तक पहुच पाय ह कि सानी गहरामें विक सकनी है देहानोमें नही। देहातियोंके त्रिअ अभी हम अुमे सहज प्राप्य नही बता सके ह। यदि हम हारे ह ता अपनी हार हमें कबूल करनी होगी और आग चन्ना होगा। अनुभवसे गद बनकर हमें आगके प्रयत्नोमें लगना होगा। अिमीसे कहता हू कि सानी गहरोंके त्रिअ ही बनाना और गहरोंमें ही बचना अब बढ करना होगा। आज जक करोडकी खादी गहरामें बिकती है। परतु अब हम गहरवालोंकी यह कह कि अब

हम तुम्हें तयार खाना न देंगे बल्कि खानी पटा करना खिलायेंगे तुम अपने लित्रे खादी पटा कर या मा करवा ला। मझे अनुभव बैक कराका प्रशमन नहा है। हम खानीमें अपना बुद्धि और हृदय लगायेंग रखा नहा। खानी हमें अब निदम बनकर खानीकी शक्ति कहा तक है और क्या तक नही है अिम बातका खोज करनी हागी। यदि दशम कि खानी हमें कहा तक नहा ले जा मक्की जहा तकवा हमने दुनियाक सामन दावा किया है ता अम छोड़ेंगे या अपना पावा नाचा करग या कोअी अय दुनियाक पकड़ेंग जस खनी।

### खादी नहीं तो खती

प्रारम्भ ही मरी यह थडा अवश्य रही है कि जिस देशक खानियागे लित्र खती ही जेवमान अटूट अटल महारा है। अिमकी नी खोज करग और खेंगे कि जिसक महारे कहा तक जाया जा सकता है। यदि हमार अण खानीक बदल खनामें विचारद होकर आगाका मवा करग ता मुझ अकयाम न हागा। म अितना खेव चका हू कि हमें बहुत कष्ट जुटाना है। अय खनाका आर ध्यान देका समय आ गया है। आज तक म मानता रहा कि जय तक सरकारक अिकार अपन हाथामें नहा आत देका खनीका मुधार अमभव है। अय मर अन विचारामें कुछ परिवर्तन हा रहा है। म यह महसूस करता हू कि मौजूदा हालतमें भा हम कुछ ह् तक सुधार कर मक्ने ह। यदि य् ठीक है ता खान बनरा आमाानीम खर भी जमाने म्कारे किमान अपन लित्र कुछ प्राप्त कर मक्ना। जवाहरलाल कहता है कि खता सुधारामें तब भी जब तक विद्या सरकार हम पर है तब तब किमी न किमी वहानम या तरीकमे वह विमानका कमाआ खनी रहगा। अब म माचन ग्या हू कि अिमलित्र खेनीका खान और खानकाराका प्रचार करनस हम क्या खें? फिर म् ही हमार किया-कराया ह् खें। खेग ता हम भी खेंगे। आगाका खडनको क्ग गिलायेंगे। सरकारका बना खेग कि तुम अिम तरद नहा खूट मवन। धर तो मन कवल अब चित्रमात्र खावा है।



याही अब हमें अब कायकता दूँ ह जिनकी कि यामें  
चिन्तनी है।

जाजूजी — खतीबा प्रश्न ता प्रारम्भ ही हमारी आपसे सामन  
दहातियाकी मुख्य समस्याक नात था किन्ति अति विपन्न ममजकर  
हमन खुस छा ही रया था और अिग विचारम भी कि हमें अरती  
हरअक सर्वाङ्गवा समयकर ही चन्ता है। खतीमें भी रिमान आज  
बाहरी परिस्थितिक जर्षीन है जा अमर वमरा नहा है। हमन जम  
वहुत कुछ सिलाया बताया और अमन पदावार भी अधिव थी। किन्ति  
अधर नपासक दाम १ ० व ५ हा गय और रिमान वमाका वमा  
ही बरवान स्थितिमें रहा अगा हास्त है।

बापूजी — असका भी जिन्ज है। अब ता हमन असका तागीम  
नही दी और दूसरे पूजीवागन खुस वसी ही फमठ वाना मिलाया  
जिमस अह पसा मिल। जय फमठ र करवाजी गयी।

जाजूजी — जहा राजवल पर जयगास्य चन्ता है बहा यहा  
हाता है।

बापूजी — गासवाके क्षममें भी बही दगा है। गायबल जमीनने  
साथ ज् हअ ह। अस तरफ भी हम उगाका अनना ही दुल्भ  
हुआ है जितना कि जमीनके बारेमें। जिसअ जो कायकर्ता दहातामें  
जायेंग तन्ही तरफम जिन मभी बाताकी जपक्षा है। अिनकी जानकारी  
और पान सवाक लिअ अनका ेना हागा। अने हाथो यट सब  
कहा सक हागा सो अब भगवान ही जानता है। परंतु लिमें जा  
वात जाजी वह मन कह दी कहना भी चाहिय।

पाचवा दिन गहवार ता १२-१०-४४

### खादीकायका विस्तार

जाजूजी — विकेन्त्रीकरणका विचार आग चन्तनक पहा खान्नी  
कायका विस्तार जो आज हुआ है जस विषयमें आपस धान्ता  
निवदन कर दू। असस प्रस्तुत विषयमें कुछ मदद मिलेगी। खान्नी

वायका विस्तार दो दिशाओंमें हुआ है १ व्यापारी खादी अधिकम अधिक पदा करना और जुस वचना, जो २ वस्त्र स्वावलम्बनका अधिकम अधिक बढ़ाना। आज दानाने वारेमें सध पर लप लगाया जाता है कि अिन क्षेत्रोंमें सधा पयाप्त रूपम काम नहा किया है।

वापूजी—अक बात ब्रावम पूछू। क्या वस्त्र-स्वावलम्बनके क्षेत्रमें हमन पूरी पूरी खो करन यह पाया क्या यह निचयपूर्वक सिद्ध हो चका कि वस्त्र-स्वावलम्बनकी खाता मिलक कण्डस मन्पी पडता है यदि हम यह नहा वतन सवते ता देगती लोग वस्त्र-स्वावलम्बनकी नहा हाग और वायकर्ता निरान हागे। वस अब आग चरिय।

जाजूजी—क्या व्यापारी क्या स्वावलम्बनो गाना प्रचारन कामम मर्याता है यह हम ममन ल ता निगन नहा हाग। व्यापारी खाताम काम बहुत कुछ बग है फिर भी हमन ख्या है कि जुसकी गति अवदम नग बढ़ सवता। जब तक कपडकी मिळें मौजूद ह तब तक ताकाथय पर हा खादी बगगा। लकिन जसके जिम तरह वतनमें हमारी कठिनाअिदा भी गती ह। आज अक करानका काम हाता है। अिसका बलाकर पाव करण्ड तक न जानका वायकम बतानकी बात पिछन साल चग थी। जिमका अय यह हाता है कि जस भी वाय कर्ता मिळें खुह कर काम बगाना और जय पहलाका और दुक करना। हमन हिमाव गगावर दया है कि हम हद दर्जेका परिश्रम करनक बाद भी सालभरम सवा गुना या पराकाष्ठास डन गुना काम कर सवते ह दा चार गुना काम हाता असभव है। फिर अिस तरह परिमाण बढानके पीछ पडनमें और भी खतर ह हा। अभी अवस्थामें हमें जग मिळें वत वायकर्ताआका भर्ती करना पडता है और अिनमें सत्य अहिंसा आदिक विषयमें विनेप गान या आग्रह न हातस परिणाम यह आता है कि चरगा गधरी नातिका तो शक्ति हाती ही है और अनक राग-प-भूण व्यवहारम गग यहा बहन और मानन लगन ह कि चरखा सधवाठ सब अम ही हात है। अिसलिअ अिम तरह काम बगानके पशमें न नहा ह।

### वस्त्र-स्वावलम्बन

अभी तरह स्वावलम्बन का धरना भी मर्यादा है। देगतिपा द्वारा क्याम-संग्रह कर आगरी धुना-नी-गता-नी तकनी मय त्रियाओं अन्हीक धरामें करवान पर भी बबठ धुनाभीक ही दाम अितन लगन ह कि मिन्के कपडकी अपेक्षा देहानियाका जो बचन हानी है वह अितनी अल्प हानी है कि दहाता अिन सब शक्तगमें पडनका जासानास राजी नहां हाता। और फिर पागीकी अपेक्षा मिलका बरडा गुनर भी तो अधिक होना है।

अमामें वस्त्र-स्वावलम्बनको पारे ढगसे सारी दृष्टिस काय कर्नाआको समयाा जीर समझना चाहिय। वह यह कि वस्त्र स्वावलम्बनसे समूचे देहातका पसा बच कर देहातमें ही रहता है बकार समयका अपयोग होनस गग अधमगीन बनन ह यानी वस्त्र स्वावलम्बनका काम अहिंसक ग्रामोत्थानका या ग्राम-संगठनका अगस्वरूप समझकर करनेस ही स्यायी लाभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितन ग्रामाको पूण वस्त्र स्वावलम्बी बना केना है असा कार्यक्रम मुझ नही जचता। सही समयके साथ जिनना काम करना सीखेंग वही सच्चा काम होगा। कवल जाश और भावनावश होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नही।

### अथ ग्राम-अुद्योग

यही बात अथ ग्राम अद्यागाकी भी है। फिलहात् तैठधानी देहातमें ठीक चल् रही है परतु बादमें जुसका चलना कहा तक सफल होगा जिस वारेमें गका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-व्यवस्था जिसके खादी चक्की आदि ग्राम अुद्योग अग थ टूट गभी है। आज कपडा जाता चाबठ तैठ सब कुछ मगीनकी स्पधकि आग महग बन बठ ह। यदि जनको फिर देहाताम सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अथ-व्यवस्थामें हाथ डालना होगा जसे नय सिरेसे जिदा करना हागा। कवल किमी अक अग पर खोज जीर मेहनत करनेसे सफलता नही मिलेगी। जन्तान देहातियाको घर लिया है। प्रगति

वेगने नहा हागी, बहुत धीरे धीरे विस्तार होगा। वने कठिन समस्या है।

मारा काम प्रामोत्थानकी कल्पनाये

बापूजा—म ता जिसस भी एक कदम आग जाना चाहूगा। आपन बताया वह सब म मानता हू। अिसालिज ता चरखा मवने सामन मने तीन दिन अपना लिखा कर सारी बाने बतगया और यह सारा गालमाल मचाया। हमका अब सारा काम मबूचे प्रामोत्थानकी कल्पनाके ढाचमें गालकर नय निरेम करना है। देखें क्या तब कर पात हू। एक कदम आग जाकर भा में जा करतना कहता हू मा यह है कि अिन परिवर्तनके कारण कुछ समयके अिधर यि हमारा काम मट हा जाय गूयवनू भी हा जाय नब भा यह करना है। खान्तीके वारेमें जा भावना हमन गगामें पग का है वह सही हान पर भी अुमका शक्तिके विषयमें जा खयाल हमन लगामें पग किया है अुसमें यि कहा भू या ता फिरम माचना चाखिये। हमारा दावा यि गत या ता घापणा करत हमें अुस वापिस खाचना हागा।

शहरवालाका म कहूगा कि आप अपन अिधर खान्ती स्वय पग कर लें। अिधर-अुधरम खान्ता जुगकर शहरवागियाका पहचानका गभ छाडूगा और फिर हूष शामामें डग कर बठ जावेंग। अिम परिवर्तनक कारण कायवर्तना भाग जावेंग ता अुहें जान देंग। हमारे लि वीर शिमागका परिवर्तन जब अिम हद तक हागा तब ही हम जा चाहने हू वह परिणाम मिन्नवाग है। चरखा मय नीतिमात्रका मरुथक रहूगा और कामका जितना विभक्त कर सखेंग कर देंग और मारे वाग्रम हूक हा जावेंग। फिर हम अपना मारा शक्ति और ध्यान अिम दहातमें हम डग हाग बहाक अिगितके पचतागामें चन्नवाग कामाके निराक्षणक पीछ लगामेंग। तब हा हमका पता चरेगा कि हमारे कामामें तप्याग कितना है। जितने दिन म अिम प्रगामनमें पग रहा कि गाड चार बराड मया हमन गरीवाका जबमें डाला है। मैं साड चार बराडक ही नहा बलि साठ करोडक मोहमें रहा।

### वस्त्र-स्वावलम्बन

अिमी तरह स्वावलम्बन क्षत्रका भी मर्यादा है। देहातियों द्वारा कपास-मसहमे केवर आग-जी धुना-जी-बना-जी तकनी मव त्रियाअे अुन्हीन घरामें करवान पर भी कचर युनाजीन ही दाम अितन लगत ह कि मित्रर काडकी अगगा दहातियागा जा बचत हानी है वह अितनी अल्प हाता है कि दहाता अिन मव क्षत्रामें पढनका आसनाम राजी नही हाता। जीर फिर यात्रीकी अये ता मिलना कठडा मुत्र भी ता अधिव हाता है।

अमत्रमें वस्त्र-स्वावलम्बनको यारे ढगम यारी दृष्टित बाप कर्नाआको समझाना और समगना चाहिय। वह यह कि वस्त्र स्वावलम्बनसे समूच जहातका पसा बच कर देहातमें ही रहता है बकार समयका अुपयोग हातस अोग अद्यमगीन बनने ह यानी वस्त्र स्वावलम्बनका काम अहिमक ग्रामात्यानका या ग्राम सगठनका अगस्वरूप समथकर करनेसे ही स्थायी लाभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितने ग्रामाकी पूण वस्त्र स्वावलम्बी बना लेना है अमा कायक्रम मुझ नही जचना। सही समझके साथ जितना काम करना सीखेग वही सचा काम हागा। कवठ जाग और भावनाका होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नही।

### अय ग्राम-अुद्योग

यही बात अय ग्राम अुद्योगाकी भी है। किलहात्र तेलधानी देहातोमें ठीक चल रही है परतु घादमें असका चरना कहा तक सफठ होगा अिस वारेमें शका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-अ्यवस्था, जिसके सान्नी चक्की आदि ग्राम अद्योग जग र टूट गयी है। आज कपडा आटा चाबठ तेठ सब कुठ मगीनकी स्पधकि आग महग बन बठ ह। यदि जुनको फिर देगातामें सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अय-अ्यवस्थामें हाथ डालना होगा असे नय सिरेसे जिदा करना हागा। कवर किमी जक अग पर खोज और मेहनत करनेसे सफरता नहा मिलगा। जन्तान देहातियाको घर लिया है। प्रगति

वेगम नहा हागा, बहुत धार धारे विस्तार हागा। बग कठिन समस्या है।

मारा काम प्रामोत्थानही कल्पनाम

बापूजा—म ना जिमम भा जब कम्म आग जाना चाहूगा। आपन बनाया वह मव म मानता हू। जिसालिज ता चग्वा मवक मामन मने तान तिन अरता लि खा क मारा बावें बतलाया और य सारा गाग्माग् मवाया। हमरा अब मारा काम समुच्च प्रामोत्थानका कल्पनाक ढाकेमें लालकर नव मिरम करता है। त्खें कहा तक कर पात ह। अब कम्म आग जाकर भी म जा करनेका कहता हू मा यह है कि जिन परिवर्तनाक कारण कुछ समयक लिश यति हमारा काम म हा जाय गूयवन् भा हा जाय तब मा यह करना है। खात्के वारमें जा भावना हमन गगामें पग का है वह मही हान पर भी अमका गकितक विषयमें जा खयाग् हमन गगामें पग किया है अममें यति कहा मू या ता किरम मरना चाहिय। हमारा दावा यति गगन या ता घापणा करके हमें अम बापिम साचना हागा।

भरखागका म कहूगा कि आप अपन लिज ताग मव पग कर लें। अिपर अुधरम खाग जुगकर गहरवामियाका पञ्चानका लाम छाहूगा और किर हम प्रामामें ल कर ब जावेंग। अिम परिवर्तनक कारण कायवर्ना भाग जायेंग ता अहें जान लेंग। हमार लि जीर लिमागका परिवर्तन जब अिम ह तक हागा तब हा हम जा चात ह वह परिणाम मिन्नवाग है। चग्वा मव नातिमात्रका मरणाक रहगा और कामका जिनना विमक्त कर मर्गे क देंग जीर मार बाग्ना हल्य हा जायेंग। किर हम अपना मारा गकिन और ध्यान अिम दनतमें हम ड हाग वहाक अिगितक पवकागामें चन्वाग् कामकि निराक्षणक पीछ गगारेंग। तब हा हमका पना चग्गा कि हमार कामामें तप्याग कितना है। जिनन तिन म अिम प्रगमनमें पगा रहा कि मादे धार कराड गया हमन गरावाका अबमें डाला है। म माग् धार कराड ही मही यकि साठ कराड्य मोहमें रहा।

## वस्त्र-स्वावलम्बन

अभी तरह स्वावलम्बन धरना भी मर्यादा है। देहातिया द्वारा कपास-मसूहाएँ लकर आगरी मुनाभी-बनाभी तरकी मव त्रियाओं बुन्हीव घरामें करवान पर भी बकर बनाभीव ही दाम अतन लगन ह कि मिन्ने कपडकी अपरा देहातियारा जा बचन हानी है वह अतनी अल्प हानी है कि देहाती अिन सत्र झगगामें पडनका आमानास राजी नगी हाता। और फिर लागीकी अरे ता मिल्का बरडा मुन्ने भी तो अधिव हाता है।

असामें वस्त्र-स्वावलम्बनका मार तगस मारा दृष्टिसे काय कर्नाओको समझाना और समझना चाहिय। वह यह कि वस्त्र स्वावलम्बनसे समूचे देहातका पसा धच कर देहातमें ही रहता है बकार समयका अुपयोग हानस तग अद्यमगाल बनने ह यानी वस्त्र स्वावलम्बनका काम अहिसक ग्रामत्यानका या ग्राम सगठनका अगस्वरूप समझकर करनस हा स्थायी गभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितन ग्रामाको पूण वस्त्र-स्वावलम्बी बना लेना है, असा कार्यक्रम मुस नही जचता। सदा समपत्र साथ जिनका काम करना सालेंग वही सच्चा काम हागा। केवल जोर और भावनाका हाकर किया हुआ काम आखिर टिकता नही।

## अथ ग्राम-अुद्योग

यही बात अथ ग्राम अद्योगकी भी है। फिल्हाल तेलधानी देहाताम ठीक चल रही है परतु बादमें अुसका चाना कहा तक सफल होगा जिस वारेमें गका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-अ्यवस्था जिसक खादा चक्की जाति ग्राम अद्योग अग ध टूट गयी है। आज कपना आटा चाकर तेल सब कुछ मगीनकी स्पधकि आग महग बन बठ ह। यदि जनको फिर देहातोमें सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अथ-अ्यवस्थामें हाथ डालना हागा जमे नय निरेम जिदा करना हागा। केवल किसान अक अग पर सोज और मेहनत करनसे सफरता नही मिलेगी। जडतान देहातियाका धर लिया है। प्रगति

वेगम गहा होगी, बहुत धारे धीरे विस्तार होगा। बड़ा कठिन समझ है।

### मारा काम प्रामोदयानकी कल्पनासे

बापूजी—म ता जिसे भी अब काम जाग जाना चाहूंगा। आपन बताया व सब म मानता हू। जिसीलिअ ता चरवा मवक सामन मन तान तिन अयना तिन खा वर सारी वाने वतगया और य मारा गालमाल मचाया। हमका अब सारा काम समूचे प्रामोदयानकी कल्पनाके ढांचेमें ढांचकर ये मिरसे करना है। तैके बहा तक वर पात ह। अब काम जाग जाकर भी म जो करनेका कहता हू सा यह है कि अिन परिवननाके कारण कुछ समयके अि यि हमारा काम मद हा जाय गूयवन भी हा जाय तब भी यह करना है। यानक वारेमें जा भावना हमन अगामे पग की है व गही हान पर भी अमकी गक्तिव विषयमें जा खयाल हमन लागामे पग किया है अुममें यि कहा भूठ थी ता फिरस माचना चाहिय। हमारा दावा यदि गलत था ता घापणा करव हमें अुम वापिस माचना हागा।

सहरवालाका म बहूगा कि आप अपने लिअ यानी स्वय पदा कर लें। अिधर अुधरम यान जुटाकर गहरवामियाका पहुचानका लाभ छाहूगा और फिर हम प्रामामें डट कर उठ जावेंगे। जिम परिवननक कारण बायवर्ना भाग जायेंग ता अुहें जान देंग। हमारे लिअ जोर तिमिगका परिवनन जब अिस हू तक हागा तब ही हम जा चाहते हैं वह परिणाम मिन्नवांग है। चरवा मव नीतिमात्रका मरणा रहेगा और कामका जितना विभक्त कर सेंग कर देंग और मारे वादम हलक हा जायेंग। फिर हम अपनी मारी गक्ति और ध्यान तिन दहातमें हम डट हाग वहाव जिगितक पचकागामें चरनवा कामाके निरीक्षणक पीछ लगायेंग। तब हा हमका पता चरगा कि हमारे कामामें तप्यांग कितना है। अितने तिन म जिम प्रलामनमें पग रहा कि गाड चार कराड रया हमन गरीवाका जममें डाला है। मैं गाड चार कराडने ही नहा बलि गाठ कराडन मोहमें रहा।



म कहता रहा कि यदि हम चाहें तो गाठ कराइया बाधा अब वर्षों ही पत्नी कर लें जीर तब स्वराज्य हमारे हाथमें है। अगोच पीछ पडता तो सायत काम करा भी सता परन्तु अब गाठमें जा कर पाना वह दूरसे गाठ गतम हा जाता। खिन आज तो जितनी गहरी जड जा गत जुतना गहरा डालना है।

जाजूजा—मन्त्र यह हुआ कि सहरवाके वापसता भी खागीका काम कम करके मूनरे बन्धुमें खागी लें और दूरसे काम अद्यागत कामामें हिस्सा लें।

बापूजी—ठीक। यदि हम यह न करग तो हम जनकी और मुनियाका धोखा लेंग। आज तो हम खा हात है कि काश्चात्कीने भंडारमें अितन खजारकी खाता हमन अब ही खिनमें बच कर खतम कर डाली।

### खागीका प्रमाणपत्र

जाजूजी—तब भी सूतक बन्धे खागी देनका अितशाम करना ही हागा। यदि चरखा सब यह नही करेता तो फिर खागी खापारी कह्य कि हम सब करग आप बेचल प्रमाणपत्र द दाजिय। यदि यह करन जायेंग तब तो फिर बनी ही झझटमें पड जायेंग। जुनरे हिसाब जनकी कायवाही सत्र कुछ देखनी पडगा। यह सब कमे पार पडगा ?

बापूजी—सनीशबाबू कहने ह कि अिस विषयमें हमें गागाका आजदी देनी पन्गी।

जाजूजा—आका कहना है कि सत्र खय विक्रयका काम लागाको सीस दा। सब न करे।

बापूजी—य जनकी सूचनाने बारेमें हमको पूरा पूरा साबना जरूरी है।

जाजूजी—यह पसे-टकेका मामला है। अिममें जठ भठ खोग भा मुनाफा करनके माहवा सबरण करनमें जममय पाय गय ह। मजदूरी चुकाना नबर निकालना जाति बातोमें कायकर्ताकी कुछ न कुछ मुनाफकी दृष्टि रखनी ही है। बखिन सूत खती है। कायकर्ता

मरम मोर सूतवाली गुडी उतर जब निकालता है फिर वही जब सब मुर्तियाका लगाता है। सूतका माटे नौका जब निकाल पर नौका हिमाव लगाता है। जिस तरह जनमान भी श्वाव मुनाफका जोर रहता है। फिर कारीगर भी अपने जयजयभकी मुक्तिया चलाते ह। जिस प्रकार मनुष्य-स्वभाव अपना घर खता है। मनुष्य मान-काम खानगी व्यक्तियारे सुपुद वरनमें बड खतर ह।

सादीका व्यापार ही नहीं

बापूजी — इसका जवाब मर पास है। सनीगवाजूरु गुलावमें ठीक क्या है जिसका मुझ ठीक पता नहा है। परतु मरे मामन जा चिय है असमें सादी-काम कागति सुपुद कतका वान नग जाती। हम ता गहरवासिवाको जितना ही बू नेंग कि यदि खाने पहनना है ता अमका शास्त्र हमन जा नूना है वही है। वह बखर बाग जयगाम्ब हा नही बल्कि जनिवाय रूपस नातिगास्त्र भी है। जिनास नवका अपनी अपनी खानी बनानी हागा। यदि गहरमें बुना-गारा प्रवध नहा है तो गहरमें ही या नजगाममें ही वहा बुननगागा बस्तिया या ग्राम बना लें। वहा कडा बना जाय। वहा स्पर्धा नही रगा। हम गहरवागका समझायेंग कि आज जा खानी हम आपका द रह ह वह निकम्मी चीज है। जिसमें गरीगारा ठीक कितना मिग अभि वातका आपका पता नग है जिसजि आप अपना जानकारामें अपना जाव तरे तागा बुनवा लें। जिस प्रकार हम अपनी नानि बखर नेंग। आज हमें गहरवागको यह बखता पन्ना है कि खानेम गवागा पट रता है जिसजि गरीगारा। खनि अमा वरनमें सबको व्यापार-व्यवसाय करना पडता है। यदि व्यगमाय ही करना है ता जिसर बड पर कितन ही लागका वेर पाव सन ह।

जिसजि खानीका व्यवसाय करनवागका प्रमाणपत्र दकर खुतरा हम गधकी प्रतिष्ठा न देंग। हम खुनके धनमें न ही निरख जायेंग ताकि प्रमाणपत्रका बात्री अय ही न रहन पाय। जिनना ही मराग रयेंग कि जिसजि दहतामें बोत्री काम बखता हा और वहा हमार

पास कुछ रानी बच जाय और यह यदि शहरवागते कामती है तो वे भू ही न जाय। एकिन शहरवागती ही आया मामन रमकर हम रानी पदा नहा करण। यदि अिगम बायना सकाच हा ता क्या परवाह है? आज जिस तराजम कर रना हू अिगम ता सच अयमें गरीबाका अथलाभ म नहा कर मजूगा। आज ता म देहातियाको बच प्रगभन दे रहा हू कि यह घरणा सघवाल तुम्ह अठी मजूदूरा दत ह। अिग तरीक्स हम कामका टिका नहा गकेंग। हमें बकाराका काम तो दना है यदि व चाह ता। अस डगम हमारा काम चलाना है कि अनका दाम भी मिलें और गहरामें रानी भी न भजती प।

### देहातियोंको सच्ची मन्द

जाजूजी — यह मुच जधिक समझना हागा।

बापूजी — आज हम सच्चे अयमें देहातियाको मन् नही करण। कातनवालाका म ३ ४ ६ ८ आन दता हू और सनोप मानता हू कि मन जनका राजी ना। सच्चे अयमें म अनका भिक्षा दता हू। कारण कि अह म जा काम दे रहा हू अुसको म टिका नग सकूगा। यदि हमार हाथमें राजसत्ता जाजी और अुसने बल पर मान लो कि हमन मित्रें बढ कर दी तब गायद वह टिक जाय ता भू ही टिक जाय। एकिन आज म जनका जस घोबमें कस रखू कि मन जनकी बकारी टागे है। यदि मुझको अह पस ही न ह तो दूसरे घध भी अुहे मिलाअूगा। आजका जायिक अवस्थाका पूरी समय और गान अहें दूगा। मनमें तो यही रहेगा कि जितनी कतिनें आयें अन सबको काम दू। परंतु जा खाती पदा हागी असका बबजा नही भजूगा। अिदगिमें ही बचनको बायकतसे कह दूगा। कातनके सिवा और भी कौनसा काम अुनको दिया जा सकता है अिमकी खाज कलगा। यदि हम यह न करेग ता हमारा काम स्थिर नही हागा। यह म मान लता हू कि क्या देहातियाका क्या हमको गहराका कुछ न कुछ प्रलोभन ता रहेगा ही। परंतु गहराने प्रभाबके नीचे आज जसा हमारा जीवन बीतता है अुसस ता हम छूटेंग। गहरोकी

अपना देहानामें अधिक मुविधाजें किस प्रकार रह सकता ह यह हम बता देंगे। यदि ८ आन मजदूरी देकर बनायी गयी खांग दाम बनाकर हम बबजी भजने रहेंगे तो यह काम कभी चलनेवाला नहीं है।

आपके साथ रोज भ्रम घटा वास्तविकपने लिख जिसदिअ रखा था कि जब यह प्रश्न नित्य मरे सामने खड़ा रहेगा तो मेरा त्याग मां साफ हागा और मुझे स्पष्ट दगन हागा। मैं लेवता हू कि हमको जन्से फिर साराका भारा परिवर्तन करना हागा। यदि गिरना ही है तो जडतास क्या जानम सावधानीस गिरण मून बन कर नहा। जितना करन पर भी यदि लाग मरी हमी करेग तो जमे म बरदास्त बन्ना। लाग कहण कि गावान कराड हमया बरवाद किया। किया किन खा तो नहा गया। यह सर वार्ते कर ता रहा हू किन व सही है या नहीं जिन विषयमें आपक महारेकी मुन जरूरत है। आपकी राय जानना चाहता हू।

### सूनकारोंको अयाय अुद्योग देंगे

जाजूजी—कारीगराका मजदूरी फिर जा खांग हम आज पहारामे भजने ह अुमस देहातिशाका आज तात्कालिक अयायम हाता है। जिनके बन्में अब हम क्या देंगे ?

बापूजी—यदि मरा बम चला तो पही कहूंगा कि आज तक जिनका मन सामोक जग्गिये राजी दी अुनका धारे धीर तिरालना है अुनका दूसरा काम न्ना है। कौनमा काम न्ना यह भा माचना है। यदि सवापामको मिमाल भान लू तो हम स्या-जामस अतिरिक्त अयाय काम भी यहाकी बस्नाकी जा ज्यादातर हरिजन ह द सकन ह।

जाजूजी—यहाकी परिस्थिति अज्ञान है। यग जितना मम्याअें बन गया ह मेहमान आन हैं मकान बनन हैं कथा काम चलन न्ना है। जिनम लागाना काम मिन्न जाना है।

बापूजी—हर जगह भ यही स्थिति पैग करूगा। कुछ न कुछ काम पैग करने के लिये हमारा अपनी मारी बुद्धि और शक्ति लगानी होगी।

### समग्र दृष्टि

जाजूजी—सता गापायन अल्पाधिक धारमें आपन जा कग सा नही है। लकिन सारी द्वारा स्यादा आर्थिक लाभ देहानियाता कस लिया जाय यह भावना हागा। यदि मित्रा कपडा मामन न रहता तत्र ता लाभ ही लाभ था परन्तु जब तक वह शत्रु सामन खडा है तत्र तक क्या किया जाय ?

बापूजी—अिमलिभ म देहानीना समझाभूगा कि मित्रो जसा कपडा नहा मित्रा। सारी यत्र जब पसा मोगी गिरता है तो अस कहूगा कि वह पसा जमका अमके परिवारको या गावका ही मिलता है और ग्रामकी नीतिनी रथा भी अिमीमें है। यह नीतिका पहलू भी जैसे समझाभूगा और साथ साथ देहातमें रहकर कमानके अय तराके भी अस सिखाभूगा। कवत्र खडरके ही जरिप जीवन निर्वाह करनकी बात तो अब मेरे निमागमें स छूत्र गया है।

जाजूजी—यानी खादीन और अय ग्राम बुयोगाने जो नतिक और सामाजिक गुण ह अुहें समझाकर ही जनसे काम पैग है।

बापूजी—हा अब केवल खादीका ही म जाखके सामन नहा रखना चाहता। यही सोचता ह कि खनी गोशालन और अय सब ग्रामीण बुयोगाको किम तरह देहातमें फिरसे बसाजू जिससे गोगोकी स्थिति अच्छी हो। यत्र दो चार दहातमें भी यह कर सका तो मेरी समस्या हठ हो जायगी। यथा पिंड तथा ब्रह्मांड ।

जाजूजी—अर्थात समग्र दृष्टि रखकर विकास करना होगा। हम खादीक केवल आर्थिक पहलू पर जोर न द परन्तु नतिक और सामाजिक जगको भी गगाको पूरे जारस समझायें।

बापूजी—अिसीलिय वलमस्वामीका तरीका भी मुझ अब हृद तक चुभता है। असन अब ही अग पर जार दिया। कहा कि सारे

गावदा म जितन अरसेमें खानीमय कर रूगा। अक समय था जव मज य बात प्रिय लगनी था परनु अर म नेवना हू कि जिसमें मरा भू था। अरनी खाता प्रामाणा जत्यान नहा कर सना। मारे ग्राम जावनडा मार ग्राम अयागाका जाबिन करव हा ग्रामवामिनाका हम जधमगी बना सकेंगे और तव हा प्रामाणा जुत्यान हा।

जाजूजा—बहुत मन्त्वबूण वार्ते सामन आजा। अब क विक्रमकरणकी चवा करग।

छठा दिन, गकरार, ता० १३-१०-४४

यह विवेचीकरण नहीं

जाजूजा—आज आप विनाकरणव विषयमें कथिय। अक दृष्टिम क्या जाय ता अतर्तिना विक्रमकरण है ही यथाहि अतर्तिर कद्र जगजगह विखर हअ ह। हा पूजा अरर अक जगजगता है। म ता मानता हू कि आज जा कर्तीय विमरण है गा मयका नीतिवा ही है। पूजीकी दृष्टिमे मावना हा ता यह मावना पंगा कि गतामें जा काम चंगा मा विमना अरम चंगा अर अतमें आनवाग पाटा-नफा विमका माना जायगा। अक ग ता य हा मवना है कि निम वायवताका हम विगपे वही मव बुझ करे। दूसरा तरीका यह है कि दगतिपाया मग्म हम खाता-काममें रम नेवना प्रामीणाकी कमेटिया बनाकर अजुन माफन काम लें। हानवामा ही चग अर वगरा नी जुगमें। तापर प्रकार गागक शरीर अना मामायटिया बनाकर अपना वारावार स्वय माग्क नात चगपे। वायवताका यदि माग्क बनना है ता अमक गुपु धन मगति वारा दनी हामी। वर किग गन पर दा जाय या अम दृष्टा ही समता जाय? वायवता यदि व्यतिगत स्वायकी दृष्टिम काम चगायगा ता अगव काममें गाग्माले हानका काफी मभव रगा। मवन अग तरीका गग्पाया मामायटिया बनाका है। शरीरारके स्वाय-मवधक कारण कुछ गाग्मा हानका मभावना है जकिन निम मयग रचना रीर नहा हागा। अग गाग्क वग हा तग्पानी गय वागज आग्क भी मग्पागी मय बने। आक-परतानुसार वामें कबी

गावारे गधावा अर मयुक्त यनियन वनापर भी काम किया जा सकता है।

बापूजा — अरि विषयमें मुझ कुछ अरिक् बहना नहा है। जहा बायवना जट जाय और भावा विन्वाग हा वहा काम शुरू हा। ताना डगव प्रयाग अक्त्तम चन्तमें हज नहा है। परन्तु बल जा प्रश्न भुटा था और जिम पर चर्चा हुआ थी वह अगर सच है तो अरि सारी बाताकी बहुतासी शकटाग हम छू जात ह। जब तक गाणी बचनका चाज रहगा तब तक य सब शकत्तें भुगना ही हागा। यह भी म मानता हू कि आज ही हम अरिगत न छू पायेंग। परन्तु जब तक हम यह मानत ह कि खात्री रागरी तरह घरमें हा पकना चाहिय यदि विस्किट बाजारमें सस्त भा मिलें ता भी अनका खाकर नहा जीना है तब तक लागको यही समझाना है कि बाजारका खाकर जानमें नाग है। लाग यत्ति अरि समझ जायेंग तब फिर घर ही घर पकानका आसान तरीका टूटनका बाकी रह जायगा। जस रागो बसे कपडा यही नारा बनगा। फिर सब शकट निकल जाती है। जब सह योगी सभ निकलेंग तब अनका गक्त्त यारा हागी। आपन जब कहा कि जल्पत्तिमें ता विवेकीकरण ह ही तभी म कहत जा रहा था कि नही है। ममन्तु ग्वागायरमें भी कुछ कपडा घरामें बनता है लकिन घरके अपयागके अरि नहा। जा मात्कि ह अनक लिज हा बनता है। अरिसे विवेकीकरण कहना अनय हागा। बसे ही जापानमें घर घरमें सब कुछ बनता है लकिन घरके अपयागन लिअ नही। सबका सब सरकारके लिज। सरकारन सबका केद्रीकरण कर रखा है। चीजें घरोंमें हा बनता ह। बनानका ढग भी अरिगडमे वन्या है। अरिकिन घरवाके कुछ भी अपन अपयागके अरि नहा रख सकते। यह या तो सरकार कराती है या कहिय कि दा-न्वार व्यापारी सरकारके लिअ करते ह। फिर जुन चाजाका दग गेके बाजारा तब पहुचानक अरि जहाज वगरा सब कुछ सरकार ही देती है और अरिस तरह अचाय देगोका धन अपनी तरफ खाय लाती है। ग्वागायरका भा वही हाल है। वहाकी मिलामें लाखो धोतिया बनती ह अरिकिन अन्हें यत्ति वहा

खरीदना चाहें तो नहीं मिलेंगी। सब हिन्दुस्तानियाके त्रिभ मन्स बम्बयी कर्कता जायगी। बस ही अपावाक त्रिज जा माल बनगा, वह बहा जायगा। जिस सबका म विवेकाकरण नहीं बहूगा।

### खादी बचनेकी चीज नहीं

हमन भी वही किया। हमारे कारीगर अितना ही जानते ह कि वे चरखा सघका काम करते ह और तयार मान् जुमीका देना है। हमन मजदूरी बढाओ। कारीगर खग हुआ। यदि हम जिस नतीजे पर पहुँचे हा कि खादी बचनेकी चीज नहा है पहननेकी चीज है तभी मानना चाहिये कि हम खादीका मदेश पूरा समझ गय ह और खादीकी शक्तिकी मर्यादा भी जान गय ह। हा सकता है कि जब राजतन्त्र हमार हाथमें आयगा तब सारे मन्को हम खादी पहनाएंग। जहा आज खादी पदा होनी है वहासे मारनेमें खादीको फग देंग। तब आजमे ही असी व्यवस्था बना न पना करें जिसमे यदि भविष्यमें देाकी सरकारन चरखा सघको बहा कि तुम देाका वस्त्र-स्वावन्त्री बनवागे खास सस्या हा तुमका हम सब साधन जुटा न्गे तुम देाका स्वाबलवी बर ना ता हम तुरत अुमता बढ करव न्गिला सकें। उकिन आज यदि सरकार बह कि ना हम सब मिले बन करते ह सारे देाका जाप खादी पहना ना ता हम यह नहा कर सकेंग। अिमत्रिभ खादी हमका बन्ग तब ये जा सकती है यह हमें जानना हागा। म यदि नहीं बह सरता कि म भा यह ठीक-ठीक जानता ह। लकिन जितना ता स्पष्ट रूपम जान गया ह कि खादी बचनेकी चीज नहीं है पहननेका ही चीज है। अिमाय खादीकी काम नीति बन्दनकी बात आना है। मरे मस्तिष्कमें ता आज यह बात चल रही है कि मारे दहातरा आज पुनरुत्थान करना है, और अुममें खादी अक चीज है—और कामा बडा चीज है। वम हा फाना और अय अुघाम भी ह। अित दृष्टिग हम देखेंग तब फिर इमार कामम हिन्दु स्ताको निरा लाभ हा-लाभ है। और जब कभा मन्कारक अधिभार हमार हाथमें आयेंग तब भी हम डट रहेंग पीछ नहा हेंग।



## स्वयं पहनन के लिये बातना

गाजूजी — फिर गागा प्रयत्न यस्त्र-स्वावयन याना मुक्त पहनन के लिये बातना है। गागे करना है यही निष्कण निष्कण ?

बापूजा — हा यही। परन्तु यह मन जापन नया नया करना क्या कि मग अगि विषयमें निजी अनुभव नया है। मन पहन खाती चणजी पीछ जुगता जम्पान विषा। अगि प्रवार अपनता धारा दना रहा हू। मन जा निया गा पगा निया जमग चाज — स्वाव उवन — गागारा म नहा न मग। मन मजदूरीन हामें पमा निया और गागामे कहा कि अगमें स्वराय भरा है। अगात मग भगमा किया जोर मान निया। आन भा मानन न। उकिन गिग रिउयमें अब मुझ गावा पगा हुजी है कि यह अब कहा तक चण मरगा ? मुझ भय है कि यदि जिमी तरीकस खातीका चलात रहेंग ना वह चणवाली चीज नहीं।

जाजूजा — जसा काआ चित्र आपकी जालक रामन है कि गहराम आज ना खाती नडार चण रहे ह वे हमेगा चणनवाणे नहा ह ?

बापूजा — हा जमा चित्र मरे सामा है।

जाजूजी — तब हमें अिस बात पर आना हागा कि लागाका सूत दवर हा खादी खनी हागी।

बापूजी — हम बातना मील जब हमन दखा कि जिसक बिना काम नहा चलागा। त्रेकिन बनाजी हम अधिक नहीं पर पाय। जब हम महसूस करते ह कि बुननवाले भी अुसी तरह तयार करन पडग। जा कुछ यहा परिवनन करन ह सो हमें बडिसे समझ-बझकर करन हाग।

जसे जीवन मजदूरीक विषयमें हमन किया था कुछ काल तक जमा सूगा करत रहे। तब दिमाग साफ हुआ और हम समथ सके कि यह खाता परमाथ नहीं है बत्तिनाका गापण है। तभी हमन मजदूरा बनाजी। मन आन जान देनको कहा। आप लोगान कहा आठ जान नहीं तीन आन। मन कहा अच्छा तीन आन ही सही। फिर

तीनव चार जाने पुत्रे । श्रिया तर्ह जिम नञी चाजवा भी है । आप श्रिम स्त्राकार कर लें वाग्में गात्र वग्न-वग्न आग बनें । आपन तान पन्त्रुअमे मावनका बहा । जन्म मायें । हर सूबमें हमारे नत्र पन् ह । मचात्रक पन् ह । कुछ कायकर्नाश्राहा वत्राश्रिय जीर त्रफमात्रस गाव गाजिय । हा जितना म अवय्य वट्टगा वि कामवा सवाच हा जायगा । जिम बातम म नहा डरगा । बाजा नहा वानगा तत्र मैं अगेग वानूगा । वाग्नाक प्रारम्भ वाग्में मक्ष बहा गया था वि गाग्नाहा धानी हानवागी नही है । मन बन्ग था वि म टाट या क्वर जाकर फिन्गा त्रकिन मित्रका धाना नहा पन्नुगा । उम महानत्र अत्र ही मगागात्रन धाना पन्ग कर ग । मगावत्रन मक्षमगात्रन भा धानी भञी और श्रिवा वि जितना चात्र वनवा कर भञू ।

### सादीसे स्वराय

जाजूजी — यानी गाग्नाका जा विशा गहरामें वन् रमान पर चन्ता है अुम हमें वद करना हागा । गगारी वातनका कहना हागा । श्रिमर पन्त्रुवरूप जव बार ता हमारा बहनमा काम बन् हा जायगा ।

वापूजी — आपकी मुखना व्यवहारही दृष्टिम है यन् स्वाकार वग्नमें मुख काजा आपत्ति नहा है । गग ता जात्र गगात्र वन गय ह । जा वग्नवा बहागे और रात्र दागे वनी करेग । परतु बिना माव काम चगात रहेंग ता हम अुनरा भा घागा देंग जीर मुखवा ना । आज हम अतका राजा क्या दने ह जन् श्रिस्मरी भिशा हा त्रन ह जम पयर तु वावर या मत्र वनवाकर त्रुभिनने ममय दी जाती है । अुमका काजा म्याया मूल्य नही होता ।

जाजूजा — यानी पन्ननवागाका गाग्ना मात्र त्रन वजाय स्वय वातनका बहनत्र पन्त्रु हम मह गाव लें वि हममें स्वय वातनका अनुराग कितना है ? मुख चरना मघर कायकशाश्राहा हा वाठ वट्टगा । हमन मघर नियम बना रय ह वि हत्रक कायकशाहा हत्र महान वम-म-वद मात्र गात गुडा वातना हागा । त्रकिन श्रिगवा परिणाम मगावकारक नहा आपा । जनगामें पाननवागाका मरुग पाडा हा

है। जोर देहातमें जो बातें हूँ सा गिफ्त मजदूराने लिख। अतः लिख ता बहुत ही कम। असा स्थिति है। असा परिस्थितिमें आप मुझाने हूँ असा परिवर्तन वहाँ तक मजदूर हागा यह कहना कठिन है।

बापूजी—अतः ता सभी समय लें कि गांधी कब तक राजी दनवाला जब अद्याग भर है अतः खयालको हम छोड़ दें। यदि यह जब अद्याग है ता उसे फिर "बापूजी" ही गणतंत्र चयना हागा। मिलने द्वारा हम अब-अब शहरमें अब गणतंत्र या कभी हजार आगानो रोजी दत्त हूँ और खानाक जखिय पत्र हूँ हजार गांधीमें हम करोड़ रुपया मरीवाका जबमें डाँते हूँ अतः ही फक्त रहा। दाना अद्याग ही हूँ। फिर सान्नीका पहनो जोर मिलका बहिष्कार करा यह बात ठंडी पत्र जाता है और न असा स्वराज्यका दावा ही रह जाता है। असलमें जा दावा सादीका कल्पनाक पीछ है वह तो प्रामाणिक अत्यान्त जोर असा जखिय अपन-आप स्वराज्यकी शक्ति जनतामें पदा करनका है।

### देहातियोंको शक्तिशाली बनाना है

शहरवालाकी भावनाक बल पर देहातियोंको मदद देते रहना पर्याप्त नहीं है। बल्कि देहातियोंको उनकी जीवन-समस्याका सामना करनेमें शक्तिशाली बना कर आग बनाना है। यदि मिलोको हम बनायें तो लागोको कपडा पूरा मिल जायगा। और यदि मिला पर सरकारका कजा रहा ता कपडेके दाम भी गायद कम होंगे और गौगोका गायण भी नहीं हागा तथा लागोको अचित्त मजदूरी भी मिलगी। परंतु आज गौगोको आलस्य रोगसे हटानका खाती अब बडा साधन है। जनतामें स्वराज्यकी शक्ति पदा करनेवाली वह चाज है। दूसरी चीजाका भी वसी ही बना लेंगे तब ही देहात स्वावलंबी बनेंगे। साबुन जसी चाजें सजी मिट्टीस घरमें ही बनाकर बे साफ रहेंगे। असा साबुनमें टाटाक या गान्धेज साबुनक कारखानाकी खुाबू नहीं हागा न वसा मुहावाक पवित्र। परंतु देहातके लिख खातीके जितनी ही अुपयोगिता और स्वावलंबन जसमें भरा होगा। सारे

शामात्यानकी गकिन रखनवाला खादीका जा बहुत बडा चित्र मन अपनी कल्पनामें अितने तिन रला था वह अब धुमला बन रहा है। जितन बायवर्ताजसे म बात करता हू, अुम परमे यही देख रहा हू कि अम चित्रका मुझ अपन ही हाथमे मिटाना हागा। म माताका मत्र तेनवाला हू अिमत्रिमे मुझ ही यह स्वीकार करना चाहिये। मयकी यहां माग है। हार कर या दुवल्ताके बग हाकर मै यह नही बरुगा पानपूवक ही बरुगा। खादीक लिअे मन जा दावा किया अममें यति अतिआयोकिन थी तो मुझे अुम सत्तारके सामने दुम्त करना ही चाहिये।

जाजूजी—हमारा दावा मुख्यत यह था कि खादी साल्मरमें चन् महीना तक मजदूरन बकार रहनवाल दहातीका कुछ-न-कुछ आमनी देनवाला अुद्योग है।

बापूजी—अितना ही कहकर म चुप नहा रहा था। मन असमें अिस दकिनवा भी आरापण किया था कि अुमक धागेमें स्वराय लानकी दकिन है।

जाजूजी—हा गकिन जीवनका समुद्ध करनेवांग अुम गकिन पर पहले कभी अितना जोर नहीं दिया था जितना कि आज आप द रह ह। करीब तीन लाख लोग आज खादीक अुद्योगमें ह। अुनमें राजा या म्याकबनके अशया चारे-न्यारे गुणोंका विकास अितनी जल्दी अभी नही होगा जितना कि आप चाहते है। सायन् समय लेकर हो। आज गादीकी दित्री हम बन् करे और लोग अउन अिअ बातें यही आप पाहेंग न?

बापूजी—हा।

जाजूजी—गकिन दित्री बन् करने पर काफी परिमाणमें मजदूरीक लिअे बातना बढ हा जायगा।

बापूजी—हां फिर भी जा कुछ कताअी पानू रहेगी वह मचमुच ही सूत्रक पागम स्वराय लानवागी हागी। क्योंकि वह दकिन ता अुसमें है ही।

### नयी नीतिसे सजोच नहीं — विस्तार

जाजूजी — आज राष्ट्रीय जरिय करिय तीन लाख लागामे हमारा सपक है। अपन लिअ बातनरा कहन पर पाय तीन हजाररम अधिक लागामे यह न रहेगा।

बापूजी — बादमें अउन तीस हजारके पाय तीन कराड भा हा सकते ह। जा भी हा अउममें कही घातक लिअ गुज्राअिग नहीं रगा। तब हमें देहातियोकी और कारीगराकी खुगाम करक काम कराना नहीं होगा। अउनक जीवनमें हमारा प्रवेग होगा। मनकी बातें काय कर्ता देहातियाकी और देहाती लाग कायकर्ताआका सच्चे दिग्म मुनायग। आज ता हम पसेकी घनी बाधकर जाते ह और लागामे कहन ह कि बाता तो चार आना मजदूरी देंग छह आना देंग। हमें कर्तिनाका मजदूरी ता बगाना है। म ता अन्हें पुरपका जिननी ही मजदूरा दूगा लेकिन अन्हें साफ-साफ यह दूगा कि ककठ मजदूरीन लिअ व बातती ह अिसमें मुझ लिचस्वी नहा है। म हर कर्तिनस कहगा तू अपन लिअ बात। तेरा सूत म बुनवा दूगा। तरे बच्चाको म शिक्षा दूगा अुद्याग सिखाअूगा। तेरा बजट मुग बता म तुझ हर तरहम मदद करूगा। तेरी मुसीबतें हटाअूगा। आरम्भस अगर हम यह करत और असे कायकर्ता मिलते तो अब तक हम स्वराय लेकर बठ गय होते। परतु जा हुआ अमका मुझ पश्चात्ताप नहा है।

### हमारी भूल

जाजूजी — असी भावनावाले कायकर्ता बहुत सख्याम मिगेंग असा आप मानते ह? मिल जायें तब तो फिर रहा ही क्या?

बापूजी — भूल ता हमारी ही रही। अिस दृष्टिको सामन रख कर काम करनका और कायकता तयार करनका काम ही हमन नहा किया। जल्दबाजी भी काफी बी। साब-समझकर और घ्यानावस्थित हाकर काम करत तो मिल भी जाते।

जाजूजी — आपन तो अनको बार कहा कि अच्छ कायकर्ता देहातमें जाकर बठें।

बापूजी—असो बिना पर ता मन चरखका अहिंसाका प्रतीक कहा। यदि हम न कर सके ता खात्मा विषयका हमारा दावा नही बन्गा।

जाजूजी—आखिर वायवता भा तो आजका गव-ममाज जसा है कुमारे म निकलेंगे न ?

बापूजी—अगर यही हमारा जवाब हा तो फिर अहिंसाके माफत स्वराज नहा मिलेगा। यानी मरी कल्पनाके स्वराज्यके लिअ लोग तयार नही ह।

असलिअ म कहूगा कि यदि म अकेला रह गया तब भी मुझ यही काम करता है। चरखा सघ प्रामोद्योग मघ तागीमा सघ बगरा मघवाल यदि साथ दें तो अच्छा ही है। यह भी संभव है कि गोग हमारा साथ न दें। तब यही न मावित हाणा कि हममें हिंसा भरी है हम जिम अहिंसाकी बात करने ह वह अहिंसा नहा है वायवता है ?

जाजूजी—यह सब सही है। लेकिन प्रान जिता हा है कि अिम पर अमल कैसे हा ?

बापूजी—तब हमने जा उवा दावा किया है अुस छाप्ना हागा। वाग्मवमें सत्यको ही चिपक रहें। बिना मकाच और बिना अय बिनीवा अपनस कम समझत हुआ हमका पन् कह देना है कि जमे सब कम ही हम भी हैं। फिर यदि स्वराज्य मिग भा ता वह हमारी काअी विगपताके कारण मिला अगा मिद्ध नही हागा।

सातवां बिा गनिवार ता० १४-१०-'४४

वायवताओंकी गिआका प्रवध

जाजूजी—अब सारे प्रामात्यानक वायवमको हायमें लना हागा और असलिअ मुयाण्य वायवताओंको जुटाना और तयार करना हागा। विषाक लिअ गाला पदा करना पन् यह स्थिति अनिष्ट ममगा जाय। अब अिम बात पर जार देना है कि यस्त्र-स्वाव-बनर लिअ गानी पदा करना है। चाह अिससे मघक वायवता मकाच ही बदा न हो। अिमका भीभा अथ यहीं कि मूल गवर ही गानी देना राज्म नही।

और जा मूत आयगा अगरी युवाभीवा प्रबध करना। दूसरा प्रश्न यह है कि अिस नीतिरा व्यवहारमें सबसे और किम हूँ तब अमल हो। तुरत ही यह नियम करें कि बिना पूरा मूत न्यि खानी नहा मिलगी या यह कि छपयमें चौयाभी तिहाभी या आधा हिस्सा मूत लवर खानी दें और अिस तरह मूतवा अनुपात बढान बढान निश्चित समयमें साफ़ आन तब पहुच जाय ? अिसमें सन्देह नही कि यह काम बडा ही कठिन है। कायकर्ताआको अिस नीतिके अमलक न्त्रि तयार करनेमें और योगाना समझानक न्त्रिे भी आपका काफी परिश्रम करना पडगा।

बालमें आता है शिक्षाका प्रबध। कायकर्ता तयार करनेके लिअ हर प्रातमें विद्यालय खालन हाग और अन्के लिअ अभ्यासक्रम बनान हाग। अिस कामके लिअे याग्य शिक्षक बहुत ही कम पाय जाते ह। प्रथम शणीके जो कायकर्ता ह वे अपन-अपने क्षत्रको ही अपनी साधना भूमि समझकर बठ ह। अपना गाव तहसील या जिला ही अुनका क्षत्र है। आपन भी अिस प्रकारकी वृत्तिको बढावा दिया है। अिन श्रष्ट कायकर्ताआमें से कम से-कम कुछका अपन-अपन क्षत्रमें से निकाल कर जब तक हम शिक्षाके द्वामें नही लगा सकेंग तब तक यह काम कसे बनगा ? ग्रामसेवकाका सच्चे सस्कार और दृष्टि अुनके सिवा कौन दे सकेंग ?

वापूजी — खादीका काम गुरु हुआ सो भी प्रारभमें अेक ही केन्द्रसे शुरू हुआ था। अिसमें भी वही होगा। आरभमें यहा जो अेक शिक्षाकेन्द्र खुला है वही चलेगा। यहासे विचारद तयार करके हम अुनको अय केन्द्रोंमें भजेंग। अन्के मातहत वहा और कायकर्ता तैयार हाग। थ जाकर और-और केन्द्र तोलेंगे।

जाजूजी — अिसमें काफी समय लग जायगा। पाच सात दस वष भी लग जायें।

### प्रयत्नशील कायकर्ता चाहिये

वापूजी — हो सकता है परतु मेरा खयाल बसा नही है। हम जिन कायकर्ताआका प्रथम लेंग वे जैसे होंगे जा काफी तैयारीक साथ

आये हाग यानी अुनकी तयार होकर बाहर जानमें अधिक समय नहीं आगा। फिर अेव ह तक अुनकी तयारी हा जानके बाद हम अुन्हें कहेंग कि अब जाओ और काम करते-करत ही अनुभवने अपना पान बढ़ाओ। जिसलिये बहुत समय आगनवा डर मझे नहीं लगता। फिर भा यि लगे ता भल ही आगे। यदि हमें दीखे कि दूसरा भाग नहा है तो आज जसा चलता है अुमी पर चरना है। आज अुचे देखके बायकर्ता नहा मिलते तो न सही। हम यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे फिर जो भी मिल जाय।

जानूजी — सन् १९२० में जो बायकर्ता आय अुहाने अपनी याग्यना सिद्ध की। अुसके बाद जितनी बडी सख्यामें अुंची याग्यताके योग नहीं आये। आये सही आज भी आने ह परंतु बहुत कम।

बापूजी — बात यह है कि हमारे काममें काफी अपूणता थी और अच्छे-अच्छे लागानो आवपित करे जमा बायक्रम भी कम था। बुद्धिके विकासके लिअे गुजाअिग दीख नहा पडती थी और बुद्धिका विकास तो सबको चाहिये ही। अिसी कारणसे अिस काममें अुनारो अिचस्पी नहीं हुअी। अिसके अगवा जा अयगभ अय क्षत्रामें दीखता है अुसका यहा अभाव था। अकिन अयगभसे भी अधिक सटकनवात्री बात ता सके जानकी यूनता थी। अब प्रकारकी जडना हो खादी क्षत्रके बायकर्ताअामें अुनके देखनेमें आता रहे अिसीमें अहे आवपण नहीं हुआ। खाती-बायकर्ताआवा व हसा मजाक भी करत रहे। लागाने यहा तक कहा कि खातीभवत खाती पहनता है सो भी ढगमे नहीं पहनता मग-बुचला रहता है और व्यवहारपान-शुभ हाता है। चरणकी शास्त्रीय जानकारी तथा दूसराका अुने समपानकी अुमुवना और अकिन यह सब अुसमें देखामें नहा आता था। बाआ अुम कहता कि हमें यह समझाओ-बताओ ता यह नहा समया सवना था। हम देहातियाके बीचमें जाकर कम। हमन देहातियाको काम अिया। अुहे देहातमें ही रोजी मिअनवा प्रवष किया। अकिन हमारमें जो बुद्धिमान थे अहान काफी सख्यामें देहातियामें जाकर काम नहीं किया और जो गय व अिसी अिजामु या अम्नामु अ्यक्तिको अपनी बात समझानका ढग नहीं सीने।



यदि हम यमा करत तो अपन विषयमें अिस भांति पारगन होने कि अघास्त्रियाका कह गइने कि आप जा जानत है यह ता हम जानत ही है लकिन हमका जा जान है यह आपके पास नहा है हम यह जापका बता सकत ह।

### नव मूल्योका निर्माण

जाजूजी — हमारा जान अवूरा है हमारेने काफी पुनताये ह सही तथापि मूल्यमापनकी हमारी बगोटी भी तो पारी है।

बापूजी — है सही। लेकिन हमने अितनी योग्यता आनी चाहिय थी कि हम जुनको समझा सकें कि अनका मूल्यमापन सही नहा है।

जाजूजी — लेकिन नतिक मूयो और भौतिक मूयाकी तुलना भी बस हो सकती है ?

बापूजी — फिर अितना ता कह सकते थे कि यही अुमकी विगपता है। और जिस तरह अुसका नतिक मूल्य है। यही बात दुनियाक सामन आप सिद्ध करें।

आज यदि म भमझ पाया कि अवेली खादी चलनवागी चीज नही है तब मुझ यह बात दुनियाको कहना पडगी। बस ता सरकारी न्पाममें भी कबूल किया जाता है कि रिलीफक अक साधनके रूपमें चरखका स्थान है जमे पर्यर फोडना सडक बनाना अित्यादिका है। आप भी अितना बता सके कि खादीका स्थान रित्रीफक तौर पर हमगाके लिजे है। वह स्थान ता मिटनबाला नही है। लकिन हमें जा सिद्ध करना था यह तो अुमके पूरे समूचे अघास्त्रकी अनिवायता थी।

स्वावचनकी नीति चलानमें कितनी दिक्कतें ह यह भी हम अमल करके देखेंगे। व्यापारी खादी भी कुछ समय तक चालू रह सकती है परंतु सधकी नीति स्वावलंबकी ही रहेगा और असी पर कायकर्ता अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करेंगे।

जाजूजी — फिलहाल यह चर्चा यहां समाप्त की जाय।

७५

### खादीकी परीक्षा

[ एक भाआन पूछा कि क्या खादी-संबंधी चरखा सघकी नयी नाति असफूट नहीं हुआ है ? ]

गांधीजीन समझाया चरखा सघकी वरमान नीतिको पूरी तरह समझनक लिअे आपका अुमने कारणका लघा करना हागा । गुल्मों जार गरीबके कष्ट निवारण पर घा मयोगवग अुमने विगिष्ण वगों और जन-माघारणके बीच अक मजीब कडीका रूप ले लिया और अक राजनीतिक महत्व ग्रहण कर लिया । लकिन जिस तरीकसे हम और जाग नहीं बड सकते । ममलन हम मजदूरी और नहा बग मकने । गानी जिन बासकको जुठा नहीं मकना । अक तक कनाओ और बुनाओका काम सामाय आग ही करले य । अक भी वे ही करेंग परंतु अपन अपवागने लिअ । चरखा सघकी नयी नाति असफूट नहीं हुआ । ताजे आक बताने ह कि वह धीरे धीरे किन्तु बराबर आग ब रही है ।

कठिनाजिया तो ह । बुनाओके कारण गाडी अटक जाना है । बुनकरा पर हम काफी बाबू नहा जमा सके । जिनमें सी कपूर मेरा है । जनि मन आरभम यह आपह रघा होना कि सब गीठ कनाओके माय बुनाओ भी साथे तो आज स्थिति दूसरी ही हाती । चरखा सघका चालू पूजी जिन समय २५ लाख है । जिन आकड तक पहुंचनमें अुसे पचीस बघ लग । जिन कालमें अमन मुहयन भारतके काम हजार गावामें बिलर हुआ गरीब बातन और बुननवाले गाडे चार लाख लाखामें मजदूरीक रूपमें ७ करोडम अधिक दाय बाट । मुझ जाना और नुहाहरण अगा मात्रम नहा जहा जितना थोडी पूजा पर जितन घ्यापक क्षत्रमें जितना अधिक अुत्साहन हुआ हा ।

यदि हम बग़ा करत तो अपन विषयमें श्रिम भाति पारगन होने कि अयोग्यतास्त्रियाका कह करने कि आप जा जानने ह व ता हम जानन ही ह लेकिन हमका जो ज्ञान है यह आपके पास नहा है हम यह आपका बता सकन ह।

### नव मूल्यांकन निर्माण

जाजूजी — हमारा पान अबूरा है हमारेमें काफी यूनतायें ह सही तथापि मूल्यमापकी हमारी बगौटी भी तो यारी है।

बापूजी — है सही। लेकिन हममें अतनी याग्यता आनी चाहिय थी कि हम अनुवा गमना सब कि अनुवा मूल्यमापन सही नहीं है।

जाजूजी — लेकिन नतिक मूल्या और भौतिक मूल्याकी तुलना भी कस हा सकनी है ?

बापूजी — फिर अतना ता कह सकने थ कि यही अुमकी विगपता है। और अिम तरह अनुवा नतिक मूल्य है। यही बात दुनियाके सामन आप सिद्ध करें।

आज यदि म समझ पाया कि अकेली सादी चलनवाली चीज नहीं है तब मुम यह बात दुनियाको कहनी पडगी। वसे ता सरकारी रिपोर्टमें भा कबूल किया जाता है कि रिलीफके अक साधनक रूपमें चरखका स्थान है जसे पत्थर फोडना सडक बनाना अित्यादिका है। आप भी अितना बता सके कि खानीका स्थान रिलीफके तौर पर हमेगाके लिअ है। वह स्थान तो मिग्नवाला नहीं है। लेकिन हमें जो सिद्ध करना था वह ता असके पूरे समूचे अयशास्त्रकी अनिवायता थी।

स्वावलंबनकी नीति चरानमें कितनी दिक्कतें ह यह भी हम अमल करके देखेंग। व्यापारी खानी भी कुछ समय तक चालू रह सकती है परंतु सधकी नीति स्वावलंबनकी ही रहेगी और जुसी पर कामकर्ता अपनी सारी शक्ति कद्रित करेंग।

जाजूजी — फिरहाल यह चर्चा यहा समाप्त की जाय।



यह बात अच्छी तो है मगर अनाली हरगिज नहीं है। चान्च अस्वा (बुढाग घघाव गहकारी सपा) न अिगम बहतर काम कर लिताया है अन मित्रन कहा।

गाधीजीन अत्तर दिया यह यायपूण तुलना नहीं है। मन अपनी नजरबन्गीमें निम वेल्गकी कह पुन्ना पडी जिमकी मसम मिता रिग की गभा थी। अिडस्वोकी प्रवृत्तिया चीनका राष्ट्रीय सरकारक सहारेम अमाधारण परिस्थितियामें बगजी गत्री थी। जिमक अगवा बुसका सारा बुत्पान्न यद्धकागीन अत्पान्न था। आपकी अपन दृष्टान्नक लिअ चीन तक दूर जानका जरूरत नहीं थी। दक्षिण भारतक बग कट मिगनका अुनाहरण अधिक अुपयक्त है। दाना ही अुनाहरणामें क्षत्र मर्यादित था। किन सादी सारे भारतकी सेवाका प्रयत्न कर रही है।

आज हम बहतर मजदूरी देकर अधिक कारीगरका आकर्षित नहा कर सकने। देशमें मजदूरीका सामान्य स्तर पहे ही बहुत अूचा हो गया है।

हम आकर्षित करना भी नहीं चाहत।

आपक कहनका मतलब यह है कि आप अुनमे अपन ही अुपयोगके लिअे अुत्पत्ति कराना चाहते ह ?

हा।

मित्रन पूछा अिस पर अमल कसे किया जा सकता है ?

गाधीजीने जवाब दिया यह मन पिछ्ठ माल मि० कसी\* को समझाया था। मन अुनमे कहा था कि मेरी योजनाका अुत्पान्नस न कवल बगालकी बल्कि समूच भारतका कपकी समस्याको हल किया जा सकता है। अुस योजनाका सार यह था कि लागानो कपडा मुहया करनक बजाय हमें अन्हें सिखाना चाहिय कि वे अपन लिअ कपडा कस बनायें। अिसके लिअे अुन्हें औजार कच्चा माल जादि आवश्यक साधन लिय जायें। अिस हिस्सामें अिस योजनाका अमल किया जाय

\* बगालके गवर्नर।

वहा जेक नियत अवधिके बाद लंगाका तयार कपडा दना प्र कर देना चाहिय। मुझे वनाया गया है कि जमन पूर्वी अफ्रीकामें प्रथम महायुद्धके त्नामें कपडकी कमी ह्निधाको अपना कडा आप तयार करनका राजी करव पूरी की गयी थी। यह सहा ही या न हा लेकिन अगर भारत सारे मुक्में फन्ना हुनी कतानी और बुनायीकी अपनी पुरानी परपराका और अपन कारीगराको अद्वितीय पतृव क्काका पूरा अुपयाग करे ता वह न क्का अनी ही कठिनायी हल कर लगा बल्कि कपडा तयार करनके माम्म जिन श्शाकी स्थिति कम अनुकू है जुनके लिये अपनी मिलाके कडके मुक्त करव समारका भी वनमान सक्कका सामना करनमें मद दे सकता है।'

मिथनु आग्रहपूर्वक कहा किन्तु यह ता मानना ही हागा कि कपडकी अितनी तीव्र कमी ज्ञान पर भी खादी अुसे पूरा नही कर सकी। वह पिछड गयी।

गाधाजीने अुत्तर लिया जिसका कारण सरकारी ह्स्तभेप है। अुमन खादी-कामकर्ताआका गिरपतार कर लिया खादीका स्टोक ज्ना लिया और खादीकी अुत्पत्ति पर हर प्रकारकी बाधायें लगा ली।

कपडकी तगी बढी जा रही है। अुत्पादनका रक्क पहल ही चागी पर जा पहुचा है फिर भी हम जो मजदूरी दे मना ह वह जितनी भी नही है कि क्वारा तक्का आकषित कर सके।

ये क्वार ह कहा ?

क्या जब आप ता आमी अन० अ० क्का ही ह।

मन अुनके मामन अक् प्रस्ताव रखा या। किन्तु अुनका आर्य्य अुमका अभा तक् बोधी अुत्तर नहा मिया है। आप पाडका होज ता ता ये जा सकन ह परन्तु पानी पीनका मजदूर नहा कर सकन।

क्या सरकार खादी याजना नही बना मनी ?'

मनासमें अगा किया गया है। अमकी जाच हा रही है। अुपरग खादी खीज नहां खादी जा मना। हरअक् यन्तु नीचम करनी पढनी है। और जो यह काम करन ह अुनमें थडा दुःख क्कावल और

सवामात्र होना चाहिए। सरकारी परमानम काम नहा चल्गा। सरकार सहायक हा मक्ती है। जसा मन मि० बगीस कहा था अगर सारी चीज मस पर छाड दी जाय और सरकार आवश्यक मुविधारें दे ता म अपनी याजनाको कार्याचित करनेके लिअ तयार हू। वह प्रस्ताव अब भी कायम है।

मित्र वीचमें ही वाजे सतरा यह है कि आपकी योजनामें जा कल्पना की गयी है असक अनुमार यदि हम किमी अिलावमें कपडा देना बन्द कर दें ता असम वतमान अगताप तीव्र हो सकता है और अुध-मुय भी मच सननी है। अस तत्व मौजू ह जो किमी भी मौववा दुरुपयाग करक जनतामें अमताप भठकानवा तयार बठ है। जस बम्बयीमें कुछ गोगान गाराबदलीको अब भयकर अत्याचार वताया था वस ही कपडके प्रतिवधको भी लोग अत्याचार का नाम द सकते ह। हम अस प्रकारक अुत्पातका विचार कमे कर सकते ह या अस कस निमत्रण दे सकते ह? यह अस प्रानका रचनात्मक हल नही है। अिममें जबरदस्तीकी वू आती है।

जबरदस्तीका प्रान ही कहा है? गाधीजीन पूछा। स्थिति ता यह है कि सबको देनके लिअ काफी कपडा नही है। वितरणके लिअ अुपच कपडकी मात्रा माणसे कम होनके कारण रागनिग जरूरी हो जाता है। मवाल बुद्धिमत्तापूण वितरणका ही है। कुछ समयके लिअ बाहरम मालकी आगा नहा रखी जा सकती। अमरीका और अिअण अपना वस्त्र-अुत्पादन बतानरी जी-तोड कोशिश कर रहे हैं। परतु अस सारे अुत्पादनकी वहा जरूरत है। अगर हम अपन वस्त्र अुद्योगका राष्ट्रीयकरण कर दें और दो पानी के आधार पर काम करें ता गायक कपडकी कमीकी समस्या तो हल हा जाय परतु जन-साधारणकी दरिद्रताकी समस्या हल नही होगी। फिर म सादीकी जोरदार बकालत नहा कर सकूगा। अिमलिअ नहा कि खानिके दावेमें तब सचाओ नही हागी बल्कि असलिजे कि तब म किसीको यकीन नही करा सकूगा।

मित्रन कहा मेरा मुद्दा यह नही ह। सभी सरकारी कारवाअियामें कुछ न कुछ जबरदस्ती ता हागी ही है। जकात सरक्षण आन्तरिक

कर—य सब गप्त रूपमें जबरदस्ती हो ह। वह युवाभी तब बन जाती है जब गलत या बजा तौर पर अस्तिमाल की जाय। अगर सरकारी जबरदस्ती द्वारा किसी बुनियादी तौर पर गलत और अस्थिर आर्थिक स्थितिका सहारा उनकी कोशिश की जाय तो यह खतरा है कि वह बिना गिन चकनाचूर होकर गिर पडगी और चारा तरफ बर्बादी फला दगा। मेरे मनमें यह प्रश्न अठना है कि कही तादी भुत्पत्तिका मौजूदा ढगका मगन अुमा प्रवारका अुदाहरण तो नहीं है और यह कि क्या बन्गी हुभी परिस्थितिक अनुकूल बननक लिअ विगुद्ध निदान्तमें व्याव हागिक ययायवात्तिका पुट गगानकी जरूरत तो नहीं है? अुदाहरणाय कामारका अूनी मात्र अुअ अपन अुपयोगके लिअ नहा हाता। अमम कामारक बाहर बन्गिया मालकी जरूरत पूरी हाती है। वह अत्पत गानप्रिय है। अब अगर हम यात्रिक धुनायी जारी कर दें तो वह मात्र तरहकी स्पर्धाका मुकाबला कर सकता है। परंतु यह त्पत्तिके बुनियादी अमूगके विनाफ होगा। मेरे मनमें यह विचार आता रहा है कि क्या दानामें कोशी समधीना नहीं हा सकता? गृह अुद्यागाकी केवल मानव गकाम चगाना जिम यत्रयुगमें बहुत मभव नहीं मालूम हाता। हम आर्थिक धाराआका रुत बलनका प्रयत्न कर सकते ह हम अुनके विरुद्ध चक्कर मीधी टक्कर नहीं ल सकते। मसलन अगर हम गृह अुद्यागाका मन्ता बिजगकी महायतासे चग सकें तो वे अगना मू गुण ताय बिना टिक रह सकेंग। आतिर ता हमें विवेद्रित अत्यान चाहिय। हम मिवाभीवी याजनाआकी महायताक लिअे सली जगजात विद्युन गकिकके विकामरी याजनायें रग सकत ह। ६ से १० वषकी अवधिमें अुन्हें चानू किया जा सकता है। तब प्रत्यक गावमें बिजला ग जाता मभव हागा। ता क्या अुन परिस्थितियामें हम त्पत्तिके काम मौजूद ढग पर कर सकेंग? आम तौर पर अत्पत्ति और माग बराबर हावा चाण्डि। परंतु त्पत्तिके स्थायी आधार पर जमानक बजाय हम अुन कृत्रिम प्रतिवष लगाकर पगु बना रहे ह। फल यह हुआ है कि बटनना अ्टाचार और यकीमानी धुम गभी है। त्पत्तिके महाराहा वकी मून बान-बार निया जाता है। अगके आर्थिक पन्डूके अत्यावा त्पत्तिके



अब सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्त्व भी बढ़ गया है। लागू अमरूनीफामके तीर पर अपना नका अलगू ह। अस्पता अपनी जरूरतके कपडके अिने खातीके तरजीह दना चाहत ह। आभी० अ० अ० बाल खातीका यूनीफाम अपनाना चाहत ह। परतु नभी नीतिके कारण आज खादी कहा मिलती नही। दम और अप्रामाणिकताका बालबाला दीवता है।

गांधीजीन अुत्तर दिया जो बात नही सक्त या बातना नहा चाहते क मिठका देनी या विनेगी कपडा लें। म अपनी आर्षे सांस्कृतिक रहा हू। खादीके अितिहासमें यह पहला ही अवसर नही है कि मागसे अुत्पत्ति या अुत्पत्तिस माग बढ गभी हा। हर बार बहादुरीसे काम किया गया और सक्त निवारण हो गया। अिस बार भी मुक किसी भिन्न परिणामकी आगा नही है। सिफ अितनी ही जरूरत है कि हम श्रद्धा और धीरज तथा ठीक अुपाय करनका साहस रखें। म अिस समय यही कर रहा हू। अगर असा करते हुआ खादी मर जाती है तो मुझ वह खतरा अुठानके भी तयार रहना चाहिय।

मित्रन प्रत्युत्तर दिया यह तो प्रश्नके टालनकी बात हुभी। यह चीज लागामें पठगी नही। हमें अपनी नीतिके लोगकी मागके अनुकूल बनाना होगा।

म असा नही कर सक्ता। जब मुझ भूत्का पता लग गया तो मुझ अुसे सुधारना ही चाहिय। अिसमें समय ळग सक्ता है। अिसलिय मन सुझाया है कि काग्रसके सविधानमें से खादीकी कलम हटा दी जाय। जब आसाम काग्रसमें अुसे हटानका असफल प्रयत्न किया गया था तब मुझ सतोप हुआ था। अब अुसे हटानके म प्रोत्साहन दूगा और जुसका स्वागत करूगा। अगर असमें कोभी भीतरी खूबी है तो काग्रसके हटा देने पर भी खादी जिदा रहेगी। अगर खूबी नहा है ता अुसका मिट जाना ही योग्य है।

लेकिन अिससे हमारी बुनियादी समस्या हल नही हागी।

मुझे भय है कि म दलीलासे आपको यह बात नही समझा सकूगा। समय ही बतायेगा कि कौन सही था।

मित्रने फिर कहा आपने कहा कि खादीमें सबसे बड़ी खावट बनाओकी है। मित्रके मूतका बननवाले जुलाहेका आजकान तीन रुपये रोज तक मिल जान हैं। हाथक मूतका कातन और बुननवाग जिनमे कम मजदूरी पर काम नही करेगा।

गांधीजीने अक्षर लिया म भी नही चाहता कि वह करे। त्रिपीण्डिये मने हाथक मूतको दुबना करनकी सिफारिश की है। अगर कम मिलके मूत पर आश्रित रहना पडा ता अमुका विनाग निश्चित है। मित्र-मालिक जितने परापकारी जीव नहा हैं कि हाथ-करखेका जुगहा जब अमुक साथ मफर स्पर्धा करने लगगा तब भा के अमुक मूत दते रहेंगे। परतु दुबटे हाथ-करते मूतको बुननेवाला जुगहा अतमे मिलक मूतके जुगहेम अच्छा रहेगा क्याकि अमुक साभर बराबर काम मित्रा रहगा।

मित्रने अपनी बात जारी रखते हुए कहा वस्त्र-अुद्योगके आधारमें ही शान्ति हा गभी है। अब व काय हवा और पानीम कपडक बनावटी ततु तयार कर रहे हं। बुनाओके स्थान पर रात्री महायताये हजीके ततुआका जमाकर कपडा तयार किया जा रहा है। अगर हम यह निश्चिन नहा कर लेंगे कि हमारी खानी-नीतिका कात्री मने व्यावहारिक आधार है और यह किमी ममग्र चित्रका अग है, ता खानी बिफर हारर रहगी।

हो सकता है मगर अमुक पर किया गया परिश्रम व्यय नहीं जायगा ' गांधीजीने अक्षर लिया।

मित्रने कहा कात्री भी अच्छा प्रयत्न कभी व्यय नहीं जाता। परतु आपकी खानी-नीतिमें अभी हमें जा फरफार हुआ है व अतक मच खादीप्रमिया और कायकतआका बराबर परेगान कर रहे हैं। अतुनकी परेगानीको दूर करना चाहिये। अतुनमें स कुछ लाग ता अग्र मानित खानीको अपनाने तबकी बात करने ह।

गांधीजीने जबाब लिया, 'अतुनमें श्रद्धा नहीं है ता परेगानी दूर नहीं होगी।

जब तब रानीकी माग है तब तब रानीक भाव बढ़ाने पड़ें ता भी अंग पूरा करना चाहिये ।

अंगका अर्थ यह है कि रानी गौरानाका गौर पूरा करने वाली फर्मा चीज हा जायगी । अब बिना गगनका अस कामक अंग अपमाग करना अचित नहा हागा । हमारा धर्म है कि हमारी रानी-नीतिमें काभी मौलिक दाप हा ता अमुका पता लगाकर अंगक करे और असा करत हुअ यह प्रभाव हो कि रानीकी बुनियाद ही गत है ता असे तिलाजलि दे दी जाय । आज ता रानीकी पराधा हा रही है । वह अममें अपन स्वाभाविक बर पर ही अतीग हागी । और अगर अममें वह बर नही है तो अमके धारमें चिन्ता करना व्यय ही होगा ।

अतमें मित्रन जा र दर कहा म अतना ही जानता ह कि जहां किसी पदायकी व्यापक और सच्ची माग हानी है और अतसि अुसम कम होता है वहा आर्थिक सतुलनको ठीक करके अम मागका पूरा करनेक अुपाय निवाणे जा सक्ने ह और निकाल जान चाहिये ।

गांधाजीन अन्तर निष्ठा म आपको छतरेका चेतावनी हा दे सकना ह । अब समय या जब हम कताभीके अंग गगानकी बनी हुअी पूनिया काममें लेने थ । या तो हम मिल्का सूत नी काममें ले सकते थ क्पाकि पूनी बिनकता सूत नही ता और क्या है ? अगर हमन अुससे नाता ताडकर हाथकी धनाभी गुप्त न की हानी तो खादी अब तक मिल् जाता । स्व सर गगागमन मुझमें कहा था आप सिफ अरखा छोकर हाथ-करप पर गबिन केद्रित कीजिय ता म आपके साथ ह । वे अुस बातको नहा समग सके जिस आज हम जानत ह — यानी यह कि हाथ-करपके अुद्योगका गग मन्धत मिल्कर सूत घाट रहा है । हाथ-करते सूतमें ही अुसको मुक्ति है । अगर चरगा चला गया ता हाथ-करपका भी बही हाल होगा । खादीसे अगर करोडाका अपयागी काम नहीं मिउ तो मेरी नजरमें खादीकी कोआ कामत नही रह जायगा । अन्क समझीते जो अुपाय गय ह असे ह जिनमें अस्की

मौलिक विपत्ता ही बाकी नहीं रहती। जब तास वष पहल म गर फरलभात्रीमे मिग था तब अन्हाने मविष्यवाणा की थी कि खानी अन्तमें विफल हाकर रहगी। व ता चले गये परतु खानी अभी तक जिग है। मभव है नवयुग आ गया हो और खानी अयमें पुराने जमानका बसेल चीज भागूम हानी हा। बात अितनी ही है कि मुस असा महसूम नहीं हाता।'

हरिजन २५-८-४६

७६

### खादी-संगठनका विकेन्द्रीकरण

चरवा सपकी पिछली बढवमें अक प्रग्न जिमकी चर्चा हुयी, मह था कि चरवा सपकी सताका स्थानीय स्थानी-मस्थाआमें बाग लिया जाय। मह मुझाया गया कि प्रत्यक सत्रकी जिवाअीके लिअे स्थानी नीति तय करनका काम पूरी तरह स्थानीय मस्थाआ पर छाड लिया जाय और व केन्द्रीय संगठनमे मवषा स्वतत्र हा। गांधाजी आरम पकिन और जिम्मनारीक अधिकन अधिक विकेन्द्रीकरणक पक्षमें ता य लकिन व अिम बातक विरुद्ध य कि साग-बापकनअिआकी जगह तालाम न पाय हुअ म्त्रा-पुष्पाका ममिनिया बना ली जाय। स्थानी बापक संगठनने अिअ हागियार पत्र अिगारला और विगपनाकी जमरल है जिनमें माध-माध व्यावसायिक बढि और मवाकी भावना भा हा। असमें व्यकिनगन महत्वाकाणा या सताका राजनानिक लिअे कात्री स्थान नहा है। अगी राजनीति बापमका मुख्य राग बन मत्रा है। बापम संगठनक अिम भ्रष्टाचारका मिगलन अिअ अुहान मुझाया कि अुम गकमवकाही सस्था बन जाना चाहिय। चरवा मयमें लाकनपका महव दागिल करना स्थानीका मार दना है। जिग अयमें बापम लाकनपिक संगठन है अम अयमें चरवा मय नहीं है। यह असा संगठन है जिम बापेगने लाकनपक जिमाणक लिअे पना किया है।

वक जाक अिगण्डा गवाण-मडली तरह यह गुरुग आगिर तव व्यापारिक मय्या है। अिानी ही घात है कि अिगता अहय तव सवावा है मनाका तमानका तय है। किमा सारनात्रिक मय्याका व्याव साधिन गाय्याका तसतात्रिक मन्तासी प्रगागीन नही बांधा जा मरता।

आग वालन इअ गाघार्जीन बहा हम दहातमें फल जना चान्त ह। मममान-यमान और गवाव गिवा सागी-वायवर्ताअि अिअ किमा जीर मत्तारा बाधी अुपयोग नहा हा मवता। ज्या हा वह किमा दूसरा मत्तारा अस्त्र ग्रहण करनका प्रयत्न करेगा त्या ही वन साणिका मार दगा।

अतमें जव भाआन पूछा सागीको गावत्रिक बनानव अिअ हमें सबका मय्याम तनरा जल्यत ता होगी ?

गाघार्जीन अत्तर अिया खुकि सागी-वायवर्ताअिसे लापके सपुण सेवक हानकी आगा रवा जाती है अिसअिअ यदि अुनमें कुछ भी याम्यता हागी तो व अपन पक्षमें तवमल पत्ता कर सकेंग। अिमक अिअ किसी कमेटीसी आवयवता नही हागी। क्याकि वह महायवक वजाय बाधक हा सपनी है जव कि अिअ अनकी सेवासे समयक जाकपित हाग ता अनसे जवरल्यत मन्त मिनेगी।

दूसरा प्रन्न यह था सागीर विवेअित हो जानके बाद चरला सधकी सत्ता क्या होगी ?

गाघीजान तुरत जवाव अिया—अुस हालतमें सधकी सत्ता वंवन नतिक हागा जीर अिसअिअ अममें अबस अधिक शक्ति हागी। अुसका वाम रुपया जयवा सामग्री देना न हाकर अक नतिक बल अुत्पन्न करके खादीक अिअ माग सरल बनाना हागा वह खादी-वायवर्ताअिसे अपना नाम ता अिस्तेमाअ करन देगा मगर अुन पर अपनी अिच्छा थापनकी कोगिण नहा करेगा। अुसकी नतिक सत्ता किसीका भी जा अुसकी नीतिको स्वीकार करगा अुपलब्ध होगी। अुसको वतमान सपत्ति तव किसी भी त्रिकाजीको सौंप दी जायगी जो तयार हागी और स्वगासनका दावा करना मुनासिब समझगी। तव यह है कि अुस जा सम्पत्ति सौंपी जाय असक सदुपयोगका वह गारटी दे और

यह निश्चित समयके बाद अने लोग देनेका बंधन स्वीकार कर ले।  
घरखा सघको निरोधनका अधिकार हाण परतु वह भी स्वशामन भागी  
शिकाभीका मर्जी पर हागा।

हज्जिन २७-१०-४६

७७

## स्वावलम्बन और सहयोग

प्र० — हाथ-कताजाके पक्षमें अब दलान यह दो जानी है कि  
अममे मनुष्य स्वावलम्बी हा जाता है। क्या जो यकिन स्वावलम्बी है  
वह दूसरा पर निर्भर रहनवाग्मे समाजकी अधिक जोर बन्तर सवा  
कर मवना है? क्या आपक वहनका अथ यह है कि स्वावलम्बन और  
समाजमवाक बीच जसा सबध है कि मनुष्य जितना अधिक स्वावलम्बी  
होगा अतना ही अुमकी ममाजसेवाका भमता अधिक होगी?

अु — अिम प्रश्नका सनापजनन अत्तर देनक लिअ हमें अहिमक  
दृष्टिकाणका घ्यानमें रखना चाहिय क्याकि मेरी बल्पनाका व्यवस्थाकी  
बनियाद सत्य और अहिमा है। हमारा प्रयम बनव्य मह है कि हमें  
समाज पर भार नही बनना चाहिये अर्थात् हमें स्वावलम्बी हाणा  
चाहिय। अिम दृष्टिबिन्दुमे स्वय स्वावलम्बन अब प्रकारकी सवा है।  
स्वावलम्बी बन जानक पन्चात हम अपना फाल्नु समय दूसराकी सवामें  
मगायेग। अगर सब स्वावलम्बी बन जाय ता किसीका बष्ट नहा होगा।  
अमा स्थितिमें किमीकी सवा करनकी जरूरत नहा रहेगा। परतु हम  
अभी तक अग स्थितिमें नहा पन्च ह अिमलिअ हमें समाजमवाका  
विचार करना पडता है। हम पूण स्वावलम्बन प्राप्त करनमें मफ्त हा  
जाय ता भा चूकि मनुष्य नामाजिक प्रागा है अिमलिअ हम किनी न  
किमा रूपमें सवा स्वाकार करनी हागी। अर्थात् मनुष्य जितना  
स्वावलम्बी है अतना ही परम्परावलम्बी है। जब ममाजका मुख्यस्थिन  
रमागे लिअ परावलम्बनकी आवपबता हा जानी है तब वह

परावलम्बन नहीं रह जाता परन्तु मत्प्राग हा जाता है। गह्योगमें मिश्रण है। जो गह्योग बन्त ह अनमें काशी गवत् या काशी नियत् नत् हाता। सब समान हात ह। परावलम्बनमें लाचारी मत्पूग हाता है। बिना परिवारक गग जितन मत्परावलम्बी हात ह भुनन ही स्वावलम्बी हात ह। मेरा-नराका काशी भावना गग हाता। गव गह्योग हात ह। अिमी प्रकार जब हम समाज राष्ट्र या मारा मानव जातिका परिवार मान ग्ने ह तय भी गव मनुष्य मत्प्रागी बन जान हैं। यदि हम जम मत्प्रागक अक चित्रका बल्गाा कर मर्ते ता हमें पता च्तेगा कि निर्जीव यत्रय महारका जम्बत नहीं पडगा। यत्राका अश्विन अधिक अुपयोग करनके बजाय हम अनया वसम कम अुपयोग करक काम चग ग्ने और अमामें समाजकी मत्वा मुरधितता और आत्म रक्षा निहित है।

दि आश्रिडियालाजी आफ दि चरखा, २०-११-४१  
पृ० ८६-८८।

७८

## कताभी और खेती

प्र० — जाप खतीसे कताभी पर ज्यादा जोर देते ह। क्या अिमके पीछ काशी राजनीतिक कारण ह? अथवा यह बात है कि सब लाग खतीको अतनी आमानीसे नहा अपना सकते जितनी कताभीको?

अु — मेरा नजरमें सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक अिम तरहके अलग अलग विभाग नहा ह। जो चीज राजनीतिक है अुसमें सामाजिक और आर्थिक तत्त्व भी ह। अकमें दूमरे शामिल ह भले ही हमें ठीक तरहसे समझनके िअे जसे विभाग करन पडते हा। खती पर मन जोर क्या नहीं दिया है जिसका अक कारण यह है कि असक बारेमें मेरा अपना पान बहुत थोडा है। तब म अुस विषय पर जोर देकर आपको अुसका पान कसे दे सकता ह? चरखके बारेमें

यह बात नहीं है। मन अमकी काफी जानकारा कर ली है। दूसरा कारण यह है कि विन्नी आक्रमणन चरखको नष्ट कर दिया है। सतीका विनाग नहा हा सकता था। हा अमकी रूप असा बन्त किया गया है कि असत हमारी गुलामी बन गयी। तीसरा कारण यह है कि सतीम हाथकी कारागरीका स्थान बहुत छोटा है। गायद ही बाआ और बुझाग असा हो जिसमें हाथकी कारागरा और अगणियारी कला जिनको महत्वपूर्ण हा जितनी सानी बनानकी भिन्न भिन्न क्रियाआमें है। चौथा कारण यह है कि विन्शा मता पहच जमान पर अधिकार जमानी है जोर फिर जमानके त्रिय दूसरी बीजा पर अधिकार करनी है। त्रिमलित्र सतीके सुधारक लिअ सरकारकी सहायता बहुत जरूरी है। जिन और दूसरे कारणमें मन हाथकताओ पर अधिकार किया है।

त्रि आर्जिडियालाजी आफ लि चरखा २९-११-४५,  
१० ८९-९०।

७९

## रेगम और रसी

जग सानी करोडाका राजवार दे सकती है वहा रेगम मुक्किलसे बन हजाराका ही दे सकता है। सानी गरीब जमीर दानाकी जरूरतका चात्र है। रेगम थोडम लागके सिवा विन्नीका आवश्यकताका वस्तु न्हा। य धामे ओग भी अक धामिक भावनाका पारण करनन लिअ ही कुछ अवमरा पर रेगमा बन्नाका आग्रह रखने ह। त्रिमलित्र जब रेगम और सानीय बाव चुनावका प्रान है, तब बुदली तौर पर जिन लागके लिमें कराडा भूवाका भगानी घमी हुआ है वे मन सानीका पन्त करेग। और चरखा मपका छय ही यह चाहता है कि हमारा सूती मालीओ प्रथम स्थान लिया जाय। म सूता सानी त्रिमलित्र कहता है कि जिन जमान सानीका यह व्याख्या देता है कि वह रसी रेगम



या अूनरा बना हाय-यता हाय-यता कपडा है अाग मनमें गडबड न पना हा। यह व्यापक परिभाषा अिगतिअ आवश्यक थी और है कि अूनी और रोगी हाय-यत हाय यत वस्त्र अुगमें जा जाय वानें कि वे सूती खातीका स्या एतर बनाय अमर पूरकर रूपमें अिस्तमा किय जाय। अुनाहरणरे अि जाटमें बटून आग अून या रोगमरा गरम कपटा चाहने ह।

विगावा यह स्या बना अनी जरूरत नहीं है कि अिन पवित्रयामें मन जिस नीतिवा गमयन किया है अगमें रोग वातन और युननवागी भगतीरा ध्यान नना सता गया है। अगा ता म विचार भी नहा कर सकता क्याकि म जानता हू कि गानी मर गयी तो देगी रोगम अपन-आप मर जायगा। जापाना रोगम और पचिमका नकरी रोगम देगी कपटाका रोगम कर ँग। गानीकी भावनाम हा कानीके अूनी कपडको और बगाल-आसामर रोगमका टिके रहनमें समय बनाया है। चरखा सघकी दूरदर्शी नीति ही सूती गानीका भारी बाधाओंसे बचाकर अून और रोगमक हाय-यत गी कपडकी अपन-आप रक्षा कर रही है। तीनाकी अक दूगरस स्पर्धा कराकर आप तीनाकी बत्र खोल देंग। अतमें याद रहे कि अगर सूती गानी जिन्दा रहती है परन्तु रोगम मर जाता है ता रोगमक मरनस जा लाग ववार हो जायेंग वे आसानीस रुजीकी कताजी और युनाअी अपना सकते ह मगर रोगम एधीका स्थान से तो सूती खातीके मर जानसे जो करोडा ँग रोजगार या अुमके अवसरसे बचित हो जायेंग अुन्हें रेशम रोजगार नहीं दे सकता। जिसअिअ मुझ दरिद्रनारायणवे सभी प्रमियोका यह स्पष्ट कतव्य दिखाअी देता है कि जब अुतने सामन चुनाव करनका प्रश्न आय तब वे हमेशा सूती खातीका तरजीह दें। वारीक सूती खातीको वतमान महग भावा पर खरीदना अुतन ही वारीक रोगी कपटा खरीदनम अतमें सस्ता पडगा।

## कीमत सूतके रूपमें चुकाना

प्र० — अगर सूती खाता खरीदने के लिये कुछ कीमत सूतके रूपमें देना आवश्यक है तो यही बात रोगी खाता पर भी बरतना नहीं लागू हानी चाहिये ?

अ० — जिस सवालका जेब हा जवाब हा सकता है। रोगी खाता खादी है जिसमें अल्पको खरीदने के लिये भी सूतकी आवश्यक मात्रा देना गत होनी चाहिये।

प्र० — चूँकि कताओं रचनात्मक वायव्यता अग है जिसमें जे तमाम रचनात्मक वायव्यता खालीके बन्धमें सूत देने में मजत क्या नहीं हो सकती ?

अ० — जिस प्रश्नमें कुछ विचार भ्रम है। यानीकी कीमत अत्यंत रूपसे बड़ा कुछ सूत द्वारा चुकाने का कारण खालीका अल्पता अर्थात् खाली देना और समय पाकर सूतको चार्ज गिवना जाना है। रचनात्मक वायव्यता कताओं में मुक्त नहीं है। यद्यपि कताओं में मुक्त बरतना हा सकता है ? कताओं में सबके लिये आवश्यक मात्रा है।

हरिजन २८-४-४६

## सूत बक

सूत बककी मेरी कल्पनाका आधार दा विचारो पर है। पहला यह है कि सारा सूत चाहे वह कितना ही हो कसा भा हो और कहींसे भी जाय अब जगह पर जिवट्टा किया जाना चाहिये। फिर बट्टासे वह जलाहेके पास असा हालतमें भजा जाना चाहिये कि वह असे अुसी गतिसे बन सके जिससे वह मिश्रका सूत बुनना है। अिसके लिअ तमाम सूतका दुबटा करना होगा। जो सूत अिस क्रियास न गुजरे अुसे वास्तवमें सूत नही मानना चाहिये। अिस प्रकार दा तरहके सूत होगे एक दुबटा किया हुआ और दूसरा अिकहरा। पहलेकी कामत जूची होगी। अलबत्ता अिम मजिठ तक पहुचनमें समय गगगा। अिस बीचमें सूतको अलग करके अिकहरेको दुबटा करना होगा और सूतबद्र पर या जहा भी अनुकूलता हो वहा अुसका कपडा बुनवा गना पडगा।

दूसरी बात याद रखनकी यह है कि जिम तरह सोना और चादी टक्सालसे सिक्का बनकर निकलते ह वसे ही सूत बकसे सिफ खादी ही निकलनी चाहिये। जब तक जसा नही होता तब तक हाथ बते सूतके दोष दूर नही हांग और खादाक गुणमें जागातीत सुधार नही हागा। खादीकाय जबरदस्तीसे पूरा नहा हो सक्ता। खादीकाय कताओको अिस पवित्र अदृश्यके आसानीसे जल्दी और स्वेच्छापूवक पूरा हानके लिअ स्वाथरहित सच्चे और गारस्त्रीय मानसवाले बनना होगा।

जिसी अदृश्यकी प्राप्ति करना चरखा सघका सच्चा लक्ष्य है।

हरिजन ७-७-४६

## खादीके बारेमें सवाद

जेव खादी-कायकर्ता लिखते ह

अब खादा भंडारके व्यवस्थापक और ग्राहकोंके बीच हुआ हालकी अब बातचीत नाचे दता हू। क्या अस लागाको खादी बची जाय ?

प्र० — क्या यह सूत जापका काता हुआ है ?

अ० — नहा य ८ गुडिया मन १० रुपमें खरीनी हैं।

प्र० — हमरे ग्राहकमे क्या यह सब सूत आप बातने ह ?

अ० — नहा यह भरा गडकीका काता हुआ है। हम १२ आन गुडीके हिमावसे सूत बचन भी ह।

प्र० — तीसरे ग्राहकमे आप तब तब गानी नही खरीन सकते जब तक आप आवश्यक मात्रामें सूत नहा तयार करते।

अ० — काआ परवाह नहा। जब तब म सूत नही जुटा सकता तब तक अप्रमाणित खादी खरीदूगा।

प्र० — चौथे ग्राहकमे आप खादी क्या खरीन्ते ह ?

अ० — क्याकि अुस प्राप्त करना आमान है।

प्र० — पाचवें ग्राहकमे आप खादाके नियमित पहनने वाले नही ह। जो खानी आपन खरीनी है अुमका आप क्या बरेंगे ?

अ० — आजकल खानी फगनकी चाज मानी जाती है।

प्र० — छठ ग्राहकमे आप स्वयं नहा कातन ता फिर यह सूत कहास आता है ?

अ० — मेरे अब भल मित्र मुझ संग सूत मुहया करत रहने ह।

प्र — सातवें ग्राहकसे आप हमेगा रेगमी या जूनी खानी क्या खरादत ह ?

अ० — क्याकि' अिसके त्रिअ मुद्र सूत नही देना पन्ता ।

प्र — आठवेंसे आपन बडो मात्रामें खानी खरीती है । अम सबका जाप क्या करेग ?

अ० — वह मेरे त्रिअ दो तीन बय तक चडेगी । अिसके बाद दखा जायगा कि मुद्र और खानी मिल सकता है या नही ।

य प्रश्नात्तर आखें खोन्नवाणे ह । जगर खादी-सबधी नखी नीति सही है और खादीने ग्राहक अिस प्रकारक ह ता अिसस काग्रस सविधानस खादीकी धारा हटा दनकी जरूरत साबित होनी है । यह जुल्खनीय है कि य प्रश्नोत्तर जाठ यक्तियास सबध रखत ह । चरखा मधकी अिनमें स अककी भी जरूरत पूरी करनकी आवश्यकता नहा । चरखा सघ केवन् गरीबाक लिअ ह । जो खानी पहनत ह वे या ता गराबाक त्रिअ या स्वराय प्राप्त करनके त्रिअ या दोनाक लिअ पहनते ह । अपरोक्त आठ ग्राहकाको अिनमें स किमाका भा चिन्ता नही है । यदि चरखा सघका खादी जिस आत्मीकी प्रतीक है असका औचित्य सिद्ध करना है तो अमक कायकर्ताआका नभा नातिके प्रति वफादार बनना चाहिय और विशा भन्गराके बन् हा जानस भी भयभीत नहा होना चाहिय । अन्हें भूतकाठका भूठाका ठीक करनके लिअ कात्री भी परिणाम भुगतनका बन् रखना होगा ।

अूपरकी बातचातमें भडाराके व्यवस्थापकाके लिअ भी सावधान रहनकी चेतावनी है । अुहें खानीगास्वक निष्णात बनना चाहिय और धारज तथा नम्रताके साथ ग्राहकाका खादाका भीतरी अथ सिखानके लिअ तयार होना चाहिय । अिममें समय र्ग्य सकता है मगर यह करन लायक काम है । अगर खानीकी गक्तिमें हमारी थडा हा ता मूय कात्री गका नहा कि हम अग्ल रहेंगे और अिमसे दूसरामें भी

अस श्रद्धाकी प्रेरणा कर सकेंगे। परंतु यदि स्वयं कायकताओंमें श्रद्धा नहीं होगी तो खादीका दावा गिर जायगा।

मन यह मान लिया है कि वातचात सही सही बयान की गयी है।

हरिजन ९-६-४६

८३

### स्वराज्यकी अवमानना

'म १२×२० फटके कमरेमें बम्बरीमें रहनेवाला अब मध्यम वर्गका आत्मी हूँ। मेरे स्त्री और एक बच्चा है। मेरी रमाभी मेरे रहनेके कमरेमें ही हाती है। मन खाता पन्ननका घत लिया है और अब तक अुस पर कायम हूँ। जबम यह निश्चय हुआ है कि खादी सूतकी एक निश्चित मात्रा देने पर ही खरीती जा सकती है तबम मेरे जस आदमाते लिख जा बम्बरीका मनीन-जसा जीवन व्यतीत कर रहा हा वातनके लिख आवश्यक समय निवाटना बहुत कठिन हा गया है। फिर भी म अपने घतके प्रति सच्चा रहनेके लिख डट घटा राज वातता रहा हूँ। अभी अुस दिन मेरे पास पूनिया नहीं रह गयी था। असलिख म कुछ पूनिया खरीन्ने खाता मन्तर गया। मुझ व्यवस्थापकने कहा कि या ता आप यहा आजिय और पूनिया बनाकर ल जाजिय अथवा वहा घुनाभी करक पर पर पूनिया बना लीजिये। अब मेरे घरमें जगहकी जमी तगा है अुममें न ता घर पर पूनिया बनाना मभव है और न मेरे जस मनुष्यके पास भदार जाकर पूनिया बनाने जितना वकन है। मन कहा या तो मुझ पूनिया दीजिय नहीं ता मुझ कताभी छाड दनी पडगी। मुझ कहा गया कि आप जा

ठीक समझें कीजिय। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि मनुष्यको आत्मनिभर होना चाहिये और अपनी पूनिया आप बना लेनी चाहिये। परन्तु मझ लगता है कि बम्बयीमें मेरी जसी स्थिति है असमें भरे लिअ यह अनभव है। हजारोकी वही हालत है जो मरी है। मुझ क्या करना चाहिये ?

पूनियाकी बिक्री बन्द करके खाती भडारने गरीबके साथ बनी कठोरता की है। वे पूनिया बनाकर अतनी ही आमदनी कर सकते थ जितनी बनाओ करवे।

अूपरके पत्रका जवाब देना जरूरी है। खेख कहते ह कि अन्हें डड घटा रोज कातनका समय मिठ जाता है। जो आदमी अितना प्रतिष्नि कामता है वह अपनी खादीकी जरूरतसे ज्यादा सूत जमा कर सकता है। अुनके लिअ भडारसे पूनिया खरीदनकी अिछा करना भूल थी। व्यवस्थापकन अन्हें ठीक उत्तर दिया। जहा कातनके लिअ जगह है वहा तुनाओ (धनाओका नया तरीका) या (तुनाओसे भी सागी) पुनाओके लिअ भी स्थान है। यदि चरखके लिअ जगह नहीं है तो तकरी है। धनप तकली भी चरखसे कम जगह लेती है। अेक ब्यक्तिके रास्तेमें जो कठिनाअिया आता ह वे सबके रास्तेमें भी आती ह। स्वराज्यका माग यह है कि जुनसे दवनके बजाय अुन पर विजय प्राप्त की जाय। आवश्यकता आविष्कारोकी जनना है।

और फिर खाती भडारोकी तरफसे दी जानवागी धनन पूनिया बनान और कातनकी सुविधाओसे लाभ क्या नही अठाना चाहिये ? पूनिया बनानके नय तरीकेके लिअ बहुत जगह नहीं चाहिय और यह कठिन भी नहीं है।

हरिजन १९-५-४६

## खादी-भंडारोंके वारेमें

अिम नीपवने अेक लेख २ जूनकी खादी-पत्रिका में निकला है।  
चूकि यह महत्त्वपूर्ण है अिसलिअ जुस पूराका पूरा यहा दिया जाता है

हमारा अिराज हमार भंडारोंके संचालनमें जल्दी परिवर्तन करनका है। खादीकी बिक्रीके साथ उगा हुआ सूत देनेकी गन्वे होत हुआ भी बम्बईके लागान अभा तक कताआको नही अपनाया है। कपडक बदल दिया जानेवाला अधिकारा सूत खरीना जाता है। पहली जुलाआये हम एक गुडीक बालमें केवल दो रुपयाकी खानी दग। नीजा यह हागा कि खानीकी बिक्री घट जायगी। खानीकी बिक्रीका एक मुख्य कारण यह है कि मिलने कपडका कष्टाल है। बहुतसे लाग जो आम तौर पर मिलका कपडा पहनत ह एक तरहसे बिकना हाकर खादी खरीनात ह। हम प्रत्येक ग्राहकसे पूछ लत ह कि दिया हुआ सूत बुसका अना या घरवालाका या घरक नोकरका काना हुआ है। परंतु हमें दुखके साथ स्वीकार करना पडता है कि अनेक ग्राहक सही बयान देनेक मामलेमें अपनी जिम्मदारी नही समन। यह गर जिम्मदारीका खया खानीके हितमें नही है। खानी-उत्पत्तिका लय ग्रामीण भारतका स्वावलम्बन है। अिसलिअ अब जब प्राप्त तिन तिन हमार भंडारोंको कम खादी देंग। अिसमें खादीकी बिक्री अिम गल प्रयागका हमार जादग साथ मल ही नही बठता। अिन हालतामें हमारलिअ यह अत्यावश्यक है कि भंडारोंके संचालनमें समय रहते परिवर्तन कर लें। पहली जुलाआसे हम माटुगा और दादरकी दा दालाओं बल कर रहे ह। पिउर तीन मलानसे माटुगामें हम खानीकी सब प्रक्रियाओंका प्रशिक्षण द रू ह। दादरमें खानीकी कुछ बिक्री भी होनी या परन्तु य काम अब बन्द हा जान चाहिय। गिरगावक खानी-छनाओन कारखानमें चरमा



सध जब प्रशिक्षण-केंद्र भी चला रहा था। यह केंद्र भी अब खादी-छायाभाक कारखानक मरक्षकाको ठीक दिया जायगा और व खाद्याकी सब प्रशिक्षाभाका प्रशिक्षण भी न रहेंग और कुछ बिप्रीकी भी व्यवस्था करेंग।

कामको घटानका नतीजा यह हागा कि पद्रह काय कर्ताआका नोकरी छूट जायगा।

जदसे नशी नाति प्रचलिन हुआ है गाधीजी कहन रहन ह कि भडारोकी रचना बदरनी चाहिय। अस नीतिका अनुसरण करनके त्रिअ कुछ स्थाना पर हमन पनाआ और वनाओकी सुविवाआकी व्यवस्था की परंतु अिन बाह्य परिवतनोसे वास्तविक परिवतन प्रगट नहा हुआ। हमन महसूस किया कि सबसे ज्यादा जरूरत हमारी दिमागी तबनीकी है। अिससे कायकताआकी पराक्षा और अस ही दूसर मुधार जमनमें आय।

परंतु अपराक्त सार परिवतनोसे भी हमारा जदृश्य पूरा नही हो पाया। जब ग्राहक लग खादीको फानका चीज समझन थ तब भडार खादिम व्यापारकी दुकानें थ। अब भडार खादी पहननवागके मानसमें परिवतन लाना चाहता है। वह खादी निर्माणकी सब प्रशिक्षाआकी जानकारी दनवाला केंद्र बन जाना चाहता है। अिसके त्रिअ हमें आवश्यक परिवतन करन और साथ-साथ बम्बजीके खादी पटननवालाके दणिकाणको वरनके त्रिअ अचर भावस प्रयत्न जारी रखन हाग। तभी भगाराका सच्चा रूप-परिवतन होगा। हम बम्बजीके ग्राहकासे आगा रखन ह कि व हमारी कोणिममें वफागरीम हमारा साथ देंग।

पाठक दखेंग कि अिस लखमें जा हुतु प्रगट किया गया है असकी सफलता कायकर्ताआकी श्रद्धा बुद्धि और शक्ति पर निर्भर करती है।

नयी याजनामें खातीक वित्री भंडार अठ जायगे जिसका अय यह है कि जहें खातीकी सब प्रतियाजें सिवानेकी पाठगालाजामें बन्द देना चाहिय। असतिजे रसा चरख तकुअे जीर कताजी जनाओ तथा आटाओका माग मरजाम वहा अवश्य अपर्य्य होना चाहिय। सबमे बडी बात यह है कि खादी-नायकताका हर वक्त और सहायक हाना चाहिय। वह असा रही होगा ता खातीका जन ही जायगा। और यदि स्वय खाती-नायकता खादीकी मृत्युके कारण बनेगे ता यह अब दुखका बात हागी।

जा खाती पहननवाल नियमित वातन ह और अपना वाता हुआ मून बननके त्रिज नेत ह जुहें हक हाना चाहिय कि वे नकल रपया लकर अुतनी खादी खरीदें जिननी चरखा सधक नियमानुमार वे अपन अपराकन मूतके कारण खराद मवन ह।

हरिजन १८-८-४६

खाती भंडारोंके बारेमें मुझ कत्री गिवायता पत्र मिल ह। उनका सार नाच दिया जाता है

१ भंडारोंमें खाती अुहीका मिलनी है जा मचालकके मित्र ह या जिनका प्रभाव है।

२ भंडारोंमें खाती भरी हा ता भी माधारण ग्राहकोंको बहूधा यही उत्तर मिलता है कि खाती नहा है।

३ कुछ भंडारोंमें मूतकी खाती घुनवानेकी सुविधा नहा हाती ता कुछमें चरख और जनका मरजाम नहा मिलता।

४ अमा हालतमें कत्री भंडारोंके खाती-नायकता कोभी काम न करने पर भी राजी पान ह। कथा बार मून यह कहकर अम्वाकार कर दिया जाता है कि यह बहुत माटा है।

यह कहकर कि य सब गिवायमें झूठी ह मनाय मान जना ठीक नहा हागा। पत्रमें बताया गया आचरण रुद्धिहान हृत्यहीन और निष्ठाहीन है। किमी भा भंडारोंमें काम कर खाती भंडारों य काथा प्रतिया नहा रहना चाहिये। खाती-नवशाका व्यवहार जसा बताया

गया है वसा हो ता खानीका आदर कमे हागा ? आगा है कि प्रत्यक खादी भंडार सवाका नमूना बन जायगा और जिम तरह न कवल स्वय अूचा अगा बल्कि खादीके साथ जो सम्मानका भाव जुडा हुआ है उसकी भा रभा करेगा ।

हरिजन २९-९-४६

१ प्रत्यक बिक्री भंडारमें जिस बातका अितजाम होना चाहिय कि या ता कातनवाल्का चरखा अुसम काआ दोष आ गया हो तो सुधार लिया जाय या असके बल्कमें अम नया चरखा दिया जाय । दाम कमम कम लिय जाय । साथ ही हरअक कातनवाठका अितना ज्ञान करा दना चाहिय कि वह अपन चरखको ठीक कर सके ।

२ भंडारको अपन रजिस्टरमें हर खरादारका नाम और पता दर्ज कर केना चाहिय ।

३ बिकनवाल प्रत्यक चरखके साथ सूचनाआका अक छपा हुआ पर्चा हो कि त्रुटिया कसे और कहा दुस्त कराआ जाय ।

४ बिकनवाठ चरखमें कौभी दोष हो ता कीमत कम कर दा जाय । जसी मरम्मत मुफा का जाय । अक्सर असा खराब चरखा भंडारमें लाया जाय तो अुसके बल्कमें नया चरखा द दना बद्धिभानीका काम होगा ।

५ तुनाजा मिलाआ जाय । बनी बनाजी पूनियाकी बिक्री बन्द कर दनी चाहिय । अिमने बजाय कशास बची जाय ।

६ जब तक हर घरमें करघा न चन्न लग तब तक भंडारोको आया हुआ मूत बनवा दनका अित्तजाम करना चाहिय ।

अिन सब बाताका सार यह है कि खानी भण्डारोको बिक्री भंडार नही रहना चाहिय अिसके बजाय अुन्हें लगे सच्च सबका द्वारा चलाय जानवाल कारखान बन जाना चाहिय ।

बनु गाधी

श्री वन्दु गाधीकी सूचनाओं अययन करने लायक ह। हम अक स्थानमें सामूहिक अल्पति द्वारा चरखा सावनिक नहा बनाना चाहत। हमारा आलाप यह है कि जहा कातनवाउ रहत हा जुम स्थानमें चरखा और अुनका तमाम मरजाम बनाया जाय। अिसीमें चरखा महत्व है। अुसमें कुउ भी खराबी हो जाय ता वह वहाकी वही दुम्न होनी चाहिय और रातनेवालाका मिथाना चाहिय कि दुरस्ता कस की जाती है। अुन्हें मिथाना सधवा कनव्य है। जब तक जमा न हागा खानी मिलव कपडकी जगह नहा ठे सवगी।

हरिजन २०-१०-४६

८५

## अब भी कातें !

अब भाआं गिखत ह

म और मरे परिवारक लोग नियमित कातने और खादी पहननेवाले ह। अब आगादी मिल जानव वाग भी क्या आप अिम बात पर जार देने ह कि हम कातना और खानी पहनना जारी रखें ?

यह एक अजीब सवाल है। पर बहुत लगाकी यही हालत है। स्पष्ट है कि अमे व्यक्तिपोने चरख और खानीका केवल यात्रिक रूपमें और स्वतन्त्रता प्राप्तिक अब माधनक तौर पर अपनाया था। ये भात्री भूउ जान ह कि स्वतन्त्रता केवल विदेशी जुझेना हट जाना हा नहा है यद्यपि यह सही है कि वह पहली आवश्यक चीज था। गादी अहिमाक आधार पर खडी अक जावन-वृद्धतिको प्रगट करना थी और करती है। गही हो या गलत मरी यह राम है कि खानी और अहिमाक करीब करीब गप हा जानम यह साबित हाता है कि अिन तमाम बयोमें हमने खादाके मुख्य गृणधका अच्छी तरह नहा ममझा

था। जिसीलिअ कभी दिगाओमें ह्म भात्री भात्रीकी लडाजी और अराजकताका दुखद दश्य देख रह ह। मझ कोत्री गवा नही कि कातना और खादीका बनना पहलसे कही अधिक महत्वपूर्ण है यदि ह्में असी आजादी लनी है जिस भारतकी ग्रामीण जनता अत स्फूर्तिसे महसूस करे। यही जिस घरती पर जीवन्का राज्य या रामराज्य कहा जायगा। खादीके लरा ह्म मनुष्य पर शक्ति द्वारा संचालित यत्राका जाधिपत्य स्थापित करनके बजाय यत्रा पर मानवकी प्रभुता स्थापित करनकी कागिश कर रह ह। खादीके द्वारा ह्म तम पर पूजीकी घष्ट विजयक स्वान पर पूजीकी श्रमके अवीन बनानका प्रयत्न कर रह ह। जिसलिअ यदि भारतमें पिठक तीस सालमें की गयी कागिश प्रतिगामी कदम नहा था तो हाथकताजी और उसके साथ लगी हुयी सब बातका पहलसे कही ज्यादा जारम जोर ज्यादा बढिके साथ आग बाना चाटिय।

हरिजन २१-१२-४७

## काग्रेस कैसे मदद दे सकती है

आम काग्रेसी अपन पढोमियामें खादीका सदस फगनेवे लिअ रम्भे तौर पर नही परन्तु आदतन् खुद खादी पहने खुद कातेँ और जब कभी कहा जाय खादी-कायकनओको सहायता दें।

हरिजन १०-१२-३८

प्रत्येक काग्रेस-कार्यालयका दहातोके सगठनके लिअे बनाओ बुनाओका अेक आदस प्रयोगगाला और शिक्षण सस्था बन जाना चाहिय। और जसा मने मुझाया है खानी वह केद्र बिन्दु है जिसके चारो तरफ दूसर ग्राम-अुद्योगाको धूमना और सगठित हाना चाहिये। तब काग्रेस जनाको पता चलगा कि अिस प्रकारकी सेवाम कितनी जबरदस्त सभाव नाअें ह। दहातक गीघ और सकल सगठनके मागमें मुख्यत मानसिक आल्स्य ही बाधक है। मरा कहना है कि अगर भारतको अहिंसात्मक ढग पर विकास करना है ता अुसे अनक वस्तुओको विवेद्रित करना होगा। कद्राकरणको काफी बलसे बिना न कायम रखा जा सकता है और न जुमरी रथा की जा सकती है। माद घराका जहा चारी जानको कुछ हाता ही नहा पुलिसकी जरूरत नही होती अमीराके महलाको डक्तीसे बचानेके लिअे मजबूत पहर रखन पढत ह। यही बात बडे बड कारखानाकी है। ग्रामीण ढगमे सगठित भारतको जल, यल और ह्याओी सनासे मुसज्जित शहरी ढगके भारतकी अपक्षा बिदसी हमलेका कम खतरा होगा।

अब अगर यह मान लिया जाय कि काग्रेसजनान चरखक अय और गूझथ समझ लिअे ह तो वे अब दणका भी विलम्ब किय बिना अपन आपको अिस सवाके योग्य बनानक काममें लग जायग। यह

भी मान लिया जाय कि व नीसिलुअ ह। तो व कुछ कपास—जो  
 उनके गाव ताँके या जिउमें पग हुआ हो—जटा लेंग।  
 पुन्हें जिस हाथस या अधिकसे अधिक सगामीकी मददसे पटरी  
 पर ओट लना चाहिय। व बिनौल रख लें और जब काफी हो जाय  
 तो वच द अथवा उनके अपन मवशी हा तो उनक लिअ काममें  
 ल लें। व हाथकी धनकीसे हथी धुन तें जिसमें लगभग कुछ भी खच  
 नहीं होता। व स्वय असे बना सकत हं। अिस धुनी हुआ हथीकी  
 पूनिया बना उनी चाहिय। अिनको तवली पर बाता जाय। अिन  
 प्रक्रियाओ पर खासा कावू पानके बाद व अधिक तज प्रक्रियाओको  
 हाथमें ल सकत ह। खादीका अपुयोग करनके विषयमें भी व स्वय  
 अपना और अपन घरवालोका व्यवहार ठीक कर लें। व अपनी दनिक  
 प्रगतिका सही सही हिसाब रखें और सूतका गणित सीख लें।

वाप्रस कमटिया चरखा सपकी स्थानाय गाखाकी मददसे अपन  
 कार्यालयोकी पुनव्यवस्था करके अन्हें कताजी-बनाओके केद्र बना लें।  
 म वाप्रसजनोको चतावनी दता ह कि व अपना सूत बननके लिअ दूर  
 दूरके वेद्रामें भजनकी धातक मूल न करें। खादीके अवशास्त्रका  
 तकाजा है कि कपासकी खतीसे लगाकर खादी तयार करन और असे  
 वचन तककी सारी प्रक्रियाअें जहा तक हां सके असी गाव या केद्रमें  
 की जानी चाहिय। मसलन पजाबमें सूत कातकर बम्बयीमें असे बनवाना  
 और अिस प्रकार तयार की गयी खानीको मगबारामें वचना अनुचित  
 है। अगर वाप्रसजन और वाप्रस कमटिया खादीकाय आरम्भ करत  
 समय अिस साद नियम पर ध्यान देंगी तो अन्हें स्वय अपन जिलमें  
 घबरानकी जरूरत नहीं होगी। अगर अन्हें स्वय अपन जिलमें  
 सफलता मिउ गयी तो कोशी कारण नहीं कि दूसर २४९ जिल सफल  
 जाय तो भी यह तक लागू होना है। यह स्वीकार करना पडगा कि  
 अभी तक अिस ढगसे सगन्ति किया हुआ अक भी गाव हमार पास  
 नहीं है। अवश्य ही सवापाम असा गाव नहीं है यद्यपि यह माना  
 जाता है कि म वहा रहता हं। किन्तु मरी असफउतास अस

किसी कामकताको निराश नहीं हाना चाहिए जो अपने खुदके गावज संगठनको अपना जवमाय काय बना ले।

हग्निज ३०-१२-३०

८७

## खादी और ग्राम-अद्योग

कभी गगान हालमें मझसे गिकायत की है कि वे असे आत्मिधाको जानत ह जा खादी ता काममें लवह मगर और कोभी ग्रामीग वस्तुओं अिस्तमाल नहा करते। अुवा कहना यह है कि अन्क काप्रेसजन् मानी अिमन्त्रि पहन ते हैं कि विधानके अनुमार यह जरूरी ह। परन्तु अुममें किन्वाम न हानके कारण जहा तब अुपयोगकी दूसरी वस्तुआका सम्बन्ध है वे कभी अपनी मुविधाके सिवा और किना बातका विचार नहा करते। अिम म गन्वा पान्त और भावनाकी हत्या कहना ह। और जग भावनाकी हया होती है वहा गन्का अतना हा अपवाग है जितना अुम गरीरका अिममें म प्राण निवल् गय ह। मत अवसर कहा है कि खानी केद्रीय पूव है और दूसर ग्राम-अद्योग ग्रहाकी तरह अुमक चारा और धूमन ह। अुनवा स्वतत्र अस्तित्व नहीं है। अिमी तरह खाना भी दूसर अुद्योगोंके बिना नहा ती मवती। व पूरी तरह परम्परावन्धी ह। मव ता यह है कि हमें गावावाला भारत या गहरावाग भारत—अिम दोमें म अक्का चनाव कर नना है। गाव तवग ह जबम भारत दग है शहरास विन्गा आधिपत्यन पग किया है। आज ता गहरोका बोलबाला है और व गावाका अिम तरह घूम रह ह कि गाव जरूर हाकर नल् हात जा ग् ह। मरी खानी मनावृत्ति मुम बताती है कि जब यट आधिपत्य नहीं रहेगा तब शहराका गावाकी मातहना करनी हागी। गावाका शापण स्वय अब मगठिन हिमा है। अगर हम चाहते ह कि



स्वरायका निर्माण अहिंसाके आधार पर हो तो हमें गावोंको अनुकूल अचित स्थान देना पडगा। यह हम कभी नहीं कर सकेंगे यदि हम दंगी या विदंगी गहरी कारखानोंमें तयार हुआ चीजाके बजाय ग्राम-अद्योगकी वस्तुआका उपयोग करके ग्राम अद्योगको पुनरुद्धार नहीं करेंगे। गायद अब यह स्पष्ट हो गया होगा कि म खादी और अहिंसाका अब क्या बताता है। खादी मुख्य ग्राम-अद्योग है। खादीको मार दीजिये तो दहात और अहिंसाके साथ अहिंसा अपन आप मर जायगी। अहिंसे म आकडसे साबित नहीं कर सकता। अहिंसाके प्रमाण हमारी आँखोंके सामने है।

हरिजन २०-१-४

खादी ग्राम सौर मण्डलका सूत्र है। यह व विभिन्न अद्योग ह जो खादीसे मिलनवाली गरमी और पोषणके बदलमें खादीको सहाय दे सकते ह। अहिंसेके बिना दूसरे अद्योगका विकास नहीं हो सकता। परन्तु मर पिछले दौरम मुझ पता ग्या कि दूसरे अद्योगका पुनरुद्धारके बिना खादी आम प्रगति नहीं कर सकती। दहात अपन अवकाशके समयका सदुपयोग कर सकें अहिंसेके अहिंसाके ग्राम जीवनको हर जगह पर स्था करना होगा।

हरिजन १६-११-३४

## कताभी-मताधिकार

रामचन्द्रनून कताभी मताधिकार की चर्चा की। युनकी समझमें नहा जाता था कि काग्रस अपन सदस्याको कातनक लिअे कसे मजबूर कर मयनी है। हमारा तरीका समझानका ही हाना चाहिये जबरदस्ती बरनका नये।

गाधीजीन अिस तक्का आनन् लने हुअे अुत्त दिया अच्छा तो म आपस पूछना हू क्या काग्रसका यह कहनका कोअी हव है कि असके सन्त्य शराब नहा पियेग ? क्या यह भी ब्यक्तिकी स्वतत्रता पर प्रतिबन्ध होगा ? अगर काग्रस शराब न पीनका आदग दनका अपना हव काममें लती है तो कोअी आपत्ति नहा होगी। क्या ? अिसलिअे कि मद्यपानकी बुराअिया प्रगट ह। तो म कहता हू कि अिस समय भारतमें जब करोडा लाग भूखके द्वार पर खड ह और घोर दुःखम हूव हुअे ह गाग्रस विदगी बपडा बाहरसे मगाना मद्यपानमे वही ज्यादा बडी बुराअी है। अुडीसाके करोडा भूखाका विचार काजिय। जब म वहा गया था तब मने अवालन्धीडिनाका दत्ता था। अक दयालु अ्यवस्थापककी कृपास जो अक अुत्रागाअ्य चला रहे थ मन अुनके बन्चाको भी दत्ता। व दगिया टोकरिया आदि बना रहे थे और तजस्वी तदुस्त तथा प्रसन्न दिखानी देते थे। वहा कताजी नही थी, कपाकि अुम समय अिन दूसरी चीजाका रिवाज बहुत था। परन्तु अुनव चहरों पर हयपूण कायकी चमक था। किन्तु जब म अवालन्धीडिनाके पास पहुचा तब मन क्या दत्ता ? वे केवन् अस्थिभजर रह गय थ और मौतका अिनजार कर रहे थे। व अुस समय अगी हात्तमें अिसलिअ प कि वे किसी भा अवस्थामें काम करना नहा चाहते थे। अुनके काम बनस अिनकार करने पर आप अुहें गालीसे मार देनकी धमकी देते तो भी मुने विन्वास है कि कोअी प्रामाणिक काय बरनके बजाय थ गोलास मरना ज्यादा पमन् करते। कामके प्रति यह अरुधि सुन्

गरावस भी ज्यादा बड़ी बराबरी है। आप किनी गराबीसे कुछ काम ल सकते ह। गराबीमें कुछ दिल बाकी हाता है। असमें बद्धि हाती है। लेकिन काम करनेसे जिनकार बरनवाल य भूल लाग निर जानवर-से बन गय थ। अब अिनके जसे गगसे काम करानकी समस्या हम कसे हल कर सकत ह? मुझे कताजीकी सावधिक बनानके अतिरिक्त कोअी रास्ता दिखाओ नही दता। भारतमें लाया हुआ अब अब गज विदगी कपडा भूला भरन गरीबोके महस छाना हुआ रोगका टुकडा है। अगर मरी तरह आप भी समयकी सर्वोपरि जावश्यकताको घाना भारतके करोडा भूखोको हप और प्रसन्नतासे अपनी राजी कमानका मौका दनकी आवश्यकताको पहचानें तो आपको कताओ मताधिकार पर अतराज न होगा। म काग्रसको असे स्त्री-मुखपाकी जमात मानता हू जो कताओकी परम आवश्यकताको स्वीकार करत ह। तो असे अपनी सत्स्यताकी प्रामाणिकताको पक्का करनेके लिअ प्रत्यक सदस्यके लिअे वातना अनिवाय क्या नही कर दना चाहिय? और आप समझान बुझानकी बात करत ह! अिससे अच्छा समझाना-बझाना क्या हो सकता है कि काग्रसका प्रत्यक सत्स्य हर महीन अब निश्चित मात्रामें सूत नियमित रूपमें वातता हो? काग्रसके सदस्याके लिअ यह बात भीमानदारीकी कसे होगी कि व लोगसे तो कातनकी कहें और खुद न कातें?

रामचन्द्रनू बड़ी गभीरतासे अुत्तर लिया परन्तु जो योग कातत नही अन्हें आप काग्रससे बाहर कस रख सकत ह? सभव है व दूसरी तरहसे दशकी मूल्यवान सेवा कर रह हा।

गाधाजीन पूछा क्या नही? सम्पत्ति-मताधिकारका क्या कारण है? किसा मनुष्यको सदस्य बननके लिअ चार आन दना क्यों जरूरी है? और अुग्रका अब आवश्यक योग्यता क्यों माना जाता है? क्या अिटनार्ड आठ बपके वायालिन विगारदको मताधिकार होगा? जान स्टअट मिड सात बपकी आयुमें ग्रीक और अटिन भापाओमें कितना हा प्रवीण रहा हा परन्तु अुग आयुमें असे मताधिकार नही था। अिन असाधारण प्रतिभागालियाको अुससे बचिन क्या रखा गया?

वात यह है कि किसी भी मताधिकार प्रणालीमें कुछ मनुष्योंको ता वचित रहना ही पड़ेगा।

यग बिडिया, २०-११-२४

८९

## खादी खरीदनेके लिये सूतकी गत

प्र० — आपन काप्रसवा राजा किया कि अमक मन्स्य खादीको अपनायें और फिर आपन हा चरवा सधकी खादीके लिये निश्चित मात्रामें सूत दनका नियम जारी किया। काप्रेसजनोंका चरवा सध द्वारा प्रमाणित खादीके सिवा और काशी खादी अस्नमात्र करनेकी मनाही है और अब सूतकी निश्चित मात्रा लिय बिना सधम सानो नहा मिल सकना। क्या यह जबरस्ती नही है ?

अ — यह सच है कि काप्रेसने खादीको अपनाया चरवा सधने सूत दनका गत लगाओ और जा खादा चरवा सध द्वारा प्रमाणित न हो वह काप्रेसजनाके लिये निषिद्ध है। खादाके मूल्यक अगव रूपमें सूतकी अेक निश्चित मात्रा दतो पडती है। यह सब सच है। परन्तु मुझे अिसमें काशी दाप नहा लियाओ दता।

जबरस्ती अुमा कारवाअाका कहा जा सकना है अिसमें किमा किाप वातके न बनका काशी सजा हा। सजाका रूप क्या हा, यह अग्य बात है। अगर म खादीकी बीमत मागू और मुफ्त न दू ता यह जबरस्ती नहा है। अिसा तरह किसी मस्वामें मन्स्यनात्र लिय काशी न काभा शन ता लगी हा हाता है। यह भी जबरदम्ना नहा कि अून गतोंमें आगे चलकर काशी परिवान कर लिया जाय। अप्रमाणित खादाका मामला भा असा ही है। अगर हम अप्रमाणित खादा अने लगे ता अुमका गुदनाका क्या भरोगा और अिसका क्या भराना कि वातनवाअाका अुचित मजदूरी दी गयी है या नहा ?

समय और अनभवक साथ साथ नियमा और अपनियमामें फरकाल करन पडत ह। विचारणीय प्रश्न यही है कि परिवर्तनसे अद्दश्यकी पूर्ति हाती है या नहीं वह सत्य और अहिंसाक सिद्धान्तक अनुसार है या नहीं और वह स्वाथपूण हतुसे प्ररित है या परापकार-बुद्धिस। जिन सब सवात्राके जवाबस जाहिर हो जायगा कि यह परिवर्तन मूल अद्दश्यकी पूर्तिके त्रिअ ही था और जबरदस्तीका सवाल ही नहीं अटता। अगर म अपन मान्य बालमें सूत या और कोअी पत्थय मागता हू ता मुअ धयवाद मिलना चाहिय।

हम थाडा गहरा विचार करें। हम मानत ह कि खादी बुन्हीके त्रिअ है जिनका विवास है कि अहिंसक स्वराय रात्रीको सावत्रिक बनानस स्थापित हो सकता है। लागाकी बडी सस्या थोड समयके लिअ भी कातन लग ता असस स्वराय लनमें मद मिलगी। जिसलिअे हम मजतूरीस न कातकर स्वय अपनी जिअसे कातन ह। अक और लाभ यह है कि कताअीक द्वारा हम सीध गरीबाके सपकमें आत हं। जिसलिअ मरी नजरमें यह सबया स्पष्ट है कि सूतके रूपमें खात्रीके मूल्यका अक हिंसा मागनमें काअी जबरदस्ती नहीं है। दिआअिडियालाजी आफदि चरला सितवर १९४५ पृ० ८३-८५

## प्रश्नोत्तर

प्र० — चुनावके लिये एक हानवाले मंत्र अमुमाद्वाराके लिये कांग्रेस मन्त्रिमण्डल जिस राजिमा बनाया है कि वह आम्नन् हाय-वनी हाय-वनी खादीके पहननवाले है। क्या अमका यह अर्थ नहा है कि वह वहा खाता अस्तेमाल कर सकत ह जा चरखा सभ द्वारा प्रमाणित हो ?

अ० — मेरी रायमें अमका और काशी अर्थ हो ही नही सकता।

प्र० — क्या अप्रमाणित खादीका व्यापारी किसी कांग्रेस समितिका पदाधिकारी हो सकता है ?

अ० — मेरी समझमें नहा आता कि अप्रमाणित खादीका व्यापारी कांग्रेसजन भी कम हो सकता है किमा कांग्रेस समितियों पदाधिकारी हानका अमुमाद्वारा बननका बात तो छोड ही दाजिये।

प्र० — आप कहत ह कि अप्रमाणित खादीका व्यापारी पदाधिकारी तो क्या कांग्रेसजन भा नहा हो सकता। परन्तु अनु लागाके लिये आप क्या कहेंगे जा कांग्रेसके पदाधिकारी ह और मिलाका तथा विन्नी कपडा तब बचने ह ?

अ० — दूसरे प्रश्नका मेरा अन्तर तामरे प्रश्नमें बताय अर्थ व्यक्तियाके लिये भा अन्तना ही गही है। अन्ही कारणाम मने सवधित पाराओं कांग्रेस सविधानमें स निकाल लनकी मिकारिण का है। अनु भवन हमें मिलाया है कि हम अिन नियमा पर चरनमें अममय हैं।

हरिजन १९-५-४६

## काग्रसेस और कताभी

अक काग्रसेसन लिखत ह

आप गायन अससे सहमत हाग कि बहुत प्रचारके बावजूद भी कताभी-बुनाभीको जनतान अस ह तक नही अपनाया है जहा तक अपनाना चाहिय था। मरा खयाल है कि अगर प्रत्यक काग्रसेस अमटी—कमसे कम बड शहरोकी—अस कामके लिअ जनताके शिक्षणकी कक्षा खोल द तो जबरदस्त लाभ हो सकता है। बहुत लोग—खासकर गरीब—कताभीको असिलिअ नही अपनात कि व कातना और बुनना नही जानत। व नही जानत कि काम करनकी सहूलियत और ज्यादा सूत निवालनके लिअ किस ढगका चरखा चाहिय असको ठीक तरहसे कसे चलाया जाता है और अस प्रकार तयार हुअ सूतका कसे बचा जाय अथवा असका क्या अपयोग किया जाय अित्यादि। अगर ठीक प्रचारक बाद सप्ताहमें अक या दो बार बुछ असी कक्षायें चलायी जाय और लागाकी यह कला प्रत्यक्ष प्रदान द्वारा सिखायी जाय तो काफी सुधार हो जाय। कमसे कम यह प्रयोग काग्रसेसके आजमान लायक जरूर है। अगर नियमित कक्षाओं न भी चगायी जाय परन्तु अस कलाके विगारद समूह बनाकर दौरा करें और प्रत्यक नगरमें जनताका असका प्रदान दिवायें और शिक्षण दें ता भी काफी हद तक अक्षयकी पूर्ति हो सकती है।

लखके कथनमें काफी सार है। अगर समाम काग्रसेस कार्यालय खादी तयार करन तक पट्टकी जीर बादकी सब प्रक्रियाओं सहित कताभीकी कला सिखानवाली सस्थाओं बन जाय तो बिलकुल स्पष्ट है कि दहाताका कामापलट हा जायगा। य पकितया पत्रलखके अठाय हुअ मद् पर जोर दनक लिअ लिखी गया ह।

हरिजन १८-८-४६

९२

### विदेशी वस्त्रका निषेध

जब स्वराज्य मिल जायगा तब युमकी सरकार सबसे पहले जो काम करेगी उनमें विदेशी वस्त्रका निषेध भा अब हाना चाहिये।

यग त्रिदिया १९-३-३१

९३

### खादीको लोकप्रिय कैसे बनायें ?

मन्त्रीगण कायसी ह। वे आमपामकी परिस्थितिस प्ररणा लते ह। अगर अन्हें गातीमें सजाव थडा हा तो वे युम लोकप्रिय बनानक लिअ बहुत कुछ कर सकत ह।

म बनाऊ कि काप्रेमी मत्री और वस मभी मत्रा त्रिस सबयमें क्या कर सकत ह और अन्हें क्या करना चाहिये।

येक मत्री असा हा सकता है जिसका अकमात्र काम खादी और ग्राम-अद्यागासा देखभाल करना हा। अत त्रिस कामके लिअ अक अलग विभाग होना चाहिये। दूसरे विभाग अुमे सहयोग देंग। ममत्रन कृषि विभाग कपामकी पत्तावारके विक्रीकरणकी अक याजना बनायगा, गावके अपयोगके लिअ कपामकी पत्तावारक अनुकूल भूमिकी पमाश्रिता करणा और पता लगायगा कि युमक प्रान्तके लिअ कितनी कपामका जरूरत हागी। वह विनरणक लिअ अनुकूल कद्रामें कपाम जमा करक भी रक्षणा। भडार विभाग प्रान्तमें अपुअर स्वायत्त खरालगा और अपनी जरूरतक कपामक लिअ माग पग करेगा। अद्याग विज्ञानम सम्बन्धित विभाग अरना बुद्धिका अपुपाग करव बहतर चरखे और हाथकी अत्यतिके अय औजार निबालेगा। ये सारे विभाग चरखा



सघ और प्रामोद्योग सघने साथ सम्पन्न रहेंगे और उन्हें जका कामका निष्पात मान कर अनुका अपयाग करेंगे ।  
माल-मन्त्री मिलक अत्यान्त सखीका रक्षा करनके साथन खोज निकालगा ।

हरिजन १०-१२-३८

९४

### खादी द्वारा अकाल निवारण और शिक्षा

खादीके लिअ यह दावा किया गया है कि अक्सर कमसे कम तीन निश्चित काम ह। वह भारतके करोडो अशभूला और अध बकारता असे पमान पर सहायक धधा देती है जिसकी बराबरा और काजी धधा नहा कर सकता। कमसे कम हानिका सभावनाके साथ वह अवालके क्षत्रामें काम देती है और प्रारम्भिक स्थितिमें भारतक लडके-सडकियोके लिअ वह गिन्नाका अत्तम माध्यम है। परन्तु अकालके वाम या प्रारम्भिक गिन्नाके माध्यमके रूपमें खादाकी सफलताकी अक निश्चित शत है। अकालके अिलाकोंमें और पाठगालाआमें तयार हुअी खादीका क्या किया जाय ? अगर खादी बची नहीं जा सकती ता वह जुतनी ही निक्म्मी है जितन अकालके समय भारतके अनक भागामें फाड जानवाल पत्थर हान हैं। अिस पत्रमें मैं अनक बार सुनाया है कि पिछली दो मगामें अुत्पन्न की गआ सारी खादी राज्यको ल लनी चाहिय। यह काम चरखा सघक मारफत बहुत आसानीसे किया जा सकता है अगर राज घातकी बसे ही मारटी द जस वह आजकल रलके मुनाफकी और कआ अय वाताकी देता है। मूल्यकी दृष्टिस खादी मिलक कपडसे बक महगा है। अिसलिअ अुसकी विना दामकता और परापकारियामें हा हानी है। परन्तु जिनके पास अतिरिक्त पसा नहा है व आमानीस दामकित अयवा परोपकारसे प्रति नहा होत। व सस्तसे सस्त बाजारमें जायेंगे। अिसलिअ यह

रायका काम है कि वह उसे माल पर पाबन्दी या भारी कर लगाये जो उस मालसे स्पर्धा करता हो जो आम लोगकी भलाजीके लिये बिकना चाहिये। मेरे खयालसे यह सिद्ध हुआ माना जा सकता है कि सारी अम मालमें आ जाती है।

हरिजन १९-८-३९

अगर प्रांतीय सरकारें मदद न करें तो (कतिनाकी मजदूरीके रूपमें) तीन आनेका स्तर भी कायम नहीं रखा जा सकता। वे कानून और शासन दोनों तरहके प्रयत्नास जमा कर सकती ह। यह वे तभी करेगी जब वे चरखा सघ, ग्रामोद्योग सघ और हिन्दुस्तानी तानीमी सघको अपनी ही निष्ठात स्वच्छापूण और अवतनिक सस्याओं मानकर अन्तसे काम लेंगी। मैं अन्तके सामने यह सभावना पग करता हू कि वे मूख ग्रामीणाको फुरसतके समय काम देकर अन्तकी जवामें कभी लाख रुपये डाल देंगी। लेकिन अगर देहानकी बनी चीजें चलें नहीं तो कौनी प्रगति नहीं की जा सकती।

हरिजन, २६-८-३९

९५

## जुलाहाकी सहायता

मेरी हमेशा यह राय रही है कि जो जुलाहा बिन्गी या दंगी मिलाका मूल जिस्तमाल करते ह अन्हें मदद देना रुपये जोर प्रयत्नकी बरानी है। अनुभवमे यह खयाल बन्ना नहीं है। वह अिसलिअ भी नहीं बदल जाता कि कुछ प्रान्तामें काप्रेसका राय है। मेरा यह विचार अिसलिअे है कि मिलाका मूल बुननवालेका मिट जाना कवल समयका प्रदा है। जसी परिस्थिति है जुममें अिसके सिवा कुछ हा ही नहीं सकता। जुलाहाकी जेवमात्र आगा अिममें निहित है कि हाथ बत्ताओ फिरम सब जगह जारी की जाय। हाथ-बत्ताओ और हाथ बुनाओ परस्परवाग्ग्वा ह हाथ-बुनाओ और मिला-बत्ताओ हरगिज अभी

## मंत्रियोका कतव्य

यह प्रश्न उचित ही है कि अब जब संता वाग्रसी मंत्रियकि हाथमें आ गयी है तब व रादा जीर अय दहाती अुधोगावे िअ क्या करेंग । म प्रानका व्यापक बना कर भारतकी सारी प्रान्तीय सरकारौ पर लागू करना चाहूगा । दरिद्रता सभी प्रान्तामें अकसी है और जन साधारणकी दृष्टिस कष्ट निवारणके अुपाय भी सामान्य ह । चरखा सघ और ग्रामोद्योग सघ दोनोंका यही अनुभव है । य सुझाव दिया गया है कि जिस कामके लिअ अक अलग मत्री होना चाहिय क्योकि ठीक सगठनक लिअ अस मत्राका अुसमें सारा समय लग जायगा । मुझे यह सुझाव देते हुअे डर लगता है क्योकि हमन अग्रजी पमान पर खच करना अभी तक नही छोडा है । मत्री अलग भुकरर किया जाय या न किया जाय अवय ही अक अलग विभाग अस कामके लिअ जरूरा है । भाजन जीर वस्त्रकी कमीके जिस कालमें यह विभाग बडीसे बडी सहायता कर सकता है । चरखा सघ और ग्रामोद्योग सघके मारपत मंत्रियाको विगपत तो अपलख हो ही जायग । अिन समय कमसे कम पूजा जीर समय लग कर भारतका खादीका कपडा पहना दना सम्भव है । प्रत्येक प्रान्तीय सरकारको अपन दहातियासे यह कहना होगा कि अुन्हें अपन अुपयोगके िअ अपनी खादी आप तयार करना है । अिसमें स्थानीय अुत्पत्ति और वितरणकी बात अपन जाप आ जाती है । और नि सन्दह कमस कम कुछ माल गहरोक लिअ बच रहगा जिससे स्थानीय मिला पर भी दबाव घट जायगा । फिर तो मिले ससारके दूसर भागामें कपडकी कमी पूरी करनेमें भाग ल सकेंगी ।

यह परिणाम कैसे आया जा सकता है ?

सरकारको दहातियाको सूचना द दनी चाहिय कि अुनस अक निश्चिन तारीखक भीतर अपन गावाकी जरूरतका खदर तयार कर लनी आगा रखी जायगा । अुम तारीखके बाद अुन्हें कपडा मुहया नही किया जायगा । सरकार अपनी तरफके दहातियोको जहा जरूरत

हागा लागत कीमत पर कपाम या कपासका बीज दगी और माल तयार करनके औजार भी लागत कीमत पर दगी, जो पाच या अधिक वर्षोंमें आसान किस्नामें वमूल की जा सकती है। जहा आवश्यकता हागी सरकार अन्हें शिक्षक दगी और खातीका बचा हुआ माल खरीद लेनेका बचन देगा। शत यह हागी कि सप्रधित ग्रामवासी अपनी कपडकी जरूरत अपने ही तयार किये हुअे मालस पूरी करेंगे। अिससे कपडकी कमी चुपचाप और बहुत घाडे व्यवस्था पचमें दूर हा जायगी।

हरिजन २८-४-४६

९८

## कपडेकी कमी

श्री मनु सूत्रकार खाती और हमरे ग्राम जुवागामें दिग्दर्शनी गन ह। अन्हान कुछ समय हुआ मरे पास अक नोट भेजा था। परंतु मने अुम प्रकाशित करनेमें तर की क्याकि म चाहता था कि हा मक ता हरिजन में छापनक बनिस्वत अुसका काभी अधिक वाग्गर अुपयोग करू। मगर मुझे वह सूझा नहीं। अिसअिअे अक अुम प्रकाशित किया जा रहा है—न मिक प्रातीय सरकारक अुपयोगक अिअ ही परन्तु खानगी यकिनया और सस्याजाके अुपयोगके अिअ भी भल शत्र कितना ही सीमित क्या न हा।

था सूवदारकी योजना यह है

प्रत्यक गावका मामूहिक रूपमें अेक गाठ रुडीकी दी जाय। गावके लाग अुस कात कर सूत तयार करें। यह सूत या ता खानके अिअ रुबटा किया जाय या बानेक अिअ या हा काममें लिया जाय और कपडा बनाया जाय।

अक गाठस लगभग २४०० गज (या सूतो नम्बरके अनुसार १८०० गज) कपडा तयार हागा।

अगर चरखो और तर्कलिमाका जहूरत हा ता के राय द्वारा लिय जाय। (अिनको तयार करनका काम जगम सगठित किया जाय।)

कपडा जब तयार हो जाय तब फी आदमीके हिस्साक आधार पर गावक लोगको मिलना चान्चि।

‘अिन गावामें अनाज अकत्र करना जरूरी हो तो जहा किसानके पास फालतू अनाज होना माना जाय वहा कपडा अनाजक बदलमें हा दिया जाय। जहा यह स्थिति न हा वग ग्रामवासियाको रजाका गाठकी कामत चुकान लामक पसा जमा करना चाहिये। दूसर शब्दामें रजाकी कीमतके बदलमें अुन्ह कपडा मिल जायगा। (गृहमें यह रशी सरकार पगया दगी।)

‘अिससे जहा कपडकी बमीमें राहन मिगगी वहा फालतू रशी ल ली जायगी अर अिससे कपाम बोनवालका मर मिलगी।

चूकि ग्राम-प्रधानको रशीकी गाठ लवर असस कपडा बनवान तकके सार कामका प्रबध करना होगा अिसअिन हरअक गावमें

- (१) ग्राम प्रधान गह हो जायग।
- (२) लाग मिल जलवर काम करना सार्वेग।
- (३) छोटे-बड सब महनत करनम हिस्सा लेंग।
- (४) दरालक अिन कोअी स्थान नहा रहगा।

‘अगर गृहमें बम्बअी प्रानक २० हजार या दो हजार गावामें भी य प्रयोग किया जाय ता २ सप्ताहामें परिणाम ल्या जा सकगा।

सरकारका प्रति गाठक २२१ रुपयक हिसाबस रजाक अिन रुपया राबना पडगा। अिसमें स बन्तसा रुपया अनाज या नकद रुपमें ली जायगा। परन्तु अिसस सयागवग जब असा चीज गह हो जायगी जो गाववाल स कर सकत ह।

सहायता वहा भी दनी पड सकती है जहा करघ न मिन्न सकत हा या जहा तयार हुआ सूत ताना जीर घाना मोनाके लिअ निरूपयागी हो। परन्तु यह तो कामको सगठिन करनकी तफसीलकी बात हुआ। हरजेक जिनेम जिम आदमीको यह काम सौपा गया होगा वह अिन प्रश्नाक वारेमें सोचगा और अुन्हें हल करेगा।

‘विसी गावके एक गाठकी कीमत तीन गेने पर सरकार वहा नजी गाठ भज द।

म अितना ओर कहूँ दू कि मर सुझावम यह योजना याडी भिन्न है। मरी रायमें मूल सुझाव शायद अिससे ज्यादा अच्छा है। परन्तु मधी सूत्रदारके नाटको अधिक महत्त्व देता हूँ क्वाकि अुन्होंने तिसाव लगा कर आकड निवाल हूँ रकीकी अक गाठसे कायारभ करनका सुझाव दिया है और खास तौर पर मुझसे स्वतंत्र रूपमें अक अयगास्थाकी हैसियतसे विचार करके अपनी योजना तयार की है। विसी भी मानव-याजनामें दोष अुन्न निवालना आसान है। हमारा काम यह है कि अगर हमें दाप दूर करना आता हो तो अुन्हें दूर करें या जिन दापाका हम जानन ता हूँ परन्तु दुस्त नही कर सकन जुनक रहत हूँ भी पुग्नात कर दें। पूणताव लिअ हम प्रतीक्षा करत रहें ता कोजी मुषार सभव नही है।

हरिजन ६-८-४६

## यदि म मंत्री होता

पिछा २८ अप्रैल के जकमें छत्र मरे नोटकी तरफ में पाठवावा ध्यान दिलाता हूँ।\* अम समय मन गा विचार प्रगट किये से जनमें कोश्री सबनीही नहीं हुआ है। एक बातम कुछ गणतन्त्रही पना हुआ है। कुछ भाशियाको जम नाममें जबरनस्ती दिवायी दी है। मुझे अिस अस्पष्ट ताक लिज खर है। असमें मन अिस प्रश्नका उत्तर लिया था कि काम लागाकी प्रतिनिधि सरकारें चाहें ता क्या कर सबनी ह। मन मान लिया था — जागा है वट मायता क्षम्य थी — कि अिन सरकाराक फरमानाको काश्री जार जबरनस्ती नहीं मानगा। कारण किमी सच्ची प्रतिनिधि-सरकार प्रत्येक कायमें जिन निवाचकाका वह प्रतिनिधि है उनकी अनुमति मान ली जायगी। निर्वाचकोका अर्थ होगा सारा जनता चाह उनका नाम निवाचक सूचीमें हो या न हा। अिस पठभूमिको खयालमें रखकर मन लिया था कि सरकार ग्रामवासियाका सूचना द द कि एक निश्चित ताराक्षर वाद ग्रामवासियाका मिलका कपडा नहा लिया जायगा ताकि वे अपनी ही तयार की हुआ खादी पहन सकें।

पिछा २८ अप्रैल मर खवा कुछ भी अर्थ हा म कहना चाहता हूँ कि संबंधित लागाक स्वच्छापूण सहयोगक बिना अपनाभी हुआ खानी सपथी कोश्री भी योजना बकार होगी और वह अस खानीरा मार डालगी जिस हम स्वराज्य हासिल करनका जरिया बनाना चाहत ह। फिर तो खानीके बारमें लोगाका यह ताना सही होगा कि सादा हमें मध्यकालीन गलामी और अनातकी ओर आ जाता है। परंतु मरा विचार अिसके विपरीत रहा है। जहा जबरन अपनाभी गरी खानी गुलामीका निगाना है वहा बुद्धिपूर्वक और स्वच्छास तयार वा हुआ खाना जो मुख्यत अपन ही अपयोगक लिख हो

\* अश्विगत नाट प्रकरण ९७ में लिया गया है।

हमारी आजादीकी निशानी है। स्वतंत्रता कुछ नहीं है अगर वह सर्वांगीण स्वावलम्बन नहीं है। अगर खादी आजाद आदमीके अपने हक और कर्तव्यकी निशानी न होती तो कमसे कम मुझ अुसमें बोझी दिलचस्पी न रहती।

मित्रभावसे टीका करनेवाले जेक भाभी पूछने ह कि क्या अस प्रकार तयार की गयी खादी साथ ही विक्रीके लिअे भी बरती जा सकती है? मेरा अुत्तर यह है कि यदि विक्री अुसका गौण अुपयोग हो तो असा किया जा सकता है जेकिन अगर विक्री ही अुसका अकमात्र या खास लक्ष्य हो तो हरगिज नहीं। हमन विक्रीके लिअे खादी पदा करके अपना काम गुरू किया अुसका कारण यह था कि अुसके वारमें तब हम दूर तक सोच नहीं पाय थे और यह भी कि अम समय अुसका जरूरत थी। अनुभव अेक महान शिक्षक है। अुमने हमें जनक बातें सिखायी ह। अुनमें से अेक बडी बात यह है कि खानीका प्राथमिक अुपयोग अपने लिअे अुसका व्यवहार करता है। परंतु यह भी अंतिम बात नहीं है। खर मुझे कल्पनाक अस मनोहर क्षत्रको छाडकर नीपकमें पूछे गये प्रश्नका निश्चित अुत्तर देना चाहिये।

तमाम शासन-कार्यके केन्द्रके रूपमें देहातक पुनरुद्धारकी जिम्मे दारी सभान्तरवाले मंत्रीकी हैसियतसे मेरा पहला काम यह हागा कि स्थायी राजकर्मचारियों से अस कामके लिअे अीमानदार और निष्ठावान आदमी ढूँढ निकालूँ। म अुनमें स अुत्तम लगावा चरला गष और ग्रामाचार्य सघसे जो काप्रसके बनाय हुअे ह सपक करा कर देहाती दस्तकारियोंको अधिकम अधिक प्रात्माहन देनेक लिअे अक याचना पग करूंगा। म यह गत रक्वूंगा कि देहातिया पर काभी जबरदस्ती नहीं की जायगी। अुन्हें दूरराकी बगार करनेके लिअे मजबूर नहीं किया जायगा। और अुन्हें अपनी मन्द आप करना तथा भाजन वस्त्र और अय आवश्यक वस्तुआक अुत्पादनके लिअे अपनी ही महहन और कारीगरी पर भरामा करना सिखाया जायगा। अस प्रकार योजनाको व्यापक बनाना हागा। अिमलिअे म अपने पहलू आदमीको यह आदस दूंगा कि यह हिंदुस्तानी तालीमी सघवा



कर रहे ह। जिसके सिवा सत्यता मागना जितना आसान है  
 भूतना प्राप्त करना नहीं है। अधिकस अधिक बचन करन और  
 गावको थोडा ज्यादा काम देनेके लिज ओटाओ और धुनाओकी  
 प्रारभिक प्रक्रियाओं वहां और जहा तक हो सके हरअक परि  
 वारमें होनी चाहिय। सूतकी बनाओ भा गावमें शानी चाहिय।  
 बुनाओका काम कताओकी तरह हरअक यकिन नहा करेगा  
 बल्कि वह अक-दो परिवाराको मीप लिया जायगा। जिससे ओहें  
 पूरे समयका काम मिज जायगा और वे जिम कताके विगपन  
 बन सकेंगे। ओह कामकी मजदूरी पदाथंकि रूपमें और अछा  
 तो घट है कि सूतके रूपमें दी जाय। घरके कते मोट सूतसे  
 ग्रामीण पुगहा द्वारा गदर और दहानमें काम आनवाली घटिया  
 दरियें तयार कराओ जा सकता ह। जब हमारे सामने ये  
 सभावनाओं ह ता अक असे अयोगकी अपेक्षा या तिरस्कार करना  
 बहुत कठिन है जो सारी ग्रामीण आवाओकी कपडा देनेकी क्षमता  
 रखता है और दो जलाहा परिवारा और अक कताओ परिवारको हर  
 गावमें असकी अपनी सीमाके भीतर हा पूरा काम दं सकता है।

जहा कहा बनाओके साथ हाय-कताओ सफलतापूर्वक  
 जारी की जाय कहा बगार जसे अवानवाले कुछ कामको कम  
 करनका विचार जरूर करना चाहिय ताकि कताओ और  
 असके साथके कामके लिजे अधिक समय और शक्ति बची रहे।  
 अुदाहरणके लिज आटा पासनमें स्त्रियोका बहुत बदन लग  
 जाता है। यह काम बडाकी अक जोनास चानवाओ गावभरकी  
 सामान्य चरकीसे कराया जा सकता है जसा कि मि इनके  
 प्रयत्नस पजाबके गडगाव जिल्में सफलतापूर्वक किया जाना है।  
 अमठमें गावके लिज गावम ही कपता बना अतस ग्रामीण जीवनमें  
 बहुत सुधार हो सकता है जिसके लिज सम्प्रति घनाभावके  
 कारण बहुत कम गुजाओ है। समय पाकर मभव है चरखमें  
 अधिक सुधार हानसे स्वय कताओमें लगनवांग समय भी कम  
 हा जाय। यह अयोग राष्ट्रीय बन जायगा तो वह सुधार अवश्य

हाथ। मौजूदा चरखेसे अरु तार निकलता है। उसके बजाय कात्री असी तरहसे की जाय कि अरे ही चरखे पर दो या तीन तार माय-माय निकलने लगे ता भी बनाओका समय कम हा जायगा। यदि बनाओ-आन्ता-नक बनमान हाथ-करघा बुन करानो मूत मुहैया करनक अन्तिम उद्येका सिद्ध करना है ता अउ दृष्टि भी मूत और अत्यान्की गतिमें सुधार आरम्भ ह। जिन परिश्रमी लगाके रास्तमें अरे बढी रकावत यह है कि मिलानो मूतका अेकाधिकार प्राप्त हानेके कारण व अहे बडे अरे दामा पर मूत बेचती ह नाकि वे खद मिश्र बना पपडा मस्त भावा पर बेच सकें। अगर चरखा प्रचारका मफ होना है, तो अउ बस्वाकी अपेक्षा देहातमें अधिक जोर और पूरे सगठनक माय चलाना चाहिय। गहरी गगाका समयन समय समय पर अुत्माह लिखकर कायम रखना पडता है परतु गावके उअ ता यह आत्मरक्षाका प्रश्न है। यद्यपि गुम्में लगाकी निरक्षरता और अुत्तमीनताक कारण देहातमें काम बटिन होगा अकिन ज्या ही अरे वार अुसकी समावनाअे अनुभव कर गी जायगी अुसका जड वहा ज्याग गहरी जमेगी। निन्तु मफताका पक्की करने और अमफतास बचनेक लिअे प्रचार-काय अतानो अुत्माहिया द्वारा नगी परन्तु अम व्यक्तिया द्वारा होना चाहिये जिहान हाथ-बनाओकी कग मीखी हो। अिममें प्रवीणता प्राप्त करनक लिअे दा महीनसे अधिक नहा गगा हाग। अिमक अगवा यलि अूह पगुपा-नकी भी गगमग तीनम छह महोनेका गिया दे दी जाय और चारा पग करन और अुसकी ग्या करनके तराके गिगा लिय जाय तो व गहा नियाकी दुगुनी गवा कर सकेंग।

अगर हाथ-बनाओ और बुनाओ लेना माय माय भारतीय ग्रामां जारा की जाय तो अिनग विता- सामाजिक और आर्थिक गम हा सकत ह। भारतमें कपडकी प्रति ध्यक्ति औसत लपतसा अगज मात्रा १५ गज लगाया गया है।

देशतियोंके लिये प्रति व्यक्ति १ गजवी हा खपत मानें और १९२१ की जनगणनाके अनुसार देहाती आबादीका अंग्रेजीस करोड अस्सी लाख समझें तो उनके लिये कुल खपत दो अरब अठासी करोड गज चाहिये। अगर व्यापक और यथस्थित प्रचार-काय द्वारा ग्रामवासियोंका अपना खपडा तयार करनेको प्रोत्साहित किया जाय तो सारा खपडा जो वे इसके लिये देने ह गावामें रह जायगा। खादीके खपटकी कीमत कमसे कम चार आन गज मान लें तो देहाताका प्रति खप बहतर करोड खपटकी बचत होगी। इसके अतिरिक्त बाजारमें खपडा खरीदनके लिये कुछ जो नख खपटा चवाना पडता है उसका भी विचार करना चाहिये। वह कीमत ६ से ८ आने गजसे कम नहीं होगी। नीचेवाले आकडोंको मान लें तो घरेलू उपत्तिस हानवाती अतिरिक्त बचत दो आन गजके हिसाबसे छतीस करोड खपट साठना और होगी। इस प्रकार बहुत सावधानीके साथ कमसे कम आकडोंके आधार पर हिसाब लगायें तो भी प्रतिखप गावामें अब अरब खपटसे ज्यादा रह जायगा। और यदि इसका अब हिस्सा भा ग्रामोत्थानके कामके लिये अपाध कर लिया जाय जसा कि अवश्य होगा तो शिक्षा सफाई दवाखाने और पशुओं तथा खतीके सुधारसे सम्बन्धित ग्राम जीवनकी परिस्थिति बहुत जल्द सुधारी जा सकती है।

इसके अलावा इस बातका खयाल कीजिय कि जिस सुधारसे अतन अधिक लोगोंकी क्रय-शक्तिमें जो महान वृद्धि होगी उससे अत बड़ अद्योगिके लिये जो देशमें गुरु किय जा रहे ह कितना बड़ा बाजार खुल जायगा। मात्र तयार करनेस भी बाजार तयार करनेका काम अधिक कठिन और अधिक महत्वपूर्ण है। देशमें बाजारके अभावमें कारखानाकी शक्तीके कभी अद्योग विना प्रयोगके या ही पड रहे ह। अुहे विदेशी बाजारमें बहुत कम गुजाशक्ति आना हो सकती है क्योंकि विदेशी बाजारों पर औद्योगिक दृष्टिमें आग बने हुये विश्वेशाने

पहल हा कजा बर रखा है। पिछले हुअे मुल्लामें भी अुनकी अपनी मभावनाजाका मान नजीसे बल रहा है। असल्लिअे नगी औद्यागिक जप्ततिके लिअे भीतरी बाजारका निर्माण बडे महत्त्वका बात है। सीध-भाले चरखमें यह सम्भावना मौजू है। और जिसलिअे अस नगण्य नही मानना चाहिये।

रावबहादुरजीका गायल मालूम हागा कि चरघा मघ अुनक मुभाय हुअ स्वावलजी आधार पर देहातमें हाथ-बताओका मगान्न बरने पर अपना भाग ध्यान नगा रहा है। म बिजागिया और बाग्यागिबे अुनहरणारी तरफ अुनका ध्यान निलाता ह। माथ ही गहराकी ना अुपक्षा नहा की जा मनी। गहरी जावनकी गावा पर आजकल अिलनी प्रमुता है कि अगर गहर खानीका अुनहरण अुपम्यित न करें ता ग्रामवासियाका अपनी ही भलाजी और अपनी ही जरूरतक लिअे भी बातनका राजी करना कठिन हो जाता है। कीमतका मगल

शहरासे ही जटान पंगे जिससिअ जिस सुधारकी आवश्यकता राबबहादुरजीन अितन जचनवाल ढगसे साबिन कर दी है अुमे राष्ट्रयापी बनानके सिअ गहरामें खादीका वातावरण जमनकी नितात आवश्यकता है।

यग जिडिया ७-३-२९

१०४

## मिलके सूतसे हाथ बुनाओ

मदुरामें सौराष्ट्रियाके अभिनदनका उत्तर देते हुए गाधीजीन कहा

आपन मुझसे अनुरोध किया है कि विन्गी सूत या मिलके सूतके द्वारा भी हाथ बुनाओको प्रोत्साहन दिया जाय क्यकि जसा अपने अभिनदन पत्रमें आपन कहा है जिस समय हाथका सूत जितना चाहिय जुतना और जसा बारीक चाहिय वसा बारीक नहा मिता। अब अब साथी जगहेकी हैसियतमे म आपको बनाअगा कि म आपका सिफारिाका समथन क्या नही कर सकता। अगर म आपकी सिफारिाका समथन कर तो म यह सिद्ध कर सकता हू और आपको समझा सक्ता हू कि वह आपके सिअ भी बुरा होगा और जो वग मेरे ध्यानमें है और आपके भी ध्यानमें होना चाहिये अस वगक लिअ भी बरा होगा। आप तो बड समझदार और तीव्र बुद्धिवाणे यापारी ह आपको समझना चाहिय कि प्रत्यक् जगहा जो विदेशी या भारतीय मिठके द्वारा दिय हुए सूतको बुनता है अपन-आपको मिठके हाथमें और जुनकी दया पर छाड दता है। जुगहाकी हैसियतसे आपका अनुभव करना चाहिय कि जिस हाथ बनाओ पर अब ह तब जाजरत आपका नियरण है वह भविष्यमें ज्या ही ससारकी या भारतकी मिलें वे नमून बुनन ग जायगी जो आजकत क्वत आप ही बुनते ह त्या ही आपके हायोसे निकत

जायगी। अगर आपका यह बात पहचाने मात्र नही है तो मैं बता देता हूँ कि जिन नमूना पर जिस समय आपका अकाधिकार है बुद्ध बुननेके लिये समारके भिन्न भिन्न याग्य मित्र मात्रिक प्रयाग कर रहे हैं। यह मिल मालिका या मित्र-अद्यागका कमूर नही है कि मित्र बुद्याग लिन दिन बुन जेकाधिकारका छीन कर जिस व्यापारका अपने ही हाथमें लनकी कोशिका कर रहा है। जसमें अिन बडे बुद्यागपनियाना बुद्ध्य और लक्ष्य ही यह है कि अपने यत्रामें मतन सुधार कर और समारकी दस्तनारिया पर बराबर आक्रमण करने रहें। वास्तवमें बुनकी हस्तीकी गत ही यह है कि आपके हाथाम जिस व्यापारको छीन उनका प्रयत्न कर। अगर जुग्राहे मेरी शिक्षाका ग्रहण नही करगे तो जो हाल कताश्रीक बुद्यागका हुआ है वही निश्चित रूपमें हाथ बुनाश्रीके बुद्यागका हागा।

जिसका यह अर्थ नही है कि आप आजसे हा मित्रवा सूत बुनना छोड दें। आपका मेरी तरफम प्रामाह्नकी जस्यत नही है। परंतु मैं आपको यह सुनानका साहम करता हूँ कि मैं अत्यंत नम्रता पूर्वक जिस आदानका नतृत्व कर रहा हूँ अमुक साथ मित्रके सूतकी बुनाजीका मित्रानक मित्र आप मुझम न कहें तो जिसमें आपका भला है। और जिस आदानका समर्थन करनेमें मैं आपकी बुतना ही भग्या है। क्योंकि अगर वह स्थिर रूप और अचर हा जाता है तो आप सबको सम्मानपूर्ण आजीविका मित्र जायगी।

यग अदिया १३-१०-२७

अब भाओ जो किमी समय चरमक भक्त थे या कहत ह

हाथ-बुनाओक बजाय मगानकी बुनाओ जारी बाजिय। प्रत्येक तात्रकमें उन बुनाओ मित्र श्रुती कीजिये। बुनाओका राष्ट्रायकरण कर दाजिय। दगभक्त गग ही मित्राना चगयें लाभक लिये नही परंतु दगप्रमक गानिय। सूतका कव-स्थानीय जुग्राहामें वाजिय। वन हूँके कपणको अपने अपन तात्रकामें सीमित कर दना चाहिय। जिस प्रकार आप समय

और भाड़का अपव्यय बचायेंगे। गुस्से में ज़रूर ही ताड़का सगठन कीजियेगा तो आप देखेंगे कि आपने कितनी बड़ी सेवा की है।

अगर हरअब ताड़कमें अब अक कताभी मित्र लगाओ जाय तो परिणाम यह होगा कि थोड़ेसे लाग वस्तुका गोपण राष्ट्रीय पमान पर करग। ताड़का मित्रमें सबका काम नगी दिया जा सकता। इसका सिवा हमें दो हजारस अधिक ताड़काके मित्र आवश्यक मानीं बाहरस मगानी पडेंगी। और मित्रें चंगने और प्रबन्ध करनके लिअ विगपज्ञाको तालीम देनी होगी। चरखाकी तरह मित्रें बातकी बातमें खटी नहीं की जा सकती। चरखाकी असफ़ता पर किसीको दुख नहा हाता। ताड़का मित्रके असफ़ होन पर ताड़केके लोगामें हाहाकार मच जायगा। मेरी रायमें अपराकत भाओका किया हुआ प्रस्ताव विन्कुल गन्त है। परंतु मन सुझाव दिया है कि अगर अनमो अपनी याजनामें थढ़ा हो तो अहू असे जाजमाना चाहिय। मुझ तो अपनी छापीनी नाव ही चंगत रहना चाहिय क्यकि मुझ और कोओ चीज आर्कपिन नहीं करती।

यग अिडिया २६-६-२४

१०५

## हाथ करघेकी समस्या

हमें हाथ-करघाका हाथक सूतका अुपयाग करनके लिअ राजी कर सकता चाहिय। केकिन आज हममें असा करनका सामध्य नहा है। हमारे चरखाका सूत न तो काफी मजबूत है और न वह अभी काफी मात्रामें तयार ही होता है। जब तक हम जसा हाथका सूत तयार नहीं करैग जो बस और समानतामें मित्रके सूतका मुकाबला कर सके तब तक हाथ-करघका जगहा अुम नहीं छअगा। और जिसके लिअ अुसक पास अचित कारण ह। प्रथम तो कमजोर और असमान सूत काममें नैससे अब निश्चित समयमें तयार हानवाके कपका मात्रा घट जाती है और जिसलिअ जुगहेकी कमानकी गक्ति

पर असर पड़ता है। दूसरे हाथ-करघेके जुलाहेको जिस समय अच्चे दरजेके उत्पादनका विशय अभ्यास हो गया है जब कि हमारा हाथके बारीक सूतका उत्पादन बहुत ही थोडा है और वह भी अधिन्तर आधमें ही होता है। इस कठिनायीका हल गादीशास्त्रकी पूरी प्रवीणतामें है। और भी कुछ समस्याएँ ह जिन्हें हल करने पर ही हम हाथ-करघेके प्रश्नको निपटा सकते ह। सिर्फ अतिनी बात ध्यानमें रखी जाय कि इस समस्याको हल करनेसे ही खादीको सव्यापी बनानका सपना पूरा होगा।

हरिजन १७-४-३७

यह बयन कि हाथ करघा बुघोगे मिलकी स्पर्धाका मुकाबला किया है केवल आशिक रूपमें सही है। पच्चीस वर्ष पहले जितने हाथ करघेके जुलाहे थे उनसे आध भी आज नहा ह। जेक समय था जज चरवा राष्ट्रकी जरूरतका मारा सूत बात देता था और हाथ करघा तमाम जरूरी कपडा धुन देता था। जब मिलें स्थापित हुआ तो चरवा लगभग मर गया। इसका सीधा-सा कारण यह था कि बुमम बहुत कम आमदनी होती थी और वह कभी पूरे समयका धधा नहा था। परंतु करघेने डट कर उनका मुकाबला किया। इसके कआ कारणमें मुख्य कारण यह था कि वह स्वयं अकेले पूरे समयका धधा था और उससे जुलाहेका किसी तरह गुजारा हो जाता था। जब कताभा मित्र आओ तो जुलाहेन सूतके त्रिअे बुमका आश्रय लिया। असने इस परिवर्तनका स्वागत भी किया कयाकि असा अधिक समानता और कमवांग सूत मित्रने लगा। असे यह पता नहीं था कि अगर किसी कारणवग मिलें जुमे सूत न दे सकी तो वह पूरी तरह गचार हो जायगा। नेताती कतिन अपने सूतकी मनमानी कीमत नगा ग्या थी मगर मिल-मार्तिक लन लगा। धीरे धीरे जा जगहा मीरी-गाना गानी बुनना था वह मिलकी स्पर्धामें नहा टिफ सरा और मर गया। और पिछे कुछ बपोंगे बड़िया कपडका जुलाहा भी बुनाओ मित्रगा दवान महगून कर रहा है। जनताको रवि धीरे धीरे किन्तु निश्चित



रूपमें बन्द रही है। अगर मिलें दहाती जुगहेके धुन हुआ नमूनाकी ठीक ठीक नबल नही कर सकती तो व जमा अब भी कर रही ह नय नमून तयार कर सकती ह और योग्य विनापन गारा ग्राहकाका आर्कषित कर सकती ह। अिसागिअ ग्राहकके अभावमें अुडीसावे वओ हजार जुलाहे बकार हो गय ह। असा ही पुकार मेरे काना पर अुस - दिन अहमदनगरस आयी जो अब मजबूत बनाओ-वेद्र है। अुन सबको मेरी सलाह यह थी कि यदि य जलाहा परिवार अपन घरामें बेवज धुनाओ और कताओ गुरू कर दें तो वे मिाके मूतसे सबथा स्वतत्र हो सकते ह और जुहें चरखा सघकी अचूक सहायता भी मिउ सकती है। सभव है कि जलाहे कुछ समय कताओमें गगानवे कारण अतना न कमा सकें जितना पहले कमा ते थ। परंतु अब चरखा सघकी नओ नीतिक अनुमार अूकि कातनवााकी अक आना प्रति घटा देनका लक्ष्य है और डद पसा फी घटा गिया भी जा रहा है, अिसागिअ जुगहेको अपनी आयकी कमी गायद ही महसूस हो। और हर हास्तमें भूखी मरनकी स्थितिसे तो घटी हुआ आमदनी अवय ही बहतर है।

याद रहे कि जुगहेको अपन परिवारमें कताओ और धुनाओ जारी करनमें बहुत ही थोडी पूजी गगानी पडगी। चरखा ता अुसक पास पहगस है ही। बगक जममें कुछ सुधारकी जरूरत होगी। अुसे कुछ आन खच करक अब धनकी भर गनी होगी।

हरिजन २ -८-३८

## कायकर्ता बुनाओ सीखें

खादी-आदी-आदीको गरु हुअे अब २१ वपसे अधिक हो गय । फिर भी म देखता हूँ कि अब तरफ ता हमारो सूत बुननके लिजे जुलाहारी कमी है और दूसरी तरफ धामें लाखा जुलाहे ह जा हायका मूत बुननके लिअ राजा नही बिये जा सक ह । हमें दर्खना चाहिय कि अिस विरोधी स्थितिके लिअ हमारो कोसी दोष है क्या । अिसकी कुजी यह है कि खाली-कायकर्ता प्रायश्चित्तके रूपमें बुनाओकी प्रशियाअें भीखें । खाली-कायकर्ताआमें से ही हमें अपन अुत्तम वानन काग मिग ह । अुहाक कारण कताओमें प्रगति सभव हुआ है । अिसी प्रकार हमें खादी-कायकर्ताआस बुनाओ भी बरानी चाहिये थी । बुनाओकी बग मौल गन पर ही हम जन कठिनाजियाको पूरी तरह समय सर्वेय जा जुगहाको हायका मूत बुननमें पैग आनी ह और अुनके जुपायाका पता ग्या मरेंग । जअ हम अपनी भूग्या प्रायश्चित्त करेंग तब हायका मूत अितना सुपर जायगा कि मिगके मूतम अच्छी तरह मुकाबला कर सक । गायल आज हम मिगके मूतके बराबर कमवाग सूत न बात सकें । फिर भी दानामा फक अितना नहा रहेगा अितना अभी है और जुगहाना हायक मूतसे जिननी अग्वि अिस समय है अननी नहा रहेगी ।

दि आश्रितियागजी आंक लि चरगा पृ० ७४ अक्तूबर १९८१

प्रेमपूरख तथा धीरज और गानक साथ चरगा मयके काय कर्ताआको चाहिय कि व जुगहारी कठिनाजियाना समयने जीर अुह दूर करनेक अुपाय सीखनी कोगिग कर । आचाय विनावाने अेक अपाय बनाया है अर्थात कुकशियाका मूत अतारन समय ही अगे दुगग कर लिया जाय । अगर यह परिपाटी मय जगह चग पड ता बनाओक लिअे बिनबटा हायका मूत मिगेगा ही नहीं । अनुभवस यह पाया गया है कि अिग तरह बग हुआ हायका मूत मिगके मूलम अधिक नहा

तो उसके बराबर बनन तक तो हमशा होता हा है। अपनी पिछली कदसे छटनके बाद म अधिकसे अधिक जारके साथ घीपणा कर रहा हू कि कायकर्ताआन जस कताओकी कठामें प्रवीणता प्राप्त कर ली वसे ही वे बुनाओकी कलामें भी प्रवीणता प्राप्त कर ल। अगर वे खद कताओको न अपनात तो बागनबागओ बहुतसी मुश्किलें हल न कर पाते। अब जह वनाओकी कठा सीखकर और परिश्रम पूर्वक भुसका अभ्यास करके अपनी पिछनी गफ्तकी जा भल अनजान ही की गओ ही क्षतिपूर्ति करनी होगी। तभी वे अुन कठिनाअियाका समझेंग जो हायका सूत बुननमें जगहाको अनुभव होनी ह और तभी वे अने हठ कर सकेंग।

हरिजन ३१-३-४६

१०७

## जबरदस्ती नहीं

अब सदस्यन मुझाया कि जलाहा पर एक निश्चित मात्रामें हायका सूत बुननकी गत जगानी चाहिय और वे असा न करे तो अुह गिठके सूतका काटा न दिया जाय। गाधीजीन अुत्तर निया कि किसी भी प्रकारकी जबरदस्तीसे खादीके विरुद्ध अरचि ही पदा होगी। फिर वह आजान्तीकी वर्दी नहीं रहेगी। वायमडरुमें स्वाधीनताकी भावना व्याप्त हा रही है। हो सकता है कि जलाहे जबरदस्तीको माननस अिनकार कर दें।

जाजूजीन दलील दी भाजन-वस्त्र आदि सभी चीजा पर नियंत्रण है। जगहाके मामलमें नियंत्रण क्या नहीं किया जा सकता ?

गाधीजीन जबाव दिया मझ यह विचार पमद नहा है। हम कातनवालाके मामलमें जबरदस्तीस काम नहीं लेते। हम जलाहोंके अिअ भा अस अिस्नमाउ नहा कर सकत। हमें कठिनाओकी जडमें पहचना चाहिय। हमारी प्रारभिक भूय यह हुआ कि हमन कताओको

तो अपना गिया परन्तु बुनाओकी जुपेक्षा की। अगर हम कताओके साथ बुनाओको भी सार्वत्रिक कर देते तो ये सब कठिनाभिया पदा न हाना। अब अुपाय यह है कि सूतमें जिस तरह सुधार किया जाय जिससे जुलाहाको बुननमें कमसे कम मस्कि हो। हमें जुलाहाको तब द्वारा समझाना चाहिये कि मिलके सूत पर निर्भर रहनसे अतमें अुनका धधा माग जायगा। मिल मास्कि परोपकारी नहीं ह। ज्या ही हाथ करघके जुलाहे मिस्के कपडकी स्पधाकी सीधा मारम आ जायगे त्या ही मिल मास्कि अुनके गलेका फन्दा कम देंग।

अगर चरखमें हमारा विश्वास है तो हमें अिन अस्यायो वाधाअसे धवडाये बिना जाग बढना होगा। समय पाकर हाथका सूत बुननेवाले हाथ-करघाकी मरुया बन्गी। हमें अपनी जरूरतके लिअे जितना कपडा चाहिये अुसे पदा करनक लिअे हमारे देगमें काफी कारीगर जोर देगी कुण्ता मौजूद है।

जाजूजी अिमवा अथ यह है कि काम पहलेकी तरह हा चीनीका चालसे चलेगा। और थोड समयमें चार लाख आत्मियाको वस्त्र-स्वावम्बी बनानेकी हमारी याजना सफल नहीं होगी।

गाधीजा नहीं होगी ता न्प हमारा होगा।

जाजूजी अतिम अथमें यह ठीक है। परन्तु परिस्थितियाका भी विचार करना पडता है।

गाधीजी विपरीत परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना मनुष्यका विशेषाधिकार है। क्या जिन युगमें हम रह रहे ह अुनका नारा प्रवृत्तिको जोतना नहीं है? अगर क्वत्र परिस्थितिका ही महत्व होता ता जमनी और जापान यद्धमें विजयी होने। अिस मामनेमें हमें अग्रज जातिसे गिना ग्रहण करनी चाहिये। वह हार स्वीकार करना ता जाननी ही नहा। हमें अपने जीवनमें तपस्चर्या और प्रायश्चित्तकी आन्त डालनी चाहिये। नाआ अमी वस्तु नहा जिमे तपम्याम प्राप्त न किया जा सक।

## सूची

अयोगवाद २१ २४ २७ ३३ -की  
 बराबरी अयोगके समाजी  
 करणसे दूर नहीं होगी ३३  
 -से बबारी बन्गी २७  
 -मे जोगाकी गलामी बन्गी  
 ३१ -हानिकारक है २७  
 कनाओ ३ ८ ९ १ ११ १३  
 १५ १७ -आजातीके बाद  
 भी जारी रहे २७७ -जब  
 विनाल सट्टोनी प्रयत्न है  
 ११ -अब सुदरकता है ९  
 -का अस्तित्व बन्कि काममें  
 था १८१ -की सफरताक  
 रास्तेमें मन्किल ५ -की  
 सगहमें थम विभाजनके  
 सिद्धान्तका भग नहा ३५  
 -के पक्षमें दावे ४ -को  
 पुरपोचित घधा न मानना  
 गलत है ३७ -खतीकी आय  
 बढानवाग साग अद्याग ३  
 -गरीबी भगानका जकमात्र  
 अपाय ३ -मलाधिकारक  
 नियममें जत्र नहीं २८३  
 -में हाथकगको स्थान है  
 खनीम नहीं २६५ -  
 लाखाके त्रिअ जकमात्र साव  
 त्रिक अयोग १३ -बिकाराको  
 गात बन्ती है ११ -स

दहाती कग और संगीत  
 फिर सजीव होगा १४ -से  
 पगुपाग्नकी तुगना ३९ ४०  
 -में गाति मिगती है ९  
 -हारा हरिजनको राजी  
 नेती है ८

खानी ३४ -अत्युत्तिक स्थान पर  
 ही काममें ली जाय ९  
 -और अय शमोद्योगीकी  
 तुगना २८१ -का अत्पादन  
 बन्किके अपाय ६६ -का  
 काय कराना शमीणोमें  
 फताना है १८७ -का  
 मिगन पूरा होनकी गत  
 १९३ -का सच्चा पान  
 यात्रिक प्रक्रियाआमे पूरा  
 नहीं होता ११५ -की  
 पहली प्रतिगा १ -की  
 भावनाका परिणाम २६६  
 -के अथगास्त्र और सामाय  
 अथगास्त्रका भद ८९ -के  
 तीन निश्चित काय २९० -के  
 मूल्यका अक अग सुनम लेना  
 जत्र नहीं २८६ -शामाणाकी  
 दृष्टिमे मन्नी और  
 जनापी याजता ४९ -बनाम  
 मिगका कपग ७५ ७७  
 -स्वावठवन आत्म निभरता  
 और स्वतनताका प्रनाक १३

खानी-वायवर्ता १२२ -रादीके  
 सिवा श्रामत्यानकी अय  
 प्रवर्तियामें भाग १२६  
 -माच वपमें स्वावल्की बन  
 जाय १२९ -बुनाओी सौम्य  
 कर ही जुलाहाकी मुक्तिमें  
 ममथ मर्केग ३२१ -राज  
 नातिमें सत्रिय भाग न १२९  
 गाधीजी ३२ -कपडके नियामके  
 बारेमें ३२ -का घरत्या  
 सधवे वायवर्ताअमे आग्रह  
 २०९ -का सबसे आध  
 घटा धमभावस काननेका  
 आग्रह ३८ -की अप्रमाणित  
 खानी-व्यापारीके बारेमें राय  
 २८६ -की बुढागवादक  
 खिगाफ चतावनी २३ २५  
 -की कपडेका स्वावल्बन  
 सिद्ध करनेको तपनी चगन  
 की मगन १९० -की  
 काप्रमियाको मगनह २७९  
 ८० -की काप्रमी मप्रियाको  
 मगनह २०४ २९९ -का  
 गानीवायक नय मगठन पर  
 जाजुाम चचा २१० ५२  
 -की चरत्या ममका नया  
 मगठन वरनकी सूचना २००  
 -की चरत्याक बारेमें घडा  
 १८ -की मिलाकी गानीकी

मदद करनकी सूचना ७३  
 -की रायमें खानीके माथ  
 अय श्रामोण वस्तुआका अप  
 योग न करना गलत २८१  
 -चरसको मजाव करके खुदको  
 भावी पीलीका आणीवाँद  
 पाव मानन ह १७ -श्री  
 मिगमे हाथ-वती खादाकी  
 रक्षा जहरी मानते ह ७१  
 -द्वारा हर काप्रम आफिमको  
 कताओी-बुनाओीकी गाग  
 बनानकी सूचना २७९ -न  
 हाथ-वताओीकी कलाका  
 महत्त्व समसा २ -बुनकर  
 बन १ -यत्राके युचित  
 अनचित्त अपुपयोगके बारेमें ८५  
 -रचनात्मक वायवर्तका आगे  
 वदानमें भरवारी मद लनके  
 बारेमें २०३ -विन्नी वस्तु  
 नियमक बारेमें ५५ -  
 स्वदगी प्रन्ानियामें मिल्  
 कपडेक माय खानी रवनेक  
 विरुद्ध ८१ -हमारी अथ  
 रचनामें मित्र-कपन्क स्थानके  
 बारेमें ६०  
 गावक धु चौमरी १५० १८४  
 चरत्या १, -अहिमात्रा प्रनात्र है  
 १७ -का मुधार शछनाय है  
 ११४ -की गाथ १ -जे

खिलाफ मुख्य जादाप ७ -का  
 कायस कायक्रममें स्यात १  
 -न गरीब हिंदू मुस्लिमकी  
 अकसी सवाकी १६ -मिटा  
 तो अय ग्रामाद्योग भी मिट  
 १५ -विधवाका मित्र और  
 सहारा १५ -व्यापारिक युद्ध  
 की नही गतिकी निगानी १७  
 चरखा सघ १२४ १२६ -अक  
 परोपकारी सगठन है १२४  
 -की सत्ता खादीके विवे  
 द्रोकरणके बाट सिफ नतिक  
 हागी २६२ -के ट्रस्टियाकी  
 योग्यताओं १३० -में काय  
 कर्ताआका यूनियन बनाना  
 गन्त है १२४ -में काय  
 कर्ता बतन ठोभसे नही सेवा  
 भावसे आयें १२७ -व्यापारी  
 सिद्धांत नही अपना सकता  
 १४६

जवाहरगाल नट्रू ३३ ८२  
 जाजूजी २१ ३०३ -की नखी  
 सान्नी-नीतिके बारेमें गाधीजीस  
 चर्चा २१ ५२  
 ज आर० डी टाटा ३ ३  
 जराजानी १६३ १९३  
 बर्दाण्ड रसक २२

बवारी ६ -भारतीयार जीवनका  
 बनियादी तथ्य ७ -मारी  
 बराधीनी जड ६ -ही हमारी  
 जनताकी सच्ची बीमारी ६  
 मगनगन्भाभी (गाधी) २०५  
 मनु सूचना २९५ -की सान्नी  
 योजना २९५  
 रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कविवर) ४०  
 राजगापाकाचाय ९५  
 लम्बीदासभाभी १ २०३ १९१  
 बिनोबा १७१ १९२  
 सतीशचन्द्र दासगुप्ता (सतीश बाबू)  
 ५१ १८३ २३६ ३७  
 स्वदेगी ५७ -और खादी ५९  
 -के पुजारीका पहला घम  
 ५७ -को बहतर या सस्ती  
 विदेगी चीजोके त्रिअ न छोड़ें  
 ५७ -गीताक स्वधम में  
 निहित है ५८  
 हाथ-करघा ३०५ ३१८ -की  
 समस्या ३१८ २ -बनाम  
 चरखा ३०५ १६  
 हाथ-बनाभी ३ ६ -और मित्रकी  
 बनाभी अक दूसरेकी पूरक  
 नही ३ ७ -बनाम हाथ  
 कताभी ३ ६

